Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

भूत और भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167956

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूत और भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूत और भविष्य

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821440
Web: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

Central Library
167956
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167956

भारती साहित्य सदन
३०/९० कनॉट सरकस (मद्रास होटल के नीचे)
नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम संस्करण

मई, १९६४

R
059.9143
GUR-B

167996

Bhoot Aur Bhavishya *Gurudutt*

प्रकाशक : भारती साहित्य सदन, नयी दिल्ली-१

वितरक : भारती साहित्य सदन सेल्स,
३०/९० कनॉट सरकस, नयी दिल्ली-११०००१

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

₹80p --

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के पास साधन हों, पुरुषार्थ करने के लिए बल हो, तो भी लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं हो सकता जब तक कि ठीक दिशा का ज्ञान न हो।

आज देश की समस्या यही है। हम मिथ्या-दृष्टि अपनाये हुए मिथ्या मार्ग पर चल रहे हैं और जब लक्ष्य पर नहीं पहुँच पाते तो हैरान रह जाते हैं।

इस उपन्यास का यही कथानक है। उपन्यास उचित दिशा-ज्ञान कराने का एक प्रयास है।

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आर्ष साहित्य
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

प्रथम परिच्छेद

जी० ग्रार० सूरी जब कहीं जाने के लिए घर से बाहर निकला तो उसकी पत्नी चन्द्ररानी ने उससे पूछा, "किधर जा रहे हैं ?"

"कनॉट प्लेस जाकर पढ़ने के लिए कोई पुस्तक लेने का विचार है।"

"मुझे भी साथ ले चलिये । मैं भी घर के लिए कुछ सामान खरीदकर लाना चाहती हूँ ।"

"ठीक है, चलो ।"

उनकी बातें सुनकर समीप ही खड़ा सुवीर बोल पड़ा, "बाबा ! मैं भी साथ चलूँगा ।"

"तुम क्या करोगे वहाँ जाकर ?"

यह सुनकर सुवीर सोच में पड़ गया । कुछ क्षण विचार करने के उपरान्त बोला, "बाबा ! मैं ग्रापकी मोटर में सैर करूँगा ।"

जियाराम ने बच्चे से मुस्कराते हुए पूछा, "कितना किराया दोगे ?"

बच्चा इसका उत्तर देने में ग्रसमर्थ रहा। उस समय चन्द्ररानी वहीं थी। उसने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, "ग्रापने ग्रपनी गाड़ी को कबसे किराये पर चलाना ग्रारम्भ कर दिया है ?"

"बस, समझलो जबसे तुम्हारा पोता मोटर की सैर करने की इच्छा करने लगा है ।"

"यहाँ से कनॉट प्लेस तक बस का किराया पचास पैसे हैं; वह ग्रापको मिल जायेंगे ।"

उसके पति ने इसपर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न करते हुए कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम जल्दी से तैयार होकर आ जाओ, मैं बाहर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

चन्द्ररानी भीतर तैयार होने गई तो पोता भी उसके पीछे-पीछे जाकर कहने लगा, "दादीजी ! मुझे पचास पैसे दो।"

"अपनी माँ से जाकर माँग लाओ।"

सुधीर भागता हुआ अपनी माँ के पास गया और जबतक चन्द्र-रानी तैयार होकर बाहर आई सुधीर भी अपने हाथ में पाँच का नोट लिए उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था।

उसने अपनी दादी को पाँच का नोट दिखाते हुए कहा, "दादी ! मेरी मम्मी ने पाँच का नोट दिया है और कहा है कि मोटर का किराया चुकाने के बाद जो पैसे बचें उन्हें वापस लाकर दे देना।"

चन्द्र को हँसी आ गई। उसने सुधीर का हाथ पकड़ा और उसको लेकर आगे चल दी। जब वे जियाराम के समीप पहुँचे तो सुधीर ने अपने हाथ का नोट अपने बाबा की ओर बढ़ाते हुए कहा, "बाबा ! यह लो पाँच का नोट। इसमें से मोटर का किराया काटकर शेष वापस कर दीजिए।"

बाबा अबतक भूल चुका था कि उसने सुधीर के साथ हँसी में कहा था कि वह किराया देने को तैयार हो तो उसके साथ कनॉट प्लेस चले। अपने पोते की बात सुनकर वह विचार करने लगा कि उसका पोता उससे क्या बात कर रहा है। विचार करते हुए उसको अपनी बात का स्मरण हो आया तो उसने पूछा, "तो तुम अपनी सैर का भाड़ा चुका रहे हो ?"

"जी ! मम्मी के पास आठ आने खुले नहीं थे।"

बाबा को हँसी आ गई। उसने सुधीर से पाँच का नोट लिया और उसे अपने कोट की जेब में रख लिया। बच्चे से कहा, "जब घर लौटोगे, उस समय बचे हुए पैसे तुम्हें दे दूंगा।"

सुधीर बोला, "बाबा ! जो पैसे बचेंगे, उनमें से मुझे कुछ खरीदना है !"

"क्या खरीदोगे ?"

"टॉफी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, उस समय टॉफी वाले से नोट तुड़वा लेंगे।"

इस प्रकार बात करते हुए वे कोठी के पोर्च तक पहुँच गये। वहीं मोटर खड़ी थी। तीनों जब गाड़ी में बैठ गए तो ड्राइवर ने प्रश्नभरी दृष्टि से अपने मालिक की ओर देखा। उसका प्रश्न समझते हुए जियाराम ने कहा, "कनॉट प्लेस।"

कनॉट प्लेस पहुँचकर मोटर जब पार्किंग प्लेस पर खड़ी हुई तो तीनों पहले प्रोविजन स्टोर पर गए। वहाँ चन्द्ररानी ने अपने उपयोग की वस्तुएँ खरीदीं। उस समय सुधीर ने अपने बाबा से कहा, "बाबा! मुझे एक···पैकेट···टॉफी खरीदनी है।"

जब बच्चा टॉफी की ओर देखकर अपने बाबा से कह रहा था उस समय उसका बाबा उसकी बात को न सुन बाहर आने-जाने वालों की ओर ध्यान से देख रहा था।

सहसा बाबा बच्चे की ओर घूमा और उसे आवाज़ दी, "सुधीर।"

"हाँ, बाबा!"

"वह देखो, उधर वह सफेद दाढ़ी-मूँछ वाला, हाथ में लाठी लिये वह जो व्यक्ति खड़ा है न?"

"हाँ बाबा।"

"जाओ, उसके पास जाओ और उसके चरण छूकर प्रणाम करना और फिर कहना, मेरी दादी आपको रात के भोजन का निमन्त्रण दे रही हैं।"

"परन्तु···।" सुधीर शायद यह कहना चाहता था कि उसकी दादी ने तो निमन्त्रण की बात कही नहीं है।

तभी उसके बाबा ने कहा, "हाँ, जाओ, तुम्हारी दादी ने ही कहा है। वे साधु महाराज हैं। उनको भोजन का निमन्त्रण देना चाहिए। उनसे हाथ जोड़कर निवेदन करना।"

"बाबा! यदि उन्होंने पूछा कि तुम्हारी दादी कहाँ है तो क्या कहूँगा?"

"बता देना कि वे दुकान में हैं।"

इस प्रकार सुधीर अपने बाबा के पास से उस साधु के पास जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस वृद्ध व्यक्ति के पास एक भिखारी खड़ा था। वह उससे कह रहा था, "बाबा! एक रुपया दे दो। बड़ी भूख लगी है। चाय पीऊँगा।"

साधु बाबा उस भिखारी को देखकर मुस्करा रहा था। उसने उससे पूछा, "तुम काम क्या करते हो?"

"बेकार हूँ।"

वृद्ध उसको कुछ कहने ही वाला था कि तभी सुधीर ने वहाँ पहुँचकर उनके चरण-स्पर्श किए। बाबा ने अचानक उसकी ओर देखा और पूछा, "कौन हो बेटा?"

"बाबा! मेरा नाम सुधीर सूरी।"

"बोलो, क्या कहते हो?"

"मेरी दादी ने आपको आज रात के भोजन का निमन्त्रण दिया है।"

"क्या नाम है उनका?"

"दादीजी!"

वृद्ध बाबा को हँसी आ गई। उन्होंने कहा, "जाओ, उनका नाम तो पूछकर आओ।"

सुधीर को बड़ी निराशा-सी हुई। वह मुँह लटकाये दुकान की ओर आ गया।

उसके जाने के बाद वृद्ध ने अपने भगवे कुर्ते की जेब से एक रुपया निकाला और उस भिखारी को दे दिया और तुरन्त वहाँ से पुस्तकों की दुकान पर चला गया। इससे यही लगता था कि उसको भोजन का निमन्त्रण स्वीकार नहीं है।

सुधीर ने अपने बाबा के पास पहुँचकर कहा, "बाबा! दादी जी का नाम क्या है?"

"क्यों, बाबा ने पूछा है क्या?"

"जी हाँ!"

जियाराम ने सोचा कि बाबा सुधीर की ओर ही देख रहे होंगे। इसलिए वह पीछे की ओर मुड़ा जिससे कि वह अपने को दिखा सके, किन्तु बाबा तो वहाँ पर थे ही नहीं। जियाराम लपककर बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को निकल बरामदे के चारों ओर तथा आसपास की दुकानों की ओर उनको तलाश करने लगा। किन्तु बाबा कहीं दिखाई नहीं दिये।

निराश जियाराम प्रोविजन की दुकान के काउण्टर पर आ गया। तबतक उसकी पत्नी सामान खरीदकर उनका मूल्य दे रही थी। जियाराम ने एक टॉफी का डिब्बा उठाकर पूछा, "कितने का है ?"

"दो रुपये बीस पैसे !"

सूरी ने उसको पाँच का नोट पकड़ाया और उससे शेष पैसे लेकर अपनी जेब में डाल लिये। फिर उसने अपनी पत्नी से कहा, "अभी थोड़ी देर पहले मैंने सामने के फुटपाथ पर पिताजी की सूरत का एक व्यक्ति देखा था। मैंने उसको रात के भोजन का निमन्त्रण देने के लिए तुम्हारी ओर से जब सुधीर को भेजा तो उन्होंने तुम्हारा नाम पूछा। यह तुम्हारा नाम जानने के लिए मेरे पास आया तो तब तक वे वहाँ से कहीं और को चल दिये।"

"परन्तु आपने स्वयं निमन्त्रण क्यों नहीं दिया ?"

"मुझे उस समय अपने वे शब्द स्मरण हो आए जो मैंने उनके जाने के दिन कहे थे। यद्यपि उस बात को आज पच्चीस वर्ष हो चुके हैं। तदपि मुझे वे अभी भूले नहीं हैं।"

"वह बात तो अब बहुत पुरानी हो गई है। अब तो आपके विचार पूर्णतया बदल गए हैं। आप अपने शब्दों के लिए उनसे क्षमा भी तो माँग सकते थे।"

जियाराम मौन रहा।

चन्द्ररानी बोली, "उस समय तो मद्यपान के कारण आपकी बुद्धि कुण्ठित हो गई थी।"

"मुझे लज्जा आती है।"

"आप भी खूब हैं।"

"सुधीर के आने के बाद मैं स्वयं बाहर गया था, उनको देखने के लिए। किन्तु वे कहीं दिखाई ही नहीं दिए।"

चन्द्ररानी को इससे कुछ निराशा-सी हुई। उसने कहा, "मेरा काम तो हो गया है। अब आप अपना काम निपटाइए, फिर चलते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकानदार के नौकर ने सारा सामान पैक किया और उसे उठा कर उनकी मोटर पर रखने के लिए चला गया तो सुधीर और उस की दादी भी उसके साथ ही मोटर की ओर चल दिये।

जियाराम बराबर की पुस्तकों की दुकान के अन्दर चला गया।

ज्यों ही जियाराम भीतर घुसा कि उसको सामने वही बाबा पुस्तकों के सेल्फ से एक पुस्तक उठाकर उसका निरीक्षण-परीक्षण करता दिखाई दिया। जियाराम ने उनको देखा और जब पहचान लिया तो उनके पास जाकर खड़ा हो गया।

इससे वृद्ध महाशय का ध्यान भंग हुआ। उन्होंने जियाराम की ओर देखा। उसको पहचानकर बाबा हँस दिये। सूरी ने प्रणाम किया तो बाबा ने पूछा, "वह दादी का पोता कहाँ गया ?"

"वे लोग भी हैं। उसके पूछने आने पर जब मैं स्वयं दुकान के बाहर आकर आपको देखने लगा तो आप वहाँ से इधर आ चुके थे, मुझे दिखाई नहीं दिये।"

"बच्चे ने जब अपने नाम के साथ सूरी लगाया तो मैं समझ तो गया था। इसी कारण मैं यहाँ आकर छिप गया था, जिससे कि तुमसे भेंट न हो।"

"भेंट करने के लिए तो मैं स्वयं ही चला आया हूँ। चन्द्र भी मेरे साथ ही है। अब आप इसी समय हमारे साथ चलिये।"

"कहाँ ?"

"कुछ दूर पर हमारी कोठी है। वहाँ आपको मोटर गाड़ी में ले जाऊँगा।"

वृद्ध महाशय अभी जियाराम की बात पर विचार ही कर रहे थे कि तभी सुधीर और चन्द्ररानी भी वहाँ पहुँच गये।

सुधीर ने जब बाबा को देखा तो उसने उछलते हुए कहा, "यही हैं...!"

वृद्ध व्यक्ति को हँसी आ गई। फिर सुधीर से कहने लगे, "तो ये हैं तुम्हारी दादी ?"

चन्द्ररानी ने झुककर चरण-स्पर्श करने का अभिनय किया तो बाबा को हँसी आ गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाबा ने अपने हाथ की पुस्तक दिखाकर काउण्टर वाले से पूछा, "कितने की है ?"

"पैंतालीस रुपये।"

बाबा ने अपने चोगे के भीतर की जेब से एक सौ रुपये का नोट निकालकर उसको पकड़ाया और फिर कहा, "पुस्तक को लिफाफे में डाल दीजिए।"

जबतक बाबा दुकानदार से बात करते रहे जियाराम उस पुस्तक को देखता रहा। दुकानदार ने भीतर से अन्य पुस्तक मँगवाकर उसे पैक करवा दिया। फिर शेष पचपन रुपया और पुस्तक लाकर बाबा को पकड़ा दी।

चन्द्ररानी बोली, "बाबा! अपने प्रपौत्र के निमन्त्रण को स्वीकार कीजिए।"

बाबा कहने लगे, "मैंने इसे बताया है कि अपने नाम के साथ जब बच्चे ने सूरी लगाया तो मैं समझ गया था, इसी कारण मैंने इससे पूछा था कि इसकी दादी का नाम क्या है ? परन्तु इसे मालूम नहीं था। यह नाम पूछने दुकान पर गया तो मैं इससे छिपने के लिए इधर आ गया था।

"मुझे क्या पता था कि जियाराम भी पुस्तक खरीदने के लिए आ पहुँचेगा।"

"अब तो आप हमारे साथ ही चलिए। हमारे पास सवारी है। फिर आप वहीं रह जाइए।"

सहसा जियाराम ने पुस्तक से ध्यान हटाया और उसने पूछा, "पिताजी! आप कहाँ ठहरे हैं ?"

"साधु आश्रम में।"

चन्द्ररानी बोली, "यदि आप वहाँ जाना चाहेंगे तो भोजनोपरान्त आपको वहाँ पहुँचा देंगे।"

जियाराम ने पहले ही कह दिया, "किन्तु, अब वहाँ जाने की इच्छा ही क्यों होगी ?"

साधु महाराज कुछ बोलने ही वाले थे कि तभी उससे पूर्व चन्द्ररानी ने कहा, "अभी तो घर चलिए। शेष आपकी इच्छा वहाँ पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर जान लेंगे। वहाँ आपके पूजा-पाठ का भी प्रबन्ध भली प्रकार हो जाएगा।"

साधु बोला, "लगता है, तुम दोनों ने इन पच्चीस वर्षों में कुछ भी प्रगति नहीं की। दोनों का स्वभाव अभी भी वैसा ही है।"

जियाराम ने पुस्तक को सेल्फ में रखा और अपने पिता से बोला, "चलिए शेष बातें घर चलकर करेंगे।"

सुधीर अपनी उत्सुकता नहीं दबा सका। कहने लगा, "बाबा! आप देखने में बहुत अच्छे लग रहे हैं।"

इस समय सब दुकान के बाहर निकलने लगे। बाहर आकर बाबा ने पूछा, "क्या भला देखा तुमने मुझमें ?"

"आपकी यह सफेद दाढ़ी और वैसे ही आपके सिर के बाल।"

"यह तो तुमने सफेद बालों वाले भेड़ की बात कर दी।"

"नहीं बाबा! भेड़ की आँख में वह चमक कहाँ होती है जो आपकी आँखों में है।"

"चलो, भेड़ न सही सफेद पिल्ला तो हो सकता हूँ न ?"

"नहीं बाबा! पिल्ला भी नहीं।"

तबतक ये लोग सड़क पर पहुँच गए थे और ड्राइवर इनको देखकर गाड़ी इनके पास ही ले आया था।

मोटर में बैठकर साधु महाराज कहने लगे, "जब मैं उत्तरकाशी से दिल्ली की ओर चला था तो आप लोगों से भेंट होने की सम्भावना पर विचार करने लगा था। उस समय मैं यह निश्चय नहीं कर पाया था कि आप लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना होगा।

"वैसे तो मुझे यह भी ज्ञात नहीं था कि लाहौर से चलकर आप लोग किस नगर में जाकर बसे होंगे। मुझे यह विदित तो था कि लाहौर के अधिकांश जन दिल्ली में आकर बसे हैं। इससे आप लोगों के यहाँ होने की सम्भावना मुझे थी। इस स्थिति में यह भी मैं समझता था कि किसी समय आमना-सामना भी हो सकता है।

"मैं दस दिन से दिल्ली में हूँ। यहाँ कनॉट प्लेस में मैं नित्य ही आया करता हूँ। आज आप लोगों से भेंट हो ही गई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी ! आप हमारे घर चलने का भी विचार करके आये थे ?"

"हाँ, सोचता था कि यदि घर का पता चल जाएगा तो द्वार पर जाकर 'नारायण हरि' कहकर भिक्षा याचना करूँगा।"

चन्द्ररानी कहने लगी, "तब तो अच्छा ही हुआ। आपको बिना 'नारायण हरि' कहे भोजन का निमन्त्रण देने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो गया है।"

जियाराम कहने लगा, "मैं तो अब आपको कोठी में ही रहने का निमन्त्रण दे रहा हूँ। आपके साधु आश्रम से वह कम सुहावनी नहीं है।"

"तुमने साधु आश्रम देखा है ?"

"नहीं पिताजी ! यह सौभाग्य मुझे अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। परन्तु अपनी कोठी के विषय में तो मैं भलीभाँति जानता हूँ। निर्माण से पूर्व उसका नक्शा बनाने का ही आर्किटेक्ट को दो हजार रुपया दिया था। मैं समझता हूँ कि साधु आश्रम की योजना उतने योग्य आर्किटेक्ट ने नहीं की होगी।"

इस प्रकार बात कर ही रहे थे कि पाँच मिनट में वे लोग कनॉट प्लेस से बाबर लेन वाली कोठी पर पहुँच गए।

सुधीर ने पूछा, "बाबा पहले कहाँ रहते थे ?"

बाबा ने सुधीर का प्रश्न सुनकर उससे ही पूछा, "पहले से तुम्हारा अभिप्राय कब से है ?"

सुधीर इस प्रश्न को ही नहीं समझ पाया। वह बाबा के मुख पर देखने लगा। तब बाबा ने कहा, "पहले से तुम्हारा अभिप्राय तुम्हारी माता से अपने जन्म से पहले का भी हो सकता है और वह मेरे जन्म से पहले से भी हो सकता है।"

सुधीर ने पूछा, "तो क्या आप अपने पैदा होने से पहले भी थे ? हमारे मास्टर तो कहते थे कि पैदा होने से पहले क्या था, यह कोई नहीं जानता'।"

"किन्तु मैं जानता हूँ।"

"बताइए न, आप कहाँ थे और क्या करते थे ?" सुधीर अबतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाबा से हिलमिल गया था और शरारत करने की सोच रहा था।

"कभी आराम से जब बैठेंगे, तब तुम्हें बताऊँगा। अभी इस दौड़ती मोटर में तुम्हें क्या बताऊँ?"

"हाँ बाबा! कोठी में चलकर आराम से जब ड्राइंगरूम में बैठ जाएँगे, तब आपसे पूछूँगा।"

"हाँ, तभी बताऊँगा। जहाँ मैं था, वह स्थान तुम्हारा देखा हुआ नहीं है। इसलिए पहले तो तुम्हें उसके विषय में ही विस्तार से बताना होगा। उसके बाद अपने वहाँ होने की बात बताऊँगा।"

चन्द्ररानी बोली, "पिताजी! आप बहुत बदल गये हैं। यदि इन्होंने न बताया होता तो मैं तो आपको पहचान ही न पाती।"

"तो क्या बिना पहचाने ही भोजन का निमन्त्रण दे दिया है?"

"निमन्त्रण मैंने कहाँ दिया था। यह तो इन्होंने ही मेरा नाम लेकर आपको निमन्त्रण दिया था।"

"क्यों जियाराम! ऐसा क्यों? अब मैं किसके निमन्त्रण पर किसके घर जा रहा हूँ? तुम्हारे या तुम्हारी श्रीमती के?"

"इस समय तो आप सुधीर की दादी के घर जा रहे हैं। मैंने इसका नाम इस कारण लिया था क्योंकि इसने इस प्रकार का अधिकार मुझे दिया हुआ है।"

तभी मोटर कोठी पर पहुँच गई। सब लोग उतर गए।

उतरकर इधर-उधर देखकर साधु बाबा ने कहा, "लाहौर से तो अच्छा मकान है। वहाँ तो एक तंग गली में था।"

"हाँ पिताजी! वहाँ मोटर भी नहीं थी। केवल एक ताँगा था, वह भी गली के बाहर ही खड़ा करना पड़ता था।"

"हाँ! उस समय मैं तुम्हारी बात से रुष्ट हो गया तो घर छोड़कर ही चल दिया था।"

अबतक बाबा चलते हुए बाहर बरामदे में आ गये थे।

जियाराम कहने लगा, "आप अभी भी उतनी पुरानी बात को भूल नहीं सके? छोड़िये भी उसको। मैं तो बहुत प्रायश्चित कर चुका हूँ।"

"क्या उसको भी भूल गये हो, जिसके कारण तुमने उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वैसी बात कही थी ?"

सूरी ने इसका उत्तर नहीं दिया। साधु बाबा मुस्करा दिये। वे वहीं बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठने लगे तो उनके पुत्र ने कहा, "आप भीतर पधारिये न। अभी आपने मेरी शेष सृष्टि को कहाँ देखा है ?"

"चलो, लगे हाथ उसको भी दिखा दो।"

चन्द्रानी ने द्वार खोला तो बाबा भीतर ड्राइंगरूम में प्रविष्ट हुए। भीतर पहुँचकर बाबा अन्य सभी के भीतर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि तभी पिछले द्वार से जियाराम का पुत्र कृष्णचन्द्र और उसकी पत्नी प्रतिभा प्रविष्ट हुए। उस समय जियाराम ने अपने पुत्र की ओर संकेत कर अपने पिता से कहा, "पहचानिए तो सही कि यह कौन है ?"

यह सुनकर कृष्ण स्वयं ही हाथ जोड़ प्रणाम करता हुआ कहने लगा, "बाबाजी को आप कहाँ से ढूँढ़ लाये हैं ?"

"कृष्ण ! बात यह है कि आजकल नयी दिल्ली एक इस प्रकार का गड्ढा बन गया है कि जिसमें चारों ओर से पानी आकर भरने लगा है।"

साधु महाराज ने पूछा, "तुमने मुझको पहचान लिया है ?"

"बाबा ! हमारे उपनिषद्कार ने लिखा है कि अनुमान प्रमाण भी उतना ही यथार्थ होता है जितना कि प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। बस, उसी अनुमान के आधार पर मैं भी यथार्थ तक पहुँच गया हूँ।

"बाबा ! आजकल आपका क्या नाम है ?"

"मंगलानन्द !"

"नाम तो बड़ा मंगलकारी है।"

जियाराम बोला, "पिताजी ! बैठ जाइए। आराम से बैठकर बात करेंगे।"

सभी जन कुर्सियों पर जाकर बैठ गये। जियाराम ने अपने पिता को एक बड़े सोफे के मध्य बैठाया और उनकी एक ओर अपने पुत्र को बैठने का संकेत कर दूसरी ओर वह स्वयं बैठ गया।

चन्द्र दूसरी ओर बैठी थी। उसने घण्टी का बटन दबाया। बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं घण्टी बजी तो उसे सुनकर एक सेविका उनके ड्राइंगरूम में आ गई। चन्द्र ने उससे कहा, "कोल्ड ड्रिंक।"

सेविका भीतर चली गई और कुछ ही क्षणों में आठ गिलासों में पाइन एपल जूस भरकर, उन्हें ट्रे में रखकर ले आई।

चन्द्र ने स्वामीजी के सामने ट्रे की तो उन्होंने गिलास उठा लिया। उसके बाद सबने अपना-अपना गिलास उठा लिया।

ट्रे में दो गिलास शेष थे। चन्द्र ने सेविका से कहा, "मुन्नी और उसकी अध्यापिका को दे आओ।"

"तो कोई मुन्नी भी है ?" साधु बाबा ने पूछा।

"हाँ बाबा, अभी पाँच-सात मिनट में आ जाएगी, तब उसको भी देख लीजियेगा।"

"कृष्ण की बहिन सुधा कहाँ है ?"

"उसका विवाह हो गया है। वह बम्बई रहती है।"

"उसको प्रजा भी होगी ?"

"जी हाँ, पाँच सन्तान हैं। यदि आप मिलना चाहें तो उसको फोन पर कह देते हैं, शाम तक हवाई जहाज से यहाँ पहुंच जाएगी।"

"किन्तु मैं तो रात तक इन गद्देदार सोफों पर बैठा रह नहीं पाऊँगा।"

"तो आप कहाँ जाएँगे ?" यह प्रश्न कृष्ण ने किया था।

"दिल्ली आकर जहाँ मैं ठहरा हुआ हूँ।"

"बाबा ! यह भी तो दिल्ली ही है। यहीं ठहर जाइये -"

"वहाँ मेरी प्रतीक्षा रहेगी। प्रातःकाल मेरा वहाँ पर प्रवचन होता है।"

जियाराम ने पूछा, "कितने बजे ?"

"साढ़े छः से साढ़े सात तक।"

"मैं आपको छः बजे पहुँचा दूँगा।"

"किन्तु यहाँ रहकर मेरा रात्रि का कार्यक्रम नहीं चल पायेगा।"

"वह क्या होता है ?"

"मैं दस बजे सो जाया करता हूँ। रात्रि में दो बजे उठकर आधे घण्टे में नित्यकर्म से निवृत्त होता हूँ। फिर स्नान, ध्यान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय करता हूँ। उसके बाद छः बजे तक बाबा प्रवचन के लिए तैयार हो जाता हूँ।"

"यहाँ रहते भी तो यह सब किया जा सकता है।"

"कठिन है।"

"आपको हम एक पृथक् कमरा दे देंगे। उसमें एयर कण्डीशनर लगा हुआ है। प्रातः पाँच बजे आपके लिए मोटर तैयार मिलेगी। इस प्रकार छः बजे आप साधु आश्रम पहुँच जाएँगे।"

साधु बाबा इस प्रस्ताव पर गम्भीरता से विचार करने लगे।

सुधीर बोल पड़ा, "बाबा! ठीक ही तो है। अभी आप मुझे यह भी तो बताने वाले हैं कि आप पहले कहाँ रहा करते थे। आप कह रहे थे कि आराम से बैठकर ये सब बातें बतायेंगे।"

"अच्छा, यह बात है तो तुमसे बात करने के लिए ठहर जाऊँगा।"

कृष्णचन्द्र प्रसन्न होता हुआ बोला, "बाबा! बहुत-बहुत धन्य-वाद!"

शरबत पीते हुए चन्द्ररानी ने बाबा से पूछा, "तो मैं बम्बई फोन कर दूँ?"

"फोन करने में तो कोई हानि नहीं है। किन्तु तुरन्त चले आने की बात नहीं है। उनको कह देना कि अपनी सुविधानुसार आ जायें।"

कृष्णचन्द्र उतावला था। उसने कहा, "माँ! कह देना कि अगले मास कभी भी आ सकते हैं।"

यह सुन सब हँस पड़े। बाबा ने कहा, "हाँ, यह भी हो सकता है। किन्तु तब उनको मुझसे मिलने के लिए ऋषिकेश आना पड़ेगा।"

इसपर भी सबको हँसी आ गई।

चन्द्र कहने लगी, "ठीक है। मैं उसको कह देती हूँ कि अपनी सुविधा से आ जायें। देखते हैं, उसको कब सुविधा होती है।"

उस समय सुधीर की बहिन, जो पाँच वर्ष की थी अपनी अध्या-पिका के साथ आई। किन्तु ड्राइंगरूम में सबको बैठे देखकर वे द्वार पर ही ठिठक गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चन्द्र ने उनको वहाँ देखा तो बोली, "मुन्नी ! आओ, देखो तो हमारे घर कौन पधारे हैं ?"

मुन्नी और उसकी अध्यापिका दोनों ही कमरे में आ गयीं और चन्द्ररानी के समीप खाली स्थान पाकर वहाँ पर बैठ गयीं।

"तो तुम मुन्नी हो ?" बाबा ने पूछा।

"नो, आइ एम प्रमिला।" लड़की ने उत्तर दिया।

बाबा ने उससे अंग्रेजी में ही बात करते हुए कहा, "बट युअर ग्राण्डी सेज यू आर मुन्नी।"

"शी इज ग्राण्ड माँ। आइ कैन नोट स्टोप हर।"

"आई सी।" साधु बाबा ने आश्चर्य-सा व्यक्त किया, "एण्ड व्हाट इज दि नेम ऑफ युअर टीचर ?"

लड़की अपनी टीचर की ओर देखने लगी। उसकी अपेक्षा चन्द्र-रानी ने कहा, "इनका नाम है सुशीला पीटर। ये एम०ए०, बी०टी० हैं। हमने इनको चौबीस घण्टे के लिए इसके कोच के रूप में नियुक्त किया है। मिस पीटर इसी कोठी में रहती हैं।"

"समझ गया हूँ। यही देखने तो मैं दिल्ली आया था, वह मुझे जियाराम की कोठी में ही देखने को मिल गया है।"

सब मौन रहे।

"सुनाओ सुधीर ! तुम्हारा कोच कौन है ?" बाबा ने मौन भंग करते हुए सुधीर से पूछा।

"बाबा ! मेरे दो कोच हैं। एक स्कूल में और दूसरे घर में।"

"ओह ! तो तुम अपनी बहिन से अधिक भाग्यशाली हो।"

"वह क्या होता है ?"

"वह भी बताऊँगा। पहले तुम यह बताओ कि तुम्हें घर पर कौन पढ़ाता है ?"

"दादी माँ।"

"ओह !"

"हाँ बाबा ! दादी माँ बहुत अच्छी हैं।"

इन लोगों के बात करते हुए ही सबके सामने सेण्ट्रल टेबल और तिपाइयाँ रख दी गयीं। जो सेविका पहले शरबत दे गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR B
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Central Library
167550
Gurukula Kangri (University) Library
Haridwar

थी, वही इस समय चाय लेकर आई। सेण्ट्रल टेबल पर रखी प्लेटों को चन्द्ररानी ने सबके सामने रख दिया। एक प्लेट में कलाकन्द रखी थी। चन्द्ररानी ने सबकी प्लेट में एक-एक टुकड़ा डाल दिया। कृष्ण की पत्नी ने सबके लिए चाय बनाना आरम्भ किया।

सुधीर पूछने लगा, "बाबा! मेरे प्रश्न का उत्तर आप कब देंगे?"

"क्या करोगे तुम उस प्रश्न का उत्तर जानकर?"

"आपके विषय में जानूँगा। मेरे अध्यापक कहते थे कि किसी वस्तु का ज्ञान उसके उत्पन्न होने के स्थान से विदित होता है।"

साधु बाबा बोले, "तुम तो बहुत जानते हो। इस समय चाय पी लो फिर तुमसे बात करेंगे।"

सुधीर प्रसन्न होकर चाय पीने लगा।

चाय पीते हुए जियाराम ने उसी सेविका से कहा, "गैस्टहाउस खोलकर उसको अच्छी तरह झाड़-पोंछ दो। पिताजी उसमें आराम करेंगे। वहीं सुधीर से बातें भी करेंगे।"

सेविका ने चन्द्ररानी की ओर देखा। चन्द्ररानी ने अपनी अण्टी में लगे चाबियों के गुच्छे को निकालकर सेविका को पकड़ा दिया।

चाबी लेकर सेविका चली गई। सब चाय पी रहे थे। पीते हुए स्वामी मंगलानन्दजी ने मिस पीटर को सम्बोधित कर कहा, "मिस पीटर! आप कहाँ की रहने वाली हैं? पहरावे से तो भारतीय ही लगती हैं किन्तु नाम विदेशी है।"

स्वामीजी ने मिस पीटर से अंग्रेजी में यह प्रश्न किया था।

उसने अंग्रेजी में उत्तर देते हुए कहा, "जी नहीं, मैं भारतीय हूँ और भारतीय भाषा में ही बात भी कर रही हूँ। मेरा नाम सुशीला है और अंग्रेजी भी भारतीय भाषाओं में से एक भाषा है। पीटर मेरा सरनेम है। मैं कोचीन की रहने वाली हूँ। मिस्टर के० के० सूरी का कोचीन में काम चलता है। मेरे पिता मिस्टर वैंकटेश्वर पीटर के साथ इनकी मित्रता है। अपनी लड़की के कोच के रूप में ये ही मुझे यहाँ लाये हैं। मुझे यहाँ आये एक वर्ष हो गया है।"

मंगलानन्द ने बात बदल दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगलानन्द समझता था कि दोष पीटर शब्द में नहीं अपितु यहाँ की राजनीति में है। उसने जियाराम से कहा, "चाय के उपरान्त मुझे मेरे कमरे में पहुँचा देना। वहाँ मैं सुधीर से बात करूँगा। यह जानना चाहता है कि मैं पहले कहाँ था। तदनन्तर मैं इस पुस्तक को दो घण्टे तक पढ़ूँगा।

"रात्रि को साढ़े आठ बजे भोजन करने के उपरान्त मैं एक घण्टे भर सामयिक समाचार पढ़कर दस बजे सो जाऊँगा। प्रातः छः बजे गाड़ी तैयार हो तो ठीक है अन्यथा अभी बता दो, मैं तदनुसार पाँच बजे यहाँ से चलकर प्रवचन से पूर्व आश्रम पहुँच जाऊँगा।"

"गाड़ी साढ़े पाँच बजे तैयार मिलेगी।"

चन्द्ररानी बोली, "प्रातःकाल मैं भी आपके साथ चलूँगी।"

"किस लिए ?"

"आपका प्रवचन सुनने के लिए और फिर आपको अपनी गाड़ी में यहाँ वापस लाने के लिए।"

"यहाँ आने के विषय में तो मैं वहाँ जाकर ही निश्चय करूँगा।"

तभी सुधीर बोला, "बाबा ! मैं भी आपके साथ चलूँगा।"

"स्कूल नहीं जाओगे ?"

"कल रविवार है।"

"ओह, ठीक है चलना। हमारे स्कूल में तो मंगल के दिन अवकाश होता था।"

"आपका भी कोई स्कूल है ?"

"स्कूल नहीं, हमारा तो कॉलेज है।"

सुधीर बोला, "मैं तो अभी स्कूल की तीसरी श्रेणी में ही पढ़ता हूँ।"

"चिन्ता की बात नहीं। हमारे कॉलेज में तो बच्चे, बूढ़े, जवान सभी प्रविष्ट हो सकते हैं।"

"इस समय भी उसमें कोई बालक है ?"

"वहाँ उपस्थिति नहीं लगती। जो आता है, वह पाठ पढ़ लेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और जो नहीं आता वह उस पाठ से वंचित रह जाता है।"

सुधीर की समझ में यह बात नहीं आ पाई। तो भी वह चुप ही रहा। वह इस समय अपने मन में विचार कर रहा था कि कल रविवार है। कल बाबा के कॉलेज जाकर देखेगा कि बालक, वृद्ध और युवाजनों की वहाँ एक समान कौन-सी पढ़ाई होती है।

: २ :

चाय समाप्त हुई। बाबा ने अपनी पुस्तक पकड़ी और उठकर चल दिये। चन्द्ररानी भी उनके साथ ही उठी और कहने लगी, "बाबा! चलिये, मैं आपको आपका कमरा दिखा देती हूँ।"

"इस काम के लिए तो मैं सुधीर को साथ लेकर जा रहा हूँ।"

"जी नहीं। वह अभी बच्चा है। आप उसको चकमा देकर लापता भी तो हो सकते हैं। मुझे वह समय स्मरण है जब आप लाहौर से भागे थे।"

साधु बाबा हँस पड़े। बोले, "वह तो तुम्हारे मूर्ख पति को शिक्षा देने के लिए किया था। वह सबको ही अपने समान मूर्ख मानता था।"

जियाराम ने फिर कहा, "पिताजी! आप उस बात को अभी भी नहीं भूले। मैं तो उसका पश्चात्ताप करके कभी का उसको भूल गया हूँ।"

"परमात्मा ने शायद तुम्हारे पश्चात्ताप को स्वीकार कर लिया लगता है। परन्तु बात उसके विपरीत भी तो हो सकती है।"

"क्या?"

"यह कि उस दिन की भूल तो तुमने मूर्खतावश की थी। उसके उपरान्त परमात्मा ने ईर्ष्या का कारण तो मिटा दिया परन्तु भूल सुधारना तो तुम्हारे अपने हाथ में था। उसे तुमने सुधारा है अथवा कि नहीं, अभी तो यह देखना शेष है।"

"बाबा! यदि सुधारी न होती तो स्थिति बदलती नहीं। क्योंकि वह बदल गई है यही इसका प्रमाण है कि मैंने अपनी भूल को सुधार लिया है।"

"मैं यही देखने की इच्छा तो कर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं भी वह अवसर देने को प्रस्तुत हूँ। कुछ दिन यहाँ रहकर भली प्रकार देख लें तो और भी उत्तम होगा।"

"इसपर भी विचार करूँगा। मैं तो सुधीर और इसकी बहिन के विषय में भी सोचने लगा हूँ।"

जियाराम का पुत्र बोला, "बाबा! मेरा विचार नहीं करेंगे?"

"मेरी समझ से तुम्हारा व्यवहार भी औपचारिक ही है। जिसे बोलचाल की भाषा में ठकुर सुहाती और सभ्य भाषा में शिष्टाचार कहते हैं। तदपि इसमे मुझे न किसी प्रकार का हर्ष हुआ है और न खेद ही।"

बाबा जब उठे तो सारा परिवार ही उनको उनके निवास तक पहुँचाने के लिए गया। चलते हुए चन्द्ररानी ने पूछा, "कल प्रातः काल अपने कॉलिज जाने से पूर्व आप कुछ फलाहार और दुग्धपान करेंगे?"

उत्तर देने से पूर्व सुधीर ने फिर कहा, "बाबा! मुझे सोता छोड़कर मत जाइयेगा।"

यह सुन सबको हँसी आ गयी।

स्वामी मंगलानन्द बोले, "यह लड़का प्रतिभावान् लगता है।"

यह सुनकर सहसा कृष्ण की पत्नी प्रतिभा ने पूछा, "और इसकी बहिन?"

"वह तो अभी बोलने वाली गुड़िया के समान ही है। उसको जो कहना सिखाया जा रहा है, वह उसे बोल देती है।"

तबतक वे अतिथि गृह में पहुँच गए थे। यह कोठी के बराबर में ही दो रूम का सैट था। एक कमरे में सोफा, कालीन आदि बिछे थे। और भी सजावट की सब वस्तुएँ वहाँ थीं।

उन सबको वहीं छोड़कर चन्द्ररानी बाबा को पिछले कमरे में ले जाकर कहने लगी, "यह आपके सोने का कमरा है।"

उस कमरे में पलंग था। उसपर गद्दा बिछा था। गद्दे पर श्वेत चादर बिछी थी। डनलप का तकिया था। पाँव की ओर ओढ़ने के लिए पश्मीने की श्वेत चादर रखी हुई थी। खिड़की पर एयर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कण्डीशनर लगा हुआ था।

कमरे के एक द्वार की ओर संकेत कर चन्द्ररानी ने बताया, "यह बाथरूम है, इसमें ठण्डा और गरम दोनों प्रकार के जल का प्रबन्ध है।

"अभी तो आप बाहर के कमरे में बैठकर सुधीर की जिज्ञासा शान्त कीजिये। वह बड़ा उत्सुक प्रतीत होता है।"

"यही उसका शुभ लक्षण है।"

"मैंने स्वयं ही उसका अध्यापक चुना है। वह इस समय डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ाता है। मैंने सुधीर को उसी स्कूल में प्रविष्ट करा दिया है।

"कन्या उसकी माँ की प्रिय सन्तान है। इसलिए उसकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध वह स्वयं कर रही है।"

इसके बाद चन्द्ररानी स्वामीजी को बाहर बैठक में ले आई। अन्य सब जन वहाँ उनकी प्रतीक्षा में खड़े थे।

स्वामीजी जब बाहर वाले कमरे में आये तो जियाराम ने कहा, "पिताजी !"

स्वामीजी ने उसको बीच में रोकते हुए कहा, "पिताजी नहीं, स्वामीजी। मेरा तुम्हारा शरीर का सम्बन्ध अब नहीं रहा।"

"चलिए, ठीक है। मैं तो एक स्थान पर काम के लिए जा रहा हूँ। रात्रि का भोजन ठीक साढ़े आठ बजे होता है। उस समय चन्द्ररानी आपको भोजन के लिए ले आयेगी।"

स्वामीजी सोफे पर बैठ गए और बोले, "आप लोग अब जाकर अपना-अपना काम करो। मैं सुधीर से बात करूँगा।"

जब सब गये तो स्वामीजी ने सुधीर को अपने समीप बैठाकर कहा, "मैं सबसे पहले तुम्हारे स्कूल के कोच के विषय में जानना चाहता हूँ।

"अच्छा, यह बताओ कि तुम जान गये हो कि मैं कौन हूँ ?"

"जी हाँ। जब आप कनॉट प्लेस में ही लापता हो गये थे तो यह जानकर दादीजी को बड़ी निराशा हुई थी। किन्तु कर क्या सकते थे। हम अपना खरीदा हुआ सामान दुकान के सेवक से उठवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर मोटर पर रखवाने के लिए जा रहे थे तो उस समय मैंने दादी माँ से प्रश्न किया, 'दादी माँ ! वह कौन था ?'

"दादी माँ बोलीं, 'वे तुम्हारे बाबा के पिताजी थे।'

"मैंने पूछा, 'वह क्या होता है ?'

" 'पिता के पिता का पिता।'

"मैं मन में इसका अर्थ लगाता हुआ पुस्तकों की दुकान पर आया था। उस समय दादी माँ भी साथ ही थीं।"

"कुछ समझ में आया था उसका अर्थ ?"

"जी आ गया था।"

बाबा उसको बताने लगे, "मैं अपने इकलौते लड़के के साथ लाहौर के कूंचा हिंगना मौहल्ले में रहता था। मेरे इकलौते लड़के अर्थात् तुम्हारे बाबा का उस समय विवाह हो चुका था और इसके दो बच्चे थे। एक तुम्हारा पिता कृष्ण और दूसरी तुम्हारी बुआ सुधा। कृष्ण बड़ा था और सुधा छोटी। उस समय कृष्ण पाँच वर्ष का था और सुधा दो वर्ष की थी।

"उस समय तक कृष्ण की दादी का देहान्त हो चुका था। मैं अपना काम-काज छोड़कर वैराग्य की ओर बढ़ रहा था। मेरी कपड़े की दुकान थी। दुकान पर नित्य तीन-चार सौ रुपये की बिक्री होती थी। मेरे मन में जब वैराग्य आया तो मैंने दुकान का काम समेटकर धन एकत्रित कर लिया।

"उस समय सिंधिया नेवीगेशन के शेयर बिक रहे थे। मैंने दुकान का सब रुपया उनमें लगा दिया। वह पचास हजार रुपया था, उसके मैंने पचास हिस्से खरीद लिये थे।

"तुम्हारे बाबा उस समय लाहौर स्टेशन पर टिकिट चैकर की नौकरी करते थे। यद्यपि उसका वेतन उस समय एक सौ रुपया मासिक था किन्तु वह मुझसे भी अधिक शान-शौकत से रहता था। प्रातः ताँगे पर बैठकर अपनी नौकरी पर जाता था और ताँगे पर ही लौटता भी था।

"उसी समय इसमें एक बुरी आदत लग गई। शाम को घर लौटते समय यह मद्यपान करके आता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक दिन यह ताँगे को बाहर गली पर छोड़ ताँगे वाले के आश्रय घर पर आया तो मेरे मुख से इसके लिए अपशब्द निकल गया। तुम्हारे बाबा ने उसका मुझे उत्तर दिया, उससे मुझे क्रोध चढ़ आया और मैं उसी रात सारी जमा-पूँजी लेकर घर से चल दिया। आते समय मैं इसको एक कागज पर लिख आया था कि गन्दगी के कीड़े के साथ रहने को मन नहीं करता, इस कारण मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ।

"लाहौर से चलकर मैं अमृतसर पहुँच गया। दिनभर वहाँ दरबार साहब में रहा। सायंकाल की गाड़ी से हरिद्वार होता हुआ ऋषिकेश जा पहुँचा। वहाँ मैं अपनी साधना में लग गया।

"पच्चीस वर्ष तक मैं साधना करता और स्वाध्याय करता रहा। उसका परिणाम हुआ कि लोग मेरा प्रवचन सुनने के लिए ऋषिकेश आने लगे। और जब मैं उत्तरकाशी चला गया तो लोग वहाँ पहुँचने लगे।

"अब मैं दिल्ली आया हूँ। यहाँ आये हुए मुझे दस दिन हो गए हैं।

"यहाँ के साधु आश्रम में मैं नित्य प्रातःकाल प्रवचन कर रहा हूँ। पहले दिन तो केवल दस-बारह श्रोता थे। किन्तु अब तो सैकड़ों लोग आने लगे हैं।

"यह है मेरा पूर्व इतिहास। तुमने पूछा था कि मैं कहाँ रहता था और क्या करता था। वही मैंने बताया है।"

"बाबा! आपने कहा था कि जन्म से पूर्व की बात बतायेंगे?"

"मरने के समय जीव अपने पिछले जन्म की उन सारी बातों को भूल जाया करता है, जो उसको स्मरण होती हैं। अच्छा बताओ तुम स्कूल का पाठ किस प्रकार स्मरण रखते हो, जानते हो?"

सुधीर ने कहा, "मैं घर आकर कापी पर लिख लेता हूँ और फिर जब आवश्यकता होती है कापी में देखकर स्मरण कर लिया करता हूँ।"

"परन्तु कापी पर लिखी बातों के अतिरिक्त भी तो स्मरण रहती हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी हाँ ! आज मैं आपसे मिला हूँ । कैसे मिला हूँ, यह बात मुझे कापी पर लिखे बिना भी स्मरण है और भविष्य में भी स्मरण रहेगी।"

"परन्तु वह भी स्वयं ही एक कापी पर लिखा गया है। वह कापी तुम्हारे भीतर है, उसको मन कहते हैं। तुम्हारा जीव आवश्यकता पड़ने पर उस मन की कापी पर लिखी बात को स्मरण कर लेगा।

"मनुष्य के प्राणान्त के समय वह कापी भी नष्ट हो जाती है। इसलिए उसपर लिखा हुआ पुनः स्मरण करना सम्भव नहीं है।

"तो भी एक बात है। तुम्हारा कापी पर लिखा बार-बार पढ़ने से कभी इतना भी स्मरण हो जाता होगा कि फिर बिना कापी पर पढ़े ही याद आ जाता होगा।"

"जी, ऐसा तो होता है। जब मैं पहली श्रेणी में पढ़ता था तो मास्टरजी ने पहाड़े पढ़ाये थे। वे मैंने कापी पर लिख लिये थे। जब आवश्यकता होती थी कापी पर देखकर काम चला लिया करता था। परन्तु अब तो वे इस प्रकार स्मरण हो गये हैं कि कापी खोलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।"

"हाँ, यह बात है। और यह इस कारण है कि जो तुम्हारा स्मरण करने वाला है वह कापी से पृथक् है। उसे मन कहते हैं। वे पहाड़े अब तुम्हारे मन पर अंकित हो गए हैं। और इसी प्रकार मन पर लिखे को पढ़ने वाला भी मन से पृथक् है। उसे जीवात्मा कहते हैं। यदि मन पर लिखी हुई बात को वह जीवात्मा बार-बार बड़े ध्यान से पढ़े तो मन की बात उसको स्मरण रह जाती है किन्तु उसको मन की बात तब ही स्मरण रहती है जब वह उसे ध्यान से और बार-बार पढ़े।

"जीव मरता नहीं। शरीर मरता है। शरीर के मरने के समय वह इसे छोड़ जाता है। यदि उस समय यह किसी उत्तम मन वाले शरीर में चला जाय तो अपने पूर्व जन्म में ध्यान से देखी बातें वह अपने नये मन पर लिख लेता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घर पर आकर स्कूल में मास्टरजी द्वारा बताई बात को लिख लेते हो।

"यह इसी प्रकार है कि मानो तुम्हारी लिखी हुई वह कापी किसी कारण से जल जाए तो भी जो बातें तुमने उस कापी में बार-बार और ध्यान से पढ़ी हैं वे याद रह जाती हैं। यदि तुम उस समय चाहो तो उनको किसी अन्य कापी पर लिख सकते हो।

"शरीर के लिए वह नयी कापी नये जन्म में उसका मन ही होता है।"

"परन्तु...।" सुधीर पूछने लगा था परन्तु मंगलानन्द ने रोक दिया।

बाबा ने कहा, "आज इतना पाठ पर्याप्त है। हाँ, इसमें से यदि कुछ समझ में न आया हो तो पूछो।"

"बाबा! उसमें से ही तो पूछने लगा था।"

"तुम तो जीव के विषय में पूछने लगे थे कि वह कहाँ है? हम कैसे मानें कि वह है? बताओ, तुम यही पूछना चाह रहे थे न?"

"जी हाँ। जब आपने कहा कि मन की बात जीव को स्मरण हो जाती है तो यह स्वाभाविक था कि मैं उसके विषय में प्रश्न करता कि वह कहाँ है? वह शरीर में कब, कैसे और कहाँ से आता है?"

"अभी मैंने यह बताया है कि कापी पर लिखा मन को स्मरण हो जाता है। और बिना कापी देखे भी उसको भली प्रकार स्मरण कर उसका प्रयोग किया जा सकता है। कापी के अतिरिक्त जहाँ वह लिखा जाता है, वह मन है। मैंने यह भी बताया कि शरीर में मन के अतिरिक्त भी कुछ अन्य है। वह मन पर लिखी बात को स्मरण रख सकता है। कापी के जल जाने की भाँति मन भी नष्ट होता है। किन्तु उस समय वह जो मन से अतिरिक्त होता है वह उसको स्मरण रखता है। यह शरीर में जीव है।

"अब यह मैं तुम्हें कल बताऊँगा कि वह जीव है अथवा नहीं, यदि है तो वह कहाँ रहता है? उससे पूर्व कहाँ रहता था? वह इस शरीर में कब आया?

"ऐसी बहुत-सी बातें हैं, वह सब मैं तुमको धीरे-धीरे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताऊँगा। अभी तो मैं इतना ही बता रहा हूँ कि पूर्वजन्म में मेरा जो मन था वह उस शरीर के साथ नष्ट हो गया था। परन्तु जीव इस नये शरीर में आया तो उस जन्म के मन की कुछ बातें साथ ले आया है।"

"बाबा! तो क्या आपका कोई पहला जन्म भी था?"

"हाँ, कुछ-कुछ स्मरण है। एक धुँधली-सी स्मृति है। मैं उसको ठीक-ठीक स्मरण करने का यत्न कर रहा हूँ।"

"आप वह यत्न किस प्रकार कर रहे हैं?"

"मैं जिस प्रकार कर रहा हूँ उसको योग, ध्यान, धारणा और समाधि कहते हैं। उसके विषय में भी विस्तार से बताऊँगा।

"अब तुम जाओ। जो मैंने बताया है उसको भली प्रकार समझ कर स्मरण कर लो। शेष कल बताऊँगा।"

"बाबा! आप कल यहाँ रहेंगे?"

"यह तुम्हारी दादी के निमन्त्रण पर निर्भर करता है।"

"मैं उनसे आग्रह करूँगा कि वे आपको यहीं रहने का निमन्त्रण दें।"

जब सुधीर उठकर चला गया तो मंगलानन्द ने अपना स्वाध्याय आरम्भ किया।

: ३ :

रात्रि को जब साढ़े आठ बजने का समय हुआ तो मंगलानन्द ने अपनी पुस्तक पर से सिर उठाया। तभी उसने देखा कि सामने चन्द्ररानी खड़ी है। पुस्तक से बाबा का ध्यान हटते देख चन्द्ररानी ने कहा, "बाबा! चलिए, भोजन का समय हो गया है।"

स्वामी मंगलानन्द ने पुस्तक को बन्द किया। समीप रखी तिपाई पर उसको आराम से रख दिया। वह अपने आसन से उठा और चन्द्ररानी के साथ भोजन के लिए चल दिया।

डाईनिंग हॉल में जियाराम, कृष्णकुमार और उसकी पत्नी प्रतिभा, उसका पुत्र सुधीर और पुत्री प्रमिला, प्रमिला की कोच मिस पीटर ये सब पहले ही वहाँ बैठे हुए थे। इनके अतिरिक्त एक अन्य अपरिचित व्यक्ति भी वहाँ बैठा था। वह युवक सूट-बूट धारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए हुए था। वह मिस पीटर के बराबर की सीट पर बैठा हुआ था।

स्वामीजी के वहाँ पहुँचते ही कृष्णकुमार ने उस युवक का परिचय कराते हुए कहा, "बाबा! ये मेरे मित्र नारायणन अय्यर हैं। ये मिस पीटर से मिलने के लिए आये हैं। ये दोनों कोचीन से ही परिचित हैं।

"मिस्टर अय्यर! बाबाजी के विषय में तो मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ।"

मिस्टर अय्यर ने हाथ जोड़कर स्वामीजी को नमस्कार किया तो स्वामीजी ने कह दिया, 'हरि ओं।'

तुरन्त सुधीर ने जिज्ञासा व्यक्त की, "बाबा! इसका क्या अर्थ है?"

"ओं, परमात्मा का नाम है। मैंने परमात्मा से प्रार्थना की है कि वह मिस्टर अय्यर के कष्टों को हरें।"

नारायणन अय्यर ने मुस्कराते हुए कहा, "आपकी इस शुभ-कामना के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ, यद्यपि मैं परमात्मा के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता।"

"तदपि मेरी कामना तो है।"

अय्यर ने बात को बदलते हुए कहा, "आप तो बड़ी सरलता से अंग्रेजी बोल लेते हैं तो भी आपने यह गेरूए वस्त्र धारण कर लिये हैं। मेरे लिये यह बड़े आश्चर्य का विषय है।"

उन दोनों में परस्पर वार्त्तालाप अंग्रेजी में ही हो रहा था। स्वामीजी ने हँसकर कहा, "यह इसलिए कि आपके सूट-बूट की अपेक्षा ये वस्त्र बड़ी सरलता से पहने जा सकते हैं। सीने में भी किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती। धोने-सुखाने में भी इनकी अपेक्षा कष्ट और व्यय कम होता है।"

इस समय सम्मुख प्लेटें लगा दी गई थीं और बेयरा भोजन-सामग्री ला रहा था। जिसकी जो और जितनी इच्छा होती वह उतना अपनी-अपनी प्लेट में डाल लेता था।

स्वामीजी ने एक-एक कर लगभग सब खाद्य सामग्री अस्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर केवल रायता और पूरी ही अपनी प्लेट में डाली। नारायणन उनकी इस गतिविधि को बड़े ध्यान से देख रहा था। जब स्वामीजी ने दो पूरी और रायता ले लिया तो नारायणन बोला, "महाराज! आपने तो सभी स्वादिष्ट पदार्थों को अस्वीकार कर दिया है?"

"वे मैंने आपके लिए छोड़ दिये हैं।"

यह सुनकर जियाराम बोला, "तो भी आपके खाने से वे समाप्त तो नहीं हो जायेंगे।"

"मेरा यह अभिप्राय नहीं है। मेरे कहने का अभिप्राय तो यह है कि उन खाद्य-पदार्थों को मैंने आप गृहस्थ जनों के खाने के लिए छोड़ दिया है। मैं अब गृहस्थ नहीं हूँ।"

स्वामीजी ने यह जियाराम की बात का उत्तर दिया था। इस लिए इस समय उन्होंने हिन्दी में कहा था। नारायणन मूल वाक्य और उसका अभिप्राय दोनों में से कुछ भी नहीं समझ पाया था, वह दोनों का मुख देखता रहा। किन्तु किसी ने भी उसको इस विषय में समझाने का यत्न नहीं किया।

अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए अय्यर को ही यत्न करना पड़ा। उसने स्वामीजी से पूछा, "तो क्या यह भी वस्त्रों की भाँति खाने में सरल है?"

स्वामीजी ने अंग्रेजी में उसका उत्तर देते हुए कहा, "हाँ, पूरी और रायता सुगमता से चबाये जा सकते हैं। उसी सुगमता से उनको पेट में पचाया भी जा सकता है। इनको पचाने में मेरे शरीर को कम-से-कम कष्ट करना पड़ेगा।"

इस समय सुधीर बोला, "बाबा! यह मटर-पनीर, पुलाव और आलू-मटर तो बड़े स्वादिष्ट बने हैं?"

"शरीर के जो स्वाद प्राप्त करने वाले अंग हैं, मैंने उनको घोड़ों की भाँति समझा हुआ है। जिस प्रकार घोड़े गाड़ी को हाँककर जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकते हैं उसी प्रकार यह रसना आदि इन्द्रियाँ भी हैं। किन्तु मेरे इस शरीर रूपी रथ पर जो रथवान है उसने अपने घोड़ों के मुख में लगाम डाल दी है। उस लगाम को वह कसकर रखता है। उसका परिणाम यह है कि इस प्रकार ये घोड़े उधर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जा सकते हैं जिधर मैं इनको ले जाना चाहता हूँ। स्वाद मेरे अधीन हैं, मैं इनके अधीन नहीं।"

जियाराम पूछने लगा, "परन्तु महाराज ! इन घोड़ों पर तनिक दया तो करनी ही चाहिए, जिससे कि ये भी थोड़ा-बहुत तो जीवन का आनन्द ले लें।"

"आनन्द का उपभोग तो वे कर सकते हैं किन्तु वह आनन्द रथ के स्वामी के आनन्द के विपरीत नहीं होना चाहिए। ठेकेदार साहब ! रथ के स्वामी को एक साग अधिक पसन्द है विपरीत इसके ये दस प्रकार के व्यंजन। इसलिए रथ का मालिक जिधर जाना चाहता है, घोड़ों को उधर ही जाना चाहिए।"

"ये घोड़े विद्रोह भी तो कर सकते हैं ?" यह अय्यर का कहना था।

"यह सम्भव हो सकता है। किन्तु रथी के हाथ में बड़ा जोर का चाबुक है। ऐसी घटना अनेक बार घट चुकी है। परन्तु अब ये समझ गये हैं इसलिए सावधान रहते हैं। उनको सदा यह स्मरण रहता है कि रथवान के हाथ में बड़ा प्रबल चाबुक है। अब ये विद्रोह नहीं कर पाते।"

"मुझे उन घोड़ों पर दया आती है।"

"ठीक है। आनी ही चाहिए। वे आपके सजातीय हैं न। परन्तु किसी ने उनको मेरे अधीन कर दिया है। उनका प्रबन्ध अब मेरे हाथ में है। वे मेरे काम के लिए मुझे मिले हुए हैं, मैं उनके काम के लिए उनको मिला हुआ नहीं हूँ।"

सुधीर इन बातों को कुछ-कुछ समझ पा रहा था। जितना भी वह समझ रहा था उस विषय में वह बाबा के कथन के ढंग पर बड़ा प्रसन्न था। बाबा का उसको यह कहना कि शरीर में भी एक कापी है, जिस पर दिनानुदिन की बातें लिखी रहती हैं। यह बात उसे बहुत अच्छी लगी थी। अब भी वह स्वामीजी की जितनी बात समझ पा रहा था उसका आनन्द उठा रहा था।

कृष्ण ने कहा, "स्वामीजी ! कल प्रातःकाल आपका प्रवचन सुनने के लिए घर के सब प्राणी आपके साथ जा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सब प्राणियों से तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?"

"माताजी और सुधीर तो पहले ही जाने वाले थे। सुधीर की बात सुनकर सुधीर की माँ और प्रमिला की कोच भी तैयार हो गयी हैं।"

"सुधीर ने क्या बात की है ?"

"उसने बताया कि जब आपने यहाँ प्रवचन करना आरम्भ किया तो पहले दिन तो दस-बारह व्यक्ति ही थे किन्तु इन दस दिनों में वहाँ असंख्य जन आने लगे हैं।"

"तो ये लोग उन असंख्य जनों में वृद्धि करने के लिए जा रहे हैं।"

"शायद।"

"तुम नहीं जा रहे ?"

"मेरे लिए सवेरे उठना कुछ कठिन है।"

"ठीक है। यदि तुम्हारी पत्नी कुछ समझकर आये तो उससे सुन लेना।"

"प्रतिभा की अपेक्षा तो मुझे प्रमिला की कोच पर अधिक विश्वास है। प्रतिभा को तो यहाँ बुद्धू माना जाता है।"

"तो सुधीर से समझ लेना। वह समझदार मालूम पड़ता है।"

कृष्ण यह सुनकर सुधीर की ओर देखने लगा। वह मुस्करा रहा था। कृष्ण को विस्मय हुआ तो उसने पूछा, "सुधीर! क्यों मुस्करा रहे हो ?"

"वह इसलिए कि आप कहते हैं मैं तो बच्चों की-सी बातें करता हूँ, वह आप किस प्रकार समझ पायेंगे ?"

"परन्तु स्वामीजी ने तो अभी बताया है कि तुम समझदार मालूम पड़ते हो।"

"यह तो स्वामीजी हैं, बाबा हैं। पर मुझे तो बात करने की तमीज नहीं।"

"मैं प्रमिला की कोच से पूछ लूंगा।"

इस समय तक स्वामीजी ने अपनी दो पूरी और रायता समाप्त कर लिया था। शेष अभी भोजन कर ही रहे थे। स्वामी मंगलानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मौन होकर बैठे रहे। मंगलानन्द ने अनुभव किया कि नारायणन बड़ा पेटू है। वह सबसे अधिक और तेज खा रहा था। स्वामीजी यह देख मुस्करा दिये।

नारायणन ने देखा तो पूछने लगा, "आप मुझे देखकर मुस्करा क्यों रहे हैं ?"

"आप जल्दी-जल्दी खा रहे हैं। इससे ऐसा लगता है कि आपको अभी कोचीन के लिए हवाई जहाज पकड़ना है।"

यह सुनकर सब हँस दिये।

कृष्णकुमार ने कहा, "बाबा ! यह प्रातःकाल पाँच बजे के हवाई जहाज से जाने वाले हैं। इस समय ये जल्दी-जल्दी इसलिए खा रहे हैं ताकि जल्दी से सो जाएँ। जिससे ये प्रातःकाल साढ़े तीन बजे उठकर हवाई पत्तन पर पहुँच सकें।"

"इनके हवाई जहाज से लौटने का मेरा अनुमान ठीक ही सिद्ध हुआ है।"

"आप स्वामीजी हैं। अतः आपके अनुमान लगभग ठीक ही हो सकते हैं।"

"ये आये किस समय थे ?"

"सायं छः बजे के हवाई जहाज से आये थे। प्रातःकाल दस बजे इनको अपने स्थान पर उपस्थित रहना है। अतः अवकाश नहीं था।"

इसमें कुछ कहने अथवा सुनने के लिए नहीं था।

सुधीर बोला, "बाबा ! अय्यर साहब प्रमिला की कोच से विवाह करेंगे।"

"कब ?"

अय्यर ने उत्तर में कहा, "जब यह मान जायेगी। मैं भी तो यही जानने के लिए आया हूँ।"

"तो अभी निश्चय नहीं हुआ ?"

"अभी इनसे बात करने का भी अवसर नहीं मिला है।"

"आपकी मनोकामना पूर्ण हो।" स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका धन्यवाद बाबा !" अय्यर ने कृतज्ञता व्यक्त की।

इस प्रकार की अनावश्यक बातों में सबका भोजन समाप्त हुआ। सब उठे और एक-एक कर हाथ धो कुल्ला करने लगे। उसके बाद चन्द्ररानी और सुधीर बाबा को उनके कमरे में छोड़ने के लिए चले गये।

जियाराम ने अपने सेवक से उस दिन का समाचार-पत्र स्वामीजी के कमरे में रखने के लिए कहा हुआ था। वह वहाँ विद्यमान था। मंगलानन्द ने वहाँ पहुँचते ही समाचार-पत्र उठाया और उसे पढ़ने लगा। स्वामीजी की दृष्टि एक समाचार पर पड़ी। उसको देख करके हँस पड़े।

उस समय तक सुधीर और उसकी दादी वहीं थे। सुधीर को तो यह देखकर विस्मय ही हुआ। चन्द्ररानी ने पूछा, "महाराज ! क्या देखा है ?"

"एक अर्द्ध शिक्षित व्यक्ति कह रहा है कि बीस वर्ष में हम देश को अपने पैरों पर खड़ा कर देंगे। तब हमें किसी अन्य पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

चन्द्र कहने लगी, "यह तो हमारे प्रधानमन्त्री ने ही कहा है।"

स्वामीजी कहने लगे, "जिस प्रकार देश की गति चल रही है उसको देखकर तो यही कहा जा सकता है कि बीस वर्ष तो क्या प्रधानमन्त्री के पोते के काल तक भी यह देश अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता।"

"महाराज ! कैसे ?"

"जो व्यक्ति अथवा देश कामनाओं के पीछे भागते हैं वे अपनी आवश्यकताओं से स्वतन्त्र नहीं हो सकते।"

स्वामीजी ने फिर अपनी पुत्रवधू को कहा, "अब तुम लोग जाओ। प्रातःकाल गाड़ी का प्रबन्ध करवा देना।"

यद्यपि चन्द्ररानी यह ताना-बाना समझ नहीं पाई थी, तो भी स्वामीजी की आज्ञा का पालन करने के उद्देश्य से वह उठी और चल दी। उसने सुधीर से कहा, "चलो, बाबा अब विश्राम करेंगे। प्रातःकाल जल्दी उठकर फिर पूजा-पाठ करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्ररानी ने स्वामीजी के चरण स्पर्श किये तो सुधीर ने भी वैसा ही किया। स्वामीजी से आशीर्वाद प्राप्त कर दोनों वहाँ से चले गए।

सुधीर को उसके कमरे में छोड़कर चन्द्र अपने पति के कमरे में गयी। जियाराम टेबल लैम्प के प्रकाश में कोई पुस्तक पढ़ रहा था। चन्द्र के आने पर उसने पुस्तक बन्द कर दी और चन्द्र से पूछने लगा, "पिताजी के लौट आने का तुम क्या अर्थ समझती हो?"

"मैं तो उनके जाने के समय से ही यह आशा कर रही थी। जाते समय उन्होंने मुझे कहा भी था कि वे मेरी सुधि लेने के लिए अवश्य आयेंगे। किन्तु इस आशा को पूर्ण होने में पच्चीस वर्ष का समय लगा है।"

"एक बात मैंने और भी देखी है। वह यह कि केवल केश श्वेत होने के अतिरिक्त उनके शरीर में अन्य किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आया है। प्रोविजन स्टोर के बाहर खड़े जब उस पार मेरी दृष्टि इनपर पड़ी तो मैं तुरन्त पहचान गया।"

"हमें कुछ इस प्रकार करना चाहिए कि जिससे ये अब हमारे परिवार से पृथक् होने की बात सोच भी न सकें।"

"यह कठिन है। जिसको स्वतन्त्र विचरण का अभ्यास हो गया हो वह फिर पिंजरे में क्यों बन्द होना चाहेगा?"

"पहले आप अपने मन में संकल्प कीजिये कि आप उनको यहाँ रहने के लिए मन से प्रेरित करेंगे।"

"मेरी प्रेरणा का कोई प्रभाव होने वाला नहीं है। यह तो उनकी अपनी इच्छा पर निर्भर होगा।"

"परन्तु आप अपना व्यवहार तो इस प्रकार का बना सकते हैं कि जिससे उनको यहाँ रहने में किसी प्रकार की आपत्ति न हो।"

"कम-से-कम प्रत्यक्ष रूप में तो मैं उनके अनुकूल ही रहने का यत्न करूँगा। परन्तु मेरा जो काम है उस विषय में उनको आपत्ति हुई तो फिर मैं क्या करूँगा?"

"मैं समझती हूँ अब आप अपना काम भी कृष्ण को सौंप दीजिए। आप तो उस काम से अब सेवामुक्त व्यक्ति की भाँति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध रखिये ।"

"मुझे तो उस दशा में भी भारी विस्फोट होने की सम्भावना दिखाई दे रही है। आज मिस पीटर नित्य की अपेक्षा अधिक गम्भीर दिखाई दे रही थी।"

"उसके गर्भ है। वह कल ही गिरजाघर में जाकर उससे विवाह करने वाली है।"

"वह तो अब हो ही जाना चाहिए।"

इसके बाद चन्द्ररानी अपने सोने के कमरे में चली गयी। कई वर्ष से पति-पत्नी दोनों पृथक्-पृथक् कमरों में सोया करते थे।

चन्द्ररानी के जाने पर मिस पीटर आ गयी। उसने बाहर से ही कहा, "मैं आना चाहती हूँ।"

"आ जाओ।" जियाराम ने कहा।

मिस पीटर ने खड़े-खड़े ही कहा, "मैंने मिस्टर अय्यर से विवाह की तिथि निश्चित करने के लिए कहा है, किन्तु वे कहते हैं कि उनको अवकाश नहीं है। वे विवाहोपरान्त हनीमून के लिए दो मास का अवकाश चाहते हैं। मैं आपसे उनके अवकाश के लिए कहने आयी हूँ।"

"यह तो तुम्हें कृष्णकुमार को कहना चाहिए था, क्योंकि तुम उसकी लड़की की कोच हो।"

"मैंने उनसे कहा था। उनका कहना था कि अय्यर आपके अधीन है। अतः उसकी छुट्टी आपके अधीन है।"

"मैं तो यह विचार कर रहा हूँ कि अपना सारा व्यवसाय कृष्ण कुमार को सौंप स्वयं अपने पिताजी से संन्यास की दीक्षा ले लूं।"

"वह क्या होती है?"

"अपने पिताजी की ही भाँति गृहस्थ छोड़कर उनका शिष्य बन जाऊँ।"

"यह तो बाद की बात है। अभी तो आप व्यवसाय के मुख्य प्रबन्धक हैं। इस समय तो उसका अवकाश आपके अधीन ही है।"

"उससे कहो, वह अभी मुझे प्रार्थना-पत्र दे दे, मैं उसका अवकाश स्वीकार कर लूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धन्यवाद। मैं उसको प्रेरित कर आपके सम्मुख लाती हूँ।"

"ले आओ, मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

मिस पीटर गयी तो जियाराम सोचने लगा कि उसकी पत्नी से जो बात कुछ क्षण पूर्व हो रही थी, वह अभी से प्रकट होने लगी है। जियाराम को विदित था कि पीटर और अय्यर पति-पत्नी जैसे ही हैं। वह सम्बन्ध कितना प्रगाढ़ है इसकी वह केवल कल्पना ही करता था। वह चाहता था कि दोनों का परस्पर का सम्बन्ध प्रत्यक्ष हो जाय तो उचित है।

इस प्रकार वह बिना वस्त्र बदले कुर्सी पर बैठा मिस पीटर सहित अय्यर की अथवा अकेले अय्यर की प्रतीक्षा करता रहा। जब पौन घण्टे तक भी उनमें से कोई एक भी नहीं आया तो वह उठा और वस्त्र बदलकर सो गया।

: ४ :

ठीक साढ़े पाँच बजे जब स्वामी मंगलानन्द अपने कमरे से निकले तो बाहर द्वार पर जियाराम, उसकी पत्नी, सुधीर और मिस पीटर प्रतीक्षा में खड़े थे।

सबने उनको प्रणाम किया। स्वामीजी ने आशीर्वाद देकर पूछा, "तो आप लोग मेरी प्रतीक्षा में खड़े हैं?"

"जी।" जियाराम ने कहा।

मोटर वहीं आ गयी थी। सभी उसपर सवार हो चल दिये।

स्वामीजी ने कहा, "ऐसा लगता है कि मिस पीटर रात भर रोती रही हैं, इस कारण सो नहीं पाई हैं।"

मिस पीटर ने स्वामीजी की बात का उत्तर नहीं दिया। जियाराम और उसकी पत्नी ने भी इस विषय पर कोई बात नहीं की।

सब को चुप देख सुधीर बोला, "बाबा! अभी-अभी तो ये हँस-हँसकर बातें कर रही थीं।"

"इस समय हँस-हँसकर बातें करना और रात को रजाई के भीतर मुख छिपाकर रोना दोनों अलग-अलग बातें हैं।"

अब किसी को कुछ कहने को नहीं रहा था। सब मौन रहे।

छः बजे इनकी मोटर आश्रम के द्वार पर पहुँच गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय श्रोताओं की भीड़ चारों ओर से चली आ रही थी। आने वालों में पैदल, साइकिल, मोटर साइकिल और स्कूटर, टैक्सी तथा अपनी कार वाले सभी प्रकार के लोग थे।

चन्द्ररानी ने इस भीड़ को देखा तो वह मन-ही-मन प्रसन्नता अनुभव करने लगी। जियाराम विस्मय कर रहा था कि जो व्यक्ति आज से पच्चीस वर्ष पूर्व कपड़े की दुकान करता था आज इतनी ख्याति प्राप्त कर गया है कि उसका प्रवचन सुनने के लिए इतने प्रातः अपार भीड़ चली आ रही है।

ज्यों ही स्वामीजी मोटर से उतरे, लोग उनके चरण-स्पर्श करने के लिए आगे बढ़ने लगे। जियाराम ठेकेदार समझ गया कि स्वामीजी के व्यक्तित्व और उनकी मधुर वाणी तथा कुशल वक्तृता का ही यह प्रभाव है।

स्वामीजी तथा उनके साथी धीरे-धीरे भीतर की ओर बढ़ रहे थे। चरण-स्पर्श करने वाले उनका मार्ग अवरुद्ध कर रहे थे।

आश्रम के प्रांगण में पहुँच स्वामीजी जब मंच की ओर जाने लगे तो उन्होंने देखा कि लाउड स्पीकर की व्यवस्था की गयी है। मंच पर माइक्रोफोन रखा था और प्रांगण में तीन स्थानों पर स्पीकर टँगे दिखायी दिये थे।

यह देखकर स्वामीजी को सन्तोष हुआ। मंच के समीप पहुँच कर उन्होंने जियाराम आदि को नीचे बैठने के लिए कहा और स्वयं मंच पर पहुँचकर अपने स्थान पर बैठ गये।

चन्द्ररानी और मिस पीटर जिस ओर महिलायें बैठी थीं उस ओर जाकर बैठ गयीं। स्त्रियों की संख्या भी किसी प्रकार कम नहीं थी।

स्वामीजी के बैठते ही एक व्यक्ति आकर संगीतमय स्वर में स्तोत्र पाठ करने लगा। उसने पहले गंगा स्तोत्र गाया, फिर शिव स्तोत्र और अन्त में विष्णु स्तोत्र गाया।

स्तोत्र पाठ और कीर्तन चल ही रहा था कि आश्रम के एक साधु ने आकर स्वामी मंगलानन्दजी के कान में कुछ कहा। स्वामी जी मंच से उठकर उसके साथ चले गये। यह अप्रत्याशित घटना थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे श्रोता समुदाय मन-ही-मन विस्मय कर रहा था। एक क्षण के लिए तो कीर्तन करने वाला भी रुक-सा गया था। किन्तु फिर वह करता रहा।

स्वामीजी को जिस ओर ले जाया गया, वहाँ कुछ अन्य व्यक्ति भी खड़े थे। उनमें से एक व्यक्ति तो साधारण वेश में था और शेष चार-पाँच संन्यासी थे।

स्वामीजी के वहाँ पहुँचने पर उस गृहस्थी ने जिसका नाम लाला फकीरचन्द था, स्वामीजी को प्रणाम किया और फिर पूछने लगा, "महाराज! आप रात कहाँ रहे?"

"कल प्रातःकाल मैं कनॉट प्लेस में पुस्तक खरीदने के लिए गया था। उस दुकान पर एक पूर्व-परिचित उपासक मिल गये। वे मुझे अपनी कोठी पर ले गये। मैं रात वहीं रहा हूँ।"

"यह तो आपने ठीक नहीं किया?" फकीरचन्द का कहना था।

"मुझे इसमें किसी प्रकार का अनौचित्य दिखाई नहीं दिया। मेरा सारा कार्यक्रम अर्थात् दिनचर्या यथावत् रही। फिर मुझे यहाँ कुछ असुविधा भी है। यहाँ शौचालय और स्नानागार बहुत दूर हैं। आश्रम में रहने वालों के अनुपात में शौचालय और स्नानागार कम हैं, इसलिए समय अधिक नष्ट होता है। वहाँ कोठी में इसकी समुचित व्यवस्था होने से समय की बड़ी बचत होती है।

"यही कारण है कि मैं अपनी प्रातःकाल की चर्य्या पूर्ण कर समय पर यहाँ पहुँच भी गया हूँ।"

फकीरचन्द कुछ और बोलने वाला था कि तभी वह संन्यासी जो स्वामीजी को मंच पर से उठाकर लाया था, बोला, "मैं तो आपको यह बताने के लिए लाया था कि कल आपने जो कुछ प्रवचन में कहा है उसका कुछ अंश अपने मत के विरुद्ध भी था।"

"अच्छा, आप ऐसा समझते हैं? मैं समझता हूँ कि या तो आप को कुछ भ्रान्ति हुई है अथवा इस विषय में आपका ज्ञान अल्प है।"

"मैंने योग वाशिष्ठ का अध्ययन एक बार नहीं, बीस बार किया है।"

"आपने ऋग्वेद पढ़ा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वेद तो कर्मकाण्ड के ग्रन्थ हैं ?"

"स्वामीजी महाराज ! इसीलिए मैं कहता हूँ कि आपका ज्ञान बहुत ही अल्प है। योग वाशिष्ठ वेद की महिमा का बखान तो करता है किन्तु वेद का मर्म उसमें नहीं है।"

इस समय फकीरचन्द कहने लगा, "स्वामीजी ! प्रवचन का समय हो रहा है। श्रोतागण उत्सुकता से टकटकी लगाये इधर ही देख रहे हैं। अब यह वाद-विवाद का समय नहीं है। यह बात तो प्रवचन के उपरान्त भी हो सकती है। इस समय तो केवल इतना ही बताना चाहते हैं कि प्रवचन में सिद्धान्त के विरुद्ध कोई बात नहीं होनी चाहिए।"

"जहाँ तक मेरा ज्ञान है उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि पिछले दस दिन के अपने प्रवचन में मैंने कोई एक बात भी सिद्धान्त के विपरीत नहीं कही है।"

फिर उसी स्वामी ने कहा, "कल आपने एक समय यह कहा था कि स्वामी शंकराचार्य ने ऐसा कहकर भूल की है कि शूद्र यदि वेद वाक्य सुनले तो उसके कान में रांगा पिघलाकर डाल देना चाहिए। स्मृतिशास्त्र में तो ऐसा ही कहा गया है।"

उधर फकीरचन्द ने विवाद बढ़ते देखा तो कहा, "इस समय इस स्थान पर यह विवाद मत उठाइये। प्रवचन के उपरान्त इस विषय पर चर्चा कर लीजिए। सामने बैठी भीड़ बेचैन हो रही है। यदि हमने वहाँ जाने में विलम्ब किया तो वह उठकर इधर ही आने लगेगी।"

मंगलानन्द ने कहा, "यदि आप लोग कहें तो मैं प्रवचन नहीं करता। किन्तु स्वामीजी जिस बात पर बल दे रहे हैं मैं उसे अशुद्ध मानता हूँ, इसलिए मैं इनकी आज्ञा का पालन करने में असमर्थ हूँ।"

स्वामीजी कहने लगा, "देखिये स्वामीजी ! आज स्वामी शंकराचार्यजी का नाम प्रवचन में नहीं आना चाहिए।"

"ठीक है, नहीं आएगा। मैं आज उनके विरुद्ध कुछ नहीं कहूँगा। परन्तु वेद की बात तो कर सकता हूँ न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी हाँ।"

आश्रमवासी स्वामी जिसका नाम अभयानन्द था फिर कहने लगा, "इतना ही नहीं। आपको अद्वैतवाद का भी खण्डन नहीं करना चाहिए।"

"अद्वैतवाद क्या है ?"

"यही, एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।"

"और 'इदं त्रिविधं ब्रह्म' का क्या होगा ?"

"यह किसी नास्तिक का कथन है।"

"यह तो उपनिषद् की उक्ति है ?"

"किस उपनिषद् की ?"

इस समय लाला फकीरचन्द ने स्वामी अभयानन्द से कहा, "मैं विवाद को जनता के सम्मुख लाना नहीं चाहता। मैं स्वामी मंगलानन्दजी से कहूँगा कि वे अपना प्रवचन आरम्भ करें।"

अभयानन्द को मौन रहना पड़ा।

स्वामी मंगलानन्द मंच पर गये और माइक के सामने जाकर बैठ गये।

इससे पूर्व स्वामीजी ने अपने प्रवचन में हिन्दू समाज में जाति-प्रथा और छुआछूत की बात करते हुए इस विषय पर स्वामी शंकराचार्य के जो विचार थे उनकी चर्चा की थी। स्वामी मंगलानन्द ने वेद के उद्धरण से यह सिद्ध किया था कि यद्यपि शूद्र स्वयं पढ़कर वेद का अभिप्राय नहीं समझ सकता, परन्तु इसका कारण यह नहीं है कि उसने शूद्र कुल में जन्म लिया है, अपितु इसका कारण यह है कि वह अशिक्षित होने से उसको समझ नहीं सकता। किन्तु उसको अधिकार है कि वह किसी वेद के विद्वान् से उसका अर्थ सुने।

इस सन्दर्भ में ही स्वामी मंगलानन्द ने स्वामी शंकराचार्य के मत का उल्लेख किया था।

स्वामी अभयानन्द पहले तो यह समझा कि स्वामी मंगलानन्द शंकराचार्यजी की रचना को ठीक प्रकार समझ नहीं पाया है। किन्तु जब आश्रम के अन्य सुपठित जनों ने स्वामी मंगलानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कथन की पुष्टि की तो उसे लगा कि उसने स्वामी शंकराचार्य का अपमान किया है।

यह विचार आते ही अभयानन्द ने निश्चय किया कि मंगलानन्द स्वामी शंकराचार्य के विरुद्ध कुछ न कह सकें इसके लिए आन्दोलन करना चाहिए। यह उस आन्दोलन का ही एक रूप था, जो उसने लाला फकीरचन्द के सम्मुख व्यक्त किया था।

स्वामी मंगलानन्द ने उस दिन वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों की महिमा पर अपना प्रवचन केन्द्रित किया।

मंगलानन्द ने आज भी ब्राह्मण ग्रन्थों में परस्पर मत-भिन्नता का वर्णन कर श्रोताओं को यह बताने का यत्न किया कि इस सम्बन्ध में वेद ही प्रमाण हैं। जिस ग्रन्थ का कथन वेद के विरुद्ध जाता है उसे प्रामाणिक नहीं माना जाना चाहिए।

आश्रमवासी पहले तो स्वामीजी की बात को समझे ही नहीं। बाद में जब स्वामी मंगलानन्द ने बताया कि परमात्मा सर्वज्ञ है इस कारण उसके ग्रन्थ में परस्पर विरोधी बात नहीं हो सकती और जब उनमें परस्पर मतभेद हो और वे एक-दूसरे के विरुद्ध हों तो यह तो निश्चय ही है कि उनमें से एक अशुद्ध होगा। जो ग्रन्थ अशुद्ध है वह ग्रन्थ ईश्वर प्रणीत नहीं हो सकता।

मंगलानन्द ने उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में से अ क उदाहरण दिये जहाँ से एक का कथन दूसरे से भिन्न था। इससे उन्होंने यही सिद्ध किया कि वेद ही ईश्वरीय ग्रन्थ हैं।

उस दिन के प्रवचन के अन्त में उन्होंने बताया कि वेद सत्य ज्ञान के ग्रन्थ हैं। इस कथन को वह अगले दिन के प्रवचन में सिद्ध करेंगे।

ज्यों ही स्वामी मंगलानन्द ने अपना प्रवचन समाप्त किया, उसी समय स्वामी अभयानन्द ने माइक पर आकर घोषणा कर दी, "स्वामी मंगलानन्दजी महाराज आज सायंकाल ही ऋषिकेश वापस जा रहे हैं। इस कारण कल से यह कथा नहीं होगी। जनता की असुविधा का हमें खेद है।"

मंगलानन्द की वाणी में रस था और प्रभाव भी। उनकी सारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बातें तर्क-संगत और वेद-सम्मत होती थीं। प्रत्येक बात को वे सरल उदाहरणों से स्पष्ट किया करते थे। श्रोता उनका प्रवचन ग्रहण कर लेते थे।

अभयानन्द की इस घोषणा से एक बार तो सब विस्मय करने लगे थे। फिर कुछ लोग उठकर स्वामी मंगलानन्दजी के समीप पहुँचने लगे।

जियाराम तो मंच के समीप ही नीचे बैठा था। वह प्रारम्भ से ही स्वामी अभयानन्द की गतिविधियों को ध्यान से देख रहा था और प्रवचन के अवसर पर उसके मुख पर उभरने वाले भावों का भी अनुमान लगा रहा था।

इससे जियाराम ने यही अनुमान लगाया था कि स्वामी मंगलानन्द की बढ़ती ख्याति से अभयानन्द को ईर्ष्या होने लगी है। अब जब अभयानन्द ने इस प्रकार की घोषणा की तो उसको अपना अनुमान सत्य प्रतीत हुआ। स्वामी मंगलानन्द ने जब यह कह दिया कि 'इस विषय पर वे अगले प्रवचन में प्रकाश डालेंगे।' तो सहसा अभयानन्द का यह कहना कि स्वामी मंगलानन्दजी सायंकाल ही ऋषिकेश वापस जा रहे हैं, उसके अनुमान की पुष्टि के लिए पर्याप्त प्रमाण थे।

जियाराम अपने व्यापार में तुरन्त निर्णय करने में विश्वास करता था। इस समय भी उसने तुरन्त निश्चय किया और लपक कर मंच पर चढ़ माइक्रोफोन हाथ में लेकर बोला, "कल से स्वामी मंगलानन्दजी महाराज का प्रवचन प्रातःकाल इसी भाँति साढ़े छः बजे, १०८ बाबर लेन पर होगा। यह प्रवचन कम-से-कम एक मास तक तो होगा ही। जिन सज्जनों को सुनने की इच्छा हो वे वहाँ पधार सकते हैं।"

जो लोग स्वामी मंगलानन्द से यह जानने की अभिलाषा से मंच की ओर आये थे कि सहसा यह परिवर्तन कैसा, तो उनको जियाराम की घोषणा से सान्त्वना मिल गयी। उन्होंने केवल यही पूछा, "सहसा यह स्थान-परिवर्तन क्यों करना पड़ रहा है?"

इसका उत्तर किसी ने नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब स्वामी मंगलानन्द प्रवचन के उपरान्त मंच से उतरे थे तो आश्रम की प्रबन्ध समिति का अध्यक्ष लाला फकीरचन्द उनको उनकी कुटिया की ओर ले चला। इस कारण वह न तो प्रवचनों के बन्द होने की सूचना पर लोगों की प्रतिक्रिया के विषय में ही जानता था और न ही उसने जियाराम की घोषणा ही सुनी थी। मंगलानन्द को भी जियाराम की घोषणा के विषय में ज्ञान नहीं था। वे तो अभयानन्द की घोषण का अभिप्राय जानने के लिए फकीरचन्द के साथ-साथ चल दिये थे।

यह लाला फकीरचन्द ही थे जिन्होंने प्रवचन से पूर्व स्वामी जी से कहा था कि वह अपने प्रवचन में स्वामी शंकराचार्य के विरुद्ध कुछ न कहें, इ से वह अभयानन्द के क्रोध को शान्त करने का यत्न करना चाहता था।

अभयानन्द की घोषणा से लाला फकीरचन्द भी असुविधा अनुभव कर रहा था। वह समझता था कि अभयानन्द ने यह घोषणा करके अपने अधिकार का दुरुपयोग किया है।

शास्त्र के विषय में जो परस्पर मतभेद उत्पन्न हो गया था, उसके विषय में लाला फकीरचन्द का विचार था कि उसको विद्वानों की छोटी-सी सभा में हल किया जाये।

इस समय अभयानन्द की घोषणा ने स्थिति को सर्वथा बदल दिया था। उसका यह भी विचार था कि स्वामीजी ने आश्रम समिति के अध्यक्ष के अधिकार को भी एक प्रकार से आघात किया है। वह पहले दिन से ही स्वामी मंगलानन्द के प्रवचनों को सुन रहा था और उसे उनमें रस आ रहा था। उसे यह भी अनुभव हो रहा था कि इन प्रवचनों को सुनकर उसके ज्ञान में वृद्धि हो रही है।

फकीरचन्द स्वामीजी को उस कुटिया में ले गया जिसमें वे पिछले दस दिन से रह रहे थे। वहाँ स्वामीजी का संक्षिप्त-सा सामान रखा हुआ था। कुछ पुस्तकें भी एक चौकी पर रखी थीं। एक तखत उस कुटिया में रखा था। जिस पर एक भगवा चादर बिछी हुई थी।

स्वामीजी ज्यों ही अपने स्थान पर बैठे कि बाहर से किसी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा, "महाराज ! हम भीतर आ सकते हैं ?"

स्वामी मंगलानन्द इसका कुछ उत्तर दें इससे पूर्व ही लाला फकीरचन्द ने कहा, "कहिए, आप किसलिए आना चाह रहे हैं ?"

एक व्यक्ति भीतर चला गया और स्वामीजी के सम्मुख खड़ा होकर पूछने लगा, "अभी-अभी लाउड स्पीकर पर जो घोषणा हुई है वह ठीक है क्या ?"

"क्या घोषणा हुई है ?"

स्वामी मंगलानन्द को केवल दो घोषणाओं का ही ज्ञान था। एक तो वह जो स्वयं उन्होंने की थी कि वेद प्रामाणिक होने की बात कल के प्रवचन में समझाई जाएगी। और दूसरी घोषणा जो अभयानन्द ने की थी कि स्वामीजी आज सायंकाल ही ऋषिकेश वापस जा रहे हैं।

इन दो परस्पर विरोधी बातों के कारण जो वातावरण उत्पन्न हुआ था उसमें उन्होंने जियाराम की घोषणा को सुना नहीं था। इसलिए उन्होंने प्रश्न किया था।

भीतर आये श्रोता ने कहा, "यही कि कल से आपका प्रवचन १०८ बाबरलेन पर होगा।"

"यह किसने कहा है ?"

एक अन्य श्रोता भीतर आकर कहने लगा, "कोई कह रहा था परन्तु तभी लाउडस्पीकर बन्द कर दिया गया था।"

अगले दिन से बाबर लेन पर प्रवचन होने की घोषणा करने वाले के विषय में स्वामी मंगलानन्द ने अनुमान लगा लिया था कि वह किसने की होगी। उन्होंने जियाराम को मंच पर चढ़ते हुए देख लिया था।

स्वामीजी के कथन से पूर्व ही लाला फकीरचन्द ने प्रश्नकर्ता के प्रश्न की पुष्टी करते हुए कहा, "हाँ, हाँ ! कल से स्वामीजी का प्रवचन, १०८, बाबरलेन, नयी दिल्ली पर होगा।"

मंगलानन्द ने इस समय कहा, "किन्तु मैं तो आज सायंकाल ही ऋषिकेश जा रहा हूँ ?"

"गाड़ी में आपका आरक्षण नहीं हो पाया है, इसलिए आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिना आरक्षण के जाने पर कष्ट होगा।"

मंगलानन्दजी को हँसी आ गई। वे समझ गये कि मामला व्यवस्थित किया जा रहा है। उन्होंने उस श्रोता को सम्बोधित कर कहा, "स्थान यहाँ से दूर अवश्य है किन्तु इससे वह स्थान अच्छा है।"

श्रोतागण इस उत्तर से सन्तुष्ट हो इस विषय में अन्य श्रोताओं को बताने के लिए वहाँ से चल दिये।

लाला फकीरचन्द ने कहा, "आपके पीने के लिए दूध आ रहा है और आपको लेने के लिए लाला जियाराम भी इधर ही आ रहे हैं।"

जियाराम के आते ही स्वामी अभयानन्द भी वहाँ पर आ गया। उनके पीछे-पीछे एक आश्रमवासी एक गिलास में गरम दूध लिये चला आ रहा था। मंगलानन्द ने गिलास का दूध पकड़ा और अभयानन्द की ओर मुस्कराकर पूछा, "पी लूँ, आपकी अनुमति है न?"

अभयानन्द से पूर्व इस बार भी लाला फकीरचन्द ने कहा, "यह दूध स्वामीजी नहीं पिला रहे हैं। आश्रम की समिति की ओर से इसका प्रबन्ध है और समिति का प्रधान आपके सम्मुख खड़ा है।"

अभयानन्द ने फकीरचन्द की ओर देखकर कहा, "हममें परस्पर मतभेद हो गया है।"

"यदि मतभेद हो गया था तो कल आप अपना प्रवचन करते। आज भी आप अपनी बात कह सकते थे। किन्तु इस प्रकार तो आपने मंगलानन्दजी की बात को और अधिक ख्याति प्रदान कर दी है।"

"मैं समझता हूँ कि स्वामी मंगलानन्द आर्यसमाजी हैं।"

"आर्यसमाजी अछूत तो नहीं होते? बिना रेलगाड़ी में स्थान आरक्षित कराये आपने स्वामीजी को यहाँ से जाने का नोटिस किस प्रकार दे दिया है।"

इस समय जियाराम ने कहा, "मैं समझता हूँ कि यह सब ठीक ही हो रहा है। चलिये महाराज! मोटर गाड़ी आपकी प्रतीक्षा कर रही है।"

मंगलानन्द ने पूर्ण स्थिति को जब समझ लिया तो धीरे-धीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध पीना आरम्भ कर दिया। दूध समाप्त होने पर उन्होंने खाली गिलास ब्रह्मचारी को पकड़ाया। उस समय लाला फकीरचन्द ने कहा, "मैं सायंकाल चार बजे स्वामीजी के दर्शन करने के लिए आऊँगा।"

"ठीक है, सायंकाल की चाय आप वहीं पीजियेगा।"

स्वामी मंगलानन्द उठे तो जियाराम उनको लेकर आश्रम के द्वार की ओर चल दिया।

जब जियाराम स्वामी मंगलानन्द को लेकर वहाँ से चला गया तो लाला फकीरचन्द ने स्वामी अभयानन्द से कहा, "महाराज ! आपने यह क्या कर दिया है ?"

"जो मैंने उचित समझा, वह किया।"

"मैं इसे अनुचित समझता हूँ। आपने एक विद्वान् पुरुष का अपमान किया है।"

"वह विद्वान् नहीं, केवल चतुर वक्ता मात्र है।"

"उन्होंने कोई अविद्वत्ता की बात कही थी ?"

"हाँ, ब्राह्मण-ग्रन्थों को अमान्य कहा है।"

"इसके प्रमाणस्वरूप उन्होंने उनके परस्पर विरोधी होने की बात भी कही है।"

"वह सत्य नहीं, झूठ है। ब्राह्मणग्रन्थ और वेद में भेद तो है। किन्तु उसका कारण यह है कि ब्राह्मण-ग्रन्थों की रचना कालान्तर में हुई है। इस कारण उनको प्रामाणिक माना जाता है।"

यह सुनकर फकीरचन्द हँस पड़ा। उसने कहा, "इसके लिए तो मैं नगर के आठ-दस विद्वानों को बुलाकर इस विषय पर वाद-विवाद कराने वाला था। उस समय सारी बात स्पष्ट हो जाती।"

"मैं तो मानता हूँ कि उसका कथन सर्वथा अशुद्ध है।"

"उन विद्वानों के समाज में आप उनकी बात को अशुद्ध सिद्ध करते तो इससे जहाँ एक ओर उनकी निन्दा होती वहाँ आपकी ख्याति और भी बढ़ जाती।"

"मैं इस विवाद को उठाना ही नहीं चाहता।"

"एक संन्यासी का अपमान करना आपको अच्छा लगा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उसको गाली तो नहीं दी।"

"गाली से कुछ अधिक ही किया है। आपने तो उसको धक्के देकर इस आश्रम से ही बाहर निकाल दिया है।"

अभयानन्द मौन रहा।

फकीरचन्द बोला, "मैं शीघ्र ही आश्रम ट्रस्ट प्रबन्ध समिति की बैठक बुला रहा हूँ। उसमें यह सारी घटना विचारार्थ रखूँगा।"

"यह किसलिए?"

"वह इसलिए कि इस साधु आश्रम में एक असाधु घुस आया है। यद्यपि मैं उसको पसन्द नहीं करता तदपि मैं उससे झगड़ा भी नहीं करना चाहता। मैं प्रबन्ध समिति को इस विषय में हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित करूँगा।"

"तो मैं असाधु हूँ?"

"मैं साधु उसको मानता हूँ जो सबके कल्याण की कामना करे।"

"दुष्ट की भी?"

"साधु के लिए तो सब समान हैं। जहाँ वह भले लोगों के कल्याण के लिए भी यत्न करता है। परन्तु आपने तो झूठ बोलकर इस विद्वान् को यहाँ से भगाने का यत्न किया है। उसने तो स्वयं कहा था कि वह कल यह सिद्ध करने का यत्न करेगा कि वह वेदों को प्रमाण क्यों मानता है और आपने अपने मन से ही कह दिया कि वह रात की गाड़ी से ऋषिकेश वापस जा रहा है। यह साधु व्यवहार नहीं है।"

"आजकल की सभ्यता वालों के लिए यह ठीक ही है। वह आर्यसमाजी है। उसके साथ मैं यही व्यवहार उचित समझता हूँ।"

"ठीक है, आप जानिए, आपका वह आर्यसमाजी जाने। मेरे लिए तो सब संन्यासी समान हैं। आप अपने झगड़े परस्पर तय कर लें।"

अभयानन्द समझता था कि यदि एक लाला गया तो कोई अन्य उसके स्थान पर आ जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

मंगलानन्द आदि जब सब लोग मोटर में बैठ गये तो जियाराम हँस पड़ा। स्वामीजी अगली सीट पर थे और जियाराम पिछली सीट पर।

स्वामीजी ने पूछा, "क्यों जियाराम ! कैसे हँसी आ गई ?"

"हँसी इस कारण आ रही है कि मनुष्य भगवे कपड़े पहन लेने पर भी मनुष्य ही रहता है। वह देवता नहीं बन जाता।"

"तुमने कल से बारबरलेन में प्रवचन की घोषणा कैसे कर दी ?"

"वह इसलिए कि स्वामी अभयानन्द आपको दिल्ली से खदेड़ने की योजना बना चुका था।"

"मैं समझ नहीं पाया कि उसका व्यवहार ऐसा क्यों रहा है। मैंने शास्त्र-विरुद्ध तो कोई बात की नहीं।"

"उसको आपकी शास्त्रचर्चा में किसी प्रकार की रुचि नहीं थी। उसको तो आपके प्रभाव से ईर्ष्या होने लगी थी।"

"साधु होकर भी ईर्ष्या करता है ?"

"किन्तु बाबा ! ईर्ष्या तो साधु-असाधु को देखती नहीं। यह सब तो उस नाटे कद के साधु ने अपनी सुख-सुविधा के लिए किया है। आपके प्रवचनों का प्रभाव और आकर्षण आश्रम में उसकी स्थिति को विचलित कर रहा था।"

"मैं तो उसको वहाँ से हटाने का किसी प्रकार का यत्न नहीं कर रहा था ?"

"आप तो कुछ नहीं कर रहे थे किन्तु आपके प्रवचन करने की योग्यता उसको ऐसा करती दिखाई दे रही थी।"

"हो सकता है।"

"शेष तो कभी आपको समय आने पर विदित हो जायेगा।"

"एक बात ठीक हुई है ! यहाँ रहकर मैं सुधीर का 'कोच' बन सकूँगा।"

"बहुत सुन्दर !" जियाराम के मुख से सहसा निकल गया। अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करने के लिए जियाराम ने सुधीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कहा, "सुधीर ! बावाजी के चरण स्पर्श करो। ये आज से तुम्हारे 'कोच' बन गए हैं।"

सुधीर स्वामीजी के बराबर में बैठा था। उसने वहीं से अपने हाथ नीचे करके स्वामीजी के चरणस्पर्श करने का यत्न किया। स्वामी मंगलानन्द ने इस ओर तो कोई ध्यान नहीं दिया, किन्तु वे बोले, "इसको मेरे साथ रहना होगा।"

"यह तो अभी अल्पवयस्क है, इस कारण यह अभी पूर्णतया अपनी माता के अधीन है। यह अधिकार उसका ही है।"

"इसकी माता की अनुमति से ही मैं यह सब करूँगा। अभी तो मैं इसको ब्रह्मचारी के रूप में अपने समीप रखूँगा। शिक्षा समाप्त होने पर विवाह कर यह गृहस्थ में प्रविष्ट होने के लिए स्वतन्त्र होगा।"

"बाबा ! मैं यह नहीं कह रहा था। मैं तो यह कह रहा था कि इसके अल्पवयस्क होने के कारण इसकी माँ इसको घर से बाहर कदाचित् जाने दे अथवा न भी जाने दे।"

"यह तो समय आने पर देख लिया जायेगा। अभी तो तुमने यह घोषणा की है कि एक मास तक मेरा यहाँ प्रवचन होगा।"

"जी हाँ, इससे मेरा यही अभिप्राय था कि यदि श्रोतागण चाहें तो आपको स्थायी रूप से यहाँ ठहराया जा सकता है।"

"इससे तो तुम्हारी कोठी ही साधु आश्रम बन जायेगी। तब ऋषिकेश के साधु आश्रम से लोग यहाँ प्रवचन सुनने के लिए आया करेंगे।"

"इस विषय पर भी विचार कर लिया जायेगा।"

"जियाराम तो विगत पच्चीस वर्ष में बहुत बदल गया-सा लगता है।"

"महाराज ! बदले तो आप भी हैं। दुकानदार से आप ज्ञान-ध्यान के प्रवचनकर्ता हो गये हैं।"

मोटर कोठी पर पहुंच गई थी। यह वार्त्तालाप यहाँ समाप्त हुआ और सब लोग उतरकर ड्राइंगरूम में पहुँच गए। वहाँ पहुँच-कर चन्द्ररानी ने कहा, "अब आप थोड़ी देर आराम कर लीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लोगों ने तो अभी स्नान भी नहीं किया है। प्रातःकाल के अल्पाहार का समय अभी हुआ नहीं है। उस समय मैं आपको कमरे से बुला लाऊँगी।"

उसी समय कृष्ण अपने बिस्तर पर से उठकर इनके पास चला आया। उसकी नींद अभी खुली थी।

उसे उस अवस्था में देख स्वामीजी ने पूछा, "तो तुम्हारी नींद अभी खुली है ?"

"हाँ बाबा! वह भी सोने के कमरे में कुछ अभाव होने के कारण नींद आज कुछ जल्दी ही खुल गई है।"

स्वामीजी मौन रहे। कृष्ण ने ही फिर कहा, "मुन्नी भी अपने कमरे को खाली देख मेरे पास आ गई थी।"

"तो वह कहाँ है ?"

"अभी-अभी स्नान करने के लिए गई है। वह अपने कोच को ढूँढ़ रही थी।"

मिस पीटर वहाँ से अपनी शिष्या को देखने के लिए चली गई।

सुधीर ने बाबा की उंगली पकड़ी और उनको उनके कमरे की ओर लेकर चलने लगा। चलते-चलते स्वामीजी ने उससे पूछा, "तुमको स्नान नहीं करना है ?"

"करना है, अभी जब समय मिलेगा कर लूंगा।"

"ठीक है। आज मैं तुम्हारी परीक्षा लूंगा। मेरा अभिप्राय है है कि मैं तुम्हारी स्कूली पढ़ाई की परीक्षा लूंगा।"

"बाबा! मैं अपने स्कूल की पुस्तकें ले आऊं ?"

"इसकी आवश्यकता नहीं। मैं मौखिक परीक्षा ही लूंगा।"

तबतक वे स्वामीजी के कमरे में पहुँच गए थे।

"किन्तु बाबा! स्कूल में तो परीक्षा लिखित ही होती है।"

"हाँ, वहाँ ऐसा ही होता है। परन्तु मेरे विद्यालय में इसके विपरीत होता है। यह तो मैं मौखिक परीक्षा के उपरान्त निश्चित करूँगा कि तुम्हारी लिखित परीक्षा भी लेनी चाहिए अथवा कि नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में यथास्थान बैठ जाने पर स्वामीजी ने अपने झोले में से एक पुस्तक निकाली और उसको सुधीर को पकड़ाते हुए कहने लगे, "तनिक इसमें से पढ़कर तो सुनाओ।"

सुधीर ने पुस्तक हाथ में ली और उसका नाम पढ़ा। लिखा था 'गीतासार'। फिर उसने पूछा, "कहाँ से पढ़ूँ?"

"जहाँ से तुम्हारी इच्छा हो।"

सुधीर ने पृष्ठ खोला ही था कि तभी मिस पीटर प्रमिला को लेकर वहाँ आ गई। उसने द्वार पर से ही पूछा, "क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?"

स्वामीजी ने उसको भीतर आने की अनुमति दी और सुधीर से कहा, "अब आज सायंकाल चाय पीने के उपरान्त मैं तुम्हारी मौखिक परीक्षा लूँगा। अब तुम जाकर इस पुस्तक में से पढ़ो। प्रमिला की कोच शायद कुछ पूछना चाह रही है।"

बाबा की आज्ञा सुन सुधीर वहाँ से उठकर चला गया।

मिस पीटर को बैठाकर बाबा ने कहा, "क्यों अय्यर साहब से झगड़ा कर बैठी हो?"

पीटर अपने रहस्य की बात स्वामीजी के मुख से सुनकर अवाक् सी हो गई। उसे चुप देख स्वामीजी ने आगे कहा, "उससे झगड़ा होने के कारण ही रात-भर रोती भी रही हो?"

"आपको यह सब किसने बताया है? प्रातःकाल जब हम प्रवचन के लिए जा रहे थे उस समय भी आपने इस प्रकार का संकेत किया था। आपका कथन अक्षरशः सत्य तो है किन्तु इसको अभी तक मेरे और अय्यर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता। और अय्यर जब प्रातःकाल हवाईपत्तन के लिए गया है उससे पूर्व वह यहाँ किसी से मिलकर गया नहीं है।"

"देखो बेटी! इस बात को तुम छोड़ दो कि मुझे किसने बताया है। मैं तो यह भी जानता हूँ कि तुम्हारा उससे झगड़ा किस कारण हुआ है।"

"तब तो आप मेरा प्रश्न भी जान ही गये होंगे?"

"हाँ, जान गया हूँ। उसके विषय में जो कुछ मुझे कहना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भी मैं जानता हूँ। मैं तो तुमको यही परामर्श दूंगा कि तुम गर्भपात नहीं कराओ। यह घोर पाप है, इसके उपरान्त जीवन-भर तुम्हें अशान्ति रहेगी।"

"बच्चा होने पर जब सब उसके पिता के विषय में पूछेंगे तो?"

"तो बता देना कि धूर्त अय्यर से सम्बन्ध बना था जो अब बच्चे के पालन-पोषण का उत्तरदायित्व स्वीकार करने में संकोच कर रहा है।"

"इससे तो जग हँसाई हो जायेगी।"

"नहीं, अबला होने के कारण दया की पात्र बन जाओगी। परन्तु क्या तुम शोभा अथवा अशोभा को अन्य व्यक्ति के कहने पर मानती हो? क्या इसका तुम्हारी अपनी आत्मा से कुछ सम्बन्ध नहीं है? यदि इस पेट में पलने वाले जीव की तुम हत्या करोगी तो इससे तुम हत्यारी नहीं कहलाओगी? और उसका फल देने वाला क्या लोगों से पूछकर फल देगा?"

"बाबा! लोकनिन्दा भी तो कुछ होती है?"

"जब पाप कर्म के कारण लोकनिन्दा होती है तो लोकनिन्दा और ईश्वरीय दण्ड दोनों समानान्तर रेखाओं में हो जाया करते हैं। परन्तु अधिकांशतया तो यह मूर्ख संसार पुण्यकर्म को भी निन्दनीय मानने लगता है। उस समय लोक निन्दा निस्तेज हो जाया करती है। उसका कोई फल भी नहीं मिलता।"

पीटर मौन रही।

बाबा ने पूछा, "तुम क्या यीशु मसीह के पिता के विषय में जानती हो?"

"जी, वह तो परमात्मा था।"

"परमात्मा तो सबका ही पिता है। वह तुम्हारा भी पिता है और मेरा भी पिता है। बिना उसकी कृपा और संरक्षण के तो हम श्वास भी नहीं ले सकते। परन्तु यह तो सब प्राणियों के साथ होता है, सब उसकी ही सन्तान हैं।

"किन्तु मैं तो ईसा मसीह के पिता के सम्बन्ध में पूछ रहा हूँ। उसके पालक और रक्षक के विषय में पूछ रहा हूँ। वह तो मेरी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता ही था। यद्यपि वह उसका जन्मदाता नहीं था परन्तु पालन-कर्ता तो वही था। इसी कारण उसका नाम अमर हो गया है। यही बात यहाँ भी हो सकती है।"

पीटर कुछ निश्चय नहीं कर पा रही थी। वह चुप रही।

स्वामीजी ने पूछा, "अभी तक सुधीर की दादी से इस विषय में बात की है अथवा नहीं?"

"नहीं की। मैं जानती हूँ कि इस घर के सब प्राणी मुझे अस्पताल जाने का ही परामर्श देंगे।"

"पूछकर तो देखो। यदि तुम्हारी बात ही सत्य हो तो फिर उनको कहना कि मैं उसके विपरीत यह सम्मति दे रहा हूँ कि उस आने वाले जीव के आने में बाधा उपस्थित न की जाय और उसके पालन-पोषण का प्रबन्ध किया जाय। यदि तब भी उनको स्वीकार न हो तो उनको मेरे पास ले आना। उस समय मैं उनको लोक-निन्दा और आत्मग्लानि में अन्तर स्पष्ट कर दूँगा।"

इस प्रकार पन्द्रह-बीस मिनट तक मिस पीटर स्वामीजी से बात करती रही। अन्त में वह अनिश्चित मन से उठी। उठते हुए उसके मन में एक बात नयी उत्पन्न हुई। स्वामीजी ने उसकी उस वासनावृत्ति के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा था जिसके फल-स्वरूप उसकी यह स्थिति हो गई थी। न उन्होंने उसको उसके लिए दोषी ही कहा था। केवल उन्होंने अय्यर को दुष्ट कहा था।

इस प्रकार की मानसिक द्विविधा से वह कमरे से उठकर जाने लगी तो उसी समय कृष्ण कमरे में आ गया। किन्तु इससे न तो वह झिझकी और न वहाँ रुकी। वह चली गई।

उसके जाने पर कृष्ण मुस्कराता हुआ कहने लगा, "महाराज! यह आपकी शिष्या बन रही लगती है?"

"क्यों?"

"पहले जब कभी अय्यर यहाँ आता था तो उसको छोड़ने के लिए यह हवाई पत्तन जाया करती थी। परन्तु आज उसके विपरीत वह आपके साथ आपका प्रवचन सुनने के लिए चली गई। वहाँ जा कर उसके पल्ले क्या पड़ा होगा यह कहना कठिन है। यह हिन्दी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही साधारण समझती है।"

"सब भगवान् की महिमा है, वही सबका मार्ग-दर्शन करता है।"

"दुष्ट का भी ?"

"हाँ, दुष्ट का भी। किन्तु वह केवल मार्ग-दर्शन ही करता है। वह किसी की बाँह पकड़ उसको चलाता नहीं है। यद्यपि वह ठीक दिशा में ही मार्ग-दर्शन करता है परन्तु मनुष्य चलता है अपनी दिशा में ही।

"वह सबको भले कर्मों का मार्ग दिखाता है परन्तु अपने मार्ग का चयन तो मनुष्य स्वयं ही करता है। और उसके मार्ग का निर्वाचन अपनी मानसिक अवस्था पर निर्भर करता है।

"मानसिक अवस्था इन्द्रिय सुख और बुद्धि इन दो शारीरिक शक्तियों के अधीन होती है।

"जो बुद्धि का प्रयोग करते हैं तथा बुद्धि को इन्द्रिय सुखों पर नियन्त्रण करने का अवसर देते हैं वे एक मार्ग का अवलम्बन करते हैं और इन्द्रिय सुखों का भोग करने वाले दूसरे मार्ग पर चल पड़ते हैं।"

कृष्ण बोला, "महाराज ! मैं तो आपसे अपने विषय में बात करने आया था, यह पीटर का प्रसंग तो यों ही चल पड़ा है।"

"हाँ, बोलो।"

"मुझे अभी-अभी पिताजी ने जो कुछ कहा है वह भी लगता है आपके संसर्ग का ही परिणाम है।"

"क्या कहा है तुम्हारे पिताजी ने ?"

"उनका कहना है कि वे संन्यास ले रहे हैं ?"

यह सुन मंगलानन्द ने आँखें मूंद लीं। कुछ क्षण तक इस प्रकार विचार करने के उपरान्त उन्होंने कहा, "इस समय तुम्हारे पिताजी की आयु बावन वर्ष की है। यदि वे संन्यास लेना चाहते हैं तो अनुचित नहीं है।"

"परन्तु उनका यह वैराग्य तो छूत के कारण उत्पन्न हुआ है। छूत की बीमारी तो बड़ी भयंकर होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम क्या चाहते हो ?"

"हमें दिल्ली में आये बारह वर्ष हुए हैं। इन बारह वर्षों में पिताजी ने दिल्ली के बड़े-बड़े लोगों से सम्पर्क बनाया है। उनके संन्यास लेने से वे सम्पर्क टूट जायेंगे तो काम भी ठप्प हो जाएगा।"

"यह बात तो तुम्हें अपने पिताजी को समझानी चाहिए।"

"मैं आपसे इस विषय में सहायता की आशा से आया हूँ।"

"मैं तो उसके कल्याण की कामना करता हूँ।"

"आप उन्हें समझा दीजिये। मुझे सम्पर्क बनाने का अवसर दें। इसमें पाँच-दस वर्ष लग जायेंगे। उसके बाद फिर वे जो चाहें करें।"

"यह बात तुम स्वयं उनसे क्यों नहीं कहते ? यदि मुझे कहना ही पड़ा तो मैं तो यही उचित परामर्श दूँगा कि वह काम से अवकाश ग्रहण कर अगले आश्रम की तैयारी करे।"

"महाराज ! वह तैयारी तो वर्तमान रूप में रहते हुए भी हो सकती है।"

"हाँ, हो तो सकती है। परन्तु ज्यों-ज्यों तैयारी होती जायेगी त्यों-त्यों काम बदलता जायेगा। मेरा अभिप्राय यह है कि अपना काम छोड़कर नये आश्रम का काम होने लगेगा।"

कृष्ण ने हाथ जोड़कर कहा, "एक बार तो आप उनको समझा ही दीजिये।"

"पहले तुम स्वयं ही कहो। मुझ से यदि पूछा गया तो मैं समझा दूँगा।"

कृष्ण को इससे सन्तोष हुआ। उसने बाबा के चरणस्पर्श किये और चला गया। मंगलानन्द मुस्कराते हुए उसे जाते देखते रहे।

कृष्ण ने अल्पाहार के समय अपनी बात आरम्भ की। उस समय दो प्राणियों के अतिरिक्त सभी उपस्थित थे। मिस पीटर और सुधीर नहीं आये थे।

स्वामी मंगलानन्द ने इस अभाव का अनुभव तो किया किन्तु उन्होंने इस विषय में किसी से कुछ पूछा नहीं।

कृष्ण ने अपनी बात आरम्भ करते हुए स्वामीजी से कहा, "महाराज ! हमारे पिताजी संन्यास लेने की बात कर रहे हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी ने पूछा, "ठेकेदार साहब ! इस समय आपकी आयु कितनी है ?"

"संन्यास का आयु से क्या सम्बन्ध ?"

"आयु से विशेष सम्बन्ध तो कुछ भी नहीं । यह तो बुद्धि और जीवात्मा के सम्पर्क की बात है। आयु का मुख्य सम्बन्ध तो शरीर से होता है। शरीर जीवन के बीस-पच्चीस वर्ष तक वृद्धि करता है तद-नन्तर स्थिर होकर परिपक्व होता है। किन्तु पचास वर्ष के उपरान्त इसका अर्थात् शरीर का ह्रास होने लगता है।

"परन्तु वैराग्य मुख्यतया जीवात्मा का विषय है। बुद्धि इस सम्बन्ध में जीवात्मा का पथ-प्रदर्शन करती है। बुद्धि मन और जीवात्मा को अपने अधीन कर अन्य कार्यों से अवकाश दिलाने का यत्न करती है।"

जियाराम ने यह सुना तो कहने लगा, "तब तो महाराज ! मेरे संन्यास लेने में आयु तो किसी प्रकार की बाधक नहीं है।"

"देखो, जब मैं लाहौर से लापता हुआ उस समय तुम सत्ताईस वर्ष के थे और कृष्ण पाँच वर्ष का था। अब इस समय तुम्हारी आयु बावन वर्ष की है। यह घर छोड़ने की आयु है। इस कारण तुम्हारा विचार अनुचित नहीं है।"

"परन्तु पिताजी घर कहाँ छोड़ रहे हैं। यह तो परिवार को छोड़ने के लिए कह रहे हैं। दूसरे शब्दों में, ये हमको भगा रहे हैं।"

मंगलानन्द मुस्करा रहा था। उसने जियाराम की ओर देखा। इस समय चन्द्ररानी ने कहा, "हमारा बुद्धिमान पुत्र क्या कहना चाह रहा है, यह मैं बताती हूँ। आज स्नान के उपरान्त इसके पिता ने इसको अपने कार्यालय में बुलाकर कहा कि वे संन्यास ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह कोठी उनका आश्रम बनेगा इसलिए कृष्ण और उसके परिवार को चाहिए कि वे अपनी दूसरी कोठी में चले जाएँ।"

मंगलानन्द ने पूछा, "दूसरी कोठी कहाँ है ?"

"वह ओखला के निकट फ्रेंड्स कालोनी में है। वह इससे बहुत बड़ी है। अभी नयी बनी है। उसमें फर्नीचर आदि लगाया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कृष्ण का कहना यही है कि उसके पिता घर अर्थात् कोठी तो छोड़ नहीं रहे वे तो परिवार को कह रहे हैं कि वे यह घर छोड़ दें।"

मंगलानन्द ने कहा, "जियाराम ! तुम स्वयं उस कोठी में क्यों नहीं चले जाते ?"

"वह इसलिए कि मैंने आज साधु आश्रम में घोषणा की है कि अब आपका प्रवचन इस कोठी में हुआ करेगा। इस कारण आप तो यहीं रहेंगे। और जहाँ आप रहेंगे वहीं साधु आश्रम बन जायेगा। फिर वहाँ कृष्ण जैसे गृहस्थ जीव किस प्रकार रह पायेंगे ?"

"अच्छा, तो यह बात है ? किन्तु मैं समझता हूँ कि साधु आश्रम में कृष्ण के निवास का किसी प्रकार का विरोध नहीं है। साधु जन आश्रम से अतिरिक्त भी रह सकते हैं।"

चन्द्ररानी कहने लगी, "किन्तु मैं यह नहीं चाहती। यदि ये संन्यास ले रहे हैं तो मैं यहाँ नहीं रहूँगी। जहाँ मैं रहूँगी, वहीं सुधीर रहेगा और जहाँ सुधीर रहेगा वहीं उसके माता-पिता भी रहेंगे।"

मंगलानन्द ने कहा, "सुधीर तो छात्रावास में भी रह सकता है किन्तु वहाँ तुम नहीं रह सकतीं।"

"इसी कारण तो मैं उसको छात्रावास में रखने के विरुद्ध हूँ। मैं उसे अपने साथ रखना चाहती हूँ।"

मंगलानन्द को हँसी आ गई। उसने पूछा, "परन्तु वह है कहाँ ?"

"वह अपनी बहिन और उसकी कोच के साथ हवाई पत्तन गया है। बम्बई से सुधा आ रही है।"

"तुमने उसको फोन किया था ?"

"वह तो रात ही कर दिया था। किन्तु उसने प्रातःकाल चार बजे फोन किया था कि वह नौ बजे तक दिल्ली पहुँच जायेगी। उसके साथ उसका पूर्ण परिवार भी आ रहा है।"

कृष्ण बोल पड़ा, "अच्छा, तो इसी कारण अभी तक अल्पाहार की सामग्री नहीं आई ?"

उसी समय बाहर मोटर का शब्द सुनाई दिया। चन्द्ररानी बोली, "लगता है वे लोग आ गए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहकर वह उठी तो कृष्ण और प्रतिभा भी उठकर उसके पीछे चले गये। उनके जाने पर स्वामीजी ने जियाराम से कहा, "अभी कोठी बदलने से बड़ी गड़बड़ हो जायेगी ?"

"क्या गड़बड़ हो जायेगी ?"

"इससे यह मान लिया जायेगा कि पिता-पुत्र पृथक्-पृथक् हैं। इससे व्यापार में बाधा उत्पन्न हो जायेगी।"

"यह तो आरम्भ में दो-चार मास होगा ही। तब तक मैं सब प्रबन्ध कर दूँगा।

"और महाराज ! यह एक बात तो बता ही नहीं रहा है।"

तभी सुधा अपने भरे-पूरे परिवार के साथ आ उपस्थित हुई। उसके साथ उसका पति, बच्चे तथा उसकी सास आदि थे।

इस प्रकार आठ प्राणियों के बढ़ जाने से कुर्सियाँ कम पड़ीं तो तिपाइयाँ लगा दी गयीं। उसके बाद अल्पाहार का प्रबन्ध होने लगा।

मंगलानन्द ने सुधा को देख कहा, "सुधा तो बहुत ही बदल गई है।"

"बाबा ! आप भी तो बहुत बदल गए हैं। मैं तो बच्ची से युवती हो गई हूँ। इतना तो बदलना ही चाहिए था। आप युवा से वृद्ध हो गए हैं। यद्यपि मुझे आपकी उस समय की रूप राशि का स्मरण नहीं है, तदपि आपके श्वेत केशों को देखकर यह कह रही हूँ।"

"हाँ, हम दोनों के बीच की कड़ी तुम्हारे माता-पिता हैं। तुम्हारा कहना उचित ही है कि यह परिवर्तन स्वाभाविक है। वह भूत था, यह वर्तमान है और भविष्य इसके गर्भ में है।"

उसने अपने परिवार का परिचय कराते हुए कहा, "बाबा ! यह मेरे पति लाला मधुसूदन लाल बजाज हैं। इनके साथ मेरी सास श्रीमती सरोजिनी बजाज हैं।"

स्वामीजी बोल पड़े, "और ये तुम्हारे बच्चे हैं, जो अल्पाहार के बाद अपना परिचय स्वयं ही दे लेंगे।"

तबतक अल्पाहार लग गया था। दलिया, दूध, मलाई तथा पूरी इत्यादि था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी ने रात की ही भाँति एक प्लेट में दो पूरी और थोड़ा सा दलिया लिया और खाने लगे। साग तो उन्होंने लिया था किन्तु चटनी आदि कुछ नहीं लिया।

अल्पाहार के समय स्वामीजी ने अनुभव किया कि मिस पीटर निश्चिन्त भाव से बैठी अपना अल्पाहार कर रही है। उनको उसके मुख पर किसी प्रकार की चिन्ता के लक्षण दिखाई नहीं दिये। इससे यद्यपि स्वामीजी को प्रसन्नता हुई किन्तु उससे अधिक उनको विस्मय हुआ था। वे समझ रहे थे कि इस प्रकार मिस पीटर का निश्चिन्त होकर अल्पाहार करना उसकी स्थिर बुद्धि का परिचायक है।

अल्पाहार के उपरान्त सारा ही परिवार स्वामीजी के कमरे में जाकर एकत्रित हो गया।

जियाराम ने अपने जामाता के विषय में बताते हुए कहा, "इन की बम्बई में प्लास्टिक की वस्तुओं की फैक्टरी है। अपने कार्य से इनको सन्तोष होने से ये प्रसन्न हैं।"

इसके बाद पन्द्रह-बीस मिनट तक सुधा के बच्चों से परिचय होता रहा। उसके बाद स्वामीजी ने कहा, "सायंकाल चाय के उपरान्त मैं बच्चों से मिलूँगा, उस समय इनके विषय में अधिक जानने का यत्न करूँगा।"

इसका सबने यही अभिप्राय समझा कि अब उन लोगों को वहाँ से उठकर चला जाना चाहिए।

: ६ :

परन्तु मध्याह्न के भोजन के पूर्व ही चन्द्ररानी और मिस पीटर स्वामीजी के कमरे के द्वार पर दिखाई दीं।

स्वामीजी ने उनको भीतर आने को कहा। बैठते ही चन्द्ररानी ने बात आरम्भ कर दी, "मैंने मिस पीटर से कहा था कि कृष्ण अस्पताल में गर्भपात की व्यवस्था करा देगा। अस्पताल के डॉक्टर उसके परिचित हैं और वे अपनी विद्या में निपुण हैं।"

"तो फिर?"

"किन्तु यह कह रही है कि आपने इसके विपरीत परामर्श दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, दिया तो है।"

"इसका यह गर्भ तो अभी दस-बारह दिन का ही है। इससे इसको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा।"

स्वामीजी मौन रहे।

चन्द्ररानी ने ही फिर कहा, "कृष्ण ने अस्पताल में फोन करके डॉक्टर से बात की थी। उसने कहा है कि पीटर को केवल तीन दिन अस्पताल में रहना होगा। यह कार्य सरलता से हो जाएगा।"

"डॉक्टर की कुशलता में तो मुझे किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। मैं यह भी मानता हूँ कि इसको इस गर्भपात के अवसर पर विशेष प्रकार का कोई कष्ट भी नहीं होगा। परन्तु मैं तो किसी अन्य दृष्टि से बात कर रहा था।

"बच्चे के बनने, फिर उसके सुन्दर, मेधावी और ज्ञानी होने में परमात्मा की कारीगरी का ही भास होता है। तुम लोग वही डॉक्टर से समाप्त करवाने की बात कर रहे हो। संसार में इसके समान अन्य कोई कारीगरी देखने में नहीं आती। उसकी कारीगरी के सहयोग के बिना यह बनाया नहीं जा सकता। तब उसको विनष्ट करना तो महापाप और मनुष्य समाज को हानि पहुँचाने वाला होगा। मनुष्य तो उसकी कारीगरी की रंचमात्र भी नकल नहीं कर सकता।

"मेरे विचार से किसी रचनाधीन जीव के मार्ग में बाधा उपस्थित करना तो अक्षम्य अपराध हो जाएगा।"

"परन्तु बाबा! संसार में तो आवश्यकता से अधिक बच्चे उत्पन्न होने लगे हैं। बढ़िया से बढ़िया वस्तु भी आवश्यकता से अधिक उत्पन्न हो जाय तो उसका आनन्द नहीं रहता। तब उसके नष्ट होने का दुःख भी नहीं होता। मानो वह किसी प्रकार का फालतू जीव हो।"

"सुशीला पीटर का रचनाधीन शिशु फालतू है, यह तुम किस प्रकार कह सकती हो? मैं यह मानता हूँ कि इस संसार में अनेक मूर्ख, दुराचारी और अपाहिज उत्पन्न हो रहे हैं। वे क्या फालतू नहीं हैं? और जो इस सुन्दर कन्या के गर्भ में पल रहा है वह फालतू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है यह कैसे मालूम पड़ गया ?"

चन्द्र इसका उत्तर देने में असमर्थ थी। वह चुपचाप बाबा का मुख देखती रही।

मिस पीटर कहने लगी, "बाबा! माताजी तो मेरी तथा परिवार की बदनामी का विचार कर रही हैं। यदि मैं गर्भपात नहीं कराऊँगी तो मैं अपने माता-पिता के घर नहीं जाऊँगी। वे श्रद्धालु कैथोलिक हैं, उस अवस्था में वे मुझे घर से निकाल देंगे। यहाँ रहने पर माताजी को भय है कि इसके कारण कहीं उनके सुपुत्र की कुख्याति न होने लगे। यही इनके कहने का कारण है।"

"यदि लोगों को यह पता चल गया कि तुमने तथा इन्होंने मिल कर उस बेजान की हत्या की है तो क्या इससे उन लोगों को प्रसन्नता होगी ? अथवा इससे तुम लोगों की ख्याति बढ़ जाएगी ?"

"यह बात तो गुप्त रखी जाएगी !"

"यदि कोई हत्या गुप्त रखी जाय तो क्या वह पुण्य कार्य मानी जाती है ?"

"किन्तु बाबा! यह कैसे कहा जा सकता है कि इसका होने वाला शिशु सुन्दर, मेधावी और दीर्घजीवी ही होगा ?"

"यह तो कोई नहीं कह सकता। माता से बालक के शरीर के बनने की बात तो मानी जाती है। परन्तु मन और बुद्धि आदि तो गर्भस्थ प्राणी अपने कर्मफल के आधार पर प्राप्त करता है। यही कारण है कि मैं भ्रूणहत्या को घोर पाप समझता हूँ। हम यह नहीं जान सकते कि डॉक्टर का चाकू किस प्राणी की गर्दन पर चल रहा है।"

"तो फिर यह दिनानुदिन बढ़ने वाली जनसंख्या का क्या होगा ? मैं समाचार-पत्र में पढ़ रही थी कि सन् १९०१ में हमारे देश की जनसंख्या बीस करोड़ थी। सन् १९५१ में वह संख्या बढ़कर सैंतीस करोड़ हो गई और यह अनुमान लगाया जाता है कि सन् २००१ में यह एक अरब हो जाएगी।"

"देखो चन्द्र! ये आँकड़े ठीक हो सकते हैं। परन्तु बुद्धिमानों और समझदारों के घर पर तो पहले ही कम सन्तान होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तान की बाढ़ तो मूर्ख और गंवारों के घर आया करती है। तुम बुद्धिमान माँ की होने वाली सन्तान की हत्या की ही बात कर रही हो।

"मैं इसकी पुष्टि नहीं कर सकता।"

"तो फिर कैसे होगा? कृष्ण के पिता ने तो कृष्ण को घर से भगा देने की पहले से ही योजना बनाई हुई है। मैं तो इसका आधार भी मिस पीटर के गर्भस्थ शिशु को ही मानती हूँ।"

"मैं इस विषय में क्या कह सकता हूँ। जियाराम को मेरे पास भेज देना, मैं उसको केवल इस विषय में अपनी बात समझा दूँगा।

"जहाँ तक देश की जनसंख्या का प्रश्न है, मैं तो यह मानता हूँ कि इसको बढ़ने देना चाहिए। इससे देश में जीवन के लिए संघर्ष आरम्भ हो जाएगा। उस समय जो अयोग्य, मूर्ख अथवा दुर्बल होंगे प्रकृति उनको धकेलकर परे कर देगी। प्रकृति के नियमों में हमें बाधा उपस्थित नहीं करनी चाहिए।

"परन्तु इस संहार को, जो हम अपनी नाक के आगे देख ही नहीं सकते, मैं इस गर्भपात के पक्ष में नहीं हूँ।"

इसके बाद मिस पीटर ने पूछा, "यदि मैं माताजी का परामर्श स्वीकार न करूँ और ये मुझे अपने घर से निकाल दें तो?"

"मुझे नहीं लगता कि ये इतनी क्रूर हैं। मैं तो इसको अबोध बालिका के जीवन से जानता हूँ। यह हमारे पड़ोसी की ही कन्या थी। मैंने ही इसको जियाराम के लिए पसन्द किया था।

"मुझे इसके बचपन की एक घटना स्मरण है। यह नल पर पानी भरने गई थी। वहाँ मैंने इसे रोते देखा तो इसके रोने का कारण पूछा। इसने सामने खड़े लड़के की ओर संकेत कर कहा था कि वह लड़का भिड़ की दुम मरोड़ रहा है, इससे इसको कष्ट हो रहा है। वास्तव में वह लड़का भिड़ के डंक का काँटा निकाल रहा था।

"ऐसी कोमल हृदया यह तुम्हें घर से निकाल देगी, मुझे इसका विश्वास नहीं होता। तो भी यदि हो जाय तो मुझे बताना। मैं तुम्हारी सुख-सुविधा की व्यवस्था कर दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इस प्रकरण की समाप्ति का संकेत था। दोनों महिलाएँ उठ कर चली गयीं। स्वामीजी ने अपना स्वाध्याय और चिन्तन जारी रखा। वे बृहदारण्यक उपनिषद् पढ़ रहे थे। पढ़ते-पढ़ते चिन्तन करने लगे। उस चिन्तन में वे इतने लीन हुए कि पढ़ना ही भूल गए। उस समय उनको यह भी ज्ञान नहीं रहा कि वे उत्तरकाशी में नहीं अपितु दिल्ली में बैठे हैं।

एक बजे के लगभग सुधीर ने आकर कहा, "बाबा! चलिए, भोजन तैयार है।"

"हाँ, चलो आज विलम्ब हो गया है।"

"बाबा! आज बुआ के आने के कारण बातों-बातों में समय निकल गया। पता ही नहीं चला कि भोजन का समय हो गया है।"

"तो बुआ से बहुत बातें हुई हैं?"

"बुआ से नहीं। बुआ की छोटी बिटिया बड़ी मजेदार है। बड़ी बातें करती है।"

स्वामी मंगलानन्द भोजन के लिए तैयार होने के लिए अपने झोले में पुस्तक रखकर सुधीर से पूछने लगे, "वह किस विषय पर बातें करती है?"

"बम्बई नगर की, अपने स्कूल की, अपनी सहेलियों की आदि-आदि।"

"तुमने बम्बई देखी है?"

"हाँ बाबा! देखी है। दो मास पूर्व स्कूल की पन्द्रह दिन की छुट्टियाँ थीं, उस समय मैं बम्बई गया था।"

"अच्छा, बताओ तो दिल्ली अच्छी है अथवा कि बम्बई?" मंगलानन्द ने उठकर सुधीर के साथ चलते हुए पूछा।

"मुझे तो दोनों ही पसन्द नहीं हैं।"

"तब तो तुमको यहाँ बड़ा कष्ट होता होगा?"

"कष्ट तो कहीं भी नहीं होता। न तो यहाँ और न बम्बई में ही किन्तु आनन्द नहीं आता।"

"कहाँ आता है आनन्द?"

सुधीर उत्तर दे, उससे पूर्व ही वे डाइनिंग हॉल में पहुँच गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। वहाँ पहुँचकर उनकी बातें आगे नहीं चल सकीं। सभी जन उपस्थित थे। रविवार होने के कारण आज जियाराम और कृष्ण भी घर पर ही थे।

स्वामी मंगलानन्द को मधुसूदन और जियाराम के मध्य स्थान मिला। स्वामीजी बैठे तो मधुसूदन ने कहा, "बाबा! आपके विषय में सुधा के मुख से सुना करता था। यह मेरा परम सौभाग्य है कि अब आपके दर्शन भी प्राप्त हो गए हैं। दर्शन करके तो आँखें तृप्त हो गई हैं।"

"आँखों की तृप्ति से क्या लाभ होता है?"

"आँखें ज्ञान का स्रोत हैं, अतः जब आँखें तृप्त होती हैं तो इनके माध्यम से मन को पूर्ण और सुखद ज्ञान प्राप्त होता है, उससे आनन्द की अनुभूति होती है। आँखों की तृप्ति का यही अभिप्राय है।"

मंगलानन्द समझ गया कि मधुसूदन कुछ ज्ञानचर्चा करने लगा है।

स्वामीजी का अगला प्रश्न था, "तृप्त होकर आँखें क्या करती हैं?"

मधुसूदन ने स्वामीजी के इस प्रश्न पर एक क्षण तक विचार किया और फिर बोला, "ये आँखें जब तृप्त होती हैं, अर्थात् अपने सुखद अनुभव मन को और उसके माध्यम से जीवात्मा को पहुँचाती हैं तो जीवात्मा प्रसन्न होता है। बुद्धि उसकी प्रसन्नता का कारण खोजने लगती है। इस प्रकार शरीर के स्वामी और उसके अनुसार बुद्धि को कार्य मिल जाता है। यह कार्य सुखकारक होने से जीवात्मा को आन्नद की अनुभूति होती है।"

"तब क्या होता है?"

"तब जीवात्मा के संचित ज्ञान में वृद्धि होती है। उसके बाद आत्मा अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ता है।"

बेयरा जब भोजन लेकर आया तो स्वामीजी ने एक चपाती और उसके अनुसार काशीफल का साग अपनी प्लेट में डाल लिया। मधुसूदन ने चावल और मटर-पनीर की रस वाली सब्जी ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन करते हुए स्वामी मंगलानन्द सोचने लगे कि यह जो उनके समीप बैठा व्यक्ति है क्या वास्तव में उसकी रुचि अध्यात्म विद्या में है ? सम्भवतया मुझे संन्यासी जान वह इस प्रकार आत्मा-परमात्मा की बातें करने लगा हो।

सहसा स्वामीजी ने मधुसूदन से पूछा, "आपके उपनाम 'बजाज' से तो यही प्रतीत होता है कि आप पंजाब के रहने वाले हैं ?"

"जी हाँ। मूलतया तो हम पंजाब में लाहौर के रहने वाले हैं किन्तु हमारा परिवार देश-विभाजन से बहुत पूर्व बम्बई आ गया था।

"मेरे पिताजी बड़े दूरदर्शी हैं। उन्होंने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि कोई समय ऐसा भी आएगा जब पंजाब में हिन्दुओं का रहना कठिन हो जाएगा। इसलिए एक दिन उन्होंने मेरी माता जी से कहा कि वे पंजाब से अन्यत्र कोई स्थान देखने के लिए जा रहे हैं। वे लाहौर से बम्बई चले आए। उस समय मैं लाहौर डी. ए. वी. स्कूल में प्रथम कक्षा में पढ़ता था। पाँच वर्ष तक पिताजी बम्बई में अपने पैर टिकाने का यत्न करते रहे। जिस वर्ष मैं छठी कक्षा में आया उस वर्ष हमारा सारा परिवार बम्बई आ गया।

"उस समय तक पिताजी ने बम्बई में प्लास्टिक की वस्तुएँ बनाने का एक छोटा-सा कारखाना बना लिया था। उस समय कारखाने में केवल बीस ही व्यक्ति काम करते थे। मैं भी स्कूल छोड़कर कारखाने में ही काम करने लग गया। इस प्रकार मेरी स्कूल की पढ़ाई बन्द हो गई। तो भी पिताजी मुझको स्वयं घर पर पढ़ाने लगे।

"बस, उतनी ही मेरी शिक्षा है। पिताजी स्वयं गुरुकुल काँगड़ी में पढ़े थे। परन्तु उसके अतिरिक्त भी उनकी शिक्षा हुई है। वे कहा करते थे कि वे अपने अध्यापक स्वयं ही हैं।

"उन्होंने मुझे, हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी भी पढ़ाई। विज्ञान की प्रारम्भिक शिक्षा भी उन्होंने स्वयं मुझे दी। इस समय मैं कारखाने का मुख्य प्रबन्धक हूँ। पिताजी केवल चैकों पर हस्ताक्षर-मात्र किया करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विवाह कब किया था ?"

"लगभग दस वर्ष हो चुके हैं।"

"अर्थात् आपने दस वर्ष में पाँच सन्तान उत्पन्न की हैं। यह अनुपात तो कुछ अधिक ही है ?"

मधुसूदन मुस्कराकर कहने लगा, "हाँ, अधिक तो है। अनुपात में अधिक होने पर भी यह सुधा का साहस है कि इस प्रकार उनका निर्माण कर पाई है। हमारी सबसे छोटी कन्या दुर्गा अभी तीन मास की है किन्तु सुधा की इच्छा एक और सन्तान के लिए होने लगी है।"

स्वामीजी को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कहा, "मैं समझता हूँ कि अब आप लोगों को इस विषय में विचार भी नहीं करना चाहिए। कुछ अन्नादि दूसरों के लिए भी छोड़ दो।"

"बाबा! यह मेरे वश की बात नहीं है। यह सुधा ही कर सकती है। मैं उसकी इच्छा का प्रबल विरोध करने में असमर्थ हूँ। वह पाँच दिन के लिए यहाँ आयी है, इस अवधि में यदि आप उसे प्रेरित कर सकें तो मैं आभार मानूँगा।"

"आप लोग सन्तति निरोध के उपाय प्रयोग में नहीं लाते ?"

"आपकी पोती उसका प्रयोग पाप मानती है। उसकी जीवन-मीमांसा यह है कि किसी की प्रबल आकांक्षा जबतक किसी अन्य को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाती, उनको पूर्ण करने में किसी प्रकार का पाप नहीं है। वह जब भी मेरे पास आती है तो पूछ लिया करती है कि मुझे अवकाश है अथवा कि नहीं।

"उसके इस प्रश्न का यही अभिप्राय होता है कि मैं स्वस्थ और सबल हूँ कि नहीं। उसके निर्माण-कार्य में लगे रहने के कारण मैं तो अधिकांशतया भूखा ही रह जाता हूँ। इसलिए जब वह बहुत अन्तराल से इस प्रकार प्रश्न करती है तो मैं अस्वीकार नहीं कर सकता। बस तभी नये जीवन का बीजारोपण हो जाता है।

स्वामीजी ने तो अपनी चपाती समाप्त कर ली थी। किन्तु मधुसूदन चावल समाप्त कर पूरी खाने लगा था।

स्वामीजी ने उससे ही पूछा, "बम्बई में भोजन की व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसी है ? घी, दूध मिलता है अथवा कि नहीं ?"

"मिलता तो वहाँ सब कुछ है किन्तु महँगा मिलता है। वहाँ भैंस के दूध के एक लीटर का मूल्य पाँच रुपया है। गेहूँ ढाई रुपया किलो मिलता है। साग-भाजी भी महँगी ही है।

"परन्तु बाबा ! भगवान् की कृपा से हमें किसी प्रकार का वहाँ अभाव नहीं है। महँगाई के प्रभाव से हम उतने प्रभावित नहीं हैं।

"इस समय हमारे कारखाने में पाँच सौ श्रमिक कार्य करते हैं। मेरे अधीन पाँच सहायक मैनेजर हैं। नित्य-प्रति लगभग बीस हजार रुपये मूल्य की वस्तुएँ हमारे कारखाने में बनती हैं। उस माल की बिक्री पर हमें लगभग पाँच रुपये प्रतिशत का विशुद्ध लाभ होता है। हमारे परिवार में माता-पिताजी के अतिरिक्त मैं, सुधा और हमारे पाँच बच्चे हैं। मेरे कोई भाई-बहन नहीं है।

"इसका परिणाम यह है कि हमारी पूँजी निरन्तर वृद्धि कर रही है।"

"किन्तु जब ये बच्चे बड़े हो जायेंगे तब तो समस्या उत्पन्न हो जायेगी ?"

"जी हाँ, हम भी इस विषय पर विचार करते हैं। मैंने और पिताजी ने इस विषय पर परस्पर बात की है। हमने योजना बना ली है और उसपर कार्य भी आरम्भ हो गया है।

"हमारी योजना है कि सोहन और लक्ष्मी की शिक्षा पूर्ण होने पर उनको स्विट्जरलैण्ड भेज देंगे। उनको वहाँ की भाषा सिखाकर उनके लिए वहीं काम-धन्धे का प्रबन्ध किया जायेगा।

"इस निमित्त हमने अभी से पूँजी जमा करनी आरम्भ कर दी है। उनसे छोटे मोहन और देवेन्द्र को भारत में रखने का विचार है। तदनुसार ही उनकी शिक्षा का प्रबन्ध भी कर रहे हैं।

"दुर्गा अभी तीन मास की ही है अतः उसके विषय में हमने अभी कुछ भी विचार नहीं किया है। समय पर उसके विषय में भी विचार कर लिया जायेगा।"

स्वामी मंगलानन्द बड़े मनोयोग से मधुसूदन की बात सुन रहे थे। मधुसूदन का पेट भर गया तो उसने भी भोजन करना बन्द कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया।

उसे खाना छोड़ते हुए देख स्वामीजी ने कहा, "बस, पेट भर गया है ?"

"बाबा ! आपने तो कुछ भी नहीं खाया। केवल एक चपाती से पेट भर लिया। खीर तक तो आपने छुई नहीं।"

"यह तो खीर खिलाने वालों पर निर्भर करता है। यदि वे मुझे खीर खिलाना चाहते तो पहले उसे ही मँगवाते। तब मैं चपाती नहीं खीर ही ले लेता। किन्तु उसे लाया गया बाद में। तबतक मैं पेट भर चुका था।"

"बाबा ! मैं यही तो कह रहा हूँ कि आप बहुत कम खाते हैं।"

"उसका कारण यह है कि मैंने बच्चों के बीजारोपण का कार्य कभी का बन्द कर दिया है। इसलिए इतने से ही मेरा निर्वाह हो जाता है।"

"जी हाँ, यह बात तो है। पिताजी का भी यही कहना है कि यदि बच्चे उत्पन्न करने हों तो मनुष्य को अन्न खाना चाहिए। अन्न से शरीर बनता है। माता-पिता तो केवल शरीर ही बनाकर देते हैं। मन, बुद्धि और जीवात्मा तो परमात्मा के अधीन है।"

भोजन समाप्त होने पर सब मेज से उठ गए। हाथ धोने के उपरान्त मधुसूदनलाल भी स्वामीजी के साथ ही उनके कमरे की ओर चल दिया।

चलते-चलते मधुसूदन ने कहा, "मैं तो आज रात दस बजे के प्लेन से वापस चला जाऊँगा। आज रविवार था किन्तु कल तो मुझे अपने कारखाने में उपस्थित रहना है।"

मंगलानन्द बोले, "आपसे बातें करके बहुत लाभ का अनुभव कर रहा हूँ। यदि कभी बम्बई आने का अवसर मिला तो अवश्य ही आप लोगों से भेंट करूँगा। विशेषतया आपके पिताजी से मिलने की इच्छा है।"

"आप पधारिए। हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। पिताजी तो आप का आभार मानेंगे। मैं तो निवेदन करूँगा कि बृहस्पतिवार को सुधा के साथ ही आ जाइए। वह प्लेन से ही बम्बई लौट रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस समय तो सम्भव नहीं है। जियाराम ने यहाँ कुछ कार्य निर्धारित कर दिया है। उसे पूरा किए बिना यहाँ से जाना सम्भव नहीं होगा।"

दोनों जब स्वामीजी के कमरे के द्वार पर पहुँचे तो मधुसूदन ने हाथ जोड़कर कहा, "अभी तो मैं रात के भोजन तक यहीं हूँ, पुनः आपके दर्शन का आज सौभाग्य प्राप्त होगा ही।"

मधुसूदन यह कहकर लौट गया। स्वामी मंगलानन्द अपने कमरे में गया तो जियाराम वहाँ खड़ा था। उसे देख स्वामीजी समझ गए कि वह निश्चित ही मिस पीटर के सम्बन्ध में बात करने आया है।

जियाराम को ही बात करने का अवसर देने के विचार से स्वामी जी ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "जियाराम! मेरे आने से आप लोगों को कष्ट तो बहुत हो रहा होगा? यदि किसी प्रकार की असुविधा हो तो बता देना, मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

"महाराज! अपने घर में चहल-पहल देख चित्त बड़ा प्रसन्न हो रहा है। यह सब आपकी कृपा का ही तो फल है।"

मंगलानन्द ने बात बदलते हुए कहा, "तुम्हारी बेटी बड़ी बहादुर है। दस वर्ष में पाँच बच्चे उत्पन्न कर लिये हैं।"

"हाँ, है तो किन्तु मैं समझता हूँ कि यह सीमा से कुछ अधिक ही कर लिया है उसने?"

"उसकी सीमा निर्धारित करने वाले हम कौन होते हैं? यह तो स्वयं उसे ही निर्धारित करनी चाहिए।"

"तदपि उसकी माँ उससे इस विषय में बात कर रही है। सम्भवतया वह स्वीकार कर ले।"

"हाँ, उचित तो यही है। फिर भी वह क्या करेगी यह कहना कठिन ही है। उसे अब अन्य कार्यों में लगना चाहिए।"

"पर मैं तो इस समय आपसे मिस पीटर की समस्या के विषय में बात करने के लिए आया हूँ।"

"क्या समस्या है उसकी?"

"आपकी एक बात को तो मैंने स्वीकार कर लिया है और कृष्ण से कह दिया है कि वह किसी डॉक्टर की व्यवस्था न करे। किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने से समस्या का समाधान नहीं हो जाता। अन्य भी अनेक बात पर विचार करना होगा। इसके लिए मैं सोच रहा हूँ कि उसका प्रसव इस कोठी की अपेक्षा किसी गुप्त स्थान पर कराया जाय तो कैसा रहे ?"

स्वामी मंगलानन्द ने एक क्षण तक इस विषय पर विचार किया और फिर बोले, "इसका अभिप्राय यह हुआ कि आपको लोकापवाद का भय है ?"

"महाराज ! हम गृहस्थ हैं। हमें समाज में रहना होता है। इसलिए लोकापवाद की चिन्ता तो करनी ही पड़ती है। किन्तु समस्या यह है कि यदि मिस पीटर को प्रसव के लिए कहीं अन्यत्र भेजा गया तो चन्द्ररानी उसके साथ ही रहने के लिए जाएगी।"

"ऐसा क्यों ?"

"यह मिस पीटर की शर्त है।"

"क्या शर्त है ?"

"यही कि यदि उसे गर्भपात नहीं करवाना है तो वह प्रसव भी लुक-छिपकर नहीं करेगी। वह यदि कहीं बाहर भेजी गयी तो चन्द्ररानी भी उसके साथ जाएगी, जिससे कि वह कह सके कि उसने कोई अनिच्छित कार्य नहीं किया है। चन्द्ररानी के उसके साथ रहने से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाएगी।"

"यह तो तुम लोगों के विचार करने की बात है। किन्तु इसका एक प्रभाव यह होगा कि उसके होने वाले बच्चे से तुम्हारे परिवार का सम्बन्ध है।"

"महाराज ! यह सम्बन्ध तो है। प्रातः जाने से पूर्व अय्यर मुझसे मिलकर गया है। उसने कहा कि वह मिस पीटर से इस कारण विवाह नहीं कर रहा क्योंकि उसको गर्भ कृष्णचन्द्र से है। इसलिए कृष्ण को ही उसका पिता होने का श्रेय प्राप्त करना चाहिए।

"मुझे तो पहले ही ऐसा सन्देह हो रहा था। तो भी मैंने उससे पूछ लिया कि मिस पीटर इस बात को स्वीकार करती है।

"अय्यर का कहना था कि वह स्वीकार करती है। मैंने कृष्ण से अभी इसकी पुष्टि नहीं की। किन्तु मैं उसको कोठी छोड़ने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए कह रहा हूँ।"

"यदि यह बात है तो फिर तो तुमको उसके बच्चे की रक्षा का प्रवन्ध करना चाहिए। वह तुम्हारे परिवार का ही तो अंग होगा।"

यह सुनकर जियाराम बड़ा गम्भीर हो गया। वह मौन बैठा रहा। कुछ क्षण और बैठे रहने के उपरान्त वह बिना कुछ और बात किए वहाँ से उठा और चला गया।

: ७ :

जैसाकि प्रातःकाल फकीरचन्द ने कहा था तदनुसार वह साढ़े चार बजे जियाराम की कोठी पर आ गया और जियाराम को लेकर वह स्वामीजी के कमरे में जा पहुँचा। स्वामीजी उस समय स्वाध्याय कर रहे थे।

फकीरचन्द को स्वामीजी के पास ले जाने से पूर्व जियाराम ने उसको स्वामीजी से अपने लौकिक सम्बन्धों की बात बता दी थी। स्वामीजी के पास पहुँच उनको प्रणाम कर फकीरचन्द ने कहा, "महाराज! आपके वहाँ से चले आने के बाद स्वामी अभयानन्द से मेरी बड़ी बातें हुई हैं। मैंने अभयानन्दजी को इस बात के लिए तैयार कर लिया है कि दिल्ली के सुप्रतिष्ठित विद्वानों के साथ आप का शास्त्रार्थ करा दिया जाय।

"शास्त्रार्थ सार्वजनिक होगा। विद्वान् जन परस्पर बैठकर कुछ एक प्रश्नों का निर्णय कर एक वक्तव्य तैयार करेंगे। यदि वे चाहेंगे तो उस वक्तव्य को छपवाकर भी प्रसारित किया जा सकता है।

"स्वामी अभयानन्द ने स्वीकार किया है, वे कुछ प्रश्नों की सूची तैयार करेंगे। विद्वन्मण्डली अपने वक्तव्य में उन प्रश्नों का उत्तर देगी।

"आप इसके लिए तैयार हैं?"

"तैयार हो सकता हूँ, किन्तु दो शर्तों पर। प्रथम शर्त तो यह है कि विद्वान् की पहले परिभाषा निर्धारित कर ली जाय। मेरे विचार से उस परिभाषा में विद्वान् को जहाँ बहुश्रुत और वेदशास्त्र का ज्ञाता होना आवश्यक है वहाँ जनता में भी उसकी विद्वत्ता की प्रतिष्ठा होनी आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दूसरी शर्त यह है कि संसद सदस्यों की भाँति गोष्ठी में सम्मिलित होने वालों को ईश्वर को साक्षी रखकर शपथ लेनी होगी कि वे अपने अथवा किसी के भी मान-अपमान से ऊपर केवल समाप्ति की ही घोषणा करेंगे।

"मेरी ये दो शर्तें हैं।

"मैं इस बात का प्रमाण दे सकता हूँ कि मैंने चारों वेद, छः शास्त्र और ग्यारह उपनिषद् पढ़े हैं। अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनको समझा भी है। इसी प्रकार प्रत्येक को यह बताना पड़ेगा कि वह क्या पढ़ा है।

"एक बात और है। प्रत्येक सभा का एक अध्यक्ष होता है। यह सर्वमान्य प्रथा है। उस सभा का अध्यक्ष कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो विद्वान् हो। इसके अतिरिक्त वह अपनी न्यायप्रियता के लिए भी प्रसिद्ध हो।

"इसके अभाव में आपने यदि गोष्ठी का आयोजन किया तो वह गोष्ठी नहीं अपितु मछली बाजार या धोबियों की सभा हो जाएगी।"

"मैं आपकी यह बातें अपने ट्रस्ट की प्रबन्ध समिति के समक्ष रख दूंगा। मैं आशा करता हूँ कि ट्रस्ट सन्तोषजनक व्यवस्था करने में सफल होगा।"

"तब ठीक है। आप इसकी व्यवस्था करिये। यदि मेरा मत मिथ्या सिद्ध हुआ तो उससे मुझे किसी प्रकार का असन्तोष नहीं होगा। अपितु इस बात की प्रसन्नता होगी कि मुझे अपने विचारों में संशोधन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। अन्यथा मैं आजीवन अपने मत को ही सुविचारित मत मानता रहता।"

फकीरचन्द बोला, "मैंने सायंकालीन समाचार-पत्रों में यह सूचना प्रकाशनार्थ भिजवा दी है कि किसी अन्य सूचना तक आपका प्रवचन नित्यप्रति प्रातःकाल छः बजे १०८, बाबर लेन, नयी दिल्ली पर होगा।"

"यह आपने ठीक ही किया है। यदि गोष्ठी के अवसर पर विद्वन्मण्डली में किसी प्रकार का विपरीत निर्णय नहीं हुआ तो मेरा विचार एक मास तक यहाँ प्रवचन करने का है। मेरा एक मास तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली में रहने का संकल्प है।"

प्रवचनों का विषय समाप्त होने पर फकीरचन्द ने पूछा, "स्वामीजी! मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि आप पूर्वाश्रम में लाला जियाराम जी के पिता थे। इससे मेरे मन में जियाराम की प्रतिष्ठा बढ़ गई है। परन्तु यह जान लेने पर मेरी जिज्ञासा जाग पड़ी है कि आप किस कारण गृहस्थ छोड़कर गये थे? जिस उद्देश्य से आपने संन्यास लिया था क्या वह आपका उद्देश्य पूर्ण हुआ?"

"यह जानने की इच्छा स्वाभाविक ही है। आपने यह भी ठीक ही किया कि इधर-उधर से जानने की अपेक्षा सीधा मुझसे ही प्रश्न किया है। यदि मैंने किसी प्रकार झूठ न बोला तो सर्वाधिक सत्य सूचना आपको मेरे द्वारा ही मिल सकती है।

"मैं अपनी जानकारी में तो सदा सत्य ही बात कहता हूँ। बात कुछ इस प्रकार है कि मेरी पत्नी देहान्त से पूर्व कई वर्ष तक रुग्ण रही थी। उसकी रुग्णता ने भी मुझे यह विचार करने पर विवश कर दिया था कि यह जीवन है क्या?

"लाहौर के बजाजा बाजार में मेरी दुकान अच्छी चलती थी। उन दिनों में भी नित्य चार-पाँच सौ रुपयों की बिक्री हो जाया करती थी। मैंने दो सहायक रखे हुए थे। एक बिक्री में सहायता करता था और दूसरा हिसाब-किताब रखता था। मेरे मुनीमजी नित्यप्रति लाहौर के सुथरे शाह की धर्मशाला में जाया करते थे। वहाँ के उपदेशों के आधार पर वह मेरी पत्नी की रुग्णता से उत्पन्न मेरी मनःस्थिति पर मुझे सान्त्वना दिया करता था।

"वहाँ से मेरा आध्यात्म ज्ञान आरम्भ हुआ। एक दिन मैं भी उसके साथ गुरुजी महाराज से मिलने के लिए चला गया। मैंने उन से कुछ प्रश्न किए। उन्होंने उन प्रश्नों के आधार पर मुझे श्रीमद्-भगवद्गीता पढ़ने का परामर्श दिया। मैंने गीता का अध्ययन आरंभ किया और उसी दिन मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि मुझ अन्धे की उँगली पकड़ मुझको प्रकाश की ओर ले जाया गया है।

"जैसाकि मैंने बताया है कि जबतक मेरी पत्नी रुग्ण रही, मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में तबसे ही आत्मा के विषय में जानने की लालसा उत्पन्न हो गई थी। 'गीता' को पढ़कर मैं अपनी बुद्धि के अनुसार उसके अर्थों को लगाया करता था। मैंने अंग्रेजी भाषा में एम० ए० किया है। उस पढ़ाई के कारण ही मेरा स्वाध्याय का स्वभाव पहले से ही बना हुआ था।

"जब पत्नी का देहान्त हुआ तो उस समय मेरे मन में वैराग्य का उदय होने लगा। बस तभी मैंने अपना काम समेटना आरम्भ कर दिया। इस कार्य में एक वर्ष का समय लग गया। उस समय मेरे पास पच्चीस हजार रुपया नकद था। नगर में मेरे पाँच मकान भी थे। रुपयों को तो सिंधिया नेवीगेशन के शेयर्स में लगा दिया और मकानों को अपने पुत्र के नाम कर दिया।

"अपने भविष्य का कार्यक्रम निर्धारित करने के उद्देश्य से मैं अधिकांशतया घर पर ही रहा करता था। कभी-कभी सुथरों की धर्मशाला में भी चला जाया करता था। उन्हीं दिनों मैंने अनुभव किया कि जियाराम के जीवन में विकृति आ रही है। जियाराम उस समय रेल विभाग में क्लर्क था और वहीं स्टेशन पर टिकट चैकर लग गया। उन दिनों उसने मद्य का सेवन करना आरम्भ कर दिया था।

"इसके साथ ही मुझे यह भी अनुभव हुआ कि पड़ोस की एक स्त्री से इसके अनुचित सम्बन्ध भी स्थापित हो गए हैं। मैं उससे पूछने की सोच ही रहा था कि इस सब कार्य के लिए उसके पास धन कहाँ से आता है, कि उन्हीं दिनों यह एक दिन गली के बाहर से ताँगे के कोचवान का आश्रय लेता हुआ घर पर आता दिखाई दिया। उस समय मेरे मुख से इसके लिए कुछ कटु शब्द निकल गए।

"उसने भी उस समय कुछ ऐसा उत्तर दिया कि वह मेरे हृदय को चोट कर गया। अपने पुत्र द्वारा अपने लिए इस प्रकार के कटु वचन सुनकर मेरे मन में ग्लानि उत्पन्न हुई। घर से विरक्ति तो पहले ही मन में उठने लगी थी। मैं इस बात पर अपने कमरे में बैठा विचार करने लगा तो यही मन में आया कि तुरन्त घर छोड़ देना चाहिए। घर पर यह सब देखना पड़ेगा। घर पर न रहा तो न इस प्रकार की बुरी बात देखूँगा और न ऐसे शब्द ही सुनूँगा। अपने पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए मन में किसी प्रकार की अनुचित भावना भी नहीं रखूँगा।

"इस प्रकार मैंने चुपचाप घर छोड़ने का प्रबन्ध कर लिया! मैंने अपने ले जाने के लिए केवल एक अटैची केस तैयार किया था। उसमें आवश्यक वस्तुएँ और अपनी चेक बुक तथा कम्पनी के शेयर आदि रखकर रात्रि के दो बजे मैं मकान से निकल गया। परन्तु ज्यों ही मैं अपने कमरे से बाहर निकला तो अपने कमरे के बाहर जिया-राम की पत्नी को लेटी देखकर ठिठक गया।

"मैं अभी उसको देख ही रहा था कि उसको आभास हो गया और वह उठी और हाथ जोड़कर मौन खड़ी हो गई। मैं उसके मन की भावना समझ गया। मैंने उसको अनन्त सौभाग्य का आशीर्वाद दिया और कहा कि इस समय तो मैं जा रहा हूँ किन्तु एक दिन तुम्हारे अनन्त सौभाग्य का फल भोगते हुए तुम्हें देखने मैं अवश्य आऊँगा।

"उसके मुख से कोई शब्द नहीं निकले। वह अश्रुपात करती मौन खड़ी रही। मुझे तब ऐसा अनुभव होने लगा कि यदि मैं इसी प्रकार कुछ भी देर और खड़ा रहा तो मैं अपने निश्चय से विचलित हो जाऊँगा। मैं संन्यास नहीं ले पाऊँगा। इसलिए मैं एक प्रकार से वहाँ से भागकर निकल गया।

"लाहौर से मैंने हरिद्वार के लिए गाड़ी पकड़ी। हरिद्वार से ऋषिकेश गया और वहाँ से उत्तरकाशी चला गया। ऋषिकेश में मेरी भेंट स्वामी सोमेश्वरानन्दजी महाराज से हो गई। मैं उनका शिष्य बन गया। उनसे संन्यास लिया और फिर उनकी ही सेवा में लग गया। उन्होंने मुझे संस्कृत पढ़ाई। फिर निरुक्त और अष्टाध्यायी भी कुछ अंशों में पढ़ाई।

"इस प्रकार मैं दस वर्ष तक उनके चरणों में रहा। उन्होंने मेरी गाड़ी को ज्ञान की पटरी पर डाल दिया। उसके उपरान्त इन पन्द्रह वर्षों में स्वाध्याय करता रहा हूँ।

"सिंधिया कम्पनी के मेरे शेयर इस समय तीन लाख मूल्य के हो गये हैं। प्रतिवर्ष लगभग बीस हजार रुपये की आय दे रहे हैं। उन रुपयों से मैंने ऋषिकेश में अपना निजी आश्रम और एक विशाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय बना लिया है। वहाँ मैं पूर्णिमा और अमावस्या का प्रवचन किया करता हूँ।

"पन्द्रह वर्ष उपरान्त एक दिन स्वामी सोमेश्वरानन्दजी के सहसा दर्शन हो गये। वे मेरे आश्रम में ही आये थे। उस समय मैं प्रवचन कर रहा था और वे चुपचाप आकर श्रोताओं में बैठकर प्रवचन सुनने लगे। ज्यों ही मेरी दृष्टि उनपर पड़ी, मैं अपना प्रवचन छोड़कर उनके चरणों में चला गया। उन्होंने उठकर मुझे आशीर्वाद दिया और फिर मुझको लेकर चौकी पर आकर मेरे समीप बैठकर मेरा प्रवचन सुनने लगे।

"वे ऋषिकेश में ही किसी आश्रम में टिके हुए थे। वे कई दिन तक मेरा प्रवचन सुनने के लिए आते रहे। ग्यारह-बारह दिन पूर्व वे मेरे पास आकर बोले कि मुझे राजधानी जाकर अपने प्रवचन करने चाहिए। उनका यह भी कहना था कि वहाँ मुझे प्रवचन सामान्य जनता की भाषा में करने चाहिए, जिससे कि उसको समझने में सुविधा हो। उनका कहना था कि यही तपस्या और त्याग का फल होगा।

"जब मैं यहाँ आने को तैयार हुआ तो उन्होंने आपको तार द्वारा मेरे आने की सूचना भेज दी।

"जियाराम के दिल्ली में होने की बात तो मुझे कल ही विदित हुई है। कल मैं किताबों की दुकान पर एक पुस्तक क्रय करने के लिए गया तो यह साथ की किसी दुकान से कुछ क्रय कर रहे थे। इन्होंने मुझे देखकर पहचान लिया और फिर आग्रह कर यहाँ पकड़कर ले आये हैं।

"यहाँ आकर मैंने अनुभव किया कि यहाँ भी कुछ प्राणी ऐसे हैं जिनको मेरे प्रवचन की आवश्यकता है। इसलिए मैं विचार कर रहा था कि किस प्रकार उनको नित्य आश्रम में आने के लिए प्रेरित करूँ कि स्वामी अभयानन्दजी ने मेरा मार्ग प्रशस्त कर दिया। अब एक मास तक मैं नित्य ही अपने विचार इनको अपनी भाषा में बताया करूँगा।"

"तो आप धनी साधु हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो भी आप समझें। हाँ, मैंने ऋषिकेश में अपने आश्रम की एक समिति बनवा दी है, उसे रजिस्टर्ड भी करा लिया है। अपना व्यय मैं उस कमेटी से माँगकर लेता हूँ।"

स्वामी मंगलानन्द का जीवनवृत्त सुनकर लाला फकीरचन्द को परम सन्तोष हुआ। चाय का समय हुआ और वह चाय पीकर चला गया।

फकीरचन्द के जाते ही सुधीर प्रातःकाल स्वामीजी द्वारा दी हुई 'गीतासार' लेकर उपस्थित हो गया। आते ही उसने स्वामीजी के चरणस्पर्श किये। स्वामीजी को हँसी आ गई। उन्होंने पूछा, "यह क्या किया है?"

"बाबा! प्रातःकाल आश्रम में सबको यह करते देखा था। और फिर आते हुए मार्ग में बाबा ने मोटर में ही आपके चरणस्पर्श करने के लिए कहा था।"

"यह तो तुम दूसरों की नकल कर रहे हो?"

"आपने कहा था कि आप मुझे पढ़ाया करेंगे। इसलिए गुरुजी के तो चरणस्पर्श करने ही चाहिए।"

"स्कूल में अपने अध्यापकों के भी चरणस्पर्श किया करते हो?"

"बाबा! वे तो अध्यापक हैं, किन्तु आप तो गुरु हैं। अध्यापक तो अध्यापक ही होते हैं।"

"किन्तु अध्यापक भी तो पढ़ाने वाले ही होते हैं?"

"वे उस कार्य का वेतन लेते हैं। वेतनभोगी सेवक होता है।"

"तुम क्या उनको वेतन देते हो?"

"प्रतिमास पाठशाला को शुल्क दिया जाता है। नियत तिथि को शुल्क न दिये जाने पर पाठशाला से नाम काट दिया जाता है। वह शुल्क ही वेतन के रूप में परिणत होकर उनको मिलता है।"

मंगलानन्द सोचने लगा। वह सुधीर की बुद्धि की दिशा पर विचार करने लगा। सुधीर की युक्तियाँ सुनकर मंगलानन्द को प्रसन्नता हुई थी। फिर उन्होंने मुस्कराकर कहा, "तो तुमने मेरे चरण इसलिए स्पर्श किये हैं कि मैं बिना शुल्क लिये ही पढ़ाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए तैयार हो गया हूँ।"

"बाबा! आपने तो शुल्क माँगा ही नहीं। मेरे स्कूल में मेरे एक अध्यापक मेरे ट्यूटर बने हुए हैं। वे मेरी देखभाल किया करते हैं। वे मुझसे मेरी पढ़ाई के विषय में समय-समय पर पूछते रहते हैं और मुझे कोई कठिनाई हो तो वे उसका समाधान भी कर दिया करते हैं। दादी माँ उनको इस कार्य के लिए पचास रुपया मासिक दिया करती हैं। इस प्रकार वे भी वेतन ही लेते हैं।"

"हाँ, यह तो तुम ठीक ही कह रहे हो। मैं तुम्हारी दादी से किसी प्रकार का कोई वेतन नहीं लूँगा।"

"दादी माँ ने कहा है, आप गुरु हैं।"

"तो ऐसा करो, कल से स्कूल जाना छोड़ दो। नित्य पाँच बजे से आठ बजे सायंकाल तक मुझसे पढ़ लिया करो। मैं तुमको दिनभर करने के लिए कार्य दे दूँगा।"

सुधीर ने पुन: स्वामीजी के चरणस्पर्श किये। स्वामीजी कुर्सी पर बैठे थे और सुधीर उनके सामने फर्श पर बिछे कालीन पर बैठा था।

स्वामीजी ने पूछा, "यह पुस्तक पढ़ी थी?"

"हाँ बाबा। कुछ पृष्ट पढ़े हैं। आरम्भ में तो कहानी कुछ रुचिकर थी किन्तु आगे-आगे पढ़ने पर समझ में नहीं आई।"

"कहानी नहीं, यह ऐतिहासिक घटना है। कौरव और पाण्डव ताऊ-चाचा के पुत्र थे। कौरवों के पिता का नाम था धृतराष्ट्र और पाण्डवों के पिता का नाम था पाण्डु। राज्य के विषय में दोनों में परस्पर मतभेद उत्पन्न हुआ और वह बढ़कर युद्ध के रूप में परिणत हो गया।

"पाण्डवों का पक्ष धर्म का था किन्तु कौरवों का पक्ष अधर्म का था।

"पाण्डवों का एक भाई अर्जुन था। वह श्रीकृष्ण का बहनोई था। इस कारण श्रीकृष्ण अर्जुन की सहायता करना चाहते थे।

"श्रीकृष्ण जी के एक बड़े भाई भी थे। उनका नाम था बलराम। बलराम के बड़े पुत्र को कौरवों के बड़े भाई दुर्योधन की पुत्री विवाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इस कारण दोनों पक्षों से सम्बन्ध होने के कारण न तो बलराम अथवा उनका पुत्र कौरवों के पक्ष में लड़े और न श्रीकृष्ण पाण्डवों के पक्ष में लड़े।

"श्रीकृष्ण ने अर्जुन के रथ का सारथी बनकर उसकी सहायता करने का संकल्प कर लिया।

"जब वास्तविक युद्ध की घड़ी आई तो अर्जुन के मन में भय समा गया कि वह तो अपने ही भाई-बन्धुओं की हत्या करने के लिए रणभूमि में जा रहा है।

"इसका परिणाम यह हुआ कि अर्जुन ने युद्धभूमि पर जाना अस्वीकार कर दिया। उस समय भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि उसको युद्ध करना ही चाहिए। जो बात उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कही वही यह गीता है।

"उस समय अर्जुन का कहना था कि इस युद्ध में भाग लेकर वह अपने भाई-भतीजों की हत्या करेगा, इससे वह पाप का भागी बनेगा। वह यह पाप करना नहीं चाहता, इसलिए युद्धभूमि में नहीं जायेगा।

"इस पुस्तक में यही समझाया गया है कि यदि युद्ध धर्म का हो तो अधर्मी व्यक्ति के वध का पाप नहीं होता।"

सुधीर ने पूछा, "किस प्रकार समझाया गया था?"

"वही तो मैं तुमको समझाऊँगा। परन्तु इसके लिए तुमको चार बजे प्रातःकाल उठकर मेरे पास आना होगा।

"अब इस समय तो अपनी हिन्दी की पुस्तक ले आओ। मैं उसमें से तुम्हें काम दूँगा। कल से तुम अपने स्कूल नहीं जाओगे।"

"सत्य बाबा!"

"हाँ, मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाना चाहता हूँ।"

"मैं दादी माँ को बता दूँ कि मैं कल से पाठशाला नहीं जा रहा?"

"हाँ बता दो। दादी माँ ही नहीं अन्य भी सबको बता दो। यदि उनकी आज्ञा हुई तो मैं तुमको पाँच-छः वर्ष में ही तुम्हारे अध्यापकों से भी अधिक बुद्धिमान बना दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं जाकर कह दूं?"

"हाँ, कह दो।"

सुधीर प्रसन्नता से उछलता हुआ उठा और सबको यह बात बताने के लिए चल दिया।

पाँच मिनट में ही चन्द्ररानी और कृष्ण सुधीर को साथ लिये स्वामीजी के कमरे में आ गये।

आते ही कृष्ण ने पूछा, "बाबा! यह क्या कह रहा है?"

"यही कि आज से यह मेरा शिष्य बन गया है और स्कूल नहीं जायेगा।"

"परन्तु बाबा! इसके स्कूल के अपने समवयस्कों का साथ छूट गया तो यह तो फिर बुद्धू ही रह जायेगा।"

"बुद्धू तो यह अब बन रहा है। इस बालक में प्रतिभा है किन्तु निम्न श्रेणी के बालकों के साथ पढ़ने के कारण इसकी बुद्धि कुण्ठित हो रही है। इस बालक में गगन में विहार करने की जो सामर्थ्य है उसे इसके साथी पत्थर बनकर नष्ट कर रहे हैं।"

कृष्ण ने कहा, "महाराज जी! अभी तो आप एक मास तक यहाँ हैं ही। कुछ दिन तक इसके स्कूल की प्रगति देखिये, इसका निरीक्षण-परीक्षण कीजिये, उसके बाद आप अपनी सम्मति सुविधा से दे सकेंगे।"

"विचार तो मेरा भी कुछ ऐसा ही था। किन्तु आज आश्रम से आते समय मार्ग में ही इसके बाबा ने जब यह कहा कि यह आज से मेरे शिष्यत्व में रहेगा तो मैंने उसको ही कार्यान्वित करने का यह प्रयास किया था।"

"पिताजी की अपेक्षा इसके हिताहित की बात मैं अधिक सोच सकता हूँ, और यह मेरा अधिकार भी है।"

स्वामीजी को यह सुनकर हँसी आ गई। उन्होंने कहा, "ठीक है। मैं तुम्हारे अधिकार का उल्लंघन नहीं करूँगा। यही सोचकर तो मैंने इसको कहा था कि यह तुम सबको इसकी सूचना दे दे। और उसके बाद अपनी हिन्दी की पुस्तक लेकर मेरे पास आ जाय।"

"महाराज! आजकल तो दिल्ली के साधारण नर्सरी स्कूलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी अंग्रेजी में बातचीत करना सिखाया जाता है। इसका भी कारण है। वह यह कि भारत के व्यापार का अमेरिका, इंग्लैण्ड तथा अन्य योरोपीय देशों से घना सम्बन्ध है, इस कारण अंग्रेजी भाषा की महिमा द्रुतगति से बढ़ रही है।"

"तब ठीक है। मैं तो कुछ और ही समझा था।"

कुछ क्षण मौन रहकर स्वामीजी ने सुधीर से कहा, "देखो सुधीर ! तुम्हारे पिताजी जैसा कहें तुम उसी प्रकार अपनी पढ़ाई करो।"

"बाबा ! दादी माँ तो मुझको इस प्रकार की पढ़ाई के लिए अपना आशीर्वाद दे रही हैं।"

"दादी माँ की अपेक्षा पिता के अधिकार अधिक होते हैं।"

इससे सुधीर को निराशा हुई। वह उठकर कमरे से जाने लगा तो चन्द्ररानी ने कहा, "परन्तु यह कल प्रातःकाल चार बजे से आपसे पढ़ने आया करेगा।"

"वह भी यह अपने पिताजी से पूछकर ही आ सकता है।"

चन्द्र ने यह सुनकर सन्तोष का ही अनुभव किया। अभी तक तो अपने पुत्र की बात सुनकर उसके मन को बड़ा क्लेश पहुँच रहा था।

मंगलानन्द ने कहा, "ठीक है, अब आप लोग जाइये।"

यह सुनकर तीनों उठकर वहाँ से चले आये।

रात के भोजन के समय मधुसूदन लाल ने स्वामीजी से विदा माँगते हुए कहा, "मैं आज रात ग्यारह बजे के हवाई जहाज से बम्बई लौट रहा हूँ।"

"ठीक है, मैं आपके पिताजी से मिलने के लिए आऊँगा।"

"सुधा की माताजी से मिलकर तिथि निश्चय करियेगा। और यदि पूर्व सूचना भेज सकें तो हवाईपत्तन पर आपका स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हो जायेगा।"

भोजन समाप्त कर स्वामीजी अपने कमरे में आये और नियमानुसार समाचार-पत्र आदि पढ़ने लगे। फिर ठीक दस बजे सोये और प्रातःकाल दो बजे उठकर अपने दैनंदिन के कार्य में प्रवृत्त हो गये। तीन बजे वे अपना ध्यान, धारणा और प्राणायाम आदि किया करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे तथा चार बजे स्वाध्याय आरम्भ कर देते थे।

आज जब चार बजे उन्होंने समाधि भंग की तो सामने सुधीर को बैठे देख उनको बड़ा विस्मय-सा हुआ।

सुधीर बोला, "बाबा! मैं गीता की कथा सुनने के लिए आया हूँ।"

"अपने माता-पिता को पूछकर आए हो?"

"मैंने रात माताजी से पूछा था। उन्होंने कहा था कि यदि नींद खुल जाए तो चले जाना। मैंने दादी माँ से अलार्म पीस माँगा और पौने चार बजे का अलार्म लगाकर मैं नौ बजे सो गया था। अलार्म सुनकर उठा और कुल्ला करके यहाँ चला आया। आप ध्यान में मग्न थे। मैं प्रतीक्षा में बैठा रहा।"

मंगलानन्द ने मेज पर रखे टेबललैम्प की ओर संकेत कर कहा, "यह क्या है?"

"बिजली का लैम्प है।"

"यह क्यों नहीं जलता है?"

"इसका बटन किसी ने ऑन नहीं किया है।"

"ऑन करना क्या होता है?"

"बटन दबाने से बिजली दौड़ने लगती है।"

"वह कहाँ से आती है?"

"बिजलीघर से।"

"वह बिजली क्या होती है?"

"बिजली तो बिजली होती है।"

"अर्थात् तुम नहीं जानते कि बिजली क्या होती है?"

"बाबा! मैं तो इतना ही जानता हूँ कि जो इस लैम्प में प्रकाश लाती है वह बिजली ही है।"

"परन्तु यह स्वयं तो चालू नहीं होती?"

"जी नहीं।"

"देखो, यह लैम्प और इसमें आने वाली बिजली प्रकृति ही है।"

सुधीर इसका अभिप्राय नहीं समझ पाया। वह विस्मय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा का मुख देखता रहा।

स्वामीजी कहने लगे, "जैसे यह लैम्प है। इस समय यह मेज पर है, इसे उठाकर फर्श पर रख दिया जाए तो यह वहाँ आ जाता है। यदि न रखा जाए तो यहाँ पड़ा है, वहीं रहेगा। इसी प्रकार यदि इस बटन को दबा दिया जाए तो बिजली आ जायेगी और न दबाया जाए तो नहीं आयेगी। इससे यह सिद्ध होता है कि यह लैम्प और इसके तारों में दौड़ने वाली बिजली एक प्रकार से पदार्थ ही है।

"इस प्रकार के पदार्थ को क्या कहते हैं, जानते हो?"

"नहीं बाबा!"

"जो जहाँ रखी है और वहीं पर पड़ी रहे, जो स्वयं हिल-डुल न सके ऐसी वस्तु अथवा पदार्थ को जड़-पदार्थ कहते हैं।"

"बाबा! यह तो मैं जानता हूँ। परन्तु बिजली तो जड़ नहीं है। लैम्प तो पकड़ा जा सकता है परन्तु बिजली तो दिखाई ही नहीं देती। न ही वह पकड़ी जा सकती है।"

"जिस हवा से तुम साँस ले रहे हो वह दिखाई देती है?

"नहीं, परन्तु वह हवा भी जड़ पदार्थ ही है। वह भी स्वयं हिलती-डुलती नहीं है। इस समय कमरे में हवा नहीं चल रही है। यदि पंखा चला दिया जाए तो वह चल पड़ेगी।

"कहने का अभिप्राय यह है कि दिखाई देना पृथक् बात है और स्वयं हिल-डुल न सकना दूसरी बात है। यही बात पकड़े जाने की भी है।

"जो पदार्थ बिना किसी अन्य की सहायता से हिल-डुल न सके उसे जड़ पदार्थ कहते हैं। इसे अंग्रेजी में मैटर और वेद की भाषा में प्रकृति कहते हैं।"

"परन्तु बाबा! यह चलती तो स्वयं है। बटन दबाते ही यह चल पड़ती है। बटन न दबाने पर यह नहीं चलती।"

"यह तो उसी प्रकार है जिस प्रकार नल में जल बहता रहता है। एक बार टैंप खोल दो तो जल बहता ही रहता है। उसका कारण यह है कि जहाँ से यह जल आता है वह पानी की टंकी हमारे घर से बहुत ऊँचाई पर बनी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस, बिजली के चलते रहने का भी यही कारण है। बिजली घर में बिजली की ऊँचाई हमारे घर से ऊँची है। इसे 'पोटेंशल' अथवा 'वोल्टेज' कहते हैं। उसके जोर से तारों में बिजली उसी प्रकार बहने लगती है जिस प्रकार नलों में पानी। जब कभी नल में पानी नहीं आता उसका कारण यह है कि जहाँ से यह पानी आता है उस टंकी में पानी समाप्त हो गया है। इसी प्रकार बिजली भी बन्द हो सकती है। जिस प्रकार जल निर्जीव है उसी प्रकार बिजली भी निर्जीव है।"

"बाबा! मैं तो यह समझ पाया हूँ कि वस्तु का दिखाई देना अथवा न दिखाई देना उसके मोटे-पतले पन पर निर्भर करता है।"

"हाँ, तुम ठीक समझे हो। परन्तु कुछ पदार्थ ऐसे भी हैं जो स्वयमेव हिलते-डुलते हैं। वे बिना किसी बाहरी शक्ति के चलते-फिरते हैं।"

"वे क्या हैं?"

"उदाहरण के रूप में तुम स्वयं हो। आज तुम इतनी प्रातःकाल उठकर यहाँ आए हो तो अपनी इच्छा से उठकर आए हो। परन्तु तुम्हारी मेज जो तुम्हारे कमरे में रखी है, वह स्वयमेव नहीं आ सकती। जब कोई उसको उठाकर लायेगा वह तभी आ सकेगी।"

"हाँ बाबा! मैं मेज इत्यादि से भिन्न तो हूँ।"

"हाँ, इसका अभिप्राय यह हुआ कि तुम 'आत्मवान्' हो किन्तु मेज, कुर्सी आदि आत्मवान् नहीं हैं। आत्मवान् का अभिप्राय है जिसमें आत्मा हो। तुम स्वयं आत्मा नहीं हो। आत्मा तुममें है।

"तुमने कभी किसी मृत पशु को देखा है?"

"जी हाँ बाबा! दादी माँ ने कभी एक मैना पाली थी, बड़े मीठे स्वर में वह गाया करती थी। कभी-कभी तो वह दादी माँ की नकल उतारती हुई, 'हरि ओं-हरि ओं' भी कहा करती थी। न जाने एक दिन क्या हुआ कि वह पिंजरे में पड़ी-पड़ी ही मर गई थी।"

"क्या हुआ था उसको?"

"पता नहीं, बस उसकी आँखें बन्द थीं।"

"उस मैना की तुमने दो अवस्था देखी थीं। एक तो वह जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गाती अथवा बोलती थी और दूसरी वह गाना-बोलना तो दूर, हिलती-डुलती भी नहीं थी ।

"अपनी पहली अवस्था में वह आत्मवान् थी किन्तु दूसरी अवस्था में उसका आत्मा उसमें नहीं रहा था।

"इसी प्रकार सभी जीव-जन्तुओं में होता है। एक अवस्था में आत्मा होता है और दूसरी अवस्था में वह नहीं होता। शरीर और आत्मा, इन दोनों के संयोग को जीव कहते हैं।

"अभिप्राय यह कि तुम भी तब तक हो जब तक तुम्हारा आत्मा इस तुम्हारे शरीर में बोलता है।"

"बाबा ! यह शरीर किसलिए है ? आत्मा इसमें नित्य क्यों नहीं रहता ?"

"वह इस कारण है कि आत्मा को अपने भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए कुछ यन्त्र चाहिए होते हैं वे यन्त्र शरीर में लगे हुए हैं।

"मरते समय आत्मा उस शरीर को छोड़ जाता है।"

"क्यों छोड़ जाता है ?"

"उस समय शरीर में कुछ ऐसे दोष उत्पन्न हो जाते हैं, वह उसके रहने योग्य नहीं रह जाता तो आत्मा शरीर को छोड़ जाता है। आत्मा तो मरता नहीं परन्तु शरीर आत्मा छोड़ने के बाद सड़ने लगता है। अभिप्राय यह कि उसमें विघटन होने लगता है। वह जो पुस्तक मैंने तुमको पढ़ने के लिए दी थी, इसी कारण उसमें लिखा है :

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदम् ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।।

"इसका अभिप्राय है कि वह अविनाशी है जो पूर्ण शरीर में व्याप्त है। अव्यय पदार्थ का कोई भी नाश नहीं कर सकता।

"सुधीर ! अब आज का पाठ समाप्त हुआ। जो कुछ मैंने बताया है उसे जाकर एक कापी पर लिख डालो। कल मैं उसको सुनूंगा।"

"परन्तु बाबा ! यह जो आपने अभी संस्कृत में कहा है, वह तो मुझको याद नहीं रहेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह उस पुस्तक में लिखा हुआ है। उसके दूसरे अध्याय का यह सत्रहवाँ श्लोक है उसमें देख लेना।"

सुधीर गीता का अध्याय और श्लोक स्मरण करता हुआ उठा और बाबा के चरण स्पर्श कर चला गया।

ठीक छः बजे स्वामी मंगलानन्द अपने कमरे से बाहर निकले। द्वार पर जियाराम सपत्नीक खड़ा था। उन्होंने प्रणाम किया और स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया तो तीनों चलने लगे। स्वामीजी ने पूछा "कुछ लोग आये भी हैं कि नहीं?"

"आये हैं महाराज! अभी और भी आ रहे हैं।"

"तब तो ठीक ही है। अन्यथा यह स्थान ऐसे कार्यों के लिए नया ही था।"

"कल सायंकाल के समाचार-पत्रों में इसकी सूचना छप गई थी।"

कोठी के लॉन में दरी बिछी थी, सामने मंच बना था। एक ओर कुछ कुर्सियाँ भी रख दी गई थीं।

मंगलानन्द ने अनुभव किया कि आगन्तुकों में कुछ नये लोग भी थे। सम्भवतया वे समीप की कोठियों के होंगे। आज कृष्ण सूरी भी बैठा था। उसकी पत्नी तथा मिस पीटर आदि महिलाओं में बैठी थीं।

साधु आश्रम की अपेक्षा यहाँ महिलाओं की संख्या कम थी किन्तु पुरुष अधिक थे। कोठी का लॉन भर गया था।

फकीरचन्द के कहने पर आश्रम वाली भजन-मण्डली यहाँ आकर भी उसी प्रकार कीर्तन कर रही थी।

जैसाकि स्वामीजी ने पिछले दिन कहा था उसके आधार पर आज उन्होंने अपने प्रवचन में 'वेद सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ है' इस विषय पर बताया। स्वामीजी की वाणी मधुर, भाषा सरल और प्रवचन में प्रवाह था। सभी युक्तियों को उन्होंने तर्क से सिद्ध किया था।

प्रवचन समाप्त होने पर जियाराम ने माइक पर जाकर घोषणा की, "यह प्रवचन इसी प्रकार नित्य एक मास तक होगा और अन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भोग लगाया जायेगा।"

जियाराम की घोषणा के उपरान्त श्रोतागण उठ-उठकर जाने लगे। स्वामीजी जब उठकर अपने कमरे की ओर जाने लगे तो उसी समय एक साधु हाथ में कापी-पैंसिल लिये हुआ आया और स्वामी-जी से कहने लगा, "स्वामीजी! आज आपने ब्राह्मण ग्रन्थों के विषय में कुछ नहीं कहा।"

"हाँ, नहीं कहा। और कल भी मैं वेदों के विषय में ही कहूँगा। आज मैंने वेद को सत्य विद्याओं का ग्रन्थ कहा है, कल मैं बताऊँगा कि वेदों में कौन-कौन-सी विद्याएँ हैं।"

स्वामीजी जब अपने कमरे में पहुँचे तो सेविका वहाँ दूध का गिलास लिये खड़ी थी। स्वामीजी ने दूध का गिलास अपने हाथ में पकड़ लिया और अपने आसन पर बैठ गये। उसके बाद जियाराम का परिवार और वह साधु भी भूमि पर बैठ गये।

दूध पीते हुए मंगलानन्दजी ने पूछा, "आज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष नहीं आये?"

"आज साधु आश्रम में प्रबन्ध समिति की बैठक हो रही है।"

जियाराम के कहने पर सेविका इन नवागन्तुक साधु महाराज के लिए भी एक गिलास में दूध ले आई। मंगलानन्द ने चन्द्ररानी से पूछा, "आज सुधीर दिखाई नहीं दिया?"

"वह अभी सो रहा है।"

प्रतिमा बोली, "नहीं जाग तो गया है। अब स्नान कर रहा है।"

मंगलानन्द समझ गया कि आज प्रातः वह बहुत जल्दी जग गया था, इस कारण पुनः सो गया होगा। किन्तु उन्होंने कहा कुछ भी नहीं।

मंगलानन्दजी ने साधु महाराज से पूछा, "आपको मेरे प्रवचन की टिप्पणियाँ लिखने के लिए भेजा गया है?"

"जी हाँ, यह स्वामी अभयानन्दजी की आज्ञा थी।"

"आप क्या पढ़े हैं?"

"महाराज! मैं तो अलमोड़ा निवासी हूँ। जिस समय साधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना था, उस समय तक तो निरक्षर ही था । परन्तु साधु बनने के उपरान्त हिन्दी, संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त किया है । और आजकल आचार्यजी से भगवद्गीता पढ़ रहा हूँ ।"

दूध समाप्त होने पर स्वामीजी उठे । तब सभी उठ गये और बाहर आ गये । स्वामीजी फिर अपने स्वाध्याय में लीन हो गये ।

नौ बजे जियाराम आकर जब स्वामीजी को अल्पाहार के लिए ले जाने लगा तो उसी समय लाला फकीरचन्द अपनी मोटर में वहाँ आ गये ।

उसे देख मंगलानन्दजी ने पूछा, "समाप्त हो गई है आपकी बैठक ?"

"मैंने तो वह बैठक बुलाई नहीं थी । मैं तो चाहता था कि विद्वानों की सभा बुलाई जाय । स्वामी अभयानन्दजी ने यह बैठक बुला ली । रात हमारे मन्त्री महोदय का फोन आ गया कि प्रातः-काल छः बजे स्वामीजी के कहने पर समिति की बैठक बुलाई गई है । मुझे आने का आग्रह किया तो मैं चला गया । इस कारण आपके प्रवचन से वंचित रह गया ।"

"क्या निश्चय हुआ आपकी बैठक में ?"

"स्वामी अभयानन्द ने प्रस्ताव किया था कि आश्रम के बौद्धिक कार्यों में प्रबन्ध समिति के प्रधान अथवा किसी भी सदस्य को आश्रम के आचार्य अभयानन्द की सम्मति के बिना हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ।

"मैंने बौद्धिक कार्यक्रम के सम्बन्ध में अध्यक्ष की अनुमति लेने का प्रस्ताव किया । मैंने यह भी बताया कि स्वामी अभयानन्द साम्प्रदायिक व्यक्ति हैं । अतः ये केवल अपने ही सम्प्रदाय का प्रचार करवायेंगे ।

"मेरा कहना था कि अद्वैत मत के अतिरिक्त भी मत हैं । इस लिए मेरा कहना था कि सभी मतों के प्रवचन होने चाहिए । इसी में जनता का हित है ।

"समिति मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करने ही वाली थी कि अभयानन्द ने आपके प्रवचनों की निन्दा करनी आरम्भ कर दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आपको आर्यसमाजी मानता है और उसकी दृष्टि में आर्य-समाजी मात्र निकृष्ट हैं।

"मैंने जब आर्यसमाजी की परिभाषा करने के लिए स्वामीजी से कहा तो उन्होंने एक शब्द में उत्तर किया 'नास्तिक'।

"मैंने पूछा नास्तिक का क्या अर्थ है ?

"वे बोले कि जो परमात्मा को नहीं मानता।

"मैंने कहा कि आर्यसमाजी तो परमात्मा को मानते हैं। वे 'ओम्' का जप करते हैं और वेदमन्त्रों से यज्ञ आदि करते हैं।

"मैंने प्रबन्ध समिति को समझाया कि हिन्दुओं में अनेक मत-मतान्तर हैं। अद्वैतवाद और वैष्णव मत में भी भेद है। परन्तु दोनों ही हिन्दू हैं। आर्यसमाजी दयानन्दी हैं। दयानन्द तो वेदों को मानते थे, आर्यसमाजी भी वेदों को मानते हैं। यद्यपि वेदमन्त्रों के उनके अर्थ दूसरे से विलक्षण होते हैं। वे भी हिन्दू ही हैं।

"तब स्वामीजी बोल पड़े कि जो वेद को शुद्ध रीति से नहीं पढ़ता वह नास्तिक है।

"मैंने कहा कि हमारा पारिवारिक पुरोहित तो सर्वथा अशुद्ध उच्चारण करता है तदपि वह पुरोहित भी है, ब्राह्मण भी है और हिन्दू भी है। इसी प्रकार आर्यसमाजी भी हो सकते हैं।

"प्रबन्ध समिति ने यह निश्चय किया कि शास्त्रार्थ न कराया जाए, क्योंकि इससे हिन्दू समाज में फूट पड़ने की आशंका है।

"उस समय मैंने पूछ लिया कि फिर स्वामी मंगलानन्द जी के प्रवचन आश्रम में ही कराये जायें।

"मेरा प्रस्ताव सुनकर अभयानन्द ने उसका घोर विरोध किया। मैंने उससे खिन्न होकर प्रबन्ध समिति से त्याग-पत्र दे दिया।

"मेरा त्याग-पत्र अभी स्वीकार नहीं हुआ है।"

जियाराम ने कहा, "महाराज ! अल्पाहार का समय हो गया है। चलिए लाला फकीरचन्द जी, आप भी पधारिये।"

इस प्रकार तीनों ही अल्पाहार करने के लिए चल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

सुधीर अल्पाहार के समय भी उपस्थित नहीं था। यह देखकर स्वामीजी ने पूछा, "सुधीर स्कूल चला गया है?"

कृष्ण ने कहा, "कल दिनभर वह सुधा के बच्चों के साथ खेलता रहा है, इस कारण उसने स्कूल का काम नहीं किया। वह अब पूरा कर रहा है। मैंने उसको कहा है कि मैं उसको मोटर में स्कूल भिजवा दूंगा। वह पौने दस बजे तक तैयार हो जाएगा।"

मंगलानन्द समझ गया कि उसने कल दो स्थान से शिक्षा ग्रहण की है। इस कारण वह स्कूल का कार्य नहीं कर पाया। मंगलानन्द ने फिर कुछ कहा नहीं किन्तु विचार करने लगा कि भविष्य में उसकी पढ़ाई का बोझ किस प्रकार कम किया जा सकता है।

सुधीर समय पर स्कूल चला गया था। इस कारण केवल सुधा के बच्चे ही मध्याह्न के समय स्वामीजी से मिलने के लिए आये थे। उन बच्चों में मोहन सबसे बड़ा था। वह लगभग आठ-सवा आठ वर्ष का होगा।

स्वामीजी ने उसकी बुद्धि की परीक्षा लेने की दृष्टि से पूछा, "सोहन! कौन-सी कक्षा में पढ़ते हो?"

सोहन बोला, "संस्कृत में हितोपदेश, गणित में हानि-लाभ का ज्ञान और इतिहास में महाभारत।"

"और भूगोल में?"

"वह तो वर्ष में केवल एक बार ही पढ़ता हूँ। पिताजी देश-भ्रमण के लिए निकलते हैं तो मुझे साथ ले जाते हैं और बताते रहते हैं।"

"शरीर-क्रिया विज्ञान के विषय में?"

"इस विषय में अभी कुछ नहीं पढ़ा है।"

"दिल्ली बम्बई से किस दिशा में है?"

सोहन ने एक क्षण आँखें मूंदकर विचार किया और फिर बोला, "बम्बई से दिल्ली उत्तर दिशा में है। ९०० मील की यात्रा में हवाई जहाज में डेढ़ घण्टा समय लगा है।"

"तुम तो बड़े ध्यान से यात्रा करते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी ने भूगोल पढ़ने का यही ढंग बताया है।"

"परन्तु इस प्रकार बम्बई और दिल्ली के क्षेत्रों का तो ज्ञान नहीं होता ?"

"उसके लिए पिछले वर्ष पिताजी मुझे रेल से अहमदाबाद ले गए थे। वह यात्रा हमने तीन दिन में पूर्ण की थी। मार्ग में हम बड़ौदा और सूरत में ठहरकर फिर अहमदाबाद पहुँचे थे। वहाँ के मुख्य-मुख्य स्थान भी देखे थे।"

"कोई अध्यापक भी रखा हुआ है ?"

"जी हैं। वे हमें बम्बई के आसपास के स्थानों को दिखाने के लिए ले जाया करते हैं।"

स्वामीजी ने अनुभव किया कि सोहन की बुद्धि प्रखर है किन्तु उन्होंने उसके विषय में अपनी कोई सम्मति नहीं दी। उन्हें यह जान कर सन्तोष हुआ कि सोहन का ज्ञान अपनी आयु के बालकों की अपेक्षा कहीं अधिक है।

अगले दिन के प्रवचन में पिछले दिन की अपेक्षा अत्यधिक संख्या में श्रोतागण एकत्रित हुए थे। लॉन में तिल रखने को भी स्थान दिखाई नहीं दे रहा था।

उस दिन स्वामीजी ने वेद ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ हैं, यह सिद्ध करने का यत्न किया। उन्होंने बताया कि वेद का ज्ञान इतना उत्कृष्ट है कि वर्तमान विज्ञान के विद्वान् उसकी तुलना में नगण्य हैं। जबकि उस समय प्रयोगशालायें भी नहीं थीं तदपि जो कुछ वेद में कहा गया है वह तर्कसिद्ध है। वर्तमान परीक्षण उसको मिथ्या सिद्ध नहीं कर सकता।

उनका कहना था कि इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि ये मन्त्र किसी ऐसे ऋषि से कहे गए हैं जो मानव से अधिक ज्ञानवान है। किन्तु मनुष्य से अधिक श्रेष्ठ कोई जन्तु दिखाई देता नहीं। इससे यही अनुमान लगाया जा सकता है कि वेदज्ञान परमात्मा का ही ज्ञान है।

स्वामीजी ने अनेक मन्त्रों का अर्थ वर्तमान विज्ञान की परिभाषा में भी समझाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त में स्वामीजी ने कहा कि कल वे बतायेंगे कि परमात्मा ने किस माध्यम से इस पृथ्वी पर वेदज्ञान को अवतरित किया है। फिर उस माध्यम से किस प्रकार किसने उनको वर्तमान रूप में प्रस्तुत किया है।

आरती के उपरान्त नित्य की भाँति कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

स्वामीजी अपने कमरे में पहुँचे तो लाला फकीरचन्द भी वहाँ चले आये। उनके साथ उनका पुत्र भी था। लाला ने उसका परिचय कराते हुए कहा, "यह मेरा पुत्र जवाहरलाल है। इसने इतिहास में एम० ए० करने के उपरान्त पी-एच० डी० किया है। इस समय यह दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक है। कल जब मैंने अपने घर पर आश्रम की प्रबन्ध समिति से अपने त्याग-पत्र की बात की तो उसका कारण भी बताना पड़ा। उसमें आपका उल्लेख हुआ तो इसको आपके दर्शनों की आकांक्षा हो आई।

"मैं इसको साथ तो ले आया हूँ। किन्तु महाराज! यह तो निपट नास्तिक है, इसको कुछ सदुपदेश दीजिए।"

"ओह! तो आपके घर में यह घुन लग गया है?"

जवाहरलाल हँसता रहा।

स्वामीजी कहने लगे, "लालाजी! आपका यह डॉक्टर लड़का मुझको पागल कहेगा। यह मुझसे अधिक पढ़ा-लिखा है।"

"किन्तु मैं तो आपकी बात सुनने के लिए तैयार हूँ।" जवाहरलाल ने कहा।

"तब तो ठीक है। जो सुनना ही नहीं चाहते वे कुछ नहीं सीख सकते। परमात्मा ने आँखें और कान ये ऐसे दो यन्त्र दिए हैं कि इनके मुख बाहर की ओर हैं। वे बाहर का ज्ञान कराते हैं।

"परन्तु आँख और कान विचार नहीं करते। मनुष्य में विचार करने वाली बुद्धि होती है। इसलिए मैं पहले तो यह जानना चाहूँगा कि आपकी बुद्धि के कपाट खुले हैं अथवा कि बन्द?"

"यह आप किस प्रकार जान पायेंगे? बुद्धि का तो घर ही दिखाई नहीं देता फिर उसके कपाट कहाँ से दिखाई देंगे?"

"तुम किसी को अपना गुरु भी स्वीकार करते हो अथवा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं ?"

"मानता हूँ। कार्ल मार्क्स, एंजिल और लेनिन को मैं अपना गुरु मानता हूँ। माओ भी उसी श्रेणी में आते हैं।"

"वे यदि कोई भूल करें तो उसपर विचार करने को भी तैयार हो अथवा कि नहीं ?"

"वे भी मनुष्य थे। भूल कर सकते है। यहाँ तक कि उनमें परस्पर मतभेद रहा है, मैं उनके मतभेद पर भी विचार करता हूँ।"

"बस, यही इस बात का लक्षण है कि तुम्हारी बुद्धि के कपाट खुले हुए हैं।

"मैंने आज अपने प्रवचन में कहा है कि सत्य की परीक्षा इस जगत् की व्याख्या से ही होती है। हम परमात्मा के अस्तित्व में भी सन्देह करते हैं। परन्तु जब संसार को देखते हैं तो परमात्मा को भी मानना पड़ता है। हम विवश होकर उसको मानते हैं।"

"हाँ महाराज ! आपकी बात विलक्षण है। अन्य साधुओं से सर्वथा भिन्न है।" यह फकीरचन्द ने बीच में ही कहा था।

स्वामीजी कहने लगे, "किसी वैज्ञानिक ने कहा है कि कोई भी जड़ वस्तु जब खड़ी हो जाए तो वह खड़ी ही रहती है और जब चलती है तो सीधी रेखा में स्थिर गति से चलती है।"

जवाहरलाल बोला, "न्यूटन का गति का प्रथम नियम मैंने भी पढ़ा था।"

"तब जरा अपनी बुद्धि पर जोर देकर यह बताने का यत्न करो कि आरम्भ में किसने वह आइन्स्टाइन वाला 'बिग बैंग' किया था ? वह धमाका किसने कराया। प्रकृति तो स्वतः हिल भी नहीं सकती ?"

"महाराज ! आपकी बात सुनी है, समझी है। अब घर जाकर विचार करूँगा। अपने फिलॉसौफी पढ़ाने वाले सहयोगियों से परामर्श करूँगा।"

"ठीक है, मेरा तो इतना ही आग्रह है कि जो कुछ जान सको वह मुझे भी बताना। मुझे भी कुछ सीखने का अवसर मिलेगा।"

"परन्तु महाराज ! [illegible] को तो नास्तिक कहा गया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसे वे ही नास्तिक कहते हैं जिन्होंने अपनी बुद्धि के द्वार वन्द कर लिये हैं।"

"ठीक है, मैं कल अवश्य जाऊँगा और इस विषय पर अपने विचार भी आपको बताऊँगा।"

इस प्रकार अगले दिन जवाहरलाल आया। उसने कहा, "महाराज! विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के प्राध्यापक ने निर्णय दे दिया है कि मैं पागल होने लगा हूँ।"

"यह तो स्वाभाविक है। ये पागल सारे संसार को ही पागल मानते हैं। क्योंकि दूसरे वैसा न समझते हैं और न देखते हैं, जैसा वे समझते हैं।"

"आपका कहना क्या है?"

"मेरा तो यही कहना है कि इस विश्व में ऐसा कोई तत्त्व है जो इस कार्य-जगत् का संचालन कर रहा है। वह क्या है? कैसा है? किस प्रकार दिखाई देता है? यह पृथक् बात है। पहले तो यह मानना होगा कि वह है।

" 'जन्माद्यस्य यतः' से परमात्मा की सिद्धि होती है।

"जिससे यह जगत्, सूर्य, चन्द्र, तारागण आदि बने हैं, चल रहे हैं और फिर अन्त में विनष्ट होंगे, वह परमात्मा ही है।"

"यह वाक्य किस ग्रन्थ का है?"

"ब्रह्मसूत्र का। उनके प्रारम्भ में ही यह कहा गया है।"

: १० :

सुधीर दो दिन तक स्वामीजी से भगवद्गीता का पाठ पढ़ने आता रहा। किन्तु तीसरे दिन नहीं आया। स्वामीजी विचार करने लगे। जब अल्पाहार के समय उन्होंने कृष्ण का स्थान रिक्त देखा तो जियाराम की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा।

जियाराम ने इसका अभिप्राय समझकर कहा, "सुधा के श्वसुर लाला सुरजनलाल आपके दर्शनों के लिए आ रहे हैं। कृष्ण आदि उनको लेने हवाई पत्तन गये हैं।"

"और सुधा?"

"वह भी गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज सुधीर दिखाई नहीं दिया ?"

"वह इस समय स्कूल का काम कर रहा है।"

"वह कल प्रातःकाल पाँच बजे मुझसे पढ़ने के लिए आया था किन्तु आज नहीं आया।"

"उसके पिता ने उसको मना कर दिया है।"

"क्यों ?"

"कृष्ण का विचार है कि उससे स्कूल की पढ़ाई में विघ्न पड़ रहा है।"

"ठीक है। अपने पुत्र का भला सोचने का उसको अधिकार रहा है।"

उसी समय सुधीर भीतर आ गया और बाबा की बात सुनकर कहने लगा, "किन्तु बाबा ! मैं भी तो कुछ विचार करता हूँ ?"

जियाराम ने अपने पोते से पूछा, "क्या विचार किया है तुमने ?"

सुधीर ने अल्पाहार अपनी प्लेट में डालते हुए कहा, "बाबा ! कल स्वामीजी ने कहा था कि बुद्धि तो वेदों की भी परीक्षा कर सकती है। इस कारण मैंने पिताजी की बुद्धि की परीक्षा की है।"

"क्या परीक्षा की है ?"

"उनका जो यह विचार है कि स्वामीजी की पढ़ाई से मेरे स्कूल के काम में विघ्न पड़ेगा, वह गलत है।"

"यह तुम किस प्रकार कहते हो ?"

"यह तो मैं व्यवहार में करके दिखाऊँगा। मेरी बुद्धि कहती है कि मैं दोनों स्थानों का कार्य कर सकता हूँ।"

"तुम्हारी बुद्धि किस प्रकार कहती है कि तुम दोनों स्कूलों की पढ़ाई ठीक प्रकार से कर सकोगे ?"

"बाबा ! यह तो करके दिखाने की बात है, बताने की नहीं। आज तो मैं धोखे में आ गया हूँ। मैंने अलार्म लगाकर अपने बिस्तर के पास रख दिया था। अलार्म बजा ही नहीं, प्रातःकाल छः बजे जब आँख खुली तो देखा कि घड़ी ही वहाँ नहीं है।

"मैंने दादी माँ से इस विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी पिताजी के सोने के कमरे में रखी हुई है। मैंने निश्चय किया है कि कल से बिना घड़ी के ही जागने का यत्न करूँगा।"

"कैसे करोगे?"

"वह मैं नहीं बताऊँगा। अन्यथा कोई उस घड़ी को भी उठाकर ले जायेगा।"

सुधीर की बातें सुनकर उसकी दादी मुस्कराती रहीं किन्तु उसने उसकी किसी बात पर हस्तक्षेप नहीं किया।

स्वामीजी ने कहा, "तुम्हें अपने पिताजी का कहना मानना चाहिए।"

"उनका कहा तो मानूँगा ही। मैं तो उनके कहने से भी कुछ अधिक करके दिखाने की सोचता हूँ।"

इस समय लाला सुरजनलाल तथा उनको लेने के लिए हवाई-पत्तन गये सभी जन आ उपस्थित हुए। सबकी दृष्टि द्वार की ओर गई।

लाला सुरजनलाल साठ वर्ष की आयु के थे। किन्तु देखने में ऐसा नहीं लगता था। वे पैंतालीस वर्ष के लगते थे। सुरजनलाल ने आकर स्वामीजी को प्रणाम किया और फिर जियाराम के गले लगे। जियाराम ने उनको अपने समीप ही बैठाया।

सुरजनलाल के दूसरी ओर स्वामीजी बैठे थे। उसने कहा, "मधुसूदन ने आपकी इतनी प्रशंसा की कि मैं आपके दर्शन करने की लालसा को रोक नहीं सका। मैं आपके दर्शन कर आपको बम्बई आने का निमन्त्रण देने चला आया हूँ।"

"इस मास के अन्त तक तो मैं यहाँ बंधा हुआ हूँ। मुझे यहाँ बुलाने वालों ने यह घोषणा कर दी है कि एक मास तक यहाँ मेरा प्रवचन होगा। उसके बाद मैं दक्षिण भारत का भ्रमण करने के लिए जाने का विचार कर रहा हूँ। उस अवसर पर कुछ दिन बम्बई में रहने का भी विचार किया है।"

अल्पाहार के समय इसी प्रकार की सामान्य बातें होती रहीं।

अल्पाहार समाप्त हुआ तो स्वामीजी उठे। सुरजनलाल भी उनके साथ-साथ उनके कमरे की ओर चल दिया। वहाँ उन लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में स्वाध्याय के विषय पर विचार होता रहा। जियाराम आदि उस समय उनके वार्त्तालाप में बाधक नहीं हुए। इस प्रकार दोनों मध्याह्न के भोजन के समय तक विचार-विमर्श करते रहे।

मंगलानन्दजी ने कहा, "मुझे बताया गया है कि आप गुरुकुल महाविद्यालय के स्नातक हैं। परन्तु आपके नाम से तो ऐसा कुछ लगता नहीं। गुरुकुल के स्नातकों के नाम तो बदलकर संस्कृत भाषा के कर दिये जाते हैं।"

"जी, मेरा गुरुकुल का नाम 'द्युतिमान' था। मैं वहाँ का वेदालंकार हूँ। किन्तु घर आने पर मेरी माताजी को मेरा नाम लेना कठिन हो गया। उन्होंने कह दिया कि तुम चाहे कुछ भी नाम रख लो किन्तु मेरे लिए तो तुम वह 'सुरजन' हो।

"मैंने भी उसी नाम को पुनः धारण करते हुए माँ से कहा था कि मैं वही रहूँगा जो वे चाहेंगी।"

"आपने अपने पुत्र को तो बहुत ही बढ़िया शिक्षा दी है। आपके पोते सोहन की भी मैंने परीक्षा ली थी। वह अपनी आयु से बड़ी आयु वालों जितना समझदार है।"

"मुझे उसके विषय में भी आपसे परामर्श करने की लालसा है। मधुसूदन ने जाकर मुझको बताया कि आपके मुख पर देखकर ऐसा लगता है कि मानो योग का मार्तण्ड भासित हो रहा हो। आपकी वाणी में सरस्वती स्वयं बोलती है। आपके भावों में दुर्गा का ओज है। बस, यह सुनते ही मैंने आपके दर्शनों का निश्चय कर लिया।

"एक कारण यह भी है कि मेरे मन में योजना है। परन्तु योजना का संचालन तो परमात्मा की तीन विभूतियाँ, श्रीं, ह्रीं और क्लीं ही कर सकती हैं।

"देश में अनेक बहुपठित विद्वान् थे। गोखले, बनर्जी, पाल, तिलक। परन्तु ये सारी विभूतियाँ तो एकत्रित होकर गांधी में ही समाहित हुई थीं। बस वह अपनी बात करता था तो उसमें सरस्वती और दुर्गा बोलती थी। इन दोनों ने बम्बई की लक्ष्मी को भी साथ मिलाया तो फिर देश में विप्लव उठ खड़ा हो गया। परमात्मा की ये तीन विभूतियाँ जब खड़ी हो जाती हैं तो विप्लव ही होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् कृष्ण में भी 'ह्रीं' और 'क्लीं' थीं परन्तु जब उनमें पाण्डवों की श्रीं भी मिली तो फिर राजसूय यज्ञ सम्पन्न हो गया।

"अत: जब मधुसूदन ने बताया कि आप में दुर्गा और सरस्वती तो विद्यमान् हैं तो मेरे मन में आया कि इसके साथ बम्बई की 'श्रीं' भी मिल जाय तो गांधी द्वारा उत्पन्न की गई विकृति भगवान् कृष्ण की महिमा से बदलकर देश को सन्मार्ग पर लाया जा सकता है।"

मंगलानन्द ध्यान से इस ईश्वर-भक्त की बात को सुन रहा था। सुरजनलाल ने ही फिर कहा, "मधुसूदन ने जब आपकी प्रशंसा की तो मैं स्वयम् ही परमात्मा की इस विभूति के दर्शन करने के लिए चला आया। मैं तीन दिन तक यहाँ रहकर आपके प्रवचनों का लाभ उठाऊँगा। यदि मधुसूदन का कथन सत्य हुआ तो मैं आपसे बम्बई चलने का आग्रह करूँगा और वहाँ श्रीं, ह्रीं, क्लीं के संयोग को योगबल से चलते देखेंगे। साथ ही यह भी देखूँगा कि आप पर किसी नेहरू की छाया तो नहीं है।"

"ठीक है, शेष बात तो उस परीक्षा के बाद ही होगी जो आप तीन दिन तक करेंगे। मैं भी जानना चाहूँगा कि आप क्या खिचड़ी पकाना चाह रहे हैं?"

"जी, हाँ। शेष बात हम तीन दिन बाद करेंगे। मैंने अपना उद्देश्य बता दिया है। वाणी में सरस्वती और दुर्गा का ओज रखने वाले महानुभाव ने पाश्चात्य राजनीति के दैत्यों के रंग में देश का विभाजन कराया और फिर देश की यह दुर्दशा करा दी है कि पूर्ण देश में दु:ख-दर्द का आर्तनाद और डाकुओं की लूट-खसोट मची हुई है।

"मेरे मन में इसके निराकरण की भी एक योजना है।"

"ठीक है, मैं भी बड़ी उत्सुकता से आपकी योजना जानने के लिए लालायित हूँ।"

पौने एक बजे चन्द्ररानी आई और दोनों को भोजन के लिए चलने का आग्रह किया। चलते हुए उसने सुरजनलाल से कहा, "आप तबतक यहाँ रहिए जबतक स्वामीजी का प्रवचन चल रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं बहिनजी ! मैं तो स्वामीजी महाराज को ही बम्बई ले जा रहा हूँ। मैं बम्बई में उनके प्रवचनों का प्रस्ताव कर रहा हूँ। उसके अतिरिक्त भी भविष्य के लिए कुछ करने की योजना बन रही है। उस सबकी व्यवस्था बम्बई चलकर ही होगी।

"मैं यहाँ तीन दिन के लिए आया हूँ। गुरुवार को सुधा और बच्चों के साथ ही रात को गाड़ी से चले जायेंगे।"

उस दिन सायंकाल सुधीर स्कूल से आया तो उसके अध्यापक रामस्वरूपजी भी आये। उस समय स्वामीजी अपने कमरे में बैठे हुए मिस पीटर के विषय में बात कर रहे थे।

मिस पीटर ने कहा, "माताजी मेरे साथ प्रसव के दिनों में चल-कर रहें।"

चन्द्र ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा, "मेरा तुम्हारे साथ जाने का यह अभिप्राय समझा जायेगा कि तुमको दिल्ली और फिर इस वर्तमान स्थिति में लाने का उत्तरदायित्व मुझ पर है। किन्तु मैं तो कभी इस पक्ष में थी ही नहीं। कृष्ण ने हठ करके तुमको प्रमिला का कोच बनाकर यहाँ बुलाया था।"

स्वामीजी ने कहा, "मैं कृष्ण से बात करूँगा।"

उसी समय सुधीर अपने अध्यापक को लेकर आ उपस्थित हुआ। उन्हें आते देख पीटर और चन्द्र उठकर चली गयीं।

रामस्वरूप ने कहा, "पिछले दो दिन से सान्ध्य टाइम्स में आपके प्रवचन की सूचना पढ़ रहा था। आज सुधीर से आपके विषय में चर्चा हुई थी। उससे प्रेरित होकर मैं आपके दर्शन करने के लिए चला आया।"

"क्या कहा है सुधीर ने मेरे विषय में ?"

"इसने एक बात बताई है। इसका कहना है कि हममें एक आत्मा है जो हमसे कर्म कराता है। अब यह उस आत्मा के आदेश से कार्य करने लगा है।

"इसने अपनी कापी में से पढ़कर सुनाया है। इसका कहना था कि आपने आधे घण्टे में ही इसको इतना कुछ समझा दिया है।"

"क्या समझा दिया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसने अपनी कापी में लिखा है, इसका शरीर जड़ है। जड़ स्वतः कोई कार्य नहीं कर सकता। आत्मा गतिशील तत्त्व है और मेरे सारे कार्य आत्मा कराता है। इस कारण मेरे सब कार्यों का उत्तरदायित्व मेरी आत्मा पर है। अर्थात् मेरे कर्म का उत्तरदायी मेरा आत्मा है।

"मैंने सुधीर से प्रश्न पूछा कि वह शरीर से पृथक् क्या है? वह दिखाई तो देता ही नहीं। अतः बिना देखे उसको किस प्रकार माना जाय कि वह है?

"तब इसने अपनी दादी द्वारा पाली हुई मैना की घटना बता दी। उसने कहा कि जब वह मरी तो हिलती-जुलती नहीं थी। मरने पर उसके शरीर से उसका आत्मा निकल गया था। मैं जो यह लिखता, पढ़ता, बोलता आदि हूँ यह सब आत्मा के कारण है। मेरा आत्मा मेरे शरीर में है।"

"आपको इस विषय पर क्या कहना है?" स्वामीजी ने पूछा।

"महाराज! मानता तो मैं भी यह सब हूँ। यह शरीर मिट्टी का ढेला है परन्तु इसके विश्लेषण का जो ढंग था वह विलक्षण था।"

"वह तो इसकी बुद्धि की प्रखरता का लक्षण है।"

"वह बुद्धि तो पहले भी इसमें थी। परन्तु उसका प्राकट्य तो आज ही हुआ है। यह तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आपने इसकी सोई हुई बुद्धि को जागृत कर दिया है।"

"मैंने तो कुछ भी नहीं किया है। यह तो सब कुछ इसमें पहले से ही विद्यमान था। किन्तु उन सबका प्रयोग जीवन की सामान्य बातों में हुआ करता था, मैंने इसकी प्रतिभा का मुख अध्यात्म की ओर मोड़ दिया है।"

सुधीर बोला, "बाबा! मैं आज से रात के भोजन के उपरान्त आपसे पढ़ा करूँगा।"

"अपने पिताजी से पूछ लिया है?"

"पिताजी ने कहा है कि अपने स्कूल के काम में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं आनी चाहिए। यह कार्य मैं रात के भोजन से पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लिया करूँगा। आपका पाठ मैं प्रातःकाल उठकर लिख लिया करूँगा। आज प्रातःकाल तो पिताजी ने न केवल मेरा टाइमपीस उठा लिया था अपितु मेरा द्वार भी बाहर से बन्द कर दिया था।"

"यदि उसकी इच्छा नहीं है तो वह तो रात को भोजन के उपरान्त मुझसे पढ़ने आने के लिए भी रोक सकता है।"

"वह समय मेरे स्कूल के काम के लिए निर्धारित है और जब मैं स्कूल का काम उससे पहले ही कर लूँगा तो वह समय मेरे खेलने का हो जायेगा। उस समय का उपयोग मैं आपसे पढ़ने में किया करूँगा।

"दादी माँ को मेरी योजना स्वीकार है। उन्होंने कहा है कि यदि इसमें भी पिताजी ने आपत्ति की तो वे पिताजी को समझायेंगी।"

स्वामीजी ने रामस्वरूप को कहा, "मास्टरजी! आपने अपने शिष्य को बहुत अच्छा प्रशिक्षण दिया है। मैं इससे प्रसन्न हूँ।"

इस समय सुधीर उठा और बोला, "अच्छा बाबा! अब मैं रात को भोजन के उपरान्त आपसे पढ़ने के लिये आऊँगा।"

दिल्ली से जाने से पूर्व सुरजनलाल स्वामी मंगलानन्द से मिला और कहने लगा, "महाराज! बम्बई में आपके भाषणों के लिए उपयुक्त स्थान का प्रबन्ध करने के उपरान्त मैं यहाँ टेलीफोन करूँगा।

"यदि भगवान् की कृपा हुई तो देश को विकृत होने में जितना समय लगा है उससे कम समय में ही यह पुनः सन्मार्ग पर आ जायेगा।

"गांधीजी महाराज ने सन् १६२१ में कहा था कि वे एक वर्ष में स्वराज ला सकते हैं। देश ने उनको जन-धन से लाद दिया। किन्तु नेतृत्व आया असुर जनों के हाथ में। किन्तु वह भी जितना कुछ मिल पाया उसको मिलने में भी २७ वर्ष लगे थे। मुझे आशा है कि यदि उपयुक्त साधन मिल जाय तो इस देश को सन्मार्ग पर आने में उससे कम ही समय लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

स्वामीजी को बाबर लेन पर प्रवचन करते हुए १५ दिन हो गये थे। उनका प्रवचन सुनने आने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। उसका परिणाम यह हुआ कि कोठी के लॉन से बाहर सड़क पर भी लाउडस्पीकर लगा दिये गये। इस प्रकार असंख्य जन बाहर सड़क पर खड़े होकर उनका प्रवचन सुनने लगे थे।

अपने प्रवचनों का विषय स्वामीजी क्रमशः बदलते जा रहे थे। उन्होंने वेद और ब्राह्मण-ग्रन्थ पर प्रवचन आरम्भ किये थे। फिर वेद की विद्याओं का प्रतिपादन उन्होंने किया। इस प्रकार चलते-चलते वे प्राचीन भारतवर्ष के इतिहास से वर्तमान भारत के इतिहास पर आ गये थे।

स्वामी मंगलानन्द का कहना था कि वर्तमान शासक शंकर, बुद्ध, ईसा और मोहम्मद से प्रभावित हैं। उनके अनुरूप ही जो साहित्य प्रकाशित हुआ है उसमें ही उनकी रुचि भी रहती है। इस साहित्य में बौद्ध, वेदान्त, पौराणिक, उपनिषदादि अनार्य शिक्षा पहुँची। सात सौ वर्ष का मुसलमानों के शासनकाल का कूड़ा-करकट और फिर उसके उपरान्त अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा से जो व्यक्ति प्रभावित हैं, वही आज के शासक बने हुए हैं।

सरकार की शिक्षा पद्धति इसका मुख्य कारण है। वास्तव में वह शिक्षा तो है ही नहीं। वह तो एक प्रकार का प्रशिक्षण है।

वर्तमान युग के भारतीय शासक शंकर और बुद्ध के पूर्व के विद्वानों के विचार का अंशमात्र भी उन्होंने देखा, सुना अथवा पढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। न केवल इतना अपितु ये शासक आज इस दिशा में यत्नशील हैं कि सत्य वेद विद्या से विभूषित कोई भी व्यक्ति राज्य और शासकों के निकट सम्पर्क में आने ही न पाये।

यह है आज की मूलभूत समस्या और इस समस्या का निराकरण सिद्धार्थ जैसे राजा-रईसों के सुपुत्र, जो आजीविका के लिए प्रजा तथा सरकार पर निर्भर न हों, वेद धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपना जीवन सर्वस्व समर्पित कर दें। जबतक सहस्रों ऐसे त्यागी-तपस्वी इस कार्य के लिए आगे निकलकर नहीं आते तबतक इस देश में सुख और शान्ति नहीं हो सकती।

लाला फकीरचन्द का सुपुत्र जवाहरलाल भी नित्य प्रति स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिए आता था। जिस दिन स्वामीजी ने सरकार की शिक्षा पद्धति पर अपने विचार व्यक्त किये उस दिन वह प्रवचन के उपरान्त स्वामीजी से मिलने के लिए उनके कमरे पर आ गया। उस दिन उसका पिता प्रवचन सुनने नहीं आया था।

स्वामीजी के संकेत पर जियाराम ने प्रोफेसर जवाहरलाल के लिए भी दूध का गिलास मँगवा दिया। जियाराम ने जब उसको दूध का गिलास दिया तो जवाहरलाल ने हाथ जोड़कर कहा, "दूध मुझे अनुकूल नहीं होता।"

"तो क्या अनुकूल होता है ?"

"यदि कॉफी पिलवा सकें तो कृपा होगी। आज रविवार है। मेरा विचार स्वामीजी से लम्बी बातें करने का है।"

जियाराम ने सेवक को दो प्याला कॉफी और कुछ मिठाई इत्यादि भी लाने के लिए कह दिया।

स्वामीजी ने पूछा, "दूसरा प्याला किसके लिए मँगवाया है ?"

"अपने लिए।"

स्वामीजी ने पूछा, "कृष्ण कई दिन से दिखाई नहीं दे रहा है ?"

"कोचीन के काम में कुछ बाधा आने लगी थी। वह वहाँ चला गया है। सम्भवतया आज वापस आ जाय।"

जबतक कॉफी और मिठाई आदि आई तबतक इधर-उधर की ही बातें होती रहीं। कॉफी समाप्त कर जियाराम अपने काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर चला गया।

जियाराम के चले जाने पर जवाहरलाल ने कहा, "आज तो आपने राजनीति पर भी बहुत-कुछ अपने प्रवचन में उल्लेख किया है।"

"हाँ, राजनीति के विषय में ही कहा, वर्तमान कालीन शासकों के विषय में तो कुछ नहीं कहा। राजनीति स्मृति शास्त्रों का विषय है। आजकल इस देश का स्मृति शास्त्र है 'भारत का संविधान'। वह ऐसा स्मृतिशास्त्र है जिसमें विद्वानों के विषय में कुछ नहीं कहा गया है।

"उदाहरण के रूप में मनुस्मृति में एक स्थान पर कहा गया है कि दस सहस्र अपठितजनों की अपेक्षा वेद के तीन विद्वानों का मत माननीय है। यही मैंने भी कहा है। जैसाकि वर्तमान संविधान में कहा गया है कि सब नागरिक समान हैं, मैंने इस कथन की आलोचना नहीं की।"

यह सुनकर जवाहरलाल हँस पड़ा। उसने हँसकर कहा, "आपने जनता जनार्दन को मूर्ख कहा है।"

"परन्तु सामान्य जनता को जो जनार्दन कहता है, मैं उसे मूर्ख समझता हूँ। जनार्दन अर्थात् भगवान् वैसा मूर्ख नहीं हो सकता जैसाकि आज का भारतीय समाज है।

"हाँ, जनता के पालन और रक्षा का उल्लेख वेद में है। वेद में ही यह बताया गया है कि जब परमात्मा पंचजनों की पुकार सुनता है तो नंगे पाँव भागा चला आता है। वेद में पंचजनाः का अभिप्राय है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अन्त्यज। जब ये पंचजन दुःख से आतुर होते हैं तो फिर भगवान् उनकी रक्षा अथवा पालन के लिए किसी विशेष विभूतियुक्त आत्मा को भेज देता है।

"समाज का दुःख तो परमात्मा निवारण करता है। भला बुद्धि-विहीन सामान्य जनता अपना कल्याण स्वयं कैसे कर सकती है?

"किन्तु इसका यह अभिप्राय भी नहीं है कि पंचजन जो आनन्द उत्सव करना चाहें वह उनका अधिकार हो गया।"

"तो अधिकार का क्या मापदण्ड है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धार्मिक और न्यायप्रिय जीवन।"

"धर्म क्या है?"

"धृति क्षमादमोऽस्तेयं शोचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

इसके अतिरिक्त एक मुख्य बात है:

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वाचैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥"

इस प्रकार स्वामीजी ने जवाहरलाल का समाधान किया।

जवाहरलाल ने अन्त में पूछा, "आप पुनः साधु आश्रम में जाकर प्रवचन करेंगे?"

"यदि वहाँ के प्रबन्धकों की ऐसी इच्छा होगी तो मुझे वहाँ भी प्रवचन करने में कोई आपत्ति नहीं है। भगवान् की कृपा से जो कुछ मैं समझ पाया हूँ कि मानव के लिए क्या कल्याणकारी है, वह मैं बिना किसी भेदभाव के सबको बताने की इच्छा करता हूँ। यह मेरा सिद्धान्त है। वेद में कहा है—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय॥"

जवाहरलाल बोला, "परन्तु महाराज! आपकी ख्याति की चर्चा उच्च क्षेत्र में भी होने लगी है।"

"उच्च क्षेत्र से क्या अभिप्राय है?"

"जो स्वयं ख्याति प्राप्त है उनको अनुभव हो रहा है कि उनके पाँव के नीचे का स्टूल खिसक रहा है।"

"मैं उनका प्रतिस्पर्द्धी तो नहीं हूँ।"

"यह तो मैं जानता हूँ कि आप उनके प्रतिस्पर्द्धी नहीं हैं। परन्तु आपकी ख्याति उनकी ख्याति की प्रतिस्पर्द्धी मानी जाने लगी है। इसी बात ने तो स्वामी अभयानन्द को आपको साधु आश्रम से भगाने के लिए प्रेरणा दी थी।"

जवाहरलाल इस प्रकार बात कर और कुछ बताकर वहाँ से चला गया।

दूसरे दिन प्रवचनोपरान्त जियाराम ने स्वामीजी से कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज ! कृष्ण दस दिन के उपरान्त रात कोचीन से लौटकर आया है। आज उसने मुझे नोटिस दे दिया है कि मैं आपको कोठी से विदा कर दूँ। अन्यथा हमारे कार्यों में सरकार की ओर से विघ्न उपस्थित होने लगेगा।"

"मैं तो आज ही जाने के लिए तैयार हूँ।"

"नहीं महाराज ! यह कोठी कृष्ण की नहीं, चन्द्र की है। मैंने कृष्ण को नोटिस दे दिया है कि वह शाम तक इस कोठी को खाली कर दे।"

"परन्तु जियाराम ! वह तो तुम्हारा पुत्र है और तुम्हारे कारोबार का प्रबन्धक। इस प्रकार का नोटिस देने से पूर्व आपने मुझको पूछ तो लिया होता। मैं तो आज रात ही हवाई जहाज से यहाँ से चला जाना चाहता हूँ।"

"परन्तु महाराज ! कल जो दस सहस्र जनों की भीड़ यहाँ पर एकत्रित होगी मैं उसको क्या उत्तर दूँगा ?"

"उस भीड़ से तुम्हारा क्या कल्याण होने वाला है ?"

"वह बात छोड़िये। किन्तु आप यहाँ से नहीं जा सकते। हम दोनों यहाँ श्रोतागणों के प्रति वचनबद्ध हैं कि तीस दिन तक इस स्थान पर आपका प्रवचन होता रहेगा।

"कृष्ण आज रात ही इस कोठी को छोड़कर अपनी ओखला वाली कोठी पर चला जायेगा। वहीं से वह कारोबार की देखभाल करेगा।"

फकीरचन्द भी उस समय उनके साथ ही था। उसने कहा, "स्वामीजी महाराज ! जिस प्रकार आप लाहौर से चुपचाप रात के समय भागकर हरिद्वार जा पहुँचे थे, उस प्रकार आप यहाँ से नहीं भाग सकते। आप श्रोतागणों के सम्मुख वचनबद्ध हैं कि एक मास तक आप इस कोठी पर प्रवचन करेंगे और प्रवचन के अन्तिम दिन कथा का भोग लगेगा और उस दिन आपकी भेंट-पूजा की जायेगी। मैं कोठी के चारों ओर जनता के प्रतिनिधियों का पहरा बैठा दूंगा, वे लोग आपको जाने नहीं देंगे।"

स्वामी मंगलानन्द मुस्करा दिये। उन्होंने कहा, "अभी मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी प्रकार का कोई निश्चय नहीं किया है। मैं जो कुछ भी करूँगा वह आप लोगों को बताकर ही करूँगा, पच्चीस वर्ष पूर्व जो किया था, न अब वैसी परिस्थिति है और न मैं ही वैसा व्यक्ति रह गया हूँ।"

"तब तो ठीक है महाराज! कृष्ण से मैं स्वयं निपट लूँगा।"

कोचीन में कृष्ण अय्यर से मिलकर आया था। उसको स्वामीजी का गृहस्थजनों के साथ रहना पसन्द नहीं था। दूसरे, कृष्ण ने उसको बताया था कि स्वामीजी के परामर्श पर ही मिस पीटर ने गर्भपात कराना अस्वीकार कर दिया है। कृष्ण यह भी देख रहा था कि सुधीर अभी भी स्वामीजी की शिक्षा ग्रहण कर रहा है। यह भी उसको स्वीकार नहीं था।

पिछली रात बारह बजे के लगभग वह अपने घर पहुँचा था और उसी समय उसने अपने पिता को यह बात कह दी थी। जियाराम तो कोचीन के कार्य की प्रगति के विषय में जानने को उत्सुक था। वहाँ का वृत्तान्त जानने के लिए ही वह कृष्ण को लेने के लिए हवाईपत्तन गया था। वहाँ से लौटते हुए मार्ग में ही पिता-पुत्र में इस विषय पर बात हुई थी।

कृष्ण ने सीधे से कह दिया, "हमारी कोठी में स्वामीजी का प्रवचन हमारे व्यवसाय की दृष्टि से उचित नहीं है।"

"उनके प्रवचनों का हमारे व्यवसाय से क्या सम्बन्ध है?"

"अय्यर कह रहा था कि वे साम्प्रदायिक व्यक्ति हैं। सरकार को उनका हमारे परिवार में रहना पसन्द नहीं होगा।"

"सम्प्रदाय का सरकार से क्या झगड़ा है? सरकारी अधिकारी तो मुसलमान भी हैं और ईसाई भी।"

"परन्तु उन्होंने अपने घरों में गिरजाघर अथवा मस्जिदें नहीं बनाई हुई हैं।"

"तो क्या हमारी कोठी मन्दिर हो गई है?"

"मन्दिर क्या, यह तो उससे भी अधिक हो गई है। मन्दिर तो सार्वजनिक स्थान होता है। परन्तु व्याख्यान देने वाला और उसको सुनने वाला ये दोनों ही सक्रिय कार्य करने वाले माने जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ऐसा करो, तुम अपना कारोबार कोठी से बाहर ले जाओ, जिससे कि सरकारी अधिकारी तुम्हें मिलने के लिए यहाँ न आ सकें।"

"एक बार पहले भी आपने यही बात कही थी। उस समय मैंने बताया था कि हम अभी अपने कार्यालय का पता बदल नहीं सकते। इसके अतिरिक्त ओखला वाली कोठी नगर के केन्द्र स्थान अथवा सरकारी कार्यालयों से बहुत दूर भी है।"

"अब तो लोग फरीदाबाद, बल्लभगढ़, सोनीपत और गाजियाबाद आदि स्थानों पर रहते हुए दिल्ली में व्यवसाय करने लगे हैं। मोटर और रेल ने सारी दूरियाँ दूर कर दी हैं।"

तबतक ये लोग अपनी कोठी पर पहुँच गए थे। जियाराम ने बात समाप्त करते हुए कहा, "कल सायंकाल तक तुम अपने परिवार के साथ ओखला वाली कोठी पर चले जाना।"

"और आप ?"

"मैं प्रतिदिन कुछ समय के लिए तुम्हारे कार्यालय में आया करूँगा। किस समय आऊँगा, इसके विषय में विचार करके कल तक बता दूँगा।"

इस प्रकार कोठी पर पहुँचकर यह वार्त्तालाप बन्द हो गया। प्रातःकाल प्रवचन के उपरान्त फकीरचन्द के सम्मुख यह बात हुई तो स्वामी मंगलानन्द विचार करने लगा कि उसको अब क्या करना चाहिए।

स्वामीजी उस समय दूध पी ही रहे थे कि चन्द्ररानी और सुधीर द्वार पर दिखाई दिये। स्वामीजी ने उस ओर देखा तो चन्द्ररानी ने पूछा, "हम आ सकते हैं ?"

उनको आया देख फकीरचन्द उठा और प्रणाम कर बोला, "स्वामीजी जाने से पूर्व मुझसे मिलकर जाइयेगा। यदि जाने का विचार बन ही जाय तो मुझे फोन करवा दीजिएगा।"

"क्यों, मुझे रोकने के लिए पुलिस का प्रबन्ध करेंगे ?" स्वामीजी ने मुस्कराते हुए कहा।

"पुलिस में शक्ति ही कितनी है महाराज ! मैं तो उससे भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबल शक्ति का प्रयोग करूँगा।"

"ओह! तो आप सेना का घेरा डलवायेंगे!"

"नहीं महाराज! मैं तो उससे भी प्रबल बन्धन में बाँधने का विचार करता हूँ। वह बन्धन है ईश्वरीय शक्ति, आप उसकी अवहेलना नहीं कर पायेंगे।"

स्वामी जी हँस दिये। बोले, "अब आप ठीक स्थान पर आ पहुँचे हैं। परन्तु उस शक्ति का प्रयोग आप अपने साधु आश्रम वालों पर तो कर नहीं पाये।"

"मैंने प्रयोग तो किया है। किन्तु उस नाशवान प्रपंच का तो परमात्मा भी सहायक नहीं हो सका।"

इतना कहकर फकीरचन्द उठकर चला गया। उसके जाने पर स्वामीजी ने चन्द्ररानी और सुधीर को बैठने का संकेत किया।

: २ :

चन्द्ररानी और सुधीर जब यथास्थान बैठ गए तो चन्द्ररानी ने सुधीर की ओर संकेत कर कहा, "महाराज! हमारा पुत्र कृष्ण कोठी छोड़कर अपने नये निवास पर जा रहा है। उसका परिवार भी शायद उसके साथ जा रहा है किन्तु उस परिवार का यह घटक अपने पिता से विद्रोह कर वहाँ जाना अस्वीकार कर रहा है।"

"क्या कहता है यह?"

"यह आपसे पढ़ने लगा है। उस कोठी में जाकर यह सम्भव नहीं होगा। इसके अध्ययन में उससे बाधा उत्पन्न हो रही है।"

"इसका पढ़ाई करना अधिक लाभप्रद है अथवा कि माता-पिता के साथ रहना?"

"महाराज! यह बात ऐसी नहीं है। यहाँ पर पढ़ाई और माता-पिता की आज्ञा में परस्पर विरोध की बात नहीं है। शिक्षा का प्रबन्ध तो उस कोठी में रहते हुए भी हो सकता है। प्रश्न यह उत्पन्न होने लगा है कि माता-पिता का कहना मानना अधिक धर्मसंगत है अथवा कि दादा-दादी का कहना मानना?"

"दादा-दादी क्या चाहते हैं?"

"हम यह चाहते हैं कि कृष्ण अपना कार्यालय तो नयी कोठी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले जाय, किन्तु उसका परिवार यहीं रहे।"

"कृष्ण स्वयं कहाँ रहे ?"

"जहाँ उसकी इच्छा हो। परिवार हमारा है, उसमें वह भी एक घटक है। परिवार जहाँ चाहे रह सकता है। यह लड़का हमारे साथ रहना चाहता है। इसकी माँ की भी कुछ ऐसी ही इच्छा है। परन्तु कृष्ण का कहना है कि उसका परिवार हमसे पृथक् है, इसलिए वह हमसे पृथक् रहेगा।"

"अच्छा, तो यह बात है। किन्तु आपके इस आपसी झगड़े में मुझे क्यों हस्तक्षेप करना चाहिए ? मैं तो तुम्हारे इस परिवार को अपना परिवार समझता नहीं। मैं विश्व परिवार का घटक हूँ।"

चन्द्र ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "अपने शिष्य के कल्याण के लिए तो आप इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप करने का अधिकार रखते हैं।"

"उसका शिष्य होना भी तो उसके पिता की अनुमति से ही सम्वन्धित है। यदि उसने अनुमति न दी तो मेरा अधिकार शून्य हो जाएगा।"

सुधीर ने कहा, "महाराज ! मैं आपका शिष्य पिताजी की अनुमति से तो वना ही नहीं था। वे तो इस कार्य में बाधक ही रहे हैं।"

"तो तुम किसकी अनुमति से मेरे पास पढ़ने के लिए आया करते थे ?"

"मैं तो दादी माँ की अनुमति से आता था। वे अभी भी यही चाहती हैं।"

"इससे यह स्पष्ट हुआ कि यह विवाद दादी माँ और तुम्हारे पिताजी के मध्य है। मैं इसमें किस प्रकार हस्तक्षेप कर सकता हूँ ?"

"गुरुजी ! यदि पिताजी और दादी माँ दोनों ही आपसे परामर्श करने के लिए आयें तो आप अपनी सम्मति देंगे अथवा कि नहीं ?"

"जब वे मुझसे परामर्श करने के लिए आयेंगे उस समय उनकी बात सुनकर मैं निश्चय करूँगा कि उनका मुझसे सम्मति माँगने का उद्देश्य क्या है। ये दोनों अथवा इनमें से कोई एक मेरी सम्मति स्वीकार करने से इन्कार भी कर सकते हैं। ऐसी अवस्था में मेरी प्रेरणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्फल हो जाएगी।"

चन्द्ररानी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "यदि आप कहें तो मैं कृष्ण को लेकर आती हूँ।"

"हाँ, यदि वह आता है तो उस समय मैं सोचूँगा कि मुझे आप लोगों के पारिवारिक विवाद में हस्तक्षेप करना चाहिए अथवा कि नहीं।"

यह सुनकर चन्द्ररानी और सुधीर उठकर जाने ही लगे थे कि तभी मिस पीटर वहाँ आ गई। सबकी दृष्टि उस ओर चली गई। मिस पीटर ने चन्द्ररानी से कहा, "माताजी! आपके सुपुत्र यह मकान छोड़कर जा रहे हैं। उन्होंने मुझे भी अपना सामान समेटने के लिए कहा है। क्योंकि मेरा कार्य भी उनके साथ ही जा रहा है, इसलिए मुझे भी यह घर छोड़ने की तैयारी कर लेनी चाहिए, ऐसी मुझे आज्ञा हुई है।"

"यह तो उचित ही है। तुम उनके परिवार में सेवा करती हो, इसलिए तुमको उस परिवार के साथ ही रहना चाहिए।"

"किन्तु मैं आज प्रमिला के ट्यूटरशिप से त्याग-पत्र दे आयी हूँ। मैं तो अब यह जानने के लिए आई हूँ कि इस अवस्था में मैं आपके घर में रह सकती हूँ अथवा कि नहीं?"

चन्द्ररानी इस नयी परिस्थिति में अनिश्चित मन थी। वह मिस पीटर का मुख देखने लगी, मानो कह रही हो यह क्या हो गया है?

अपनी पत्नी को चुप देख जियाराम ने पीटर से पूछा, "तुम इस घर में किस आधार से रहना चाहती हो?"

"माताजी ने मुझे अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार किया है।"

जियाराम ने अपनी पत्नी से पूछा, "क्यों, तुम इसे अपनी पुत्री के समान मानती हो?"

चन्द्ररानी को मार्ग मिल गया। उसने कहा, "जब यह पुत्री बनकर रहना चाहती है तो मुझे माता बनने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है। यह पद तो अति दुर्लभ है। यदि प्राप्त होता है तो मैं क्यों अस्वीकार करूँ?"

"तो ठीक है, तुम जानो तुम्हारी लड़की जाने। मैं तो पिता हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, इसलिए मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं करूँगा।"

इस समय स्वामीजी ने मुस्कराकर मिस पीटर से कहा, "तुम जियाराम जी को अपना पिता मान लो, बस तुम्हारा काम बन गया समझो।"

"पिताजी ! यदि मैं यह बात मुख से न भी कहूँ तो भी माता जी के पति होने के नाते आप मेरे पिता तो स्वाभाविक रूप से बन गए हैं। तदपि यदि आप मेरी बात पूछना ही चाहते हैं तो मैं कहना चाहूँगी कि मेरे आपके प्रति वही भाव रहेंगे जो सुधा दीदी आपके प्रति रखती हैं।"

स्वामीजी को हँसी आ गई। वे बोले, "जियाराम जी ! यह तो भूतकाल से कुछ विलक्षण ही है। उस समय जिस समय मैंने तुम्हारा घर छोड़ा था, इतनी युक्तियुक्त बातें सुनने को नहीं मिलती थीं।"

"पिताजी ! तब क्या था ?"

"पिताजी नहीं। मैं उस समय से ही तुम्हारा पिता नहीं रहा जिस समय मैंने तुम्हारा घर छोड़ा था। अब तो मैं संन्यासी हूँ और संन्यासी का सम्बन्ध समस्त संसार से एक समान ही होता है।"

"परन्तु महाराज ! वह सम्बन्ध क्या है ? वह भी क्या पिता-पुत्र का सम्बन्ध नहीं है ?"

"नहीं, वह पिता-पुत्र का नहीं, गुरु-शिष्य का है। स्वामी उपदेष्टा होता है, पिता तो परम प्रभु परमात्मा है।"

मिस पीटर बोली, "शिष्या तो मैं भी आपकी हूँ। मैं भी आपके प्रवचन सुनती हूँ और उन पर मनन भी किया करती हूँ।"

"हाँ, तुमने कम-से-कम एक बात तो स्वीकार की है। इसलिए मैं तुमको शिष्या मान सकता हूँ।"

"केवल एक बात नहीं महाराज ! उस एक बात से बहुत अधिक स्वीकार किया है। मैं चाहती हूँ कि मुझे माताजी अपने पास रखें। कम-से-कम एक वर्ष तक तो रखें ही। किन्तु इनके पुत्र के घर पर मैं रहना नहीं चाहती।"

स्वामीजी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "...! ... में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन तो हुआ है। परन्तु तुम वैसी की वैसी ही हो। वही जो तुम अपने बाल्यकाल में थीं। कोमल, संवेदनशील हृदय वाली। परमात्मा तुम्हारा कल्याण करे।"

चन्द्र और सुधीर वहाँ से चले गए। मिस पीटर भी जाने लगी तो उस समय स्वामीजी ने कहा, "जियाराम! मैं समझता हूँ कि कृष्ण के लिए भय करने का कोई कारण नहीं। मैं वर्तमान सरकार से असम्बद्ध बात ही करता हूँ। यद्यपि उनका सम्बन्ध राजनीति से है परन्तु वह समस्त संसार की राजनीति से सम्बन्धित है। केवल अपने देश की राजनीति से नहीं। अतः तुम लोगों को किसी प्रकार भी भयभीत नहीं होना चाहिए।"

"महाराज! मैं भी ऐसा ही समझता हूँ। परन्तु कृष्ण को तो आपकी ख्याति देखकर संशय हो गया है। मैं समझता हूँ उसका संशय निराधार है। वह चुपचाप यहाँ बैठा रहता तो मैं समझता हूँ कि सरकार में कोई इतना बुद्धिमान तो है नहीं जो आपकी सामान्य बात से भारत सरकार के लिए ही भय का अनुभव करने लगे।

"मैं उसको आपके सम्मुख लाता हूँ, आप उसे समझा दीजिए।"

स्वामीजी बोले, "ठीक है ले आओ। यद्यपि अकारण भयभीत व्यक्ति के भय का निवारण किसी प्रकार भी सुगम नहीं है तदपि यत्न तो किया जा सकता है।"

इस प्रकार एक-एक कर जब परिवार के सब लोग चले गए तो स्वामीजी विचार करने लगे कि क्या उसे उनको आज पच्चीस वर्ष बाद भी वही कुछ करना चाहिए जोकि उस समय घर छोड़ने के लिए किया था? तब उसके उस प्रकार घर से चले जाने से उसका कल्याण ही हुआ था। अपने स्वाध्याय से उसने बहुत ज्ञानार्जन किया था। तो क्या इस समय भी इस कीचड़ से निकलकर उसका कल्याण नहीं होगा?

पच्चीस वर्ष पूर्व जब वह लाहौर के अपने घर से रात को निकलकर भागा था तो उस समय वह केवल अंग्रेजी भाषा का ही कुछ जानता था। अध्यात्म के नाम पर सुथरों की धर्मशाला में जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान मिला था, वही मात्र था। समाधि का अभ्यास भी इन्हीं गुरुजी ने करवाया था। इससे अधिक वह उनसे नहीं सीख पाया था। क्योंकि वे इससे अधिक जानते भी नहीं थे। लाहौर से जाने के बाद हरिद्वार-ऋषिकेश में रहते हुए भी वह पर्याप्त समय तक गृहस्थ के पहरावे में रहा था। तब एक दिन अकस्मात् उसने ऋषिकेश में गंगा के तट पर एक ओजस्वी साधु महाराज को ध्यानस्थ देखा तो विचार आया कि इन साधु महाराज को गुरु स्वीकार कर इनसे संन्यास की दीक्षा क्यों न ले ली जाय ? यह विचार आते ही वह उनके समीप बैठकर उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगा था।

इस प्रकार उस समय उसको आधा घण्टा तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। साधु महाराज की जब आँखें खुलीं तो उन्होंने एक गृहस्थ को सम्मुख बैठा पाया तो पूछा, "भक्त! किस प्रतीक्षा में बैठे हो ?"

उसने कहा था, "महाराज ! मेरा नाम नन्दलाल सूरी है। मैं यहाँ गंगा तट पर किसी योग्य गुरु महाराज की खोज कर रहा हूँ जिनसे कि मैं संन्यास की दीक्षा ले सकूँ। आपको यहाँ समाधिस्थ देखकर मेरे मन में कुछ इस प्रकार की भावना जगी कि आप इस कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति हैं। यही कारण है कि आध घण्टे से मैं आपकी शरण में आने की प्रतीक्षा में बैठा हूँ।"

"ऐसी भी क्या बात है ? यहाँ ऋषिकेश में तो साधु-सन्तों की भरमार है। तुम किसी अन्य के पास क्यों नहीं चले जाते ? मुझे तो शिष्य पाने की कोई लालसा नहीं है। मैं तो अकेला ही अपने मार्ग पर चलना चाहता हूँ।"

"महाराज ! आपके अकेलेपन में मैं किस प्रकार बाधक बनूँगा ? उस मार्ग में तो मैं आपसे बहुत पीछे हूँ। तदपि मैं आप पर दृष्टि रखे हुए आपकी गति में बाधा बने बिना आपका अनुकरण करने का विचार कर बैठा हूँ।"

"बिना हमसे पूछ-गीछ किये, केवल हमें देखकर ही अपना मार्ग पा लोगे ?"

"हाँ महाराज ! बस इतनी आकांक्षा और रहेगी कि आप कभी दृष्टि से ओझल न हो जायें। आप अपने मार्ग पर चलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलिए, मैं आपको देखकर आपका अनुकरण करूँगा। किन्तु यह तबतक ही सम्भव है जबतक कि आप बिना बताये कहीं लुप्त नहीं हो जाते।"

ये स्वामी सोमेश्वरानन्द थे। उन्होंने कहा, "तब ठीक है। तुम मेरे मार्ग में यदि बाधक नहीं बनोगे तो मैं तुम्हारी दृष्टि से ओझल भी नहीं होऊँगा।"

"किन्तु महाराज! दीक्षा तो प्रदान करनी ही होगी।"

"वह दे दी है। आज से तुम अब संन्यासी हो। इस परिधान को उतारकर भगवे वस्त्र धारण कर लो। बस हमारे पदचिह्नों को देख-देखकर चलते रहो।

"यदि हमारे पदचिह्नों को भली-भाँति पढ़ पाओगे तो उसी कल्याण के भागी बनोगे, जिसके कि हम स्वयं हैं।"

"महाराज! ऐसा ही होगा।"

उस समय उसने स्वामीजी के निवास आदि का पता लगाया। इसके लिए उस समय वह वहाँ बैठा रहा। जब स्वामी सोमेश्वरानन्द जी उठे तो वह भी उठ गया। स्वामीजी चलते गये और वह उनके पीछे-पीछे चलता रहा।

उस समय स्वामीजी कैलाश आश्रम में एक कमरे में रहते थे। वह स्वयं पंजाबसिंध क्षेत्र में रहता था। वह पंजाबसिंध क्षेत्र गया और वहाँ से अपना सामान उठाकर ले आया और कैलाश आश्रम के प्रबन्धक के पास जाकर उसने स्वामीजी के बराबर का खाली कमरा ले लिया।

आश्रम के मुंशी ने कहा, "यहाँ तो साधु लोग रहा करते हैं। बराबर के कमरे में एक साधु रह भी रहे हैं।"

"मैंने आज उनसे संन्यास की दीक्षा ले ली है। मैं भगवे वस्त्रों का प्रबन्ध कर रहा हूँ, मिलते ही वह धारण कर लूँगा।"

"भगवे वस्त्र तो यहाँ भी मिल सकते हैं।"

"बस फिर क्या है। दे दीजिए। कितना मूल्य है?"

"मूल्य नहीं देना होगा। संन्यास लेने वाले को हम आश्रम से ही वस्त्र दिया करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दलाल सूरी ने पुराना चोगा उतारा और नया भगवा चोगा धारण कर लिया। स्वामी सोमेश्वरानन्दजी जब मध्याह्नोत्तर अपनी कुटिया से बाहर निकले तो उसको वेश में देखकर कहने लगे, "तो तुम यहाँ तक पहुँच गए हो ?"

"जी महाराज ! यह तो कुछ भी नहीं। मैं तो आजीवन आपका अनुगमन करने का निश्चय किये हुए हूँ।"

"ठीक है। ठहरे कहाँ हो ?"

"यहीं आपके बराबर में एक कमरा मिल गया है।"

स्वामीजी नन्दलाल के कमरे में चले गए। उन्होंने तखत के नीचे अटैचीकेस देखकर कहा, "इसमें क्या है ?"

"यह जो कुछ भी है वह मेरे और आपके उस कार्य के लिए है जिसे हम करेंगे। यह कुछ जमा-पूँजी है जो मैं आपके मार्ग पर चलता हुआ मार्ग को सुलभ बनाने के लिए व्यय करने का विचार कर रहा हूँ।"

"किन्तु संन्यासी के लिए तो सब कुछ त्याग देने का विधान है ?"

"महाराज ! यह तो कुछ ऐसा ही है जैसाकि आपका कम्बल और लंगोट। इससे उतना ही मोह है जितना कि इन वस्त्रों से। गरमी और शीत में ये इस शरीर के लिए सहायक सिद्ध होते हैं। उसी प्रकार यह भी सिद्ध होगा।"

स्वामी सोमेश्वरानन्द विचारमग्न हो गए किन्तु उन्होंने कुछ कहा नहीं।

एक दिन जब मंगलानन्द स्नान आदि में व्यस्त था तो स्वामी सोमेश्वरानन्द ने उसकी अटैची खोलकर देखना चाहा। उसमें बैंक की एक पासबुक थी। लिखने के लिए कागज, कलम था। इसके अतिरिक्त एक थैले में वेदान्त दर्शन और कुछ हिन्दी और अंग्रेजी में लिखे कागज थे।

स्वामीजी ने हिन्दी में लिखे कागज को पढ़ने का यत्न किया तो उन्हें लगा कि ब्रह्मसूत्र पर कुछ टिप्पणियाँ लिखी हैं।

नित्य सायंकाल गुरु-शिष्य गंगा तट पर भ्रमण के लिए जाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे। उस समय विभिन्न विषयों पर वार्त्तालाप हुआ करता था। उस समय तक सोमेश्वरानन्द को यह विदित हो गया कि उनका शिष्य अंग्रेजी में एम० ए० है।

उस दिन विचरण करते हुए स्वामीजी ने कहा, "तुम्हारी अटैची में तो फूटी कौड़ी भी नहीं है। तुमने तो उसमें पूँजी बताई थी।"

"इसका अभिप्राय है कि आपको यह विदित नहीं हो सका कि उसमें कितनी पूँजी है?"

"उसमें तो कुछ भी नहीं था। कल एक भक्त ने एक रुपया दिया था कि जिससे मैं अपने लिए जूता खरीद लूँ, जूता दो रुपये में आता है। मैंने सोचा था कि तुमसे माँग लूँगा। किन्तु उससे पूर्व मैं देखना चाहता था कि तुम्हारे पास देने के लिए कुछ है भी अथवा कि नहीं।"

"महाराज! उसमें बहुत कुछ है। मेरी कलम और दवात तो है न? बस उसके आश्रय बैंक से पन्द्रह हजार तथा एक अन्य स्थान से पचास हजार रुपया प्राप्त किया जा सकता है।"

"इतना तुमने किसलिए रखा हुआ है?"

"आपने देखा नहीं कि मैं ब्रह्मसूत्र पढ़ रहा हूँ। उसको पढ़ने में और समझने में सहायक कुछ अन्य पुस्तकों का मैंने आदेश दे दिया है। वे पुस्तकें लगभग दो सौ रुपये मूल्य की होंगी। उसके बाद भी अन्य कुछ पुस्तकें भी मँगवाने की आवश्यकता होगी।"

"क्या होगा इतना पढ़ने से?"

"यह तो आज से कुछ वर्ष के उपरान्त ही बता पाऊँगा।"

सोमेश्वरानन्द मौन रहा। तथापि उसको यह स्मरण रहा कि उसका शिष्य धनवान है।

दूसरे दिन स्वामीजी जब गंगा तट पर स्नान कर अपने ध्यान, धारणा और समाधि आदि से निवृत्त होकर अपने आश्रम में आये तो उनके कमरे में रबर की तली वाला कपड़े का एक जोड़ी जूता रखा हुआ था। यह जूता उससे बढ़िया था जो उन्होंने पिछले दिन बाजार में देखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी ने उसको पहनकर देखना चाहा कि वह उनके पांव में ठीक आता भी है अथवा कि नहीं। जूता ठीक आया था।

उस समय स्वामी मंगलानन्द अपने कमरे में बैठा स्वाध्याय आरम्भ करने वाला ही था कि स्वामी सोमेश्वरानन्द उसके कमरे में आकर पूछने लगे, "मंगलानन्द ! यह नया जूता तुमने मेरे कमरे में रखा है ?"

"महाराज ! यह इस आश्रम के अध्यक्ष ने आपके लिए खरीदा है। बताइये आपके पैर में ठीक आया है ?"

"हाँ, ठीक है।"

इस प्रकार गुरु-शिष्य का सम्बन्ध बनता गया।

ग्रीष्म ऋतु आने पर स्वामी सोमेश्वरानन्द उत्तरकाशी जाने का विचार करने लगे। यह जानकर मंगलानन्द अपने तथा अपने गुरुजी के बस का टिकट खरीदकर ले आया।

उसने स्वामीजी की ओर टिकिट किया तो उन्होंने पूछा, "यह क्या है ?"

"उत्तरकाशी जाने के लिए बस का टिकिट है। कल प्रातःकाल छः बजे बस चलेगी। हमें समय से पूर्व वहाँ पहुँचना है।"

"मैं तो पैदल जाना चाह रहा था।"

"परन्तु महाराज ! मेरे पास मेरी पुस्तकें आदि हैं। वे भारी हैं। उनको उठाये पैदल जाना मेरे लिए सम्भव नहीं है।"

अगले दिन प्रातःकाल वे दोनों उत्तरकाशी की बस में जा बैठे।

इस प्रकार कार्य चलते हुए दस वर्ष बीत गये। इस अवधि में सोमेश्वरानन्द तो वैसे ही रहे जैसे वे थे। किन्तु स्वामी मंगलानन्द ने इस अवधि में तीन दर्शन शास्त्र और उनको समझने के लिए अन्य ग्रन्थ चाट डाले थे। उसके आधार पर दो रिम कागज पर उसने टिप्पणियाँ लिख ली थीं। इस प्रकार उसके पास बहुत बड़ा बोझ-सा हो गया था।

तब तक भी वे कैलाश आश्रम के उन कमरों में ही रहा करते थे। जब कभी इधर-उधर जाते तो मंगलानन्द अपने थैले में एक-दो पुस्तक रख लिया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी एक दिन सहसा स्वामी सोमेश्वरानन्द लुप्त हो गये। उन्होंने कदाचित् अनुभव किया कि उनका धनी संन्यासी शिष्य कुछ उनसे पृथक-सा होता जा रहा है। यह कदाचित् दोनों के ज्ञान में अन्तर के कारण होगा।

इस दस वर्ष में मंगलानन्द ने जो कुछ भी योगविद्या स्वामीजी से सीखी थी, वह उसका अभ्यास करता रहा।

पन्द्रह वर्ष की अनुपस्थिति के उपरान्त जब सोमेश्वरानन्द ऋषिकेश वापस आया तो एक पूर्णिमा को सायंकाल गंगातट पर मंगलानन्द शताधिक भक्तों को उपदेश दे रहा था। यह देख स्वामी सोमेश्वरानन्द चकित रह गए।

उस दिन मंगलानन्द ने उनसे कहा, "अब तो मैं इन चरणों को अपनी आँख से ओझल नहीं होने दूँगा। योगविद्या में मेरा मार्ग अवरुद्ध हो गया है।"

"प्रवचन तो तुम बहुत सुन्दर करने लगे हो।"

"महाराज! यह सब आपकी कृपा का ही प्रसाद है।"

"मैं, मुझे तो इतनी भीड़ में एक शब्द बोलना भी नहीं आता।"

"जो हो, है तो यह आपकी ही कृपा का प्रसाद। आपने मेरी बुद्धि को जागृत कर दिया तो उसका भास्कर भासमान हो गया और फिर उसके प्रकाश में अन्य सब कुछ स्वयमेव दिखाई देता गया।"

"आजकल कैलाश आश्रम में नहीं रहते?"

"मैंने 'बृहस्पति' के नाम से अपना ही आश्रम बनवा लिया है।"

बृहस्पति आश्रम में पूर्णिमा, अमावस्या तथा मंगलवार को ही मंगलानन्द के प्रवचन हुआ करते थे। स्वामी सोमेश्वरानन्द वहाँ जाते रहे। तब ही एक दिन उन्होंने कहा कि स्वामी मंगलानन्द को कर्मक्षेत्र में उतरना चाहिए। देश में बसे विशाल जन-समूह का मार्ग दर्शन करना चाहिए।

परिणामस्वरूप मंगलानन्द दिल्ली आ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने इस पूर्ण इतिहास को स्मरण कर मंगलानन्द विचार कर रहा था कि क्या इस बार भी उसको वैसा ही करना चाहिए ?

जब वह कोठी में रहने के लिए आ गया तो उसको चन्द्ररानी ने बताया था कि उसके घर से लुप्त हो जाने पर उसके पति को बहुत पश्चात्ताप हुआ था और तब उन्होंने अपना जीवन बदलने का यत्न किया था। इस प्रकरण में उसने एक तो रेल की नौकरी छोड़ दी और दूसरे ठेकेदारी का कार्य आरम्भ कर दिया। रेलवे की अनियमित आय से ही वह मद्य-पान किया करता था और उसके परिणामस्वरूप वेश्यागमन भी।

ठेकेदारी में भगवान् ने उसकी सहायता की। वह कार्य उसने पाँच हजार की पूँजी से आरम्भ किया था। किन्तु शीघ्र ही वह वर्ष में लाखों की आय वाला हो गया।

व्यवसाय में हेराफेरी तो अब भी होती थी। किन्तु उस हेरा-फेरी से जो आय होती थी, उसको वह दान-दक्षिणा में दे दिया करता था।

यह कथा सुनाकर चन्द्ररानी ने स्वामीजी से निवेदन किया, "अब आपकी चरण रज यहाँ पड़ गई है, कृपया अब आप ही उनका मार्ग-दर्शन कीजिये।"

उसके बाद एक दिन जियाराम से ही बात हुई। उस दिन जियाराम ने बताया कि इस समय उसका कार्य बम्बई, गोआ और कोचोन में चल रहा है। तीनों स्थानों पर बन्दरगाह से सम्बन्धित कार्य है। ये तीनों कार्य इस वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। जियाराम का अनुमान था कि उसके बाद उनमें से लगभग दस लाख रुपये का लाभ होगा।

पिछले पाँच वर्ष में जियाराम ने दिल्ली और उसके आस-पास के कस्बों की लाखों की सम्पत्ति खरीद ली थी।

स्वामीजी ने पूछा, "जियाराम ! क्या यह सब ईमानदारी की आय है ?"

"महाराज ! जो कानून यहाँ प्रचलित है और जो प्रथा यहाँ के राजा ने चलाई है उसके अनुसार ही सब कुछ हो रहा है। ईमान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारी की परख राज्य करता है और उसकी परख के अनुसार मैं ईमानदार ठेकेदार हूँ।"

"परन्तु ईमानदारी की नाप-तौल धर्मग्रन्थों में भी है।"

"महाराज ! उन धर्मग्रन्थों की बात ही तो पिछले सात-आठ दिन से सुन रहा हूँ। मुझे वह पसन्द है। परन्तु राज्य में तो उन धर्मग्रन्थों का प्रचलन नहीं है। राज्य में प्रचलन तो अन्य धर्मग्रन्थों का है। उनमें से कुछ लिखित हैं, कुछ अलिखित। तदपि वे तो नियम ही हैं। हम जो सरकार से व्यवहार करते हैं उन दोनों धर्म नियमों का पालन करना होता है। मैं और मेरी कम्पनी प्रचलित धर्मों का ही पालन करती हैं।"

मंगलानन्द को अपने समय में अपनी दुकान की बात स्मरण हो आई। उसने कहा, "यह कैसे सम्भव है ?"

उस समय मंगलानन्द का सरकार से केवल आयकर देते समय वास्ता पड़ता था। आयकर की दर बहुत कम थी और नियम भी सरल थे। उसने कानून की पुस्तक खरीदकर रख ली थी और उसके अनुसार वह स्वतः ही अपना हिसाब बनाकर कार्यालय में दे आया करता था। उस समय लिखित और अलिखित नियम नहीं थे। आयकर सामान्य होता था। और देते हुए कभी किसी को कुछ दुःख नहीं होता था।

अपनी बात स्मरण कर मंगलानन्द ने पूछा, "आजकल के ये लिखित और अलिखित नियम क्या हैं ? तथा इनमें दो प्रकार की आय किस प्रकार होती है ?"

जियाराम बोला, "स्वामीजी ! यह रहस्य इतना गूढ़ और पेचीदा है कि कोई वकील ही आपको समझा सकता है। मैं भी जब कुछ समझ नहीं पाता तो वकील के पास ही जाया करता हूँ। वह मार्गदर्शन कर दिया करता है। उसका परामर्श लाभदायक सिद्ध होता है।

"कभी सरकारी धर्म का उल्लंघन होने पर दण्ड हो जाता है तो वह भुगतना पड़ता है।"

"इस झगड़े से क्या लाभ है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लाभ-हानि की बात तो महाराज ! इस प्रकार के नियम बनाने वाले ही जानते होंगे। हम सामान्य जनों को काल के लिखित-अलिखित नियमों का पालन ही करना पड़ता है।

"इस प्रकार नियमों अथवा धर्मों का पालन करता हुआ मैं सरकार की दृष्टि में ईमानदार ठेकेदार प्रसिद्ध हूँ।"

मंगलानन्द इस गोरखधन्धे को समझने के लिए मौन हो गया।

: ३ :

लाला फकीरचन्द ने साधु आश्रम की प्रबन्ध समिति के अध्यक्षपद से त्याग-पत्र दे दिया था। उसके आग्रह पर वह स्वीकार भी कर लिया गया। उसके उपरान्त वह नित्य प्रति मंगलानन्द का प्रवचन सुनने के लिए बाबर लेन आता रहा। प्रवचन के उपरान्त वह अल्पाहार भी जियाराम की कोठी पर ही किया करता था।

कृष्ण ने बाबर लेन वाली कोठी छोड़ दी और वह अपने परिवार को लेकर ओखला वाली कोठी पर चला गया था। उसी प्रसंग में स्वामी मंगलानन्द ने फकीरचन्द को बताया तो वह कहने लगा, "महाराज ! उसने ठीक ही किया है।"

"वह किस प्रकार ?"

"जो अलिखित नियम इस सरकार में चलता है वह अलिखित कानून की पुस्तक पर होने से उसमें कभी-कभी मतभेद हो जाया करता है। तब मतभेद वाले झूठी-सच्ची बातें करने लगते हैं और फिर जो लिखित कानून है, उसका कुठार चलन होने लगता है। उसमें झूठी-सच्ची शिकायतें भी होने लगती हैं। कृष्ण इसी बात से बचने के लिए इस घर को छोड़कर गया है। वह अपने वकील को कह रहा था कि वे उसके पिता से अलग होने से सम्बन्धित कागज-पत्र तैयार कर दें।"

"तो आपको यह सब विदित है ?"

"जी हाँ। जियाराम जी मुझे समय-समय पर बताते रहे हैं। जियारामजी भी अब समझ गये हैं कि जो हो रहा है वह ठीक ही हो रहा है। पिता अपने पुत्र के कर्मों से और पुत्र अपने पिता के विचारों से पृथक्-पृथक् हो जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत विचित्र है। हमारे काल में अर्थात् मेरे पूर्वाश्रम में जब मैं दुकान किया करता था, इतनी विषमता नहीं थी।"

फकीरचन्द बोला, "महाराज ! वह तो भूत हो गया है किन्तु यह तो वर्तमान है।"

स्वामीजी ने पूछा, "तो फिर भविष्य क्या होगा !"

"महाराज ! यह तो आप ही जान सकते हैं। इसी बात को जानने के लिए ही तो मैं नित्य आपके प्रवचन सुनने के लिए आता हूँ। यदि भविष्य की कुछ झलक मिल जाय तो उसके अनुसार अपना व्यवहार निर्धारित कर लूं।"

"ठीक है। आते रहिये। आज बीस दिन हो गये हैं। अभी दस दिन तक मैं यहाँ हूँ। यदि कोई बात समझ में न आये तो समझने का यत्न करना। उसके बाद भी समझ में न आये तो मेरे जाने से पूर्व मुझसे पूछ लेना। मैं समझाने का यत्न करूँगा।"

फकीरचन्द गम्भीर हो गया। कृष्ण को कोठी से गये आज पहला ही दिन था। फकीरचन्द जब अल्पाहार करके वहाँ से चला गया तो मंगलानन्द विचार करने लगा कि कृष्ण दूसरी कोठी में अकेला ही गया है। कृष्ण की पत्नी प्रतिभा, उसकी पुत्री प्रमिला और प्रमिला की कोच मिस पीटर कोठी में ही विद्यमान थीं।

फकीरचन्द के जाने पर मंगलानन्द ने जियाराम से पूछा, "कृष्ण के साथ कौन-कौन गया था ?"

"सुधीर गया है।"

"सुधीर गया है ?" स्वामीजी ने आश्चर्य से पूछा।

"जी हाँ। जब प्रातःकाल उसको जगाकर उसके पिता ने अपने साथ चलने के लिए कहा तो वह भीगी बिल्ली की भाँति उसके साथ हो लिया। हम समझ ही नहीं पाए कि यह क्या हो गया है। रात्रि के समय तो वह उस कोठी में न जाने वालों का नेता बना हुआ था।"

"हाँ, विस्मय की बात तो है। मुझे अपने बाल्यकाल की घटना स्मरण है। मैंने भी बिना पिताजी को बताये अपना स्कूल बदल लिया था।

"फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज हमारे घर के निकट ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिताजी ने उसके स्कूल विभाग में मुझे प्रविष्ट कराया था। जब मैं दूसरी श्रेणी में आया तो उस वर्ष लाहौर के स्कूलों के टूर्नामेण्ट में फुटबाल का मैच हो रहा था। हमारे क्रिश्चियन स्कूल की टीम अपने स्कूल के लड़कों को मैच के ग्राउण्ड में ले गई। मैंने देखा कि डी० ए० वी० स्कूल की टीम ने हमारी टीम को सात गोलों से हराया तो अगले दिन ही मैंने अपना स्कूल छोड़ा और डी०ए०वी० स्कूल में प्रविष्ट हो गया।

"स्कूल क्लर्क ने एक फार्म देकर कहा इसको भरकर अपने पिता के हस्ताक्षर करा के दे देना, तब तुम्हें प्रवेश मिल जाएगा।

"मैं फार्म लेकर अपने एक मित्र के घर पहुँचा और उसके बड़े भाई को कहकर वह फार्म भरवा लिया। मैंने पिता के स्थान पर उसको हस्ताक्षर करने के लिए कहा तो उसने अस्वीकार कर दिया। तब मैंने स्वयं किसी प्रकार कर कराकर पिताजी के भी हस्ताक्षर कर दिए और इस प्रकार मैं डी० ए० वी० स्कूल में प्रविष्ट हो गया।

"उन दिनों बहुत कम फीस हुआ करती थी। दूसरी श्रेणी की फीस तीन आने थी। इससे अधिक सदा ही मेरे पास रहा करते थे। डी० ए० वी० स्कूल के क्लर्क ने छः आने माँगे। तीन आने प्रवेश शुल्क और तीन आने कक्षा शुल्क।

"मैंने एक चमचमाता हुआ चाँदी का रुपया क्लर्क को पकड़ा दिया। उसने दस आने मुझे वापस कर दिये। इस प्रकार मैं वहाँ की दूसरी कक्षा में जाकर बैठ गया।

"इस प्रकार डी० ए० वी० स्कूल जाते हुए जब मुझे छः मास हो गए तब कहीं पिताजी को उसका ज्ञान हुआ। स्कूल के अध्यापक ने डी० ए० वी० कॉलेज के लिए चन्दा माँगा था। आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव था। उस अवसर पर विद्यालय के व्यय के लिए भी चन्दा माँग लिया जाता था। मैंने एक रुपया लिखा दिया।

"मैंने जब वह रुपया पिताजी से माँगा तो उस समय वह भेद खुल गया। पहले तो पिताजी रुष्ट हुए। फिर कुछ विचार करने लगे कि उनको कम-से-कम बता तो देना चाहिए था। उन्होंने कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल वे मेरे स्कूल के मास्टर से मेरी शिकायत कर रहे थे किन्तु उस समय मास्टर ने कह दिया कि मैं तो उनके स्कूल में पढ़ता ही नहीं।

"पिताजी ने एक रुपया दे दिया। इस प्रकार उसके बाद दसवीं कक्षा तक मैं डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ता रहा।

"परन्तु सुधीर ने तो कायरता का परिचय दिया है।"

चन्द्ररानी बोली,"मैं मध्याह्नोत्तर वहाँ जाकर देखूँगी कि वह वहाँ अकेला क्या कर रहा है?"

मध्याह्नोत्तर जब चन्द्ररानी अपनी मोटर से कृष्ण की नई कोठी पर पहुँची तो उस समय सुधीर स्वामीजी से पढ़ने के लिए बाबर लेन वाली कोठी पर आ गया था।

स्वामीजी ने जब उसको अपने कमरे में प्रविष्ट होते हुए देखा तो पूछा,"अरे! तुम कहाँ घूम रहे हो?"

"घूम कहाँ रहा हूँ महाराज! मैं आपसे अपना पाठ पढ़ने के लिए आया हूँ।"

"अपने पिताजी से पूछकर आये हो?"

"मैंने आवश्यकता नहीं समझी। पिताजी को केवल स्कूली पढ़ाई का ही ज्ञान है। वे स्वयं बी० ए० तक ही पढ़े हैं परन्तु जो कुछ आप पढ़ा रहे हैं वह हमारे स्कूलों में तो पढ़ाया नहीं जाता इसलिए मेरा विचार है कि पिताजी ने भी वह पढ़ा नहीं होगा। उस पढ़ाई का आनन्द तो पढ़ने वाले को ही आ सकता है।"

"तुमको क्या आनन्द आ रहा है?"

"महाराज! एक दिन आपने बड़ी ही आनन्ददायक बातें बताई थीं। मैं सुनकर गद्गद हो गया था।"

मंगलानन्द विचार करने लगा कि किस बात को सुनकर वह गद्गद हो गया था। पिछले इतने दिनों में तो उसने अनेक ऐसी बातें बता दी होंगी।

स्वामीजी को विचारमग्न देख सुधीर बोला,"आपने एक दिन बताया था कि जो नियम हम बदल दें और फिर उससे कोई हानि भी न हो तो समझना चाहिए कि वह नियम मनुष्य ने बनाया है। और जिन नियमों को हम लाख यत्न करने पर भी बदल न सकें तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझना चाहिए कि वे नियम परमात्मा के बनाये हुए हैं।

"उस समय आपने अनेक उदाहरण दिए थे। तबसे मैं अनेक बातों पर विचार करता रहा हूँ। जो अटल नियम हैं उनका पालन करते हुए मैं ईश्वरभक्त कहाने की इच्छा करने लगा हूँ।"

मंगलानन्द ने उससे पूछा, "तो तुमने किसी नियम का उल्लंघन करने का यत्न किया है?"

"हाँ महाराज! तबसे मैं अनेक बातों पर विचार कर चुका हूँ। एक बात तो अब भी कर रहा हूँ। मैं पिताजी के यहाँ आने में बाधा डालने की आज्ञा का उल्लंघन कर रहा हूँ। इससे हानि तो कुछ होगी नहीं लाभ ही होगा। इससे मैं समझ गया हूँ कि पिताजी की आज्ञा ईश्वरीय नियम नहीं है। उनको चलाने वाले के विषय में विचार कर रहा हूँ। इससे मुझे परमात्मा और मनुष्य का अन्तर स्पष्ट होने लगा है।

"कल मैंने अपने अध्यापकजी से आपकी बात कही थी। उन्होंने कहा कि ये तो प्रकृति के नियम हैं।

"तब मैंने उनको आपकी बात बता दी। मैंने बताया कि प्रकृति तो जड़ है। वह स्वयं हिलती-डुलती नहीं है। तो उसके नियम किस प्रकार बन गए? नियम तो कर्म करने के होते हैं। प्रकृति जड़ होने के कारण जब स्वतः कोई कार्य नहीं कर सकती तो वह नियम ही किस प्रकार बना सकती है?"

"मास्टरजी यह सुनकर मौन हो गये। वे विचार कर रहे थे। किन्तु इसके बाद उन्होंने कोई बात नहीं की।"

"तुमने ठीक ही समझा है। आज मैं तुमको एक और बात बताता हूँ।"

"हाँ, बताइए।"

"इस पृथ्वी पर कितनी प्रकार की वस्तुएँ हैं?"

"वे तो अनगिनत हैं।"

"कितने प्रकार के जन्तु हैं?"

"वे भी अगणित हैं। उस दिन अध्यापकजी बता रहे थे कि कई लाख प्रकार के तो मच्छर ही हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब, इन सब वस्तुओं को, इन सब जन्तुओं को बनाने में बहुत कुछ करना पड़ा होगा ?"

सुधीर इस प्रश्न का अर्थ समझने की कोशिश करने लगा। कुछ क्षण उपरान्त स्वामीजी ने अपनी बात को समझाने के लिए कह दिया, "किसी कारखाने में किसी एक प्रकार का यन्त्र बनाना हो तो उसके लिए विशेष प्रकार की मशीन बनानी पड़ती है। तब यह स्वाभाविक है कि इस सृष्टि के अनेकानेक पदार्थ बनाने के लिए तो बहुत बड़े कारखाने की आवश्यकता पड़ी होगी। और फिर कहाँ-कहाँ से सामग्री एकत्रित की गई होगी और फिर उन वस्तुओं को किस मशीन द्वारा बनाया गया होगा और वे मशीनें कितनी प्रकार की होंगी ?"

"महाराज ! आप ही बताइए कि ये किस प्रकार बन गईं और उनकी निर्माण सामग्री कहाँ पर है ?"

"देखो, इस जगत् के अनेक पदार्थों के विषय में विद्वान् लोगों ने विचार किया है। उन्होंने यह ज्ञात किया है कि ये सब वस्तुएँ तीन पदार्थों से बनी हैं।

"एक पदार्थ वह है जिससे शरीर बनता है। वह एक ही है। उसका नाम है प्रकृति। वह जड़ है। सब पदार्थों के शरीर प्रकृति से ही बने हैं।

"एक अन्य पदार्थ है जो इनको विभिन्न रूप प्रदान करता है। उस पदार्थ को परमात्मा कहते हैं। तीसरा पदार्थ है 'जीव'। जीव शरीर में प्रविष्ट करा दिया जाता है। तब वह प्राणी बन जाता है।

"बस कुल मिलाकर तीन ही पदार्थ हैं। उनसे हा वस्तुओं के अनेकानेक रूप बनते हैं। प्रकृति, जीव और परमात्मा। परमात्मा ही सबको बनाता है। वह अकेला है और अकेला ही सबकुछ बना देता है। प्रकृति परमाणु रूप है। इसमें असंख्य परमाणु हैं। वे समस्त आकाश में बिखरे हुए हैं। वे परमाणु सब एक समान हैं।

"इसी प्रकार जीव भी असंख्य हैं। जब कोई ऐसा शरीर बनता है जिसमें जीव सुखपूर्वक रह सकता है तो एक जीव उसमें रहने के लिए समा जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो बड़ा विचित्र है महाराज! किन्तु यह कैसे पता चलता है कि परमात्मा एक है और अकेला ही इतना परिश्रम करता है कि पृथ्वी-सूर्य आदि बना देता है।"

"यह भी किसी दिन तुमको समझाऊँगा।"

"आज मैं तुमको बता रहा हूँ कि वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के सब पदार्थों का विश्लेषण किया है। उन्होंने अपनी प्रयोगशाला में यह पाया है कि पृथ्वी के समस्त पदार्थ एक सौ चार प्रकार के अणुओं से बनते हैं।

"उनको यह भी विदित हो गया है कि १०४ प्रकार के एटम केवल तीन प्रकार के कणों से बने हैं। इस प्रकार असंख्य वस्तुओं का केवल तीन पदार्थों से बना होना तो सिद्ध हो चुका है।

"हमारा शास्त्र बताता है कि तीन प्रकार के पदार्थ भी केवल एक प्रकार के परमाणुओं से बने हैं। किन्तु वर्तमान विद्वान् अभी इस बात को नहीं जान पाये हैं। हमारा प्राचीन वैज्ञानिक जान गया था कि वे १०४ प्रकार के अणु केवल तीन प्रकार के कणों से बने हैं। और वे तीन प्रकार के कण प्रकृति से परमाणुओं के संयोग हैं। वे प्रकृति के परमाणु असंख्य हैं किन्तु सब एक समान हैं।"

"बहुत विचित्र है।"

"हाँ, शेष कल बताऊँगा। अब तुम घर लौट जाओ, कहीं तुम्हारे पिताजी रुष्ट न हो जाएँ।"

"महाराज! रात का भोजन करने के उपरान्त पिताजी मेरे कमरे में आये और मुझे समझा गये थे कि बड़ों का कहना मानना चाहिए।

"उस समय मैंने उनसे कहा था कि उनको भी तो अपने बड़ों का कहना मानना चाहिए।

"तब उन्होंने कहा था कि वह वे अपने माता-पिता को समझा देंगे। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं उनका कहा क्यों नहीं मानता?

"उस समय मैंने कहा था कि मैं आपसे पढ़ना चाहता हूँ।

"वे कहने लगे कि मैं उनके साथ उनकी कोठी में रहूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी स्कूल की पढ़ाई करू। यदि मैं उनकी आज्ञा का पालन करता हुआ आपसे पढ़ सकता हूँ तो उनको कोई आपत्ति नहीं है। हाँ, कभी-कभी उनको बताना होगा कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ।

"मैंने उनकी इस बात पर विचार किया और जब उसको ठीक समझा तो प्रातःकाल उनके कहने पर मैं उनके साथ नई कोठी के लिए चल दिया। अब मैं यहाँ बस से आया हूँ और बस से ही वापस भी जाऊँगा।"

इस प्रकार सुधीर ने अपना पक्ष स्वामीजी के सम्मुख प्रस्तुत किया।

: ४ :

सुधीर स्वामीजी के चरण-स्पर्श कर जाने लगा कि उसी समय जियाराम वहाँ आ गया। उसे वहाँ देखकर जियाराम कहने लगा, "सुधीर! तुम यहाँ हो? मैं तो समझा था कि तुम अपने पिताजी के साथ चले गए हो।"

"बाबा! मैंने विचार किया है कि मैं पिताजी के साथ ही रहूँगा।

"मैं एक स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर दूसरे स्कूल में पढ़ने आया था। यहाँ का पाठ पढ़ लिया है, अब मैं अपने घर जा रहा हूँ।"

"कैसे जाओगे?"

"मैं बस से आया था और बस पर ही जाऊँगा।"

"मैं भी वहीं जा रहा हूँ, चलो मेरे साथ चलो।"

स्वामीजी ने पूछा, "किसी काम से जा रहे हो?"

"जी हाँ। मैं आज दिनभर भाग-दौड़ करता रहा हूँ। मैंने अपने पुत्र को पृथक् करने के कागज आदि तैयार कराकर उनको रजिस्टर्ड करने दे दिया है। उन कागजों की प्रतियाँ ही मैं उसको देने के लिए जा रहा हूँ।"

"हाँ, यह ठीक ही हो रहा है। इससे तुम संन्यास आश्रम की ओर अग्रसर होते जा रहे हो।"

"अग्रसर? मैं तो समझ रहा था कि मैं कल आपसे संन्यास की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षा भी ले लूंगा।"

"नहीं, यह तो अभी तुम्हारा प्रथम पग ही है। संन्यास की ओर मेरी दृष्टि से तीन पग हैं।

"स्वयं को आर्थिक रूप से अपने पुत्र से पृथक् कर लेना, यह प्रथम पग है।"

"दूसरा पग क्या होगा?"

"अपनी पत्नी से पृथक् होने की भी लिखत-पढ़त होगी।"

"आपने भी लिखी थी?"

"मेरी पत्नी का तो मेरे प्रथम पग उठाने से पूर्व ही देहान्त हो गया था।"

"तीसरा पग क्या है?"

"वह है योग्य गुरु से दीक्षा लेना। मैं तुम्हें दीक्षा नहीं दूंगा। यदि इच्छा हो तो मेरे गुरुजी के पास चले जाओ। यदि उन्होंने स्वीकार किया तो तुमको दीक्षा दे देंगे।"

"तो आप मेरे दीक्षा गुरु नहीं बनेंगे?"

"नहीं, हाँ मैं तुम्हारी उनसे सिफारिश कर दूंगा।"

"ठीक है। किन्तु यह सब तो यहाँ के आपके प्रवचन पूर्ण हो जाने के उपरान्त ही होगा, तब मैं आपको साथ लेकर ऋषिकेश चलूँगा।"

"और अपनी पत्नी से अवकाश?"

"वह मिल जाएगा। मुझे इसका विश्वास है। मैं अब उसके काम के योग्य नहीं रह गया हूँ।"

मंगलानन्द विचार करने लगा कि घटनाचक्र उचित दिशा में ही बढ़ रहा है। वह जियाराम की बात सुनकर चुप रहा।

जियाराम ने अपने पोते सुधीर को साथ लिया और कमरे से बाहर हो गया।

वे दोनों गए तो तभी चन्द्ररानी, प्रतिभा और मिस पीटर आ गयीं। अपने साथ वे सायंकाल की चाय की सामग्री भी लेती आई थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगलानन्द ने यह देखा तो पूछा, "यह सब यहाँ क्यों उठा लाई हो ?"

"वहाँ हमारे अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं। इससे हमने यही उचित समझा कि आपको वहाँ आने का कष्ट देने की अपेक्षा स्वयं हम यहाँ आकर चाय पी लेंगी।"

"और जियाराम ?"

"वे तो प्रातःकाल के अल्पाहार के उपरान्त मध्याह्न भोजन के समय लौटे थे और उसके बाद गए तो अभी तक लौटे ही नहीं हैं।"

"वह अभी यहीं था। बता रहा था कि वह कृष्ण को मिलने के लिए जा रहा है।"

"तो क्या चले गए हैं ? मैं अभी तो वहाँ से लौटी हूँ, मेरे वहाँ रहने तक तो पहुँचे नहीं थे।"

मिस पीटर ने चाय का सामान तिपाई पर रख दिया और वह अब चाय बनाने लग गई थी।

चन्द्ररानी बोली, "लगता है कि कृष्ण के पिता अपने पुत्र को फारखती दे रहे हैं। उनका अगला पग मुझको अवकाश देना होगा। यही मैं समझ पाई हूँ।"

"तुम इसको कैसा अनुभव करोगी ?"

"बस, मैं तो जैसी हूँ वैसी ही रहूँगी।"

"क्या अभिप्राय है तुम्हारा इससे ?"

"अभिप्राय यह है कि मेरे कर्मफल और शास्त्र के विधान से वे मेरे पति हैं। पति तो वे रहेंगे ही। मैं उनकी पत्नी ही कहलाऊँगी। वैसे तो पिछले पाँच वर्ष से हमारा पति-पत्नी का सम्बन्ध नहीं है। अतः मुझपर उनके इस व्यवहार से किसी प्रकार का अन्तर पड़ने वाला नहीं है।"

"फिर ठीक है। मैं उसको कह रहा था कि वह संन्यास ले ले। उसके लिए उसका प्रथम पग था कृष्ण से पृथक् होना। उसका दूसरा पग था तुमसे अवकाश लेना। ये दोनों तो तुम्हारे कथनानुसार हो गए हैं। अब तीसरा पग है किसी गुरु की खोज। उसके लिए उसे दिल्ली से बाहर जाना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप उनके गुरु नहीं बन जाते ?"

"नहीं, मैं उसका गुरु नहीं बनूँगा। यह संन्यास किसी प्रकार की राजगद्दी नहीं कि जो पिता से पुत्र को मिले। यह भिन्न प्रकार का उत्तराधिकार है। इसका सम्बन्ध ज्ञान और योग की क्रियाओं से है।"

"आप उनको बता दीजिए कि मेरी ओर से वे स्वतन्त्र हैं।"

मंगलानन्द मुस्कराया और बोला, "परन्तु तुम्हारे निर्वाह के लिए भी तो कुछ करना होगा।"

"यह उनके विचार करने की बात है। मैं तो अपना मार्ग स्वयं भी बना सकती हूँ।"

मंगलानन्द ने प्रतिभा से पूछा, "प्रतिभा ! तुम कृष्ण के साथ उस नयी कोठी में क्यों नहीं गयीं।"

"उनके पास मेरी स्थानापन्न है। इससे मुझे अब उनसे स्वयं को स्वतन्त्र कर लेने की चिन्ता हो रही है।"

"यह तो मुझे ज्ञात नहीं है।"

"इसपर भी यह सत्य है। मैं यह जानती हूँ और मेरे पास इसके प्रमाण भी हैं।"

"तो तुम उसको तलाक दोगी ?"

"इसकी आवश्यकता तब होगी जब मैं पुनर्विवाह के लिए लालायित हूँगी। वह मैं अभी नहीं हूँ।"

"वह आवश्यकता कब अनुभव होगी ?"

"कदाचित् कभी नहीं।"

"और प्रमिला ?"

"माताजी उनसे मिलने के लिए गई थीं। प्रमिला उनके साथ गई थी, वह वापस नहीं आई, वहीं रह गई है।"

"तो मिस पीटर को भी अवकाश मिल गया है ?"

पीटर बोली, "महाराज ! मैं प्रमिला का कार्य छोड़ने पर विचार कर रही हूँ।"

"क्यों ?"

"छोड़ना तो है ही। जब विदेश जाने का विचार हो रहा है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर यह काम तो होगा नहीं। कुछ दिन पहले और बाद में क्या अन्तर है?"

मंगलानन्द कहने लगे, "मैं समझता हूँ कि घर का यह विघटन मेरे आने के कारण हुआ है। यद्यपि मैं नहीं समझता कि इससे कुछ अशुभ होने की सम्भावना है तदपि यह अटपटा अवश्य लग रहा है।"

चन्द्ररानी ने कहा, "आपके आने न आने से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह खिचड़ी तो पिछले एक वर्ष से पक रही है। मुझे तो चिन्ता सुधीर की है। वह मुझे बहुत प्यारा है।"

"ठीक है, यदि उसको भी तुम प्यारी हुईं तो वह तुम्हारे पास आ जाएगा।"

इस प्रकार चाय पीते हुए यह वार्त्तालाप हो रहा था। उनकी चाय समाप्त भी नहीं हुई थी कि इस बीच लाला फकीरचन्द आ गया। उसने स्वामीजी के चरण-स्पर्श किए तो स्वामी मंगलानन्द ने विस्मय करते हुए पूछा, "आप इस समय किस प्रकार आ गए?"

"मुझे विदित नहीं था कि चाय यहाँ पी जा रही है।" लाला ने कुछ परेशानी का अनुभव करते हुए कहा।

प्रतिभा उठती हुई बोली, "आप बैठिए, मैं आपके लिए चाय लाती हूँ।"

"नहीं, नहीं, बैठी रहो। मैं चाय पीकर आया हूँ।"

स्वामी मंगलानन्द ने कहा, "मेरा अभिप्राय यह नहीं था कि आप इस समय हमारी चाय में व्यवधान डालने आए हैं, मेरा अभिप्राय तो इस असमय से था, क्योंकि इससे पूर्व आप इस प्रकार नहीं आए, इसलिए पूछा था।"

फकीरचन्द एक स्टूल पर बैठता हुआ बोला, "मैं यहाँ जियाराम से मिलने के लिए आया था।"

"वह तो कृष्ण से मिलने के लिए उसकी कोठी पर गए हुए हैं।" चन्द्ररानी ने बताया।

"मैं यहीं उनकी प्रतीक्षा करूँगा।"

चन्द्ररानी बोली, "यदि जल्दी का काम हो तो फोन कर दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, ऐसी कोई जल्दी नहीं है। मैं यहाँ बैठकर प्रतीक्षा कर लूँगा।"

इस समय तक चाय समाप्त हो गई थी। सभी महिलायें उठीं और चाय के बर्तन उठाकर चल दीं।

उनके जाने पर लाला फकीरचन्द ने कहा, "मुझे यह सन्देह हो रहा है कि साधु आश्रम वाले आपको कुख्यात करने वाले हैं।"

"ऐसी क्या कुख्याति करेंगे वे मेरी ?"

"यह तो जब उनका प्रचार आरम्भ होगा तब ही विदित हो पाएगा। अभी तो केवल यही सूचना मिली है कि स्वामी मंगलानन्द की ढोल की पोल खुलने वाली है।"

मंगलानन्द को यह सुनकर हँसी आ गई। उसने कहा, "मेरे इस ढोल को फाड़कर उसकी छानबीन करने वाले आपके पुत्र जवाहरलाल हैं ? किन्तु वह मेरे विषय में क्या जानता है ?"

"बदनाम करने के लिए किसी के विषय में कुछ जानने की आवश्यकता नहीं होती। ये आधुनिक इतिहासकार कोरी कल्पना करने में बड़े पटु होते हैं।"

"महाराज ! जवाहरलाल ने आज मुझे एक बात बताई है। यहाँ के सी० बी० आई० के उच्च अधिकारी ने उसको बुलाया था। उसने उससे आपके तथा जियाराम के विषय में खूब पूछताछ की है। उसने आपके और जियाराम के सम्बन्धों के विषय में भी जानकारी प्राप्त की है। जवाहरलाल का यही कहना था कि यह पूछगीछ किसी शुभ-सूचना की द्योतक नहीं है।

"मैं इसी कारण जियाराम से कुछ विचार-विमर्श करने के लिए आया हूँ।"

"तो क्या आपका यह विचार है कि मुझे यहाँ से चला जाना चाहिए।"

"मेरे विचार में तो आपको अपना यहाँ का कार्यक्रम पूर्ण कर के ही जाना चाहिए। जियाराम के स्थान पर यदि मैं होता तो निश्चिन्त हो आपके कार्यक्रम कराता रहता। इस समय तो यह जियाराम के विचार करने की बात है। आप तो संन्यासी हैं, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल में भी गए तो ईश्वर के गुणानुवाद वहाँ भी गाते रहेंगे। आप-के लिए तो जेल के भीतर और बाहर में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए।"

"ठीक है, जियाराम से बात कर लो। कल कृष्ण भी कुछ ऐसी ही बात कर रहा था। किन्तु विस्मय का विषय तो यह है कि इतनी सामर्थ्यवान सरकार एक साधारण लंगोटधारी से भयभीत क्यों है ?"

"महाराज ! चर्चिल के कथनानुसार महात्मा गांधी भी तो 'अर्द्धनग्न फकीर' ही थे। किन्तु इतना तो मानना पड़ेगा कि जिन अंग्रेजों का सूर्य कभी अस्त ही नहीं होता था, उसने उनको भी नाकों चने तो चबवा ही दिए थे।

"मैं नहीं जानता कि आपने उसका इतिहास पढ़ा है अथवा कि नहीं। जब सन् १९२२ में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आया था तो उस समय वह महात्मा इस देश के जन-जन के हृदय में विद्रोह की ज्वाला भड़का रहा था। यहाँ तक कि अतीव शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधि भारत का वायसराय भी लगता था कि गांधी के सम्मुख नत-मस्तक हो रहा था।

"देखिए महाराज ! मैं गांधीजी की नीति का समर्थक नहीं हूँ। तदपि आप दोनों में एक बात साझी है जोकि मुझे पसन्द है। गांधीजी का सर्वाधिक प्रभाव देश के धनीमानी लोगों पर ही था। उसने एक करोड़ रुपये की माँग की तो देशवासियों ने नियत अवधि से पूर्व ही वह एकत्रित करके उसको दे दिया था। यही आप कर रहे हैं। आप कह रहे हैं कि देश के बुद्धिशील धनवान जन ही इस देश का कल्याण कर सकते हैं। आप कहते तो यह हैं कि धनी जन संगठित होकर यत्न करें। किन्तु आपका प्रवचन सुनने के लिए तो सामान्य जनता ही आती है।

"साधु सन्त महात्माओं के जलूस तो निकलते हैं परन्तु उनके प्रवचन सुनने के लिए बिरले ही आया करते हैं। विपरीत इसके यहाँ तो समाज के दोनों अंग आप पर लट्टू हो रहे हैं।

"यही हमारी शक्तिशाली सरकार की चिन्ता का विषय है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने किसी को सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करने को तो कहा नहीं ?"

"किसी से कहने पर कोई सत्याग्रह नहीं करता। ऐसे कार्य तो अन्तःप्रेरणा से ही होते हैं। आपकी वाणी अन्तःप्रेरणा का कार्य कर रही है।"

"लालाजी ! यह आप अपने मन का भय व्यक्त कर रहे हो या कि इसमें कुछ तत्त्व भी है ?"

उस दिन रात के दस बजे तक लाला फकीरचन्द ने जियाराम की प्रतीक्षा की किन्तु वह तबतक भी लौटकर नहीं आया था।

जियाराम के इस विलम्ब का घर के प्राणी यही अनुमान लगा रहे थे कि सम्भवतया कोठी पर पिता-पुत्र में विवाद उठ खड़ा हुआ होगा।

अन्त में निराश होकर बिना जियाराम से मिले फकीरचन्द वापस चला गया।

: ५ :

अगले दिन निर्धारित समय पर प्रवचन आरम्भ हुआ। उस दिन जब एक व्यक्ति विशेष प्रवचन सुनने के लिए आया तो जियाराम उठकर गया और उसको किनारे पर लगी कुर्सियों पर बैठाकर स्वयं भी उसके समीप ही बैठ गया।

स्वामी मंगलानन्द ने तबतक प्रवचन आरम्भ नहीं किया था। मंगलानन्द ने जब यह देखा तो उन्होंने सोचा कि जियाराम के कारोबार से सम्बन्धित कोई व्यक्ति होगा। स्वामीजी ने उसका विचार छोड़ा और अपना प्रवचन आरम्भ किया।

स्वामीजी बता रहे थे कि वेद में स्पष्ट उल्लेख आया है कि राजा को अपनी तीन समितियों से परामर्श करना आवश्यक है। उन तीनों समितियों के कार्य का उल्लेख करते हुए स्वामीजी ने कहा कि उनमें से एक समिति है सुरक्षा समिति, दूसरी है न्यायाधिकरण और तीसरी विधि समिति। राज्य तो राजा स्वयं करता है। परन्तु इन समितियों की सम्मति के बिना वह कुछ नहीं करता।

स्वामीजी का कहना था कि प्राचीन काल में भी जब राज्य में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी प्रकार की दुर्व्यवस्था फैलती थी तो देश के विद्वान् जन प्रजा से परामर्श कर और उसकी सहायता प्राप्त कर राज्य को ही बदल दिया करते थे। इस प्रसंग में स्वामीजी ने वेन, नहुष और पुरुरवा के उदाहरण से अपनी बात को स्पष्ट किया।

श्रोता समुदाय नित्य की ही भाँति बड़ी रुचि से स्वामीजी का प्रवचन सुनता रहा। दस सहस्र व्यक्ति एक घण्टे तक इस प्रवचन को निश्चल भाव से बैठकर तन्मयता से सुनते रहे।

प्रवचन से उठकर स्वामीजी अपने कमरे को जाने लगे तो लाला फकीरचन्द भी उनके साथ हो लिया। उसी समय जियाराम उस व्यक्ति को लेकर उनके पीछे-पीछे आ गया। स्वामीजी के बैठने पर उस व्यक्ति को भी एक ओर बैठाकर जियाराम ने उसका परिचय कराते हुए कहा, "ये श्रीमान् मेरे परिचित हैं। मुझसे मिलने के लिए आए थे। प्रवचन का आयोजन देखकर ये भी उसको सुनने लगे। प्रवचन के उपरान्त इनकी इच्छा आपसे भेंट करने की हुई तो मैं इनको यहाँ ले आया हूँ।"

नवागन्तुक के लिए भी दूध का गिलास मँगवाया गया। जब उसको दूध दिया जाने लगा तो उसने कहा, "दूध मुझे अनुकूल नहीं है।"

"कॉफी मँगवा दें ?"

"यदि असुविधा न हो तो।"

जियाराम ने सेवक को दो-तीन प्याले कॉफी लाने के लिए कह दिया। जियाराम की जब लाला फकीरचन्द से दृष्टि मिली तो देखा कि फकीरचन्द मुस्करा रहा है।

बात आरम्भ करते हुए उस नवागन्तुक ने स्वामीजी से पूछा, "स्वामीजी ! क्या इस प्रकार की कहानियाँ भी वेद में लिखी हुई हैं ?"

"जी नहीं। वेद में मानव इतिहास नहीं है। वे उदाहरण तो मैंने महाभारत से दिए थे।"

"महाभारत में तो बहुत-कुछ गप्प भी हैं।"

"उसे गप्प नहीं अपितु पुराण कहना चाहिए। पुराण का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिप्राय होता है कार्य-कारण बताने वाली कल्पित कथा। कथा भले ही कल्पित होती हो किन्तु कार्य-कारण तो सत्य ही होता है।

"उदाहरणार्थ कहा जाता है कि द्रौपदी ने स्वेच्छा से पाँच पतियों से विवाह किया था। यह सत्य है अथवा कि असत्य इस विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। परन्तु यह कार्य-कारण रूप में है। उस काल में द्रुपद देश में इस प्रकार की प्रथा प्रचलित थी।

"अतः यह पुराण है। इसी प्रकार पुरुरवा को अश्विनीकुमारों ने समझाया अथवा कि किसी अन्य ने, यह विचारणीय नहीं है। विचारणीय यह है कि पुरुरवा निरंकुश राजा था, अतः विद्वानों ने प्रजा की सहायता से उसको मरवा डाला।"

"इसे इतिहास कह सकते हैं?"

"नहीं, यह इतिहास नहीं अपितु पुराण है।"

"इसे आजकल की भाषा में उपन्यास लिखना कहते हैं।"

"श्रीमान् जी! नया नाम रख देने से कोई बात सत्य अथवा झूठ नहीं हो जाती।

"आपको एक उदाहरण द्वारा बात समझाने का यत्न करता हूँ। यदि तूतिया के घोल में सोडा मिलाया जाए तो जो कचरा होता है वह नीचे बैठ जाया करता है। जिसे विज्ञान की भाषा में 'प्रेसिपिटेट' कहते हैं। यह बात सत्य है। यद्यपि न यहाँ पर तूतिया है और न सोडा ही। न ही प्रेसिपिटेट बना है।

"इसीप्रकार मैंने कहा है कि राज्य जब अधर्मयुक्त हो तो विद्वान् जन प्रजा की सहायता से राज्य बदल देते हैं। परन्तु इस समय न तो कोई राजा है और न कोई विद्वान् ही जो कि उसको बदलने में लगा हुआ हो।"

"आप तो बहुत ही भयंकर जीव हैं?"

"यहाँ कोई अधर्मयुक्त राजा है क्या?"

"आपने अधर्मयुक्त राजा के लक्षण भी तो बताये हैं।"

"क्या लक्षण बताए हैं?"

"यही कि जिसके राज्य में अन्न महँगा हो, दूध-घी का लोप हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए, आचार संहिता तितीक्षारहित हो। ऐसी अनेक बातें आपने बताई हैं जिनका भास हो रहा है।"

"मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है। क्योंकि न तो मुझे घी मोल लेना पड़ता है न ही दूध आदि। पिछले पच्चीस वर्ष से मुझे भोजन-वस्त्र की चिन्ता ही नहीं रही है।"

"यहाँ तो आपको एक मोटी मुर्गी मिल गई है। लाला जियाराम लाखोंपति हैं वे आपका आतिथ्य कर रहे हैं। परन्तु इससे पूर्व आप कहाँ थे और वहाँ आपका निर्वाह किस प्रकार होता था ?"

"उत्तराखण्ड में यदि अधिक नहीं तो कम-से-कम दस-पन्द्रह सहस्र साधु तो होंगे ही, जो उनकी सेवा सुश्रुषा करता है, जो उनके भोजन की व्यवस्था करता है, वही मेरी भी कर देता है।

"कुछ दिन पूर्व मैंने लगभग दो सौ पृष्ठ की एक पुस्तक पैंतालीस रुपये में खरीदी थी। अराजकता के लक्षण यही हैं कि सरकार अनपढ़ों को सेवाकार्य उचित मूल्य पर दे रही है परन्तु ज्ञान का मूल्य इतना अधिक हो गया है कि धनी से धनी व्यक्ति भी इतना मूल्य देते समय दस बार सोचता है कि क्रय किया जाय अथवा कि नहीं। इससे तो विद्वान् रुष्ट हो जायेंगे।"

"परन्तु ऐसा कहना तो राजद्रोह हो जायेगा।"

"कैसा कहना ?"

"यही कि दामों में वृद्धि अराजकता है।"

"परन्तु श्रीमान् ! राज्य अराजकता उत्पन्न कर रहा है, मैंने ऐसा नहीं कहा, इसलिए मैं राजद्रोह की परिधि में नहीं आता यह तो वस्तुस्थिति का वर्णन है। यद्यपि मैंने इसका कारण नहीं बताया तदपि मैं इसका परिणाम बताता हूँ कि इससे विद्वान् रुष्ट हो जायेंगे और तब राज्य बदल जायेगा। मैंने यह कहकर प्रकृति के नियम का उल्लेख किया है।"

"परन्तु स्वामीजी ! सार्वजनिक रूप में इस प्रकार की बात कहना ही राजद्रोह है। इस देश में आज प्रजा का ही राज्य है, इस लिए प्रजा को इस प्रकार की बात कहना ही राजद्रोह माना जाता है। यह एक प्रकार से प्रजा की निन्दा करना है। यही राजद्रोह है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा से अधिकार प्राप्त राज्याधिकारी इस द्रोह का दण्ड देंगे।"

"तब प्रजा उन राज्याधिकारियों से उनके अधिकार छीन लेगी। यही तो पुरुरवा और वेन इत्यादि के साथ हुआ था।"

वार्त्तालाप में कटुता का भास होने लगा था। दूध और कॉफी कभी के समाप्त हो चुके थे। फकीरचन्द ने अवसर देखा तो पूछ लिया, "स्वामीजी! दिल्ली में यह प्रवचन अभी कितने दिन और चलने वाला है?"

"मेरी अपनी ओर से तो अभी दस दिन तक यहाँ प्रवचन का कार्यक्रम है। उसके उपरान्त का अभी निश्चय नहीं किया है।"

"मुझे आज कुछ श्रोतागणों में बेचैनी दिखाई देने लगी थी। लगता था कि कुछ श्रोतागण अप्रसन्न हैं।"

"उनको चाहिए कि वे यहाँ आना छोड़ दें। इसके लिए कोई उनको बाध्य तो करता नहीं है।"

"आपकी वाणी का रस और भाव उनको खींचकर यहाँ ले आते हैं।"

"यह मेरा दोष नहीं है।"

"नहीं महाराज! यह दोष नहीं, गुण है। इसका हानि-लाभ तो गुणी को होता है।"

नवागन्तुक कुछ अटपटा-सा अनुभव कर रहा था। उसने उठते हुए कहा, "मैं यत्न करूँगा कि पुनः आपके दर्शन करूँ।"

मंगलानन्द ने इस विषय पर कुछ कहा नहीं। केवल हाथ जोड़ दिए। वह व्यक्ति कमरे से बाहर चला गया। जियाराम भी उठकर उसके साथ हो लिया। कमरे में स्वामीजी के अतिरिक्त फकीरचन्द तथा एक अन्य श्रोता रह गए। वह श्रोता फकीरचन्द के साथ ही आया था।

जियाराम तथा उसके अतिथि के बाहर जाने पर फकीरचन्द ने कहा, "यही वह व्यक्ति है जिसके विषय में मैंने आपको कहा था कि वह आपको बड़ा भयंकर व्यक्ति मानता है।" उसका अभिप्राय वहाँ बैठे व्यक्ति से था।

"ओह!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह तृतीय व्यक्ति कहने लगा, "महाराज! मैं आरम्भ से ही आपका प्रवचन सुनता आ रहा हूँ। यहाँ आने से पूर्व मैं साधु आश्रम में भी आपका प्रवचन सुनने के लिए जाया करता था। मैं उन आठ-दस व्यक्तियों में से हूँ जो प्रारम्भ से ही आपका प्रवचन सुनने के लिए आया करते थे। मैं लालाजी के चैम्बर में क्लर्क हूँ। आरम्भ से ही मैं लालाजी से आपके प्रवचनों की चर्चा किया करता हूँ। कुछ दिन पूर्व मैंने इनसे कहा था कि आप भयंकर व्यक्ति हैं। कल लाला जी ने कहा कि मैं स्वयं आपकी सेवा में उपस्थित होकर उस भयंकरता को स्पष्ट करूँ।"

फकीरचन्द ने बात को रोकते हुए बीच में ही कहा, "उसका कारण यह था कि उस दिन आपने मेरी बात का जो उत्तर दिया था मैं उसका प्रत्युत्तर नहीं दे सकता था। यही कारण है कि मैं इन सज्जन को आज साथ ले लाया हूँ। इनका नाम है नटवरलाल। अपने कार्य में कुशल हैं। इसके अतिरिक्त इनकी तर्क शक्ति भी अच्छी है। अन्वेषक यन्त्र की भाँति छोटी-से-छोटी बात को भी ये बड़ी करके देखने की सामर्थ्य रखते हैं।"

स्वामीजी ने ही पूछा, "क्यों जी! आपने मुझमें क्या भयंकरता देखी है?"

"आपने अभी इस सरकारी अधिकारी से जो बात की है वह भयंकर ही तो है। आपने यह सिद्ध कर दिया है कि राज्याधिकारी इस समय ज्वालामुखी पर खड़े ज्ञान-ध्यान की बातें कर रहे हैं। बस यही आपकी भयंकरता है।

"महाराज! आप भले ही इस व्यक्ति से किए गए वार्त्तालाप को साधारण मानें, किन्तु जिनमें छिद्र होते हैं उनके हृदय पर साँप लोट जाता है।"

स्वामीजी कहने लगे, "आप तो कोई योगिराज जैसे दिखते हैं। जो उसके शरीर को वेधकर उसके हृदय पर लोटने वाले सर्प को भी देख पाये हैं।"

"महाराज! योगिराज न सही, व्यापारी तो हूँ। किसी के मन की बात उसके मुख से निकलने से पूर्व ही जान लिया करता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह बताइए कि इसके हृदय में लोटने वाला सर्प अब क्या करेगा ?"

"महाराज ! मैं भविष्यवाणी तो कर नहीं सकता। फिर भी मेरा अनुमान है कि वह सर्प आपको डसने का यत्न करेगा। मुझे ऐसी आशंका है।"

"मेरे शरीर में सर्प का विष किसी प्रकार का प्रभाव नहीं करता।"

"इस पर भी महाराज ! आपको इस साँप से सावधान तो रहना ही चाहिए।"

उसी समय जियाराम उस व्यक्ति को विदा करके वहाँ लौट आया। उसने नटवरलाल के वाक्य का अन्तिम अंश कि स्वामीजी उस सर्प से सावधान रहें, सुन लिया था।

जियाराम ने कहा, "महाराज ! नटवरलाल ठीक ही कह रहा है। मेरा विचार है कि आप आज रात ही यहाँ से लापता हो जाइए।"

मंगलानन्द ने मुस्कराते हुए पूछा, "परन्तु यह है कौन ?"

"हमारी सरकार ने गुप्तचर विभाग के अन्तर्गत एक अन्य गुप्त संस्थान चालू किया है। यह व्यक्ति उस संस्थान का एक अधिकारी है।"

यह सुन स्वामीजी ने जियाराम से पूछा, "तुम्हें अब भय लगने लगा है ?"

"हाँ महाराज ! इसने अभी जाते-जाते एक बात कही है। उसने कहा कि 'ख्याति प्राप्त किसी अन्य की ख्याति को सहन नहीं करता।' उसने अंग्रेजी में कहा था 'ओवर पॉपुलैरिटी इज डिसलाइक्ड बाई पौपुलर परसन्स'।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि तुम मुझको यह कोठी छोड़ने के लिए कह रहे हो ?"

"नहीं महाराज ! मुझे तो किसी प्रकार का भय नहीं लग रहा है। उसका कारण यह है कि मैं ओवर पापुलर नहीं हो रहा। ओवर पापुलर तो आप हो रहे हैं। आपकी ख्याति से यहाँ किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विख्यात व्यक्ति को भय होने लगा है। उसको ही इसकी चिन्ता सता रही है। इसी सम्बन्ध में उस व्यक्ति ने यह बात कही थी।"

"अर्थात् मुझे यहाँ से चला जाना चाहिए।"

"जी, मेरा यही अभिप्राय था।"

"किन्तु तुमने यहाँ की जनता को मेरी ओर से वचन दिया है कि एक मास तक मेरे प्रवचन यहाँ पर होंगे, उसका क्या होगा?"

"जनता से मैं निपट लूँगा।"

"अर्थात् किसी प्रकार का झूठ बोलकर श्रोताओं को टाल दोगे।"

जियाराम उत्तर नहीं दे सका। वह मौन बैठा रहा। तब स्वामी जी ने लाला फकीरचन्द से पूछा, "लालाजी! आप इस विषय में क्या कहते हैं?"

"महाराज! मैं तो कम-से-कम विरोध का मार्ग स्वीकार करने की ही बात को ठीक समझता हूँ।"

"तब तो मुझे इस बात पर विचार करना होगा। मैं सायंकाल तक अपने विचार बता दूँगा।"

इस प्रकार यह प्रकरण समाप्त हो गया।

अल्पाहार में अभी एक घण्टे का समय था। जियाराम उठता हुआ कह गया, "महाराज! मैं किसी काम से जा रहा हूँ। अल्पाहार के समय तक लौट आऊँगा।"

जियाराम के साथ ही लाला फकीरचन्द और नटवरलाल भी उठकर चले गए।

उनके चले जाने पर स्वामीजी ने अपने बक्स में से एक पुस्तक निकाली और उसको खोलकर पढ़ना आरम्भ कर दिया।

स्वामीजी को स्वाध्याय में लगे आधा घण्टा ही हुआ था कि चन्द्ररानी आ गई। स्वामीजी ने पुस्तक से सिर उठाया तो वह बोली, "महाराज! बम्बई से फोन आया है कि सार्वजनिक प्रार्थना सभा भवन में आपके प्रवचन की व्यवस्था कर दी गई है। उन्होंने पूछा है कि आप बम्बई कब पहुँच रहे हैं?"

"उनको पत्र द्वारा उत्तर देना है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं। रात को किसी समय फोन पर ही उनको बता दूँगी।"

स्वामीजी सोचते रहे।

चन्द्ररानी ने ही कहा, "बजाज साहब बता रहे थे कि कल उन्होंने हाल वालों से हाल बुक करना है। उसकी बुकिंग तभी हो पाएगी जब ग्रापका कार्यक्रम निश्चित हो जाएगा। उनका ग्राग्रह था कि यदि ग्राज उनको ग्रापके कार्यक्रम के विषय में सूचना मिल जाए तो इससे उनको सुविधा होगी।"

"यहाँ के प्रवचन का ग्रन्तिम दिन है शुक्रवार ग्रट्ठाईस ग्रक्टूबर। जियाराम ने कहा था कि उसके उपरान्त भोग का कार्यक्रम है। वह उनतीस ग्रक्टूबर को होगा। मैं उसी दिन यहाँ से रेल से चलकर पहली नवम्बर को बम्बई पहुँच जाऊँगा।"

"यह ठीक है। मैं भी ग्रापके साथ जा रही हूँ। कदाचित् मिस पीटर भी मेरे साथ जाने को इच्छा कर रही है। मैं यत्न कर रही हूँ कि वहीं से हम दोनों योरोप के लिए चल दें। फिर तो एक वर्ष उपरान्त ही वहाँ से लौटना होगा।"

: ६ :

जैसाकि जियाराम ने कहा था तदनुसार वह ग्रल्पाहार के समय तक वापस नहीं ग्राया। चन्द्र का कहना था कि ऐसा होता ही रहता है। जियाराम चन्द्र को बताकर गया था कि उसको किसी सरकारी ग्रधिकारी से मिलना है। सम्भव है वहाँ विलम्ब हो जाए।

किन्तु जब मध्याह्न के भोजन के समय भी जियाराम नहीं ग्राया तो चिन्ता होने लगी। चन्द्ररानी ने ग्रपने पुत्र कृष्ण को फोन किया।

कृष्ण को उस समय ग्रपने पिता के विषय में कुछ ज्ञात नहीं था। किन्तु जब उसको बताया गया कि प्रातःकाल से ही वह घर नहीं ग्राया है तो उसने भी ग्रपनी माँ की बात की पुष्टि करते हुए कहा, "मुझे भी कुछ इसी प्रकार की सम्भावना दिखाई दे रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें क्या सम्भावना दिखाई दे रही है ?"

"मैं वहीं आ रहा हूँ।"

इस प्रकार कृष्ण ने फोन बन्द किया। मध्याह्नोत्तर तीन बजे कृष्ण आ गया। उस समय तक सभी को जियाराम के प्रातःकाल से घर न आने के कारण चिन्ता होने लगी थी। मंगलानन्दजी ने परामर्श दिया कि फकीरचन्द को बुला लिया जाए। उसको फोन किया गया तो नटवरलाल ने कहा, "लालाजी इस समय किसी कार्य से गए हैं। आते ही उनको सन्देश दे दिया जाएगा।"

कृष्ण के आने पर स्वामीजी ने उसको प्रातःकाल किसी सी० बी० आई० के प्रवचन के समय पर आना और फिर उसका उनसे मिलना तथा उस समय हुई बातों का उल्लेख कर दिया।

यह सुन कृष्ण ने कहा, "मैं उस अधिकारी से सम्पर्क करने जा रहा हूँ।"

यह कहकर कृष्ण कोठी से चला गया।

कृष्ण के जाने के आधे घण्टे बाद लाला फकीरचन्द आया। उसने जब जियाराम के लापता होने की बात सुनी तो तुरन्त अधिकारी को फोन किया। वहाँ से सूचना मिली कि वे किसी भी जियाराम के विषय में कुछ नहीं जानते।

उसी क्षण फकीरचन्द ने अपने पुत्र जवाहरलाल को उसके कॉलेज में फोन किया तो पता चला कि वह कॉलेज में नहीं है। फकीरचन्द अपने पुत्र को ढूंढ़ने के लिए चला गया।

इस भाग-दौड़ का परिणाम यह हुआ कि सायंकाल की चाय के समय यह समझा जाने लगा कि जियाराम लुप्त हो गया है अथवा उसको लुप्त कर दिया गया है।

उसके बाद उसके जाने के सब स्थानों पर उसके विषय में पूछताछ की गई किन्तु कहीं भी उसका पता-ठिकाना नहीं मिला। उन सब स्थानों पर से तो यही सूचना मिली कि पन्द्रह-सोलह दिन से उन्होंने जियाराम को देखा ही नहीं है।

इन सब सूचनाओं के आधार पर फकीरचन्द ने यही अनुमान लगाया कि जियाराम दिल्ली में नहीं अपितु उससे बाहर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब चिन्ता निमग्न बैठे थे। कोई किसी के मुख पर देख रहा था तो कोई किसी अन्य के। सहसा सुवीर बोल उठा, "दादी माँ! मेरा मन कहता है कि बाबा को पुलिस ने पकड़ रखा है और यह उसका गुप्त कार्य है।"

"गुप्त से क्या अभिप्राय?"

"जो गुप्त रखा गया हो।"

"परन्तु पुलिस में तो सब कार्यवाही उनको डायरी में लिखनी होती है। मैंने सब स्थानों पर पता कर लिया है, वहाँ किसी भी स्थान पर ऐसा कोई अंकन नहीं है।"

"परन्तु लालाजी! गुप्तचर विभाग की डायरी भी तो गुप्त ही रहती है?"

फकीरचन्द ने इस बात पर से सबका ध्यान पलटने के लिए स्वामीजी से पूछा, "कल के प्रवचन का क्या होगा?"

"मैं तो जियाराम के कहने पर प्रवचन कर रहा हूँ। वह स्वयं यहाँ नहीं है। उसका कहना अभी तक तो रद्द हुआ नहीं है। इस कोठी का स्वामी ही उस वचन को रद्द कर सकता है। जियाराम की अनुपस्थिति में इस कोठी पर किसका अधिकार है, इसका मुझे ज्ञान नहीं है।"

चन्द्ररानी ने कहा, "यह कोठी तो मेरे नाम पर है। मैं इसकी स्वामिनी हूँ। वैसे भी अपने पति की अनुपस्थिति में भी मैं ही उनकी इच्छा की उत्तराधिकारिणी हूँ। अतः मेरा निवेदन है कि मेरे पति ने जिस-जिस कार्य का बीड़ा उठाया है वह सब उसी प्रकार चलना चाहिए।"

कृष्ण कहने लगा, "मेरे विचार से तो जब तक पिताजी की इच्छा का ज्ञान न हो जाए तब तक के लिए प्रवचन बन्द कर दिये जाने चाहिए।"

"उनकी ज्ञात इच्छा का ज्ञान मुझे है। मैं यह भी जानती हूँ कि अभी तक उन्होंने अपनी इच्छा को बदला नहीं है। और फिर यह कोठी तो मेरी है। मैं जैसे चाहूँ उस प्रकार इसका प्रयोग कर सकती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु माँ ! मुझे विश्वास हो रहा है कि पिताजी पुलिस की हिरासत में हैं।"

फकीरचन्द बोला, "गुप्तचर विभाग की हिरासत और साधारण पुलिस की हिरासत में अन्तर है। गुप्तचर विभाग कभी नहीं बताएगा कि जियाराम उसकी हिरासत में है। यदि है भी तो सायंकाल से पूर्व उसको छूटकर यहाँ आ जाना चाहिए। अथवा उसको सामान्य पुलिस की हिरासत में देकर मैजिस्ट्रेट के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना चाहिए।"

कृष्ण बोला, "पिताजी को लुप्त हुए अभी चौवीस घण्टे नहीं हुए हैं। इस कारण उनका पता नहीं चल रहा है। कल तक ही यह पता चल पाएगा कि वे पुलिस की हिरासत में हैं अथवा कि नहीं।"

इस व्यर्थ के वार्त्तालाप को बन्द करने के लिए चन्द्ररानी ने कहा, "यदि स्वामीजी महाराज भयभीत न हों तो प्रवचन जारी रहना चाहिए।"

"मैं तो भय का अर्थ ही नहीं जानता। इसलिए मैं तो कल प्रवचन करने के लिए तैयार हूँ। यदि मालिक की आपत्ति न हो तो कोठी के लॉन में अन्यथा सड़क पर कर लूँगा।"

इस उत्तर से यह विवाद समाप्त हो गया। कृष्ण जब अपनी कोठी को जाने लगा तो सुधीर ने कहा, "मैं आज दादी माँ के पास रहूँगा। कल रविवार है। कल स्कूल जाना नहीं है। सायंकाल तक वहाँ आ जाऊँगा।"

"और स्कूल का काम ?"

"वह सायंकाल आकर कर लूँगा।"

कृष्ण गया तो मंगलानन्द भी उठकर अपने कमरे की ओर जाने लगा। सुधीर और चन्द्ररानी उसके साथ चले। कमरे में पहुँचकर चन्द्ररानी ने पूछा, "महाराज ! इससे आपने क्या अभिप्राय लगाया है ?"

"मेरा तो यह निश्चित मत है कि जियाराम पुलिस की हिरासत में है। मैं कल के प्रवचन में इस विषय पर प्रकाश डालूँगा और फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की सारी घटना को समाचार-पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दूँगा।"

"इससे क्या होगा ?"

"यह चीख-पुकार ही है जो कि किसी को निर्बल कर सकती है। जो सबसे शक्तिशाली है वह पंचजनः अर्थात् समाज की चीख-पुकार सुनकर सहायता के लिए दौड़ पड़ता है। इस लोक में जो भले और बुद्धिमान हैं उनके माध्यम से वह आता है। यदि किसी बुद्धिमान और भले व्यक्ति के पास हमारी चीख-पुकार पहुँच गई तो जियाराम छूट जाएगा।"

"आप जैसा उचित समझें कीजिए। हम भी अनुभव करेंगे कि उसकी दृष्टि में इस भारत में कोई भला और बुद्धिमान है अथवा नहीं।"

चन्द्ररानी उठकर चली गई। सुधीर वहीं रहा। चन्द्ररानी का चीख-पुकार का अपना ढंग था, उसी के लिए वह गई।

मंगलानन्द ने सुधीर से पूछा, "वह कोठी कितनी बड़ी है ?"

"उस कोठी में छः सेट हैं। वहाँ तीन गैस्ट हाउस हैं। जितना बड़ा लॉन यहाँ है उतना ही बड़ा लॉन वहाँ भी होगा। मोटर गैरेज है और पिछवाड़े में गाय बाँधने के लिए स्थान है।"

"उसमें केवल तुम दोनों पिता-पुत्र ही रहते हो ?"

"जी नहीं। पिताजी तो एक सैट में रहते हैं। दो अन्य सैटों में दो और प्राणी रहते हैं। एक में मैं रहता हूँ। दो अभी खाली हैं। गैस्ट हाउस भी अभी खाली है।

"जो दो सैटों में रहते हैं, वे मेहमान नहीं हैं ?"

"वे दोनों तो महिलाएँ हैं। वे पिताजी के कारोबार में सहायक हैं।"

"क्या नाम है उनका ?"

"एक का नाम तो मृदुला सोलंकी है। वह गुजरात की है। वह आर्किटैक्ट है। दिन-रात नक्शे बनाती रहती है। दूसरी का नाम निर्मलदास है, वह बंगालिन है। वह क्या करती है इसका मुझे ज्ञान नहीं है।"

उस समय स्वामी मंगलानन्द को प्रतिभा का यह कहना स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो आया कि वहाँ उसकी स्थानापन्न है। वह समझ नहीं पा रहा था कि कोठी बनने से पूर्व वह कहाँ रहती होगी ?

इस विषय में उन्होंने सुधीर से अधिक बात करना उपयुक्त नहीं समझा। उससे वे उसके अध्ययन के विषय में पूछते रहे।

सुधीर ने अपनी कापी खोलकर पढ़ना आरम्भ किया, "बिना किसी मूल पदार्थ के रचना सम्भव नहीं है। कुछ नहीं से कुछ नहीं बन सकता। शून्य से किसी प्रकार के सत् की रचना नहीं हो सकती…।"

इस समय चन्द्ररानी आ गई। उसके पीछे-पीछे जवाहरलाल था। चन्द्ररानी ने कहा, "ये आपसे मिलने के लिए आये हैं।"

मंगलानन्द ने जवाहरलाल को बैठाते हुए कहा, "आपके पिताजी ने चार बजे के लगभग आपको आपके कॉलेज में फोन किया था किन्तु आप वहाँ मिले नहीं।"

"जी, मैं उस समय एक मीटिंग में गया हुआ था। अभी-अभी घर पहुँचा तो पिताजी ने लाला जियाराम जी के विषय में बताया। मैं उसी सम्बन्ध में आपसे मिलने के लिए आया हूँ।"

चन्द्ररानी वहीं खड़ी रही। वह जवाहरलाल की बातें सुन रही थी। मंगलानन्द ने भी उसको जाने के लिए कहा नहीं। स्वामीजी सोचते थे कि यदि जवाहरलाल को किसी प्रकार की गुप्त बात ही कहनी होगी तो वह स्वयं चन्द्र को जाने को कह देगा। जब उसने ऐसा कुछ नहीं कहा तो चन्द्र भी उसकी बातें सुनने वहीं रुक गई।

जवाहरलाल बोला, "मुझे लालाजी के विषय में सबकुछ ज्ञात है। मैं आपको बताना नहीं चाहता था। परन्तु पिताजी के कहने पर मैं बताने के लिए चला आया हूँ। उनका कहना था कि मैंने सरकार के किसी रहस्य को गुप्त रखने की शपथ नहीं ली है और न ही मैं सरकार के रहस्य को गुप्त रखने पर नियुक्त उसका कर्मचारी हूँ।

"कल साधु आश्रम की एक रिपोर्ट पर गुप्तचर विभाग ने मुझे बुलाया था। उस समय मुझसे आपके तथा लाला जियाराम जी के विषय में बहुत-कुछ पूछा गया था। जो कुछ मैंने बताया और जो रिपोर्ट साधु आश्रम से आई थी, उन दोनों में बड़ा अन्तर था। मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात को सुनकर विभाग के एक अधिकारी मिस्टर धर ने कहा कि अभियुक्त मंगलानन्द नहीं अपितु जियाराम हैं। मैं उससे ही वास्तविक बात जानना चाहूँगा।

"मिस्टर धर कहने लगा कि मेरी बताई बातें और साधु आश्रम की कमेटी द्वारा भेजी गई रिपोर्ट में यह अन्तर है कि तुम कहते हो वह सिद्धान्त की बात करता है और वे लिखते हैं मंगलानन्द विद्रोह उत्पन्न कर रहा है। उसने यह नहीं बताया कि वर्तमान सरकार क्या कर रही है। मैं कल स्वयं जाकर उसका प्रवचन सुनूँगा।

"बस, मुझे इतना ही पता है। पिताजी ने मुझे बताया कि वह प्रात:काल घर आया था और वह कह गया कि वह पुन: आपको मिलेगा।

"जियाराम जी बाहर तक उसको छोड़ने के लिए गये थे। मैं समझता हूं कि उस समय धर ने उनको थाने में बुलाया होगा। सम्भवतया जियाराम जी ने माना नहीं होगा और उनसे मनवाने के लिए ही उनको हिरासत में रखा होगा।

"मैं समझता हूँ कि यह कोई अधिक चिन्ता की बात नहीं है। क्योंकि जहाँ तक मेरा ज्ञान है, गुप्तचर विभाग इस कार्य के लिए निम्न स्तर के उपायों का प्रयोग नहीं करता।"

स्वामीजी बोले, "तुम यह सब किस प्रकार जानते हो? इतना तो पुलिस के मुखबिरों तक तो विदित नहीं होता। क्या तुम मुखबिर हो?"

जवाहरलाल यह सुनकर हँस पड़ा। फिर बोला, "मैं उनका वेतनभोगी मुखबिर नहीं हूँ। और न ही मैं उनके किसी झूठे मामले में साक्षी का कार्य करता हूँ। मैं सी० पी० आई० का कार्ड होल्डर हूँ और उनमें मुझको विद्वान् व्यक्ति माना जाता है। इस कारण पुलिस समझती है कि मैं भारत सरकार की हर प्रकार से सहायता करूँगा। आजकल हमारी पार्टी का सरकार के प्रति यही व्यवहार है।

"यह कार्य हमारी पार्टी और सरकार दोनों ही जानते हैं। गुप्तचर विभाग के अधिकारी भी इसी कारण मुझसे सम्पर्क बनाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हैं और जब कभी किसी सार्वजनिक विषय पर पुलिस वालों को कोई सूचना की आवश्यकता होती है, हममें से किसी को बुला लिया जाता है।"

"और इस सेवा का आपको मिलता क्या है?"

"कुछ नहीं। मैं इसे पार्टी का काम समझता हूँ। पार्टी मेरी प्रत्येक बात में सहायता करती है। उदाहरण के रूप में पिछले वर्ष के ग्रीष्मावकाश के अवसर पर मुझे रूस भ्रमण का अवसर प्रदान किया गया।"

"तो अब जियाराम का पता करना चाहिए कि पुलिस उसके विषय में क्या करने की योजना बना रही है?"

"मैं अभी घर से मिलने के लिए जा रहा हूँ। यदि केवल पूछ-गीछ के लिए रोका हुआ था तो अब तक तो उनको आ जाना चाहिए। वे आये नहीं। इससे यह अनुमान होता है कि कुछ अन्य बात भी है। यदि कुछ पता चल गया तो घर जाने से पहले आपको बता जाऊँगा।"

मंगलानन्द ने पूछा, "यह सब तुम किस प्रकार जानते हो?"

"स्वामीजी! मैं स्वयं इस चक्की में पिस चुका हूँ।"

"तो आपने भी कोई अपराध किया था?"

"नहीं, मैंने तो वही किया था जो आप करते हैं। मैं भी सिद्धान्तात्मक बातें ही किया करता था।"

"किस सिद्धान्त की बातें करते थे?"

"मैं विचार से साम्यवादी था और साम्यवादी विचारों का होने के कारण ही मुझको पकड़ा गया था। मैं दो दिन गुप्तचर विभाग की हिरासत में रहा था।

"मैं समझता हूँ कि जियारामजी को कहा जा रहा होगा कि वे स्वामीजी को अपनी कोठी से निकाल दें।

"ऐसा करने से जहाँ वे एक ओर साधु आश्रम वालों को प्रसन्न कर देंगे वहाँ सरकार का काम भी शान्तिपूर्वक निपट जायेगा।"

"साधु आश्रम का काम क्या है?"

"एक आर्यसमाजी को सनातन धर्म के सिद्धान्तों के विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Central Library 167956 Gurukula Kangri University Haridwar

प्रवचन करने से रोक देना।"

"परन्तु प्रोफेसर साहब ! आप कम्युनिस्ट होने पर भी साधु आश्रम के झगड़े में कैसे पड़ गये ?"

"मेरा हिन्दू सनातन धर्म पर किसी प्रकार का भी विश्वास नहीं है। परन्तु हमारे गुरु कार्ल मार्क्स ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है कि यदि किसी प्राचीन समाज को विध्वंस करना हो तो उसमें घुल-मिलकर उसकी जड़ों को खोखला कर देना चाहिए।

"हमारा यह भी सिद्धान्त है कि जहाँ दो व्यक्ति परस्पर झगड़ा कर रहे हों तो उनमें सम्मिलित होकर दोनों को लड़ा देना चाहिए और इस प्रकार दोनों को ही नष्ट कर अपनी सत्ता स्थापित करने का यत्न करना चाहिए।"

"आपने एक दिन मुझको कहा था कि मैं भयंकर जीव हूँ। किन्तु आज मेरे मुख से आपके लिए वही शब्द निकल रहे हैं।"

"किन्तु महाराज ! जबसे मैं आपका प्रवचन सुनने लगा हूँ मुझे अपने व्यवहार पर सन्देह होने लगा है। मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि अब इस झमेले से बाहर किस प्रकार निकला जाय। अभी विगत वर्ष ही तो रूस की सरकार ने मुझ पर लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है।"

यह सुनकर मंगलानन्द अवाक् हो गया। वह उसका मुख देख रहा था।

जवाहरलाल ही फिर बोला, "मैं इस समय जाता हूँ। वहाँ से लौटने के उपरान्त आपसे मिलूँगा और अपनी गतिविधि से अवगत कराऊँगा।"

जवाहरलाल स्वामीजी को प्रणाम कर उठकर चला गया।

जवाहरलाल के जाने के बाद से ही उसके लौटने की प्रतीक्षा होने लगी, किन्तु वह लौटकर नहीं आया।

: ७ :

नित्य की भाँति ही अगले दिन भी स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिए उतने ही श्रोतागण उपस्थित थे। उस दिन स्वामीजी ने राजनीति में भी प्राचीन व्यवस्था की श्रेष्ठता का वर्णन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी का कहना था कि संसार में केवल चार प्रकार के पुरुषार्थ हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

धर्म है, प्राकृतिक नियमों के अनुसार व्यवहार करना। प्राकृतिक नियमों का ज्ञान जगत् की रचना का अध्ययन करने से विदित होते हैं। उसमें वर्तमान युग की डेमोक्रेसी नहीं चलती। योग्यता की सर्वत्र महिमा है। जो योग्य हैं उनके द्वारा प्रतिपादित मार्ग धर्म का मार्ग है। उससे उत्पन्न किया गया धन 'अर्थ' है। उस धर्मयुक्त धन से पूर्ण की गई कामना फलवती सिद्ध होती है।

"कामना के लिए एक सिद्धान्त है :

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वाचैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

"धर्म का सार यही है कि जो व्यवहार हम अपने साथ पसन्द नहीं करते वैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ भी न करें।

"अर्थ तो साधन है, कामना लक्ष्य है। यही धर्म कामना का स्रोत है। धर्म, अर्थ और कामरूपी साधनों के उचित होने पर मोक्ष की प्राप्ति स्वयमेव हो जाया करती है। परन्तु इसके लिए कुछ पृथक् प्रयत्न भी करना ही पड़ता है।"

स्वामीजी के प्रवचन में इतिहास-पुराण के उदाहरण और उपमायें बड़े आकर्षक और सटीक होते थे। श्रोता मन्त्रमुग्ध-सा होकर उनके प्रवचन का आनन्द लेता था।

आज का प्रवचन स्वामीजी ने पाँच मिनट पूर्व ही समाप्त कर विगत दिन की घटना का विवरण सुनाया।

स्वामीजी ने इतना ही कहा था कि, "कल प्रातःकाल साढ़े सात बजे से इस कोठी के स्वामी लाला जियाराम लापता हैं। इस कारण..."

स्वामीजी आगे कहने ही वाले थे कि लॉन के एक कोने में खड़े लाला जियाराम ने अपना हाथ ऊँचा करके स्वामीजी तथा अन्यान्य श्रोतागणों को अपनी उपस्थिति का आभास कराया और फिर बोला, "महाराज! मैं आ गया हूँ।"

यह सुनकर जिन्होंने उसके हाथ को नहीं देखा था वे भी उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने लगे। जियाराम के समीप ही जवाहरलाल भी खड़ा था। स्वामीजी ने देखा, स्थिति को समझा और अपने हाथ के संकेत से जियाराम को मंच पर आने के लिए कहा। स्वामीजी ने स्वयं कहा, "दिन का भूला रात को घर आ जाय तो भूला नहीं कहाता।"

"यहाँ तो दिन का भूला रात नहीं अपितु अगले दिन प्रातःकाल घर आया है। यह आश्चर्यजनक है। लाला जियाराम लौट आये हैं इसलिए हम सबको उन्हें बधाई देनी चाहिये।"

जियाराम मंच पर आ गया। मंच पर खड़ा होकर उसने हाथ जोड़कर सबको नमस्कार किया, इसपर भजन-मण्डली ने आरती गाना आरम्भ कर दिया।

स्वामीजी अपने कमरे में पहुँचे तो उस समय सारा परिवार ही वहाँ पर एकत्रित हो गया। परिवार से बाहर के लोगों में केवल लाला फकीरचन्द और उनका पुत्र जवाहरलाल ही वहाँ पर उपस्थित थे। उन दोनों के लिए भी दूध मँगवा दिया गया।

फ़कीरचन्द ने अपने पुत्र से पूछा, "जवाहरलाल! कहाँ मिले हैं तुमको लाला जियारामजी?"

"पिताजी! मैंने इनको नहीं पाया। यदि कहा जाय तो यही उचित होगा कि इनको मैं धर साहब की कोठी के बाहर खड़ा मिल गया हूँ।

"धर साहब का चौकीदार मुझको जानता है। रात वहाँ पहुँचने पर मैंने उसको धर साहब से मिलने की बात कही तो उसने कहा, 'वे तो कोठी में नहीं हैं।'

" 'कहाँ गये हैं?' मैंने पूछा।

" 'यह तो मुझे मालूम नहीं है किन्तु आज कोठी में नया पंछी लाया गया है। कोई नयी दिल्ली के लाला हैं। उन्हें पिछले कमरे में ताले में बन्द कर दिया गया है।'

"मैं समझ गया कि यह लाला कौन है। इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं वहीं पर रहूँगा। मेरा अभिप्राय यह था यदि लालाजी को कहीं भेजा जाने लगेगा तो मुझको उसका ज्ञान तो होगा।

"रात के दस बजे से प्रातःकाल छः बजे तक मैं वहाँ चौकीदारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता रहा। अपनी मोटर को मैंने सड़क के एक किनारे पर खड़ा कर दिया था।

"प्रातःकाल धर साहब और लालाजी दोनों ही कोठी से बाहर निकले। धर साहब ने इनकी मोटर बाहर निकलवाई तो मैं सामने जाकर खड़ा हो गया। मैंने धर से कहा कि वह तो कहीं बाहर गये हुए थे।

"वह बोले, 'हाँ, अभी-अभी तो आया हूँ।'

" 'किस मार्ग से ? आकाश से ?'

" 'नहीं भूमि के नीचे से।'

"यह कहकर वह हँस दिया।

"मैंने कहा, 'मैं कल रात से लालाजी की प्रतीक्षा में यहाँ पर बैठा हूँ। इनको ले जाने के लिए मैं अपनी मोटर लाया हूँ।'

"उस समय इन्होंने कहा, 'लालाजी मेरी गाड़ी में जाएँगे। ड्राइवर गाड़ी ला रहा है।'

"इस प्रकार आगे-आगे लालाजी की गाड़ी और पीछे-पीछे मेरी गाड़ी। इस प्रकार हम लोग साढ़े छः बजे यहाँ पहुँच पाये हैं।

"आपके प्रवचन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो इसलिए हम लोग चुपचाप लॉन के एक कोने में खड़े हो गये।"

स्वामीजी ने कहा, "जियाराम ! तुम बताओ, कल प्रातःकाल से आज प्रातःकाल तक कहाँ रहे हो ?"

"रहा तो मैं धर साहब की कोठी पर ही था। परन्तु ताले में बन्द। वे निरन्तर मुझसे पूछगीछ करते रहे। कल दिनभर वे यत्न करते रहे कि मैं किसी प्रकार का उनको वचन दूँ।

"रात बहुत देर तक मुझसे पूछताछ होती रही है। जब कुछ सिद्धि नहीं मिली तो फिर मुझे सो जाने के लिए कहा और प्रातः-काल छोड़ दिया।"

"क्या-क्या वचन देने की बात थी ?"

"वह फिर बताऊँगा।"

स्वामीजी ने फिर कहा, "तो फिर जाओ, स्नान-सन्ध्या कर लो। अल्पाहार के उपरान्त फिर बात कर लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरलाल उठता हुआ कहने लगा, "स्वामीजी ! मैं भी अब आज्ञा चाहता हूँ, घर पर पत्नी काफी परेशान हो रही होगी।"

फकीरचन्द कुछ नहीं बोला। वह भी उठा और प्रणाम कर जवाहरलाल के साथ चला गया।

सबके जाने पर सुधीर कहने लगा, "बाबा ! मैं बताऊँ, मेरा मन क्या कहता है ?

"मैंने बाबा की आँखों में विजय की चमक देखी है। इससे यही आभास मिलता है कि उन्होंने पुलिस की किसी बात को स्वीकार नहीं किया है।"

"पुलिस उनसे क्या मनवाना चाहती थी ?"

"जिसके लिए बाबा को एक दिन तक अपने अधिकार में रखा है वह बात निश्चय ही कानून के अतिरिक्त थी। अन्यथा उसके लिए इतना लुकाव-छिपाव नहीं किया जाता।"

स्वामी मंगलानन्द यह तो पहले से ही जानते थे कि सुधीर तर्क करने में निपुण है। इस कारण वे उसको श्रेष्ठ विभूति मानते थे। स्वामीजी ने पूछा, "अब तुम क्या करोगे ?"

"अभी तो मैं स्नान आदि करूँगा। अल्पाहार के उपरान्त आपसे आज का पाठ पढ़कर मैं फिर पिताजी की कोठी पर चला जाऊँगा।"

"मैं समझता हूँ कि तुमको अब वहाँ नहीं जाना चाहिए।"

यह सुनकर सुधीर को प्रसन्नता हुई। परन्तु यह किस प्रकार सम्भव होगा, उसके सम्मुख यही समस्या थी। वह स्वामीजी के मुख पर देखने लगा।

स्वामीजी ने कहा, "मैं तुम्हारी दादी माँ से कहूँगा कि वे अपने सुपुत्र को आज्ञा कर देंगी तुम अब उस कोठी पर नहीं रहोगे।"

चन्द्र ने धीरे कहा, "मैं यत्न करूँगी।"

बात समाप्त हो गई।

अल्पाहार के उपरान्त जियाराम, कृष्ण, चन्द्ररानी, और सुधीर स्वामीजी के कमरे में आये तो जियाराम ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "घर साहब चाहते थे कि मैं आपको कोठी से विदा कर दूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैंने उनको सब प्रकार से विश्वास दिला दिया कि कोठी मेरी पत्नी की है और वही आपके प्रवचन करवा रही है तो फिर उसने मुझे मुक्त कर दिया।

"कदाचित् मुझे मुक्त करने का निश्चय मेरे सोने के उपरान्त किया गया होगा। प्रातःकाल ज्यों ही मैं उठा तो धर साहब आ गये और मुझे लेकर स्वयं कोठी के बाहर तक छोड़ने के लिए आए। वहाँ जवाहरलाल खड़ा मिल गया।

"बस इतनी सी ही घटना है पिछले तेईस घण्टों की।"

"मुझे निकाल देने के लिए क्यों कहते थे?"

"इसलिए कि आपकी ख्याति बढ़ रही है और जो स्वयं ख्याति प्राप्त व्यक्ति होता है वह दूसरे की बढ़ती ख्याति को देख नहीं सकता।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि स्वामी अभयानन्द के अतिरिक्त भी कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी ख्याति को मेरी ख्याति से ठेस पहुँच रही है?"

"अवश्य ही कोई होगा। यद्यपि मैं नहीं जानता कि वह कौन है। धर ने भी इस ओर कोई संकेत नहीं किया।"

"तो प्रवचन अभी होते रहेंगे?"

"यह तो चन्द्र बता सकती है। बताओ चन्द्र! क्या इच्छा है? यह सम्भव है कि स्वामीजी को यहाँ से भगाने के लिए कदाचित् मुझको पुनः पकड़कर कष्ट दिया जाए।"

"कुछ नहीं होगा। मैंने रात बम्बई फोन कर दिया था कि आप पहली नवम्बर को देहरादून एक्सप्रेस से बम्बई पहुँच रहे हैं।

"वे आपका कार्यक्रम जानकर आज किसी भी समय यहाँ फोन द्वारा सूचना दे देंगे। तब तक आपके प्रवचन यहाँ होते रहेंगे।"

स्वामीजी ने बात बदलकर कहा, "सुधीर! आज पढ़ाई करोगे?"

"महाराजजी! अभी तो मैं पिताजी की कोठी पर जा रहा हूँ। वहाँ से मैं अपनी पुस्तकें आदि सबकुछ ला रहा हूँ। अब मैं दादी माँ की कोठी पर ही रहूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों कृष्ण ! ठीक है यह ?"

"बस, यही एक लड़का था जिसके कारण मुझमें और पिताजी में सम्पर्क स्थापित था। मैं समझता हूँ कि वह भी मिथ्या सम्बन्ध था। आज मैं उसका भी त्याग कर रहा हूँ।"

"लगता है तुमपर भी वैराग्य की परछाईं पड़ने लगी है।"

कृष्ण को हँसी आ गई। उसने हँसकर कहा, "मैं अपना नया परिवार बनाने का यत्न कर रहा हूँ।"

"मेरी शुभकामनायें। नया परिवार पंजाबी और बंगाली के सहयोग से होगा अथवा कि पंजाबी-गुजराती के संयोग से होगा ?"

"यह अभी नहीं बता सकता। प्रतिभा ने तो मुझे अपना अन्तिम उत्तर दे दिया है। परन्तु वह मुझे तलाक नहीं दे रही है। मैं विचार कर रहा हूँ कि मैं उससे किस प्रकार छुटकारा पा सकता हूँ।"

"हाँ, विचार कर लो।"

स्वामीजी का यह कहने का अभिप्राय यही था कि वह अब यहाँ से उठकर जा सकता है। कृष्ण वह अभिप्राय भली-भाँति समझ गया। उसे यह चुभा और वह उठा तथा बिना किसी को नमस्कार किये वहाँ से चला गया। उसने सुधीर को भी नहीं कहा कि वह उसके साथ अपनी पुस्तकें लेने के लिए चले।

कृष्ण जब चला गया तो चन्द्ररानी ने कहा, "मैंने ही कृष्ण को कहा है कि वह चुपचाप अपना पृथक् घर बसा ले। अन्यथा उसकी पत्नी कोर्ट में उसको बदनाम करके उससे तलाक की प्रार्थना करेगी।

"जब मैंने कृष्ण को बताया कि प्रतिभा के पास ऐसे प्रमाण एकत्रित हो गये हैं कि जिनके आधार पर तलाक सरलता से मिल जायेगा। कृष्ण उन प्रमाणों को देखना चाहता था। उसको जब कुछ चित्र और पत्र दिखाये गए तो वह समझ गया कि वे उसकी सेफ से चुराये गये हैं।

"इस कार्य के लिए उसने सुधीर को अपराधी समझा। तब उसको वास्तविक चोर का नाम बताया गया। उसको उसके हाथ का लिखा पत्र भी दिखाया गया, तब वह माना। उसने स्वयं ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा है कि सुधीर अब यहाँ रहेगा। इसीलिए वह इसको यहाँ छोड़ गया है।"

"वह कौन है जिसने कृष्ण की चोरी की है?"

"चोरी किसी ने नहीं की। वह उसकी ही रखैल है। उसकी इच्छा थी कि इन प्रमाणों के आधार पर प्रतिभा कृष्ण को तलाक दे दे। उसके बाद वह उससे विवाह कर लेगी।"

"बड़ी चतुर है।"

"जी हाँ। परन्तु महाराज! प्रतिभा का विचार तलाक देने का नहीं है। वह कहती है कि अभी उसकी इच्छा दूसरा विवाह करने की नहीं है। दोनों बच्चे भी इसके ही साथ हैं। वह उनकी माँ बनकर उनके ही साथ रहना चाहती है।"

"तुम सबके, अर्थात् तुम्हारे, प्रतिभा के, प्रतिभा के बच्चों तथा पीटर के निर्वाह का क्या प्रबन्ध है?"

"रहने के लिए तो यह कोठी पर्याप्त है। इस कोठी का व्यय तथा दिल्ली में हम सबके रहने के लिए व्यय का प्रबन्ध मैं कर रही हूँ। कृष्ण के पिताजी की पचास हजार की एक बीमा पालिसी परिपक्व हो चुकी है। लगभग इतनी ही राशि एक पक्के खाते में जमा है। मेरा भी बीमा हुआ है। वह भी दस हजार का है। प्रतिभा के कुछ आभूषण हैं। हम उन सबको एक मुश्त कर लेंगे। मिस पीटर के पास भी अय्यर और कृष्ण के दिए हुए कुछ आभूषण हैं। वह उनको बेचकर प्रसव के लिए योरोप जा रही है।"

मंगलानन्द को लगा कि मिस पीटर प्रसव के उपरान्त आत्म-हत्या कर लेगी। उसने पूछा, "और मिस पीटर क्या विचार कर रही है?"

"वह अभी अनिश्चित मन है। कहती थी कि समय आने पर यदि सम्भव हुआ तो आपसे अन्यथा मुझसे परामर्श कर लेगी। अभी वह समय दूर है। उसका कहना था कि उसे यह भी देखना होगा कि प्रसव के उपरान्त उसका स्वास्थ्य कैसा रहता है।"

मंगलानन्द को इससे प्रसन्नता थी कि मिस पीटर अपने भविष्य के विषय में शान्त चित से विचार कर रही है। उसकी दृष्टि में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस पीटर शौर्य एवं बुद्धिमती लड़की थी।

उस दिन के बाद जियाराम की कोठी पर सारा व्यवहार स्वाभाविक होता गया। न तो साधु आश्रम वालों ने और न ही सी०बी० आई० वालों ने इस कार्यक्रम में किसी प्रकार की कोई बाधा डाली।

: ८ :

जिस दिन प्रवचन के उपरान्त भोग का कार्यक्रम था उस दिन केवल आधा घण्टा ही मंगलानन्द का प्रवचन हुआ।

उस दिन के प्रवचन में मंगलानन्द ने एक बात यह कही कि मनुष्य इस धरा पर अकेला ही आता है और अकेला ही चला जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि इस संसार में रहते हुए आप भले ही संयुक्त रूप से कर्म करें अथवा कि एकाकी ही, किन्तु मरण के अवसर पर कोई किसी की सहायता नहीं कर सकता। अतः सबको चाहिए कि वे अपने भूत, भविष्य और वर्तमान का स्वयमेव विचार करें। बनते और बिगड़ते नगरों के जीवन में तो किसी सीमा तक समाज इत्यादि का हस्तक्षेप रहता भी है परन्तु मरकर अथवा उत्पन्न होने वाला आत्मा तो अपने किये कर्म के साथ ही सम्बन्ध रखता है।

केवल बाल्यकाल को छोड़कर मनुष्य अपने सब कर्मों को स्वतः करने वाला होता है। उन कर्मों का भला अथवा बुरा जो भी प्रभाव हो वह अगले जन्म तक भी उसके साथ जाया करता है। कर्म का कर्ता के साथ सम्बन्ध रहता है। कार्य करने वाला जीवात्मा है। शरीर कार्य नहीं करता। जीवात्मा शरीर छूटने पर नया शरीर प्राप्त कर लेता है। कर्मफल जीवात्मा के साथ ही जाया करते हैं।

इस कारण किसी समाज, संगठन, जाति अथवा राष्ट्र में सम्मिलित होते समय अपने व्यक्तित्व का चिन्तन करते हुए सम्मिलित होना चाहिये।

यह प्रवचन सामान्य शब्दों में ही था। किन्तु था यह क्रान्तिकारी ही। इसमें ऐसी भी बात थी जिससे समाज में विस्फोट और विक्षोभ उत्पन्न होने की सम्भावना थी।

प्रवचन के उपरान्त प्रसाद वितरित किया गया। प्रसाद प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए व्यक्ति पंक्तिबद्ध होकर मंच के बराबर से निकलते थे और प्रत्येक को एक-एक डिब्बा प्रसाद का दिया जा रहा था। प्रसाद प्राप्त करने वाला श्रोता अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वामीजी के चरणों में भेंट समर्पित करता जाता था।

प्रसाद के दस हज़ार डिब्बे तैयार कराये गये थे। अनुमान था कि लगभग नौ हज़ार व्यक्ति प्रसाद ग्रहण करने वाले होंगे। जब सब विदा हो गये तो भेंट की राशि का जोड़ किया गया। वह राशि लगभग साठ हज़ार थी। इनमें दो तो दस-दस हज़ार के चेक थे। एक जियाराम का और एक फकीरचन्द का।

श्रोतागणों में केवल एक जवाहरलाल ही ऐसा था जिसने प्रसाद तो लिया था किन्तु भेंट में कुछ दिया नहीं था। उसने केवल हाथ जोड़कर प्रणाम कर दिया।

आयोजन समाप्त होने पर जवाहरलाल के व्यवहार पर विचार किया गया।

समारोह समाप्त होते-होते नौ बज गये थे। अतः केवल दूध पीने की अपेक्षा स्वामीजी सीधे अल्पाहार के लिए ही चल दिये।

उस दिन फकीरचन्द को भी अल्पाहार पर आमन्त्रित किया गया था। उसने बात आरम्भ करते हुए कहा, "जवाहरलाल को जब विदित हुआ कि मैं आपको दस हज़ार का चेक दे रहा हूँ तो वह अपने साथ लाये हुए सौ रुपयों को वापस ले गया है। उसने कह दिया कि मेरे दस हज़ार में उसकी भेंट भी सम्मिलित है।"

यह सुन सब हँसने लगे। जियाराम बोला, "बात तो उसने ठीक ही कही है। वह आपका पुत्र है, आपकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी भी। वह आपके पुण्य-कर्मों का भी उत्तराधिकारी बनने की आशा करता है।"

"स्वामीजी! आप इस विषय में क्या कहते हैं?"

"इसी विषय पर तो मेरा आज का प्रवचन था।

"मैंने कहा तो था कि कर्म व्यक्तिगत होता है। इस कारण उसका फल भी उसी व्यक्ति को प्राप्त होगा। आपके इस धन देने का उसको फल प्राप्त होना चाहिए जिसने इसका अर्जन किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसने इसको देने का संकल्प किया है। यदि इन दोनों बातों में जवाहरलाल का सहयोग रहा है तो निस्सन्देह उस दान में वह फल का भागीदार है।"

फकीरचन्द कुछ नहीं बोला! वह स्वयं नहीं जानता था कि इस दस हजार को प्राप्त करने में उसका स्वयं कितना भाग रहा है। ग्रौर वह भाग क्या था?"

ग्रल्पाहार हो ही रहा था कि उसी बीच में निर्मला दास को लेकर कृष्ण वहाँ उपस्थित हो गया। कृष्ण ने प्रविष्ट होते हुए पूछा, "माँ! हम ग्रा सकते हैं?"

"हाँ ग्राग्रो, तुम्हारा स्थान रिक्त है।"

"मेरे साथ यह निर्मला भी है। कल रात से यह मेरी धर्मपत्नी बन गई है। ग्रब यह निर्मला दास से निर्मला सूरी बन गई है।"

"कोई बात नहीं, इसके लिए भी एक कुर्सी रखवा देती हूँ। परन्तु तुमने विवाह किस रीति से किया है?"

चन्द्ररानी के कहने पर सेविका एक कुर्सी लाई ग्रौर उसने उसको चन्द्र की कुर्सी के समीप रख दिया। चन्द्र ने निर्मला को उस कुर्सी पर बैठने को कहा। फिर उसने प्रश्न का उत्तर सुनने के लिए कृष्ण की ग्रोर देखा।

कृष्ण ने कुछ विचारकर उत्तर देते हुए कहा, "माँ! हम जैसों के लिए तो मनुष्य समाज ने केवल एक ही प्रकार का विधि-विधान छोड़ा है। वह है 'नेचुरल वे ग्रॉफ मैरिज' विवाह का प्राकृतिक विधि-विधान। वही समस्त प्राणीलोक में प्रचलित है। उसी विधि-विधान से यह मेरी धर्मपत्नी बन गई है।"

जियाराम बोला, "उस विधि-विधान से तो तुम दोनों पहले से ही विवाहित थे?"

"पिताजी! पहला सम्बन्ध तो कैजुग्रल होता था। उसका विनिमय तत्काल हो जाता था। किन्तु कल से तो स्थायी सम्बन्ध बन गया है।"

स्वामीजी ने कृष्ण से पूछा, "निर्मलाजी ने तुम पर विश्वास कर लिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह समझ रही है कि मैं जो कुछ अब कह रहा हूँ वह सत्य हृदय से ही कह रहा हूँ।"

जियाराम ने बातों का सूत्र पुनः अपने हाथ में लेते हुए कहा, "ईश्वर करे, इनका विश्वास स्थायी सिद्ध हो।"

जियाराम ने ही निर्मला से कहा, "देखो निर्मला! मुझे तो यह पसन्द नहीं है। परन्तु अब यदि तुमने कृष्ण का विश्वास कर लिया है तो मैं चाहता हूँ कि कृष्ण तुम्हारे विश्वास को ठेस न लगने दे।

"क्योंकि तुम लोग बिना सूचना के आये हो, इसलिए यह सामान्य अल्पाहार ही प्रस्तुत है। जब तुम दो से तीन बनकर आओगे उस समय मैं एक बहुत बड़ी दावत का प्रबन्ध कर दूँगा।"

कृष्ण ने बातों के प्रवाह को बदलते हुए कहा, "आज तो हम स्वामीजी के प्रवचनों के भोग समारोह में सम्मिलित होने के लिए आए हैं। रात देर तक जगते रहे, इस कारण समय पर नींद नहीं खुली। यही हमारे विलम्ब का कारण है।"

स्वामीजी बोले, "इससे किसी प्रकार की हानि नहीं हुई है। जो प्रवचन मैंने आज दिया है, यदि कभी बम्बई आए तो उस अवसर पर सुना दूँगा। हाँ, भोग का प्रसाद तुम्हें अब भी प्राप्त हो सकता है।"

खाने की मेज पर ही अवशिष्ट बीस-पच्चीस डिब्बे रखे थे। जियाराम ने उनमें से दो डिब्बे उठाकर पति-पत्नी के सामने रख दिये।

उसी प्रकार कृष्ण ने भी अपनी जेब में हाथ डाला और अपनी जेब से पाँच-पाँच सौ के दो बण्डल निकालकर स्वामीजी के सम्मुख रखते हुए कहा, "अभी तो इतना ही है। फिर कभी अवसर प्राप्त हुआ तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार देने का यत्न करूँगा।"

स्वामी मंगलानन्द ने उन नोटों को वैसे ही उठाया और जियाराम के सम्मुख रख दिया।

जियाराम ने कहा, "इस प्रकार जो राशि एकत्रित हुई है वह इकसठ सहस्र हो गई है। स्वामीजी का विचार है कि इस धन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर भगवद् गीता का भिन्न-भिन्न भाषाओं में भाष्य लिख अथवा लिखाकर प्रकाशित किया जाए।

"लाला फकीरचन्द जी की कुछ और ही योजना है।"

"आपकी क्या योजना है ?" कृष्ण ने पूछा।

"कल स्वामीजी बम्बई जा रहे हैं। सुधारानी के श्वसुर ने वहाँ उनके प्रवचनों की व्यवस्था की है। मैं उनको लिख रहा हूँ कि वहाँ भी समापन इसी प्रकार हो, और उसमें भी धन एकत्रित किया जाए। इस प्रकार भारत के विभिन्न नगरों में स्वामीजी के प्रवचनों का आयोजन हो और धन एकत्रित किया जाए। उस धन से नयी दिल्ली में एक विशाल गीता भवन का निर्माण किया जाए। वहाँ गीता पर प्रवचन कराये जायें, साहित्य निर्माण किया जाए, आदि-आदि।"

"इसपर कितना धन व्यय होने की सम्भावना है ?"

"एक करोड़ रुपये से कम से तो क्या काम चलेगा ?"

"तब तो मैं इसमें कुछ और भी दूँगा।"

"बतादो कि कितना दोगे ?"

"इसकी घोषणा मैं बम्बई में जब समापन समारोह होगा उस अवसर पर करूँगा।"

"ठीक है। मैं और जियाराम भी उस दिन वहाँ पहुँचने का यत्न करेंगे।"

उसी दिन स्वामी मंगलानन्द ने दिल्ली से प्रस्थान किया और पहली नवम्बर को मध्याह्न के समय वह बम्बई जा पहुँचे। उसी दिन से उनके प्रवचनों का कार्यक्रम भी निर्धारित था।

पहले दिन स्वामीजी ने श्रीमद्भगवद् गीता के विषय पर सामान्य प्रकाश डालकर अपनी प्रवचन माला का आरम्भ किया।

स्वामीजी का कहना था कि गीता को उपनिषद् रूपी गौओं का दूध बताया जाता है। दूध देने वाली गौओं की अपेक्षा उनका सत्व तो उनसे अधिक श्रेष्ठ होना ही चाहिये। इस आधार पर गीता उपनिषदों का न केवल सत्व है अपितु उनसे भी श्रेष्ठ है।

उपनिषदों में अनेक स्थानों पर परस्पर विरोध भी है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध उसी प्रकार समझा जाना चाहिए जिस प्रकार एक गाय के अंग दूसरी गाय के अंग से भिन्न प्रकार के होते हैं। उनमें विलक्षणता होती है। किन्तु यदि सबका भोजन समान हो तो दूध एक समान ही पुष्टिकारक और लोक-परलोक को शुभ करने वाला होगा।

महर्षि व्यासजी ने उपनिषदों का यह महान् कल्याणकारी सत्व निकालकर भगवान् कृष्ण के नाम से विख्यात किया है। यह मानव समाज के कल्याण का ही सूचक है।

सिद्धान्तरूप में मनुष्य के समस्त जीवन का कार्यक्रम इस छोटी-सी पुस्तक में समाहित कर दिया गया है।

इस प्रकार प्रथम दिन यह भूमिका के रूप में उनका प्रवचन हुआ। बम्बई में प्रवचन का समय रात्रि आठ से नौ बजे का रखा गया था। प्रवचनों के विषय में समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर जनता को सूचित कर दिया गया था।

उसका परिणाम यह हुआ कि पहले दिन ही हॉल भर गया। उसके उपरान्त दिन-प्रतिदिन श्रोताओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही।

: ९ :

स्वामी मंगलानन्दजी के बम्बई में ठहरने की व्यवस्था जुहू में एक मन्दिर में की गई थी। किन्तु उनके साथ आने वाली चन्द्ररानी, पीटर और प्रतिभा के रहने की व्यवस्था सुधा के साथ ही थी।

सुधीर भी आया था। वह स्वामीजी के साथ ही रहता था। इस अवधि में चन्द्र, प्रतिभा और मिस पीटर ने पासपोर्ट आदि बनवा लिये थे और स्विट्जरलैण्ड के एक स्वास्थ्यप्रद स्थान पर रहने के लिए आरक्षण भी करवा लिया था।

सुधीर प्रातःकाल चार घण्टे स्वामीजी से पढ़ता था। दिनभर वह उस पाठ को स्मरण और लिखने का कार्य करता था। वह अंग्रेजी और संस्कृत भाषायें लिखने और बोलने का अभ्यास कर रहा था।

स्वामीजी के प्रवचनों से सुधीर को अध्यात्म की शिक्षा मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी। रात्रि को ६ बजे प्रवचन सुनने के उपरान्त वह जुहू स्थित मन्दिर में आता और तुरन्त ही उस प्रवचन का सार अपनी कापी में लिख लिया करता था। अगले दिन जिस समय वह पढ़ने बैठता उस समय पिछले दिन के प्रवचन का सार स्वामीजी को सुना दिया करता था।

इस प्रकार स्वामीजी के प्रवचनों को चलते हुए बाईस-तेईस दिन हो गए थे कि तभी बम्बई में भी विचार होने लगा कि प्रवचनों की समाप्ति पर भोग का कार्यक्रम रखा जाय। इसका प्रस्ताव सुरजनलाल बजाज ने ही किया था।

जब स्वामीजी के सम्मुख इस बात को रखा गया तो उन्होंने दिल्ली में जिस प्रकार किया गया था वह बता दिया और यह भी बता दिया कि उस समय दिल्ली में लगभग एकसठ हजार रुपया एकत्रित हुआ था।

दिल्ली की बात सुनकर सुरजनलाल ने कहा, "यहाँ तो इससे कहीं अधिक की आशा करता हूँ।"

"वह तो ठीक है। किन्तु मैं अभी तक यह भी निश्चय नहीं कर पाया कि मैं इस धन का क्या करूँगा।"

सुरजनलाल ने कहा, "स्वामीजी! रुपया होना चाहिये। उसके बाद उपयोग की बात पर विचार कर लिया जाएगा। बहुत काम हैं। दिल्ली में मैंने अपनी एक योजना का उल्लेख किया था, उसपर भी विचार किया जा सकता है। कार्य कहाँ से आरम्भ कर कहाँ तक ले जाया जाय यह तो जब धन एकत्रित होगा उसके बाद ही निश्चय किया जा सकेगा।"

"हाँ, ठीक है। आपकी योजना की धुँधली रूपरेखा भी मेरे मस्तिष्क में है। वह तो धन एकत्रित होने पर स्पष्ट हो जाएगी। मैंने उससे कुछ अधिक ही विचार किया है। भूतकाल ऐसा था कि उस समय संन्यासियों को अपने खाने-पीने की चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी। जहाँ कहीं भी संन्यासी ने 'नारायण हरि' कहा कि उस की भोजन-वस्त्र की समस्या सुलझी। किन्तु आज ऐसी बात नहीं रह गई है। एक तो जीवन महँगा हो गया है। दूसरे इस प्रजातन्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने साधनविहीनों को आगे बढ़कर कार्य करने का अवसर प्रदान कर दिया है। कार्यकर्ता विशेषतया राजनीतिक कार्यकर्ता, अपने कार्य से साधन बटोरने लगे हैं।

"इस स्थिति में मैं कुछ इस प्रकार का विचार कर रहा हूँ कि साधन सम्पन्न परिवारों में से सार्वजनिक कार्य करने वाले युवक संगठित किए जायें, जो अपने भोजन आदि की स्वयं व्यवस्था करें और निष्काम भाव से सेवा का व्रत लें।

"किन्तु इसके लिए यह आवश्यक होगा कि इन साधन-सम्पन्न घटकों की अध्यात्म की शिक्षा का प्रबन्ध हो जिससे कार्यक्षेत्र में अवतरित होने पर विशेषरूप से राजनीतिक कार्यक्षेत्र में वे साधन बटोरने में न लग जायें। श्रेष्ठ शिक्षा के आधार पर ही यह सम्भव हो सकता है। तब ही सार्वजनिक क्षेत्रों से लाभ उठाने वालों को रोका जा सकता है।

"इस दृष्टि से मैं विचार कर रहा हूँ कि देश में एक नये प्रकार का संन्यास आश्रम चालू किया जाय। इसके द्वारा सुशिक्षित एवं सम्पन्न व्यक्ति समाज सेवक के रूप में निर्माण किए जायें। इस प्रकार एक अस्पष्ट-सी योजना मेरे मन में है। अधिक तो धन की मात्रा देखकर ही विचार किया जा सकता है।"

"आप यहाँ से कितने धन की अपेक्षा रखते हैं?"

"मैं समझता हूँ कि बम्बई में एक विशाल मन्दिर की स्थापना हो। उस मन्दिर का नाम कृष्ण मन्दिर रखा जाय। उस मन्दिर में भारतीय संस्कृति के आधार पर प्रवचनों एवं शिक्षा की व्यवस्था हो।

"देश के सभी प्रमुख नगरों में उसकी शाखाएँ खोली जायें। दस-पन्द्रह वर्ष में हम इस प्रकार सहस्रों युवक शिक्षक के रूप में देश को समर्पित करने में सफल हो जायेंगे।"

"यदि यह हो जाय तो उपयुक्त है।"

"दिल्ली में एकत्रित धन और ऋषिकेश के बृहस्पति भवन ट्रस्ट का दो लाख बीस हजार रुपया भी मैं उस योजना को दे दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप कृपया यदि इसका कुछ संकेत अपने प्रवचनों में कर दें तो मैं इसके लिए यत्न कर सकता हूँ।"

उसका परिणाम यह हुआ कि दूसरे दिन से स्वामीजी ने गीता के तेरहवें और चौदहवें अध्याय पर प्रवचन करने आरम्भ कर दिए और उसके आधार पर वे शिक्षा पर विस्तार से विचार करने लगे।

उधर दूसरी ओर सुरजनलाल ने बम्बई के कुछ धनीमानी व्यापारियों से भी बात करनी आरम्भ कर दी। इस यत्न का एक प्रभाव तो यह हुआ कि कुछ सेठ लोग भी स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिए आने लगे। उसका परिणाम अन्तिम दिन प्रकट भी हुआ।

तीस नवम्बर को प्रवचन का समापन समारोह था। उस अवसर पर सुरजनलाल ने पाँच व्यक्तियों की एक समिति की घोषणा कर दी। यह भावी कृष्ण मन्दिर की प्रवन्ध समिति मानी गई।

स्वामीजी ने अपने अन्तिम दिन के प्रवचन में कृष्ण मन्दिर की योजना पर ही अपना प्रवचन किया। इस योजना की आधारशिला के रूप में उन्होंने गीता के अठारहवें अध्याय को लिया। स्वामीजी ने कहा।

नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव॥[1]

इसका भाव स्पष्ट करते हुए स्वामीजी ने बताया कि अर्जुन को उसका लक्ष्य स्पष्ट दिखाई देने लगा है। उपाय भी समझ में आ गया है और उसका मोह नष्ट हो गया है। अब वह वही करेगा जो श्रीकृष्ण महाराज उसको करने के लिए कह रहे हैं और मैं कहता हूँ—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥[2]

---

१. भ० गी०, १८-७३।
२. वही, १८-७८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ-जहाँ योगेश्वर कृष्ण की शिक्षा हो, जहाँ अर्जुन जैसे वीर शिष्य उसका संचालन करने वाले हों, वहाँ विजय निश्चित है, वहाँ लक्ष्मी का वास होगा और ऋद्धि-सिद्धि होगी।

वातावरण कुछ ऐसा बना कि वहाँ जब श्रोता प्रसाद ग्रहण करने आने लगे तो पंक्ति को समाप्त होने में दो घण्टे से भी अधिक का समय लग गया। स्वामीजी के सामने भेंट स्वरूप प्रदत्त नोटों का ढेर लग गया। अन्त में सुरजनलाल ने कुछ ऐसे व्यक्तियों की सूची दी जिनमें बम्बई के प्रसिद्ध व्यक्तियों की ओर से दी जाने वाली भेंट के वचन थे।

रुपयों की गिनती करने में भी पर्याप्त समय लग गया। गणना करने के उपरान्त घोषणा की गई कि नकद राशि दो लाख बत्तीस हजार पाँच सौ चालीस रुपये है और वचनों में एक करोड़ रुपये के लगभग प्राप्त हुआ है। इस राशि से बम्बई में एक कृष्ण मन्दिर की स्थापना होगी तदुपरान्त भारत के प्रमुख नगरों में उसकी शाखाओं की स्थापना की जायेगी।

स्वामीजी ने घोषणा करते हुए कहा कि कृष्ण मन्दिर में क्या-क्या होगा, इसकी विस्तृत रूपरेखा बनाकर एक सप्ताह के भीतर उसकी घोषणा कर दी जायेगी।

तदनन्तर इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया गया। प्रमुख निश्चय यही था कि कृष्ण मन्दिर में भगवान् कृष्ण की शिक्षा का ही प्रचार-प्रसार किया जायेगा।

चन्द्ररानी आदि का योरोप के प्रवास के लिए जाने का कार्यक्रम था। जियाराम भी इस अवसर पर बम्बई आया हुआ था किन्तु कृष्ण नहीं आया।

स्वामीजी से मिलने के लिए मध्याह्न के समय सब लोग उनके निवास-स्थान जुहू मन्दिर में आए। मिस पीटर के साथ जब स्वामीजी ने उसके माता-पिता को भी देखा तो उनके मन में सन्देह हो गया कि वे अपनी पुत्री को कदाचित् विदेश जाने से रोकने के लिए आए हैं।

वैंकटरमन पीटर ने जब अपना परिचय दिया तो स्वामीजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे पूछा, "आप कब आए हैं ?"

"मुझे तथा मेरी पत्नी को बम्बई में आए चार-पाँच दिन हो गए हैं। मिस्टर अय्यर ने हमें सूचना भेजी कि हमारी पुत्री अपनी अवैध सन्तान को जन्म देने के लिए विदेश जा रही है। इस समाचार को सुनकर ही हम यहाँ आये हैं।

"जबसे हम यहाँ आये हैं नित्य ही आपका प्रवचन सुनने के लिए आते रहे हैं। विस्तार से आपके प्रवचन को समझ पाना तो हमारे लिए अत्यन्त कठिन था, कुछ-कुछ अवश्य समझा है।

"जब मुझे विदित हुआ कि आप अंग्रेजी भाषा के भी पण्डित हैं तो मैं आपसे भेंट करने के लिए चला आया।"

"आपने सुशीला देवी से बात की है ?"

"जी हाँ। पिछले पाँच दिनों से निरन्तर उनसे बात हो रही है।"

"क्या निश्चय है उसका ?"

"गर्भपात तो अब सम्भव नहीं है। क्योंकि उसको दो मास से अधिक हो गए हैं, इस कारण हम अब भविष्य के विषय में चिन्तित हैं।"

"क्या चिन्ता है ?"

"जो किसी भी माता-पिता को अपनी कन्या के विषय में होनी चाहिए।"

"देखिए, आपकी कन्या सज्ञान है। वयस्क है। अब वह अपनी चिन्ता स्वयं कर सकती है। वह इस योग्य है भी। मुझे उसकी सद्बुद्धि पर विश्वास है। आपको भी उसकी बुद्धि पर विश्वास होना चाहिए।"

"परन्तु हमारे समाज में तो उसका खप सकना नितान्त असम्भव है।"

"ऐसा वह कौन-सा समाज है आपका, जहाँ इतनी बुद्धिमती लड़की भी खप नहीं सकती ?"

सुशीला वहीं खड़ी थी। स्वामीजी ने सुशीला से कहा, "क्यों सुशीला ! तुम अपनी बात इनको समझा नहीं सकीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अब क्रिश्चियन नहीं रही।"

"तो तुम क्या हो?" उसके पिता ने प्रश्न किया।

"मैं तो अब कृष्ण धर्म की अनुयायिनी हो गई हूँ। दो मास से निरन्तर मैं स्वामीजी का प्रवचन सुनती आ रही हूँ, उसके आधार पर मैं कृष्ण मतानुयायिनी हो गई हूँ।"

उसकी बात सुनकर स्वामीजी ने कहा, "हाँ, कृष्ण का मत तो यही है कि स्थिर बुद्धि से विचारकर जो भी कर्म करोगी वह सफल होगा।"

"महाराज! मैं वही कर रही हूँ। मैं माताजी और प्रतिभा बहिन के साथ योरोप जा रही हूँ।"

सुशीला के पिता ने कहा, "हम चाहते हैं कि यह यहीं रहे तो हम 'पोप' से इसके अपराधों का 'डिस्पैंसेशन' ले लेंगे।"

इसके उत्तर में सुशीला ने तुरन्त कहा, "मैंने कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए मुझे किसी प्रकार के डिस्पैंसेशन की आवश्यकता नहीं है। मैंने कुछ भूल की है मैं उसका निराकरण कर रही हूँ।"

स्वामीजी बोले, "मिस्टर पीटर! सुशीला को जाने दीजिए। जब यह वहाँ से अपना कार्य सम्पन्न करके भारत वापस आ जायेगी उस समय आप इससे इस विषय में बातें कर लेना।

"स्त्री के लिए मुख्य आकर्षण उसका पति होता है। यदि आप इसके लिए इसके मन पसन्द का पति ला सकें तो शेष बातें तो उसके बाद विचार कर ली जायेंगी।"

पीटर कहने लगा, "हमने आज के समाचार-पत्र में पढ़ा है कि रात आपको भेंट में एक करोड़ रुपये से अधिक की राशि मिली है। आप उस राशि से 'पैगेनिज़्म' का प्रचार करना चाहते हैं?"

"मैं जो करना चाहता हूँ, वह मैंने अपने प्रवचनों में बता दिया है।"

"वही तो पैगेनिज़्म है।"

"कुछ भी कहो। मैंने तो स्पष्ट शब्दों में ही बताया है। कदाचित् हिन्दी का ज्ञान न होने के कारण आप मेरी बात को नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ पाये। मैं जो करना चाहता हूँ, वह नास्तिक्य नहीं है। उसमें विश्वासों की नहीं अपितु बुद्धि से विचार करने की बात है।"

पीटर कुछ समझ नहीं पाया। पति-पत्नी जब वहाँ से उठकर जाने लगे तो यही लगता था कि वे रुष्ट हैं। उनके जाने पर सुशीला ने कहा, "मेरे पिताजी मेरे विदेश जाने पर प्रतिबन्ध की आज्ञा लेने के लिए न्यायालय की शरण में गए थे। दो दिन पूर्व उसके आधार पर मुझे न्यायालय में बुलाया गया था। मैंने न्यायालय में अपना वर्थ सर्टिफिकेट और क्राईश्चनिंग सर्टिफिकेट प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया कि अब मैं वयस्क हूँ अतः मुझे अपने विषय में स्वतन्त्र-रूपेण विचार करने का अधिकार प्राप्त है।

"वहाँ से निराशा होने पर ये आपकी शरण में आये थे।"

स्वामीजी बोले, "तुमने जो अपना कार्यक्रम निश्चित किया है, तुम उसको पूर्ण कर लो। उसके उपरान्त जब तुम भारत लौटो तो उस समय मुझको मिलकर अपनी मनःस्थिति का वर्णन करना तब मैं तुम्हारे लिए भावी कार्य पर विचार करके सुझाव दूंगा।"

उसी दिन स्वामीजी ने 'कृष्ण मन्दिर ट्रस्ट' के नाम से एक संस्था के रजिस्ट्रेशन के लिए कह दिया। उसके उद्देश्यों में केवल इतना ही लिखा गया था कि 'भगवान् कृष्ण द्वारा प्रतिपादित मार्ग से हिन्दू समाज का नव-निर्माण करना।' इसके लिए तीन ट्रस्टियों की भी नियुक्ति की गई। एक तो सुरजनलाल ही थे, उनके अतिरिक्त दो अन्य सदस्य भी बम्बई के ही प्रसिद्ध सेठ थे।

उस समय यही निश्चय किया गया कि इतने मात्र से ही ट्रस्ट को रजिस्टर्ड करा लिया जाय और फिर बाद में साधन उपलब्ध होने पर विस्तृत योजना बना ली जायेगी।

प्रवचन की समाप्ति के अवसर पर दिल्ली से जियाराम भी आया हुआ था। बम्बई में स्वामीजी की इतनी सफलता देखकर उस को प्रसन्नता हुई।

चन्द्र इत्यादि जब योरोप के लिए प्रस्थान कर गई तो उस दिन से जियाराम भी स्वामीजी के पास ही आकर रहने लगा।

एक दिन जियाराम ने स्वामीजी से कहा, "महाराज! वास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मैं पिछले कई वर्षों से विचार कर रहा था कि धन तो आ रहा है तदपि मैं दिन-रात कोल्हू की भाँति कार्य करता हुआ अधिकाधिक धन एकत्रित करने में लगा हुआ हूँ।

"विगत पाँच वर्ष से कृष्ण कारोबार का प्रबन्ध करने लगा था। मैं उसके खाने-पीने आदि के लिए प्रतिमास दो सहस्र रुपया देता था। किन्तु आय तो इससे कई गुणा अधिक होती थी। कभी-कभी मैं विचार करने लग गया था कि आखिर मैं इस चक्की में किसलिए पिस रहा हूँ ?

"ओखला वाली कोठी के विषय में मेरा विचार था कि उसको भाड़े पर दे दूँगा। उसके निर्माण में ही तीन लाख से अधिक रुपया व्यय हुआ है। साज-सज्जा में एक लाख रुपया लगा होगा।

"ऐसी स्थिति में समय-समय पर मैं विचार करता जाता था कि क्या यह जीवन जल-मन्थन के समान नहीं है ?

"उन्हीं दिनों आपको कनॉट प्लेस में एक भिखारी से बात करते देख लिया। जिस प्रकार आकाश में विद्युत् कौंधती है उसी प्रकार मेरे मन में प्रकाश हुआ और आपको बुलवाने के लिए सुधीर को आपके पास भेजा। उसी समय मेरे मन में योजना बन गई थी कि मैं भी संन्यास ले लूँगा।

"मुझे ज्ञात था कि लाहौर से जाते समय आप पचास हजार से अधिक रुपया अपने साथ लेकर गए थे। मैं यह जानने को उत्सुक था कि आपने उस धन का क्या किया ? आपके पास रखा है अथवा कि आपने किसी आश्रम को दे दिया है। मैं समझता था कि संन्यासी अपने पास धन नहीं रखते।

"दो-तीन दिन में ही मुझे विदित हो गया कि वह धन सुरक्षित है। बस मेरे लिए मार्ग स्पष्ट हो गया। मैंने आपके अनुकरण का निश्चय कर लिया।

"अपनी पूर्ण सम्पत्ति में से तीस लाख रुपया पृथक् करके मैंने कृष्ण को व्यापार के लिए दे दिया है। चन्द्र के जीवन-निर्वाह के लिए बाबर लेन की कोठी के अतिरिक्त दो लाख रुपला नकद जमा कर दिया है। अपने लिए पाँच लाख रुपया और फरीदाबाद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी रख ली है। प्रतिभा के लिए शक्तिनगर में एक मकान है और बीस हजार रुपया नकद दे दिया है।

"इस प्रकार अब मैं आपकी भाँति संन्यास के लिए प्रस्तुत हूँ।"

यह विवरण सुनकर मंगलानन्द को हँसी आ गई। उसने कहा, "देखो जियाराम ! संन्यास का अर्थ धन का त्याग नहीं अपितु 'स्व' का त्याग होता है। मेरे गुरुजी ने जब मुझसे धन के सम्बन्ध में प्रश्न किया था तो मैंने उनको भी इसी प्रकार समझाया था कि धन मेरे पास वैसे ही है जैसेकि उनके पास उनका कम्बल अथवा लंगोट, कमण्डलु आदि। उन्होंने अपने जीवन की आवश्यकताएँ, कम्बल और कमण्डलु में सीमित की हुई थीं। किन्तु मैंने अपने जीवन की आवश्यकताएँ इतने मात्र से अधिक की कल्पना की थी। उन आवश्यकताओं का दिल्ली और बम्बई आने पर विस्तार हुआ है। इन पच्चीस वर्षों में मेरा सामर्थ्य भी बढ़ा है। अब मैं अपनी कल्पना का संन्यास चलाने की इच्छा करने लगा हूँ।"

"महाराज ! वह क्या है?"

"मैं समृद्ध परिवारों के सुपठित बुद्धिशील युवकों का एक संगठन बनाना चाहता हूँ। ऐसे युवकों का जो सिद्धार्थ की भाँति अपना सर्वस्व त्यागकर देश और जाति के कल्याण में जुट जाएँ।

"निर्धनों, साधन-विहीनों, अशिक्षित साधुओं का समुदाय मुझे नहीं चाहिए। न ही मैं उन साधुओं का नेतृत्व चाहता हूँ जो दिन-भर भोजन और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए द्वार-द्वार पर जा 'नारायण हरि' की कूक लगाते फिरते हैं।

"साधन तो संन्यासी के पास स्वतः ही आने चाहिए। परन्तु उसके लिए मोह तथा उससे 'स्व' की वृद्धि की भावना का त्याग ही संन्यास है।

"यहाँ बजाज साहब की स्वयं की सम्मति और उनकी सहायता से साधन एकत्रित हो रहे हैं। वे मेरे लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होंगे। किन्तु मैं उनमें कहीं नहीं हूँ।

"वैसे तो मैं उस पचास हजार रुपये में भी, जो मैं लाहौर से अपने साथ लाया था, कभी नहीं रहा। मेरी रोटी, कपड़ा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान की व्यवस्था तो भिक्षा से चल रही थी। परन्तु मेरा जीवन-कार्य, जिसके लिए मैंने संन्यास लिया था उसमें वह सहायक होता रहा था। और पच्चीस वर्ष पर्यन्त वह मेरी योग्यता की वृद्धि में सहायक होता रहा है।

"तुम्हें कभी ऋषिकेष आकर देखने का अवसर मिले तो देखना कि वहाँ मेरा जो पुस्तकालय है वह किसी श्रेष्ठ पुस्तकालय से भी अधिक बड़ा है। मैं अपने स्वाध्याय के साधन समयानुसार उन्नत करता जा रहा हूँ।

"अब मुख्य कार्य आरम्भ हो रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

'कृष्ण मन्दिर ट्रस्ट' को रजिस्टर होने तथा उसके लिए भूमि का चयन और फिर उसे प्राप्त करने में छः मास का समय लग गया। बम्बई के दक्षिण की ओर पहाड़ी क्षेत्र में एक सौ एकड़ भूमि ली गई। उसके मध्य में एक भव्य भवन का निर्माण किया गया।

भवन के मध्य में एक बहुत बड़ा हॉल था। उस हॉल में पुस्तकालय था और उसके चारों ओर निवास-कक्ष बनाये गए। हॉल के पार्श्व में कुछ अन्तर पर मन्दिर में विद्यार्थियों के निवास के लिए निवासगृह और वहाँ के निवासियों की सुख-सुविधा के लिए छोटी-सी मार्केट की व्यवस्था की गई।

इस सब कार्य में दो वर्ष का समय लग गया।

मन्दिर की परिधि के भीतर ही सुदूर वन में संन्यासियों के लिए कुटिया बनाई गयीं। उन्हीं में से एक कुटिया में स्वामी मंगलानन्द भी रहने लगे।

कुछ ही समय में लगभग एक सौ विद्यार्थी और दस-बारह शिक्षक, जो विभिन्न विषयों के पण्डित थे, वहाँ आकर रहने लगे।

कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर एक मास तक कृष्ण मन्दिर में स्वामी मंगलानन्द का श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रति वर्ष प्रवचन हुआ करता था।

प्रवचन की अवधि समाप्त होने पर भोग लगाया जाता था। उस समय जो भेंट स्वामीजी को मिलती थी उससे प्रतिवर्ष लगभग दस-बीस लाख रुपया एकत्रित हो जाया करता था।

सुरजनलाल ने उस धन को सुरक्षित स्थानों पर लगा दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। देश के विभिन्न भागों तथा नगरों में भी कृष्ण मन्दिर बनने लगे थे। सभी स्थानों पर स्वामीजी के प्रवचन हुए थे। एक-एक मास के प्रवचन के उपरान्त भोग पड़ा था तथा लाखों रुपये एकत्रित हुए थे।

मद्रास, नागपुर, पूना, अहमदाबाद, दिल्ली, अमृतसर, लखनऊ, पटना और कलकत्ता में मन्दिरों की स्थापना हो चुकी थी। इन सभी स्थानों पर दो प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। व्यावहारिक और आध्यात्मिक। विद्यार्थियों को प्रचारक के रूप में तैयार किया जाता था।

शिक्षा तो सभी केन्द्रों पर दी जाती थी। किन्तु परीक्षायें केवल बम्बई के मन्दिर पर ही हुआ करती थीं। वसन्त ऋतु आरम्भ होते ही सभी स्थानों के विद्यार्थी बम्बई मन्दिर में आकर रहने लगते थे। उसी अवसर पर उनकी परीक्षा और फिर उसका परिणाम घोषित कर दिया जाता था।

व्यावहारिक ज्ञान में भाषा, गणित, इतिहास, विज्ञान इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी और अध्यात्म में प्रथम गीता तदनन्तर वेद की शिक्षा दी जाती थी।

दो प्रकार के विद्यार्थियों का चयन होता था। एक तो पाँच-छः वर्ष की आयु के बालक और बालिकाएँ तथा दूसरे युवक और प्रौढ़ावस्था के। दोनों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम निर्धारित किये गए थे।

इस प्रकार कार्य द्रुत गति से विस्तार पा रहा था।

बम्बई के कृष्ण मन्दिर को स्थापित हुए पाँच वर्ष हो गए थे। इस अवधि में वहाँ प्रतिवर्ष बालक-बालिकाओं के वर्ग में दो सौ के लगभग तथा प्रौढ़-तरुण वर्ग में एक सौ के लगभग विद्यार्थी रहा करते थे।

इस वर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर स्वामी मंगलानन्दजी के प्रवचन हो रहे थे। गीता के आधार पर स्वामीजी देव और असुर की व्याख्या कर रहे थे।

भवन श्रोतागणों से खचाखच भरा हुआ था। अधिकांश श्रोता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गण बम्बई से रेल, मोटर, अपनी कार तथा स्कूटरों द्वारा आया करते थे। बाहर के विभिन्न भागों से भी कुछ सौ श्रोता आया करते थे। इस प्रकार तीन सहस्र के लगभग श्रोतागण उपस्थित थे।

इस बार दिल्ली से जियाराम, उसकी पत्नी तथा उसकी पुत्र-वधू एवं पोती प्रमिला भी आये हुए थे। प्रमिला इस समय दिल्ली के लेडी इरविन स्कूल में पढ़ती थी।

जियाराम ने अभी तक संन्यास नहीं लिया था। वह संन्यास लेने के विचार से स्वामी सोमेश्वरानन्दजी के पास गया था किन्तु उन्होंने उसको दीक्षा देना स्वीकार नहीं की थी।

यद्यपि स्वामी मंगलानन्दजी ने जियाराम के नाम की सिफारिश भी की थी। फिर भी स्वामी सोमेश्वरानन्द ने उसको स्वीकार नहीं किया था। तब स्वामी मंगलानन्दजी ने उसको परामर्श दिया था कि वह किसी से भी दीक्षा लिये बिना भगवे वस्त्र पहनकर रह सकता है।

सुशीला पीटर ने बोन के नर्सिंग होम में एक पुत्र को जन्म दिया था। सुशीला पीटर अब बम्बई के कृष्ण मन्दिर में सुशीला मांगली के नाम से रहने लगी थी। वहाँ के बालक-बालिकाओं को वह अंग्रेजी भाषा की शिक्षा दिया करती थी।

सुशीला ने अपने पीटर उपनाम के स्थान पर मांगली उपनाम जोड़ लिया था। उसका कहना था कि पीटर ईसाइयों के एक सन्त थे। स्वामी मंगलानन्द भी उसकी दृष्टि में सन्त ही हैं। यही कारण था कि उसने अपने नाम के साथ मांगली जोड़ लिया था।

जियाराम का परिवार जब स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिए इस वर्ष बम्बई आया तो वह सुशीला के निवास पर ही ठहरा।

स्वामीजी का प्रवचन चलते हुए पन्द्रह दिन हो गए थे। एक दिन जियाराम स्वामीजी के पास आकर कहने लगा, "महाराज! मैं इन गृहस्थों के वस्त्रों को छोड़ रहा हूँ!"

"वस्त्रों से गृहस्थ और संन्यासी का सम्बन्ध है?"

"संन्यासी तो महाराज! भगवे वस्त्रों से ही कहा जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसी से उसकी प्रतिष्ठा भी होती है।"

"तो तुम भी पहन लो। देश का कोई ऐसा कानून नहीं है कि तुम भगवा वस्त्र धारण नहीं कर सकते।"

"किन्तु यदि किसी ने पूछ लिया कि दीक्षा किससे ली है तो मैं उसको क्या उत्तर दूँगा ?"

"जिससे दीक्षा ली हो उसका नाम ले देना।"

"परन्तु मुझे तो किसी ने दीक्षा दी ही नहीं ?"

"दी तो है।"

"किसने दी है ?"

"जिसकी प्रेरणा से तुम संन्यासी बनने की इच्छा कर रहे हो।"

"प्रेरणा तो मेरी अपनी अन्तरात्मा ने दी है। उसने कहा है कि आप अथवा आपके गुरुजी महाराज मुझे संन्यास में दीक्षित करें।"

"मैं समझता हूँ कि प्रेरणा तो तुम्हें परमात्मा ने दी है। वही तुम्हारी अन्तरात्मा में बैठा तुमको प्रेरित कर रहा है। इसलिए जब तुम अन्तरात्मा की प्रेरणा से संन्यास ले रहे हो तो उसी प्रेरणा से अपना गुरु भी स्वीकार कर लो।"

"अन्तरात्मा तो आपको गुरु मानने के लिए कहता है।"

"तो मान लो। कौन रोक सकता है किसी को ?"

"किन्तु यह होगा किस प्रकार ? अपनी अन्तरात्मा की बात मानकर मैं शिष्य तो बन जाऊँगा किन्तु मेरी अन्तरात्मा की प्रेरणा मेरे गुरु भी स्वीकार करें तभी तो बात बन सकती है।"

"तुम अपनी अन्तरात्मा की बात मान लो। कोई इसको मानता है अथवा कि नहीं, इसकी चिन्ता तुम मत करो।"

"यह किस प्रकार सम्भव है ?"

इस समय स्वामीजी को अपने संन्यास लेने की बात का स्मरण हो आया। उन्होंने कहा, "ऐसा करो कि दर्जी से कुर्ता सिलवा लो, एक धोती भी खरीद लो। उनको भंगवे रंग में रंग लो। उनको पहनकर कल प्रौढ़ विद्यालय में प्रविष्ट हो जाना। वहाँ किसी प्रकार का कोई शुल्क देना नहीं होगा। अपना नाम लिखवाओगे तो छात्रा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास में रहने के लिए स्थान भी मिल जाएगा।

"वस, इस प्रकार तुम संन्यासी विद्यार्थी बन जाओगे।"

"ठीक है महाराज! ऐसा ही करूँगा। नाम का विचार भी मैंने कर लिया है। किन्तु जिस प्रकार आप मंगलानन्द सरस्वती हैं, उस प्रकार मैं क्या हूँ, इतना और बताने की कृपा कीजिए।"

"तुम तो सुशीला मांगली के निवास पर रह रहे हो न?"

"जी हाँ।"

"तो उससे ही पूछ लो न। उसने अपना उपनाम स्वयं ही निर्धारित कर लिया था।"

यह सुनकर जियाराम के मन में प्रकाश होने लगा। उसने स्वामीजी के चरण-स्पर्श किये और अपने निवास की ओर चल दिया।

उसी सायंकाल के प्रवचन के उपरान्त भवन के बाहर स्वामीजी ने देखा कि जियाराम भगवे वस्त्र धारण किये खड़ा है। स्वामीजी ने उसे संकेत से अपने समीप बुला लिया।

जियाराम उनके समीप गया और चरण-स्पर्श कर खड़ा हो गया।

स्वामीजी ने मुस्कराकर पूछा, "महाराज! क्या नाम है?"

"निर्मलानन्द मांगली है महाराज!"

स्वामीजी मुस्करा दिए। बोले, "हम आपको आशीर्वाद देते हैं। भगवान् से प्रार्थना है कि वह आपको इस पद का लाभ उठाने का साहस और बुद्धि प्रदान करे।"

"गुरु-चरणों की कृपा से ही यह सम्भव होगा।"

इस वर्ष स्वामीजी ने महाभारत को आधार बनाकर राजनीति पर अपनी प्रवचन माला दी थी। उन्होंने महाभारत की पूर्ण राजनीति का मन्थन किया था।

प्रवचन माला पूर्ण होने में तीन दिन शेष थे कि प्रातःकाल एक युघक आया। उस समय स्वामीजी सुधीर को पढ़ाकर निवृत्त हुए ही थे। वह युवक आगे बढ़ा और उसने स्वामीजी के चरण-स्पर्श किये तथा फिर वहीं पर खड़ा हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी ने पूछा, "क्या नाम है ?"

"रमणदेव, महाराज !"

"क्या करते हो ?"

"आजकल आपका प्रवचन सुनता हूँ।"

"कहाँ के निवासी हो ?"

"बम्बई का।"

"क्या कार्य करते हो ?"

"अपने जीवन-कार्य का निश्चय करने का यत्न कर रहा हूँ।"

"ठीक है। स्थिर चित्त होकर कार्य ढूँढ़ो। उसके बाद उसको यदि करोगे तो परमात्मा भी उसमें सहायक होगा।"

"महाराज ! परमात्मा तो सहायक हो रहा है। मन में प्रकाश भी कर रहा है। किन्तु उस प्रकाश के आलोक में आँखें चुंधियाने लगती हैं। इससे आपकी शरण में आकर मार्ग पाने का यत्न कर रहा हूँ।"

"शरण तो परमात्मा की गहो। वह मार्गदर्शन करेगा।"

"उसके निर्देश पर ही तो यहाँ आया हूँ। भगवद्गीता पर आपकी व्याख्या को मैंने पढ़ा है। परमात्मा ने सुझाव दिया है कि उस व्याख्याकार से ही मार्गदर्शन की प्रार्थना करूँ।"

"हाँ, क्या संशय उत्पन्न हुआ है आपके मन में ?"

"यही कि यदि मैंने भगवान् के बताये मार्ग का अवलम्बन लिया तो कदाचित् लाखों का रक्त बहाना पड़ जाएगा। जो अज्ञानी हैं उनसे उनके शरीर छीन लेने चाहिये। शरीर जैसे यन्त्र को रखने का उनका अधिकार मेरी समझ से परे है।"

"भली प्रकार विचार-विमर्श कर लो। यदि तुम्हारा मार्ग सत्य का है और कोई असत्य मार्ग का पथिक उसमें बाधक सिद्ध हो रहा है तो उसको अपने मार्ग से एक ओर करते हुए आगे बढ़ चलो। महाभारत का-सा विनाशकारी युद्ध करने से पूर्व उनको समझाने के लिए भगवान् कृष्ण की-सी सामर्थ्य वाला कोई यत्न करने वाला भी तो होना चाहिये।"

"सत्य मार्ग के बाधक की पहचान नहीं कर पा रहा हूँ। बस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी को जानने की इच्छा है।"

"किस के पुत्र हो ?"

"सेठ लक्ष्मीचन्दजी का। इस समय उनके बीस से अधिक कारोबार चल रहे हैं। उनकी वार्षिक आय दो करोड़ से अधिक है। उसमें से पौने दो करोड़ तो वे टैक्स ही दे देते हैं। उन पौने दो करोड़ रुपयों का ग्रहण करने वाली सरकार उनको मिथ्या कार्यों में अपव्यय कर रही है। उसको ही उचित मार्ग पर व्यय करवाने का विचार कर रहा हूँ। इन कार्य में कदाचित् दो-तीन लाख की आहुति देनी पड़ सकती है।"

"दो-तीन लाख रुपयों की ?"

"जी नहीं, मेरा अभिप्राय मनुष्यों से है।"

"देख लो। यदि भूल हो गई तो बहुत बड़े पाप के भागी बन सकते हो।"

"इसलिए तो आपकी शरण में आया हूँ। आपकी उँगली पकड़ कर मैं उस मार्ग पर चलना चाहता हूँ जिसका आपने निर्देश किया है।"

"रमण! अभी ज्ञानार्जन करो। यदि उस अर्जित ज्ञान के प्रकाश में चलोगे तो फिर आँखें चुंधियाएँगी नहीं। जब बिना ज्ञान के कर्म किया जाता है तो फिर आँखें कौंधती ही हैं।"

"तो महाराज! मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।"

"शिष्य तो तुम स्वयं बन गए हो। तुमने स्वीकार किया कि भगवद्गीता पर लिखी मेरी व्याख्या को पढ़कर तुमको प्रकाश हुआ है।"

"मैं तो दीक्षा लेने की बात कर रहा था ?"

"यहाँ एक स्वामी निर्मलानन्द मांगली पधारे हैं। उनसे मिलकर पूछो कि वे किस प्रकार मांगली बने हैं।"

"वे कहाँ मिलेंगे ?"

"प्रौढ़ छात्रावास में।"

इसके बाद स्वामीजी उस युवक को ही भूल गए थे।

जिस दिन प्रवचन का समापन हुआ उस दिन उन्होंने देखा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमण ने भगवे वस्त्र धारण कर लिए हैं। वह प्रसाद ग्रहण करने पंक्ति में आ रहा था कि स्वामीजी की दृष्टि पड़ गई।

स्वामीजी ने उसको प्रसाद दिया और फिर एक ओर खड़ा होने का निर्देश किया। जब प्रसाद वितरण का कार्य समाप्त हो गया तो स्वामीजी ने रमणदेव को अपनी कुटिया में आने के लिए कहा।

स्वामीजी जब कुटिया में पहुँचे तो सुधीर बरामदे में बैठा स्वाध्याय कर रहा था। स्वामीजी ने रमणदेव को कुटिया में ले जाकर पूछा, "ये भगवे वस्त्र किससे लिये हैं ?"

"स्वामी निर्मलानन्द मांगली से।"

"तो तुम उनके शिष्य बन गए हो ?"

"जी नहीं। उनका गुरु-भाई बन गया हूँ।"

"कौन है तुम दोनों का गुरु ?"

"स्वामीजी मंगलानन्द जी महाराज हैं। जो स्वयं मुख से दीक्षा तो नहीं देते किन्तु मन से आशीर्वाद दे दिया करते हैं।"

"ठीक है, मेरा आशीर्वाद तो है। परन्तु तुम मुझसे दीक्षित नहीं हो।"

"दीक्षा तो महाराज ! आपका साहित्य दे रहा है।"

"बम्बई वापस जाओगे ?"

"जी नहीं। यहीं रहूँगा। मुझे यहाँ स्थान प्राप्त हो गया है।"

"ठीक है, जब भी कोई कार्य करने लगो यदि अपने गुरु मंगलानन्द से परामर्श कर लोगे तो तुम्हें आशीर्वाद प्राप्त हो जाएगा।"

इस प्रकार यह नया मांगली उस मन्दिर का वासी बन गया।

रमणदेव के जाते ही सुधीर ने भीतर आकर कहा, "महाराज ! दो दिन पूर्व यह व्यक्ति बाबा से बहुत बातें करता रहा था। उस दिन जब मैंने बाबा से इससे होने वाली बात के विषय में पूछा था तो उनका कहना था कि वह पागल है। कहता है कि रक्त की नदियाँ बहा देगा।"

"किन्तु इसने तो अभी बताया है कि वह तुम्हारे बाबा का गुरु-भाई बन गया है।"

"जी हाँ। परन्तु बाबा कहते थे कि यह अर्द्धोन्मत्त है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, बाबा इसकी कोई बात बतायें तो तुम मुझको बता देना।"

इस समय स्वामीजी ने विचार किया कि शिष्य बनाने की यह प्रथा तो त्रुटिपूर्ण है। वास्तव में यदि रमणदेव अर्द्ध विक्षिप्त हुआ तो वह कोई धर्मविरुद्ध कार्य भी कर सकता है। उस समय मेरे आशीर्वाद की बात भी कर सकता है।

स्वामीजी ने विचार किया कि उसके पिता तथा अन्य घर वालों के विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। प्रवचनों के भोग के उपरान्त सेठ सुरजनलाल बजाज स्वामीजी से मिलने के लिए उनकी कुटिया पर आये तो स्वामीजी ने उनसे रमण मांगली के विषय में बात की। स्वामीजी ने कहा, "भगवा वस्त्र धारण किये एक नया प्राणी विद्यार्थी कक्ष में आकर रहने लगा है। उसका पूर्वापर जान लेना चाहिये।"

"आप कदाचित् सेठ लक्ष्मीचन्द के सुपुत्र की बात कर रहे हैं?"

"आप उसे जानते हैं?"

"जी, मैं उसको जानता हूँ। उसके पिता तथा परिवार के अन्य जनों को भी जानता हूँ। वास्तव में उसके घर वालों ने उसको घर से निकाल दिया है। विद्यार्थी कक्ष के अध्यक्ष को मैंने ही उसे स्थान देने के लिए आग्रह किया था। वह पागल नहीं है। परन्तु सामान्य व्यक्तियों से वह भिन्न अवश्य है। उसकी पत्नी तो उसको घर पर रहने की सम्मति देती थी किन्तु घर के अन्य प्राणी नहीं चाहते थे कि वह घर पर रहे।"

"सुधीर तो रक्त की नदियाँ बहा देने की बात करता था?"

"महाराज! उसको अपने पास आराम से बैठाकर बात करके पूछिये कि वह यह कार्य क्यों और कब करेगा? तब आप विचार कीजिये कि उस समय वह कार्य करने योग्य होगा अथवा कि नहीं।"

'आप तो कदाचित् उसके विषय में बहुत कुछ जानते हैं।"

"जी हाँ। बहुत लोगों से अधिक उसके विषय में जानता हूँ।"

"ठीक है। मैं उससे मिलकर बात करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार यह बात समाप्त हो गई।

: २ :

सप्ताह में दो दिन स्वामीजी विद्यार्थियों को गीता पढ़ाया करते थे। उक्त वार्त्तालाप के उपरान्त वे पढ़ाने के लिए कक्षा में गये तो उसी कक्षा में रमण मांगली को सामान्य वस्त्रों में देखकर चकित रह गये।

स्वामीजी ने पौन घण्टे तक पढ़ाया। उसके उपरान्त जब विद्यार्थी कक्षा से जाने लगे तो स्वामीजी ने रमण को संकेत से अपने पास बुला लिया। वहाँ से वे उसे अपने साथ ही अपनी कुटिया पर ले आये।

वहाँ बैठाकर स्वामीजी ने पूछा, "रमण! तुम्हारे वे भगवे वस्त्र कहाँ गये?"

"आज मैं संन्यास आश्रम से बाहर हूँ।"

"क्या मतलब?"

"मेरा अभिप्राय यह है कि मैं विद्यार्थियों में रहता हुआ संन्यास धर्म का पालन कर रहा था किन्तु मेरी एक पत्नी भी है। उसने अभी संन्यास नहीं लिया है। जब कभी वह मुझे बम्बई बुलाती है तो मैं भगवे वस्त्र उतारकर वहाँ चला जाया करता हूँ।"

"तुम तो बड़े धूर्त निकले?"

"जी नहीं। मैं बुद्धिशील युवक हूँ। देखिये महाराज! मुझे मेरे गुरु-भाई ने बताया है कि गुरुजी 'स्व' के त्याग को संन्यास कहते हैं। उसका तो मैंने सदा के लिए त्याग कर दिया है।"

"स्व से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

"स्व से मैं स्वार्थ की भावना समझता हूँ। मेरे गुरु-भाई कहते थे कि गुरुजी का उपदेश यही है कि धन, वैभव, ज्ञान आदि अभिप्राय यह कि अपना सबकुछ स्वार्थ के लिए न समझकर सबके लिए समझना यही संन्यास है।"

"तुम अपनी पत्नी को भी सबके लिए समझते हो?"

"पत्नी मेरी नहीं। मैं तो उसे छोड़ आया था। मैं उसे अपनी सम्पत्ति नहीं मानता। तदपि वह मेरा प्रयोग करती है। मैं उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने देता हूँ। किसी अन्य के साथ वह कैसा व्यवहार करती है इसका मुझे ज्ञान नहीं है।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि कोई भी महिला तुमसे सहवास की याचना कर उसे प्राप्त कर सकती है ?"

"जी याचना तो कर सकती है। किन्तु मैं उसका पति न होने से उसकी याचना को स्वीकार नहीं करूँगा।"

"वह तुम्हारा प्रयोग तो कर सकती है ?"

"कर सकती है। परन्तु मैं कोई निर्जीव वस्तु तो हूँ नहीं। मेरी इच्छा के बिना कोई मेरा प्रयोग नहीं कर सकता।

"महाराज! जबतक मैं गृहस्थ था तबतक मैं अपनी पत्नी का पति था। उससे सम्बद्ध था। मैं संन्यासी बन गया हूँ किन्तु वह कहती है कि उसने अभी संन्यास नहीं लिया है। इस कारण उसके अपने कर्तव्य का पालन मैं भगवे वस्त्र उतारकर कर दिया करता हूँ।"

"कब गये थे इस कर्तव्य का पालन करने के लिए ?"

"आजकल वह यहाँ के अतिथिगृह में ठहरी है। कल रात उसने बुलवाया था।"

"तुम तो बड़े मूर्ख हो।"

"नहीं महाराज! मैं स्वयं को बुद्धिमान् मानता हूँ। इतना ही नहीं, मैं संयमी भी हूँ। प्रत्येक कर्म उचित स्थान पर, उचित परिमाण में, उचित समय ही किया करता हूँ। उसको करते समय भूलकर भी मुझमें स्वार्थ की भावना का समावेश नहीं रहा करता है।"

इतना जानने के उपरान्त स्वामी मंगलानन्द की इच्छा रमण की पत्नी से मिलकर उसके विषय में जानने की हुई। वे जानना चाहते थे उसका पति कैसा है, और वह उसको छोड़ती क्यों नहीं है।

एक दिन स्वामी मंगलानन्द सुशीला मांगली के निवास पर गये और 'नारायण हरि' का नाद किया। चन्द्र भी वहीं रह रही थी। वह बाहर निकल आई। उसने स्वामीजी को कमण्डलु लिये खड़े देखा तो बोली, "महाराज! विराजिये, भोजन आ रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी निर्दिष्ट स्थान पर बैठे तो सुशीला एक प्लेट में रोटी, साग और हलवा रख लाई।

स्वामीजी ने कमण्डलु के जल से हाथ धोये और प्लेट को तिपाई पर रखकर भोजन करने लगे। दोनों महिलायें सामने खड़ी थीं। स्वामीजी अधिकांशतया अपनी कुटिया में ही भोजन किया करते थे। आज उनको वहाँ आया देखकर उन दोनों को विस्मय हो रहा था।

"स्वामी निर्मलानन्द कहाँ हैं ?"

"कई दिन से दिखाई नहीं दिये।"

"रमण माँगली यहाँ आया करता है ?"

"अभी आपसे पूर्व यहाँ आकर भोजन कर गया है।"

"सुना है उसकी पत्नी भी यहाँ अतिथि गृह में आई हुई है।"

"जी हाँ। वह भी हमसे मिलने के लिए आया करती है।"

"सुना है वह पति की इच्छा करती हुई यहाँ रहती है ?"

"जी हाँ। उसने ही हमें यह बताया है। उसने बताया कि वह तीन रात से यहाँ रह रही है। वह रमण स्वामी से मिली है और रमण स्वामी एक बार भगवे वस्त्र उतारकर उससे मिल चुका है। उसने अपने पति को समझाया है कि वह उसकी अर्द्धांगिनी है। यदि वह संन्यासी है तो उसका आधा भाग ही संन्यासी है, क्योंकि उसकी अर्द्धांगिनी ने अभी संन्यास नहीं लिया है, अतः वह पूर्ण संन्यासी नहीं हो सकता।

"इस प्रकार सप्ताह में वे दोनों आधे-आधे मिलकर एक हो चुके हैं।"

तीनों को इस बात पर हँसी आ गई। स्वामीजी ने कहा, "मैं नहीं समझता था कि मेरा बुद्धिवाद यह भी कर सकता है।"

"क्यों, इसमें हानि क्या है ?"

"तुम दोनों इसको उचित ही समझती हो ?"

"महाराज ! स्वामी निर्मलानन्द ने जब संन्यास लिया तो मैंने नहीं लिया। मेरी आयु इस समय पचास वर्ष की है। संन्यास न लेने पर भी पति के सहवास की इच्छा नहीं करती। परन्तु रमण की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी तो अभी बीस वर्ष की ही है, वह युवती है। उसने संन्यास भी नहीं लिया है।

"रमण घर वालों से लड़कर यहाँ आया था और यहाँ संन्यासी बनकर रहने लगा तो उसकी पत्नी यहाँ चली आई। उसने कहा कि जब उसने अपने पति को अपनी युक्तियों से निरुत्तर कर दिया तो उसने भगवे उतारे और अपनी पत्नी की इच्छापूर्ति की, फिर यहाँ से चला गया।"

"सुशीला! तुम्हारा क्या मत है?"

"महाराज! मैं तो न किसी की अर्द्धांगिनी हूँ और न मैंने संन्यास ही लिया है। मेरा अस्तित्व इस समय मात्र भगीरथ की माता का है। माता किसी की पत्नी हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। अभी तो मैं केवल माता बनकर ही संतुष्ट हूँ।"

"तुम्हें ऐसा कोई नहीं मिला जो अपनी पत्नी बना लेता?"

"पिछले वर्ष एक व्यक्ति मिला था। उसने यत्न किया किन्तु मेरे मन में किसी प्रकार की लालसा उत्पन्न नहीं हुई तो वह मुझसे निराश होकर लौट गया।"

मंगलानन्द कहने लगे, "मुझे तो इस बुद्धिवाद पर संशय होने लगा है।"

चन्द्ररानी ने कहा, "महाराज! भगवान् ने तो कहा है:

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।"

तबतक स्वामीजी भोजन समाप्त कर चुके थे। वे अनिच्छित मन से उठे और अपनी कुटिया में जाकर सुधीर को साथ ले कृष्ण मन्दिर से बाहर को चल पड़े।

वे वहाँ से पैदल ही चलकर दो मील के अन्तर पर स्थित रेल के स्टेशन की ओर बढ़ रहे थे। सुधीर को अब बम्बई के मार्गों का ज्ञान हो गया था। उसको जब यह भास हुआ कि वह स्टेशन की ओर उन्मुख हैं तो उसके मन में जिज्ञासा उठी। उसने स्वामीजी से पूछा, "महाराज! हम कहाँ जा रहे हैं?"

"ऋषिकेश।"

"वहाँ क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे गुरुजी हैं, उनसे अपने मन में उठने वाले संशय का निवारण करवाना चाहता हूँ।"

सुधीर को इसके बाद कुछ कहने को नहीं था। वह अन्यमनस्क-सा उनके साथ आगे बढ़ता जा रहा था।

स्टेशन पर पहुँचकर स्थानीय रेल में बैठ स्वामीजी सुधीर को लेकर बम्बई सैन्ट्रल रेलवे स्टेशन पर पहुँच गये। वहाँ से दिल्ली की गाड़ी में बैठकर दिल्ली जा पहुँचे। दिल्ली से वे हरिद्वार गये और फिर वहाँ से ऋषिकेश जा पहुँचे।

ऋषिकेश में जब मंगलाश्रम पहुँचे तो वहाँ जाकर पता चला कि स्वामी सोमेश्वरानन्द उत्तरकाशी की ओर गये हैं। कदाचित् वहाँ से वे गंगोत्री चले जाएँ।

स्वामी मंगलानन्द ने ऋषिकेश में एक दिन अपने आश्रम में विश्राम किया। दूसरे दिन वहाँ से चलकर उत्तरकाशी जा पहुँचे। सौभाग्य से स्वामीजी महाराज तबतक वहीं थे, गंगोत्री के लिए प्रस्थान नहीं किया था।

गुरुजी के आश्रम में पहुँचकर गुरुजी को प्रणाम कर उनके सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

स्वामी सोमेश्वरानन्द उस समय एक तख्त पर चटाई बिछा लेटकर कुछ चिन्तन कर रहे थे। अपने कमरे में दो प्राणियों को आया देखकर वे उठे और स्वामी मंगलानन्द की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगे।

कुछ क्षण उपरान्त बोले, "तुम यहाँ ?"

"हाँ महाराज! बहुत दिन से दर्शन नहीं कर पाया था। मन में दर्शनों की लालसा हुई तो चला आया।"

"वह किशोर कौन है ?"

"एक ब्रह्मचारी शिक्षार्थी है।"

"इसकी रूपरेखा तो बहुत कुछ तुमसे मिलती है ?"

"यह सम्भव है महाराज! यह इस शरीर की चौथी पीढ़ी में है।"

"तुम्हारी दूसरी पीढ़ी में एक पशु आया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी मैंने ही उसे भेजा था।"

"मैंने उसे पशु समझकर दीक्षा देना उचित नहीं समझा।"

"यह उसी का पौत्र है।"

"ठीक है, बैठो।"

"तख्त के नीचे भूमि पर एक अन्य चटाई बिछी थी। मंगलानन्द सुधीर को लेकर उसपर बैठ गया।

"सीधे बस स्टैण्ड से आ रहे हो?"

"जी महाराज!"

"तो स्नान आदि कर लो। मैं भोजन का प्रबन्ध कर देता हूँ।"

"महाराज! स्नान तो ऋषिकेश में कर लिया था। भोजन के लिए हलवाई को कह आया हूँ। भेज देगा।"

"सुना है तुमने बम्बई में बहुत बड़ा परिवार एकत्रित कर लिया है?"

"सब आपकी कृपा का फल है। इस समय बम्बई से पन्द्रह किलोमीटर दक्षिण की ओर कृष्णनगर नाम से एक नगर बस गया है। वहाँ की जनसंख्या दो सहस्र के लगभग है। वहाँ पुस्तकालय है। विद्यालय है और प्रचार केन्द्र है।"

"क्या प्रचार करते हो?"

"मैंने भगवद्गीता की व्याख्या करके प्रकाशित कराया है। उसी की वहाँ शिक्षा दी जाती है। एक अर्थ में वह ग्रन्थ महाभारत का संक्षिप्त संस्करण है।"

"तुम स्वयं पढ़ाते हो?"

"मैं तो सप्ताह में केवल दो दिन पढ़ाता हूँ। वैसे दस-बारह अन्य अध्यापक हैं। वे विभिन्न विषय पढ़ाते हैं।"

"कौन आता है पढ़ने के लिए?"

"जिनमें पढ़ने की योग्यता है।"

"क्या लाभ होगा इससे? जो भी नया जीव जन्म लेगा वह पशु नहीं बनेगा इसका क्या विश्वास? ये पढ़े-लिखे मर जाएँगे। फिर नये जीव को पढ़ाना होगा।"

"महाराज मैं यह तो नहीं कहता कि जो वहाँ पढ़ेगा वह अमर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाएगा। यह तो मानव-सृष्टि का ही दोष है कि वह अपने पूर्व जन्म के ज्ञान को अपर जन्म में साथ नहीं ले जा सकता। किन्तु अपने पूर्व संस्कारों के आधार पर ज्ञान को ग्रहण करने का वह यत्न करता रहता है। इस प्रकार इस जन्म का सार उसको अगले जन्म में प्राप्त हो जाता है। यह तो मनुष्य योनि का ही दोष है कि ज्ञान का संचय-स्थान जीवात्मा के साथ उसके अगले शरीर में नहीं जाता। परन्तु उसके संस्कार तो जाते हैं।"

"यह ठीक है। परन्तु इससे तुमको क्या लाभ होगा?"

"मैं यह सब अपने लाभ के लिए तो नहीं कर रहा। अपना लाभ तो आपकी कृपा से बहुत सीमा तक प्राप्त कर चुका हूँ। यह कार्य तो मैं निष्काम भाव से कर रहा हूँ।"

उसी समय हलवाई भोजन सामग्री लेकर आ गया। पूरी, हलवा और साग-भाजी आदि था।

भोजन सामग्री को वहाँ यथास्थान रखकर हलवाई बोला, "अपना कमण्डलु दीजिए, मैं उसमें जल ले आता हूँ।"

स्वामी मंगलानन्द तो अपने कमण्डलु में स्वयं ही जल भरकर ले आया था। उसने स्वामी सोमेश्वरानन्द का कमण्डलु उठाकर उसको देते हुए कहा, "लो इसमें ले आओ।"

स्वामीजी ने रोकते हुए कहा, "जल लाने की आवश्यकता नहीं है। मैं आज निराहार रहने वाला हूँ।"

"किस लिए महाराज!"

"अपने आमाशय को विश्राम देने के लिए।"

मंगलानन्द और सुधीर ने कुटिया के बाहर जाकर अपने हाथ धोये और फिर भीतर आकर भोजन करने लगे।

स्वामीजी ने मंगलानन्द से पूछा, "मुझसे मिलने के लिए आये हो अथवा कि वहाँ के कार्य से थककर विश्राम करने के लिए?"

"महाराज! वहाँ के कार्य से थका तो नहीं हूँ। इसलिए यहाँ विश्राम करने आने का प्रश्न नहीं है। वहाँ कार्य करते-करते मन में कुछ संशय उठने लगा था। उस संशय के निवारणार्थ आया हूँ। यही मेरा विशेष प्रयोजन है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"संशय निवारण होते ही लौट जाओगे ?"

"जी महाराज ! वहाँ कार्य बहुत बढ़ गया है। प्रतिदिन सोलह घण्टे नित्य करने पर भी समाप्त होता प्रतीत नहीं होता।"

"तो काम से मोह हो गया है ?"

"कार्य से नहीं महाराज ! उस कर्म के सम्भावित फल से मोह है। किन्तु वह मोह भी अब कुछ-कुछ भंग होने लगा है, ऐसा भास होता है। इसलिए उसमें संशोधन करने के विषय पर ही अपनी शंका के समाधान के लिए उपस्थित हुआ हूँ।"

"तब ठीक है। पूछो और भाग जाओ। क्योंकि जहाँ मन हो शरीर भी वहीं होना चाहिए। मन से दूर रहकर शरीर कल्पना तो कर सकता है परन्तु कर्म नहीं कर सकता।"

भोजन समाप्त कर मंगलानन्द ने कुल्ला किया और स्वस्थ होकर बैठ गया।

मंगलानन्द ने एक क्षण आँखें मूंदकर विचार किया और फिर कहा, "बुद्धि के योग से किया हुआ कर्म सदा श्रेष्ठ होता है।

"किन्तु बुद्धि सब में समान नहीं होती। इस कारण कर्म में भी अन्तर होता है। उसके कारण समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है।

"समाज में सामाजिक बुद्धि अनुकरणीय है। व्यक्तिगत बुद्धि स्वार्थ का अनुकरण करती है। समष्टि कर्म का फल समष्टिगत होता है।

"समष्टिगत कर्म और व्यक्तिगत कर्म में भी सीमा रेखा होती है। मनुष्य को चाहिए कि वह व्यक्तिगत कर्म को समष्टि के अधीन न करे। इसी प्रकार व्यक्तिगत कर्म में समष्टि को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। समष्टि को व्यष्टि पर समष्टि के कर्म नहीं थोपने चाहिए।

"यह अन्तिम बात ही विभ्रम उत्पन्न करने वाली है। मैं अपनी समस्या आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। बम्बई में कार्य करते हुए व्यक्तिगत कर्म समष्टि की व्यवस्था पर प्रभाव डालने वाला लगने लगा है। उसके प्रभाव के निवारण का उपाय जानने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आपके चरणों में उपस्थित हुआ हूँ ।

"एक व्यक्ति है। वह मुझसे संन्यास लेने के लिए आया था। मैंने उसको संन्यास की दीक्षा नहीं दी। उसने मुझे अपने मन में गुरु स्वीकार कर लिया और वह मांगली बन गया।"

"क्या बन गया?"

"मेरा नाम मंगलानन्द सरस्वती है। आप भी सरस्वती हैं। मैं आपका शिष्य होने से सरस्वती हुआ।

"उसी प्रकार उसने स्वयं को मेरा शिष्य मानकर 'मंगलानन्द का शिष्य मांगली' इस परिभाषा के आधार पर स्वयं को मांगली मान लिया है।

"उसके देखा-देखी एक अन्य युवक ने भी अपने नाम के साथ मांगली लगा लिया। इतनी मनमानी करने के उपरान्त वे दोनों इससे भी एक पग आगे बढ़ गए हैं। उन दोनों में से जो युवक है, उसकी जब कभी इच्छा होती है अपनी पत्नी के पास चला जाता है। उस समय वह भगवे वस्त्र उतार देता है। पत्नी को तृप्त कर अथवा स्वयं तृप्त होकर जब लौटता है तो पुनः भगवे वस्त्र धारण कर लेता है और स्वयं को रमणानन्द मांगली कहने लगता है। अन्यथा उसका नाम रमणदेव है।

"यह उस व्यक्ति का समष्टि कर्म में हस्तक्षेप है अथवा कि नहीं?"

"इसका तो यही उपाय है कि तुम भी द्रोणाचार्य की भाँति उससे गुरु-दक्षिणा माँग लो।"

"क्या माँगूँ दक्षिणा में?"

"भगवे वस्त्रों का त्याग। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।"

"महाराज! भगवे वस्त्र किसी सैनिक का ऐसा वेश तो नहीं कि उसको उतारने मात्र से वह दण्डित मान लिया जाएगा।

"मुझे ऐसा करने का अधिकार भी क्या है? मैं तो उसे मांगली कहलाने से भी नहीं रोक सका। यह उसका व्यक्तिगत कार्य है। उसमें कोई अन्य हस्तक्षेप करने का अधिकारी नहीं है।

"परन्तु इससे यह अनर्थ हो रहा है कि शीघ्र ही भगवे वस्त्र की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिमा और संन्यास की गरिमा मिट्टी में मिलती दिखाई देने लगी है।"

स्वामी सोमेश्वरानन्द बोले, "वर्तमान युग में संन्यास सामाजिक विषय नहीं रहा है। यह व्यक्तिगत कर्म बन गया है।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि कोई भी भगवा वस्त्र धारण कर अनाचार करने के लिए स्वतन्त्र है ?"

"वर्तमान युग में आश्रम-धर्म कानून के अन्तर्गत नहीं रह गया। ब्रिटिश शासन द्वारा प्रचलित 'इंडियन पीनल कोड' ही राजधर्म है। वर्णाश्रम धर्म इस कोड की व्यवस्था के अन्तर्गत कहीं नहीं है। इस कारण इसपर समाज किसी प्रकार का अंकुश नहीं लगा सकता।"

"महाराज ! इससे तो हिन्दू समाज से संन्यास की महिमा ही विलुप्त हो जाएगी।"

"वह स्वाभाविक है। स्वामी अभयानन्द ने तुम्हारे साथ जो व्यवहार किया, वह संन्यास की महिमा को उज्ज्वल करने वाला नहीं था। जो समाज उसको श्रेष्ठ व्यवहार मानेगा उसका नाश निश्चित है। यदि यह कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा कि वह समाज निस्तेज हो रहा है।

"मेरी दृष्टि में वर्णाश्रम धर्म अब वर्तमान समाज का धर्म नहीं रह गया है। इसलिए कोई स्वयं को शर्मा कहे, वशिष्ठ कहे अथवा कुछ अन्य, जो जिसके मन में आये वह कहे। समाज में इसका कोई प्रभाव होने वाला नहीं है। इसी प्रकार सरस्वती, गिरि आदि का भी प्रभाव समाप्त हो गया है। तब किसी का स्वयं को मांगली कहने से मंगलानन्द को चिन्तित नहीं होना चाहिए।

"विद्वत्ता, त्याग, तपस्या, निस्वार्थ सेवा, सब व्यक्तिगत भोग वाले हो गए हैं। समाज का इनमें हस्तक्षेप करना उसकी अनधिकार चेष्टा है। न समाज किसी को यह उपाधि दे सकता है और न ही ऐसी उपाधि की कोई महिमा ही शेष रह गई है।"

"इससे तो महाराज ! बड़ी गड़बड़ मच जाएगी।"

"हाँ, कुछ समय तक तो यह गड़बड़ रहेगी। किन्तु शनैः-शनैः मनुष्य की योग्यता के आधार पर उपाधि प्रदान करने वाली कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्था बन जाएगी। उस समय उस संस्था के अतिरिक्त किसी को वैसी उपाधि देने का अधिकार नहीं रह जायेगा। उन उपाधियों तथा विशेषणों का फिर स्वतः ही अर्थ बन जाएगा।

"अभी प्राचीन उपाधियों की महिमा मिटनी चाहिए। वर्तमान युग में भारत में एक महात्मा हुए हैं। वे महात्मा थे इसमें सन्देह है। किन्तु हिन्दू समाज ने उनको महात्मा की उपाधि से विभूषित किया तो उसके प्रसाद स्वरूप उसको घोर विपत्ति के मुख में जाना पड़ गया है।

"महात्मा शब्द और कांग्रेस शब्द की महिमा का यह प्रभाव हुआ है कि भारत देश का विभाजन हो गया और पृथक् देश पाकिस्तान के नाम से बन गया। न तो वह कांग्रेस कांग्रेस थी। अर्थात् वह किसी प्रकार का सम्मेलन नहीं था और न उसका सर्वेसर्वा कहलाने वाला महात्मा ही महात्मा था। किन्तु दोनों की मान-प्रतिष्ठा वैसी ही रही है जैसीकि इन शब्दों की होनी चाहिए।

"कांग्रेस और महात्मा, ये दोनों ही शब्द समष्टि की मनोभावना को व्यक्त नहीं करते थे, परन्तु समष्टि ने उनको स्वीकार किया तो उसका प्रतिफल उसको पाकिस्तान के रूप में प्राप्त हो गया।"

"महाराज! यदि पाकिस्तान न बनता तो भारत में रक्त की नदियाँ बहने लगतीं।"

"रक्त की नदियाँ तो पाकिस्तान बन जाने के बाद भी बहती रही हैं। देश विभाजन के अवसर पर दस लाख व्यक्तियों की हत्याएँ हुई थीं। इतने बड़े देश में कुछ लाख कम अथवा कुछ लाख अधिक से किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ता। किन्तु सदा-सदा के लिए यह संकट जो खड़ा कर लिया है उससे तो नित्य ही हत्याओं की आशंका बनी रहती है।"

"तो फिर?"

"जब इन शब्दों के अर्थ ही बदल जायेंगे तो स्वयमेव शान्ति और व्यवस्था फैल जाएगी।"

"इसका अभिप्राय तो यही हुआ कि रमणानन्द मांगली जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा है उसको करने दूँ ?"

"हाँ, उसे तो करने ही दो और अपना उच्च मूल्य भी अव संन्यासी अथवा भगवा वस्त्रधारी होने के कारण, मत समझो। अपने कर्मों को भगवे वस्त्र से पृथक् रखो। नाम तो व्यक्तिगत है। सार्वजनिक कार्य की महिमा कर्म के परिणाम पर होने दो।"

इस प्रकार यह प्रकरण पूर्ण हुआ।

मंगलानन्द ने कहा, "महाराज! एक घण्टे बाद ऋषिकेश की बस जाएगी। हम वापस लौट रहे हैं। कभी वम्बई नगर पधारें तो अपने इस शिष्य के कार्यक्षेत्र का अवलोकन करने का भी अवसर निकालिए। वहाँ का कार्य देखकर गुण-दोषों का विवेचन मिल जाय तो उससे मेरा महान् उपकार होगा।"

इसके उपरान्त दोनों ने आधा घण्टा तक उसी चटाई पर विश्राम किया। जाते समय दोनों ने स्वामी सोमेश्वरानन्दजी महाराज के चरण स्पर्श किए और फिर ऋषिकेश जाने वाली बस पर आरूढ़ हो गए।

: ३ :

कृष्णनगर में जब यह विदित हुआ कि स्वामी मंगलानन्द वहाँ नहीं हैं तो इससे सभी को चिन्ता होने लगी। जिस दिन स्वामीजी अपने शिष्य के साथ बम्बई से दिल्ली के लिए प्रस्थान कर गए उसी दिन सुरजनलाल वम्बई से कृष्णनगर आ रहा था। किसी ने उसको रेलगाड़ी में ही बता दिया कि स्वामीजी बम्बई गए हैं।

सुरजनलाल ने पूछा, "आप किस प्रकार जानते हैं ?"

"मैंने स्वयं उनको एक किशोर के साथ बम्बई की सड़क पर खड़े देखा था। सम्भवतया वे टैक्सी की प्रतीक्षा कर रहे हों।"

तदपि सुरजनलाल कृष्णनगर गया। अपने स्थान पर पहुँचकर उसने अपना ब्रीफकेस रखा और वह स्वामीजी की कुटिया को चल दिया।

कुटिया का द्वार भिचा हुआ था। द्वार खोलकर सुरजनलाल कुटिया के भीतर प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि वह खाली पड़ी है। स्वामीजी का शिष्य भी वहाँ नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरजनलाल ने कुटिया के आसपास लोगों से पूछा तो उसको पता लगा कि स्वामीजी किसी को कुछ कहकर नहीं गए हैं।

सुरजनलाल ने मन्दिर में आकर स्वामीजी के विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाही। किन्तु कहीं से कुछ अनुमान नहीं मिला। बस इतना सब जानते थे कि स्वामीजी सुधीर के साथ विलुप्त हो गए हैं।

इस प्रकार आठ दिन तक पूछताछ होती रही। इस पूछताछ से रमणानन्द मांगली सर्वाधिक परेशान था। सुशीला मांगली ने उस को बताया था कि जिस दिन स्वामीजी विलुप्त हुए हैं उस दिन वे उसके निवास पर आए थे। उसके यहाँ उन्होंने भोजन किया था और वे उसके विषय में अधिक बात करते रहे थे।

परन्तु इसके अतिरिक्त उसको कुछ भी पता नहीं चला कि स्वामीजी उससे रुष्ट होकर गए हैं अथवा कि किसी अन्य से। और वे गए कहाँ हैं?

आठवें दिन सायंकाल के समय जब स्वामीजी सुधीर के साथ पैदल ही कृष्णनगर में प्रविष्ट हो रहे थे तो सबसे पहले उनको रमणानन्द ने ही देखा था। रमणानन्द विद्यार्थी कक्ष की ओर जा रहा था कि द्वार से स्वामीजी सुधीर से साथ भीतर प्रविष्ट होते दिखाई दिए।

रमणानन्द ने विद्यार्थी कक्ष की ओर जाना छोड़ दिया और वह उस ओर को चल पड़ा जिधर से स्वामीजी आ रहे थे।

स्वामीजी के समक्ष पहुँचकर उसने स्वामीजी को प्रणाम किया तो स्वामीजी उसको भगवे परिधान में देखकर हँस पड़े। उन्होंने कहा, "तो तुम पुनः संन्यासी हो गए हो?"

"जी महाराज! पत्नी बम्बई चली गई है।"

"अब कब आयेगी?"

"उसने इस विषय में कुछ बताया नहीं है। यह उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। मैंने पूछा भी नहीं। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं थी।"

स्वामीजी के साथ-साथ रमणानन्द भी उनकी कुटिया की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल पड़ा।

कृष्णनगर में जिस-जिस ने भी उस समय स्वामीजी को देखा उसको प्रसन्नता-मिश्रित ग्राश्चर्य हो रहा था।

स्वामीजी ने चलते-चलते रमणानन्द से कहा, "तुम्हारा इस ग्राश्रम में ग्राकर रहना ग्रौर फिर भगवा वस्त्र धारण कर लेना, इसमें तुम्हारा क्या उद्देश्य है यह मैं समझ नहीं पाया।"

"महाराज! मेरा उद्देश्य तो स्पष्ट है। एक दिन मैं ग्रपने पिताजी के साथ ग्रापका प्रवचन सुनने के लिए ग्राया था तो ग्रापने कहा था कि जो भाग्यशाली है, जो धन-धान्य ग्रौर शारीरिक सामर्थ्य से परिपूर्ण है, उन लोगों को ही चाहिए कि वे देश ग्रौर जाति के लिए त्याग करें। इसीसे कल्याण की ग्राशा की जा सकती है।

"जो पूर्वजन्म के पापों के बोझ में दबे हुए ग्रकिंचन हैं, मन, बुद्धि ग्रौर शरीर से भी दुर्बल हैं वे क्या लोक-कल्याण का कार्य कर पायेंगे। हाँ, ज्ञानार्जन कर वे ग्रपना कल्याण कर सकते हैं। उनको इसका ग्रवसर भी मिलना चाहिए। किन्तु मेरा ग्राग्रह तो उनसे है जो समृद्ध हैं, स्वस्थ हैं, बुद्धिमान हैं, ज्ञानवान है। वे ग्रपना सब कुछ त्यागकर ग्रपने तथा लोक के कल्याण-कार्य में जुट जायें।

"बस महाराज! मुझे ग्रापकी वह बात पसन्द ग्राई। मैं एम० एस-सी० तक पढ़ा हुग्रा धन-धान्य से युक्त परिवार का युवक, यह नहीं समझ पा रहा था कि मैं धन के ढेर लगाने के कार्य पर क्यों लगा हुग्रा हूँ।

"महाराज! उस प्रवचन के उपरान्त जब मैं घर पहुँचा तो मैंने ग्रपनी पत्नी को सूचित कर दिया कि मैं संन्यास ले रहा हूँ। मैं ग्रपने इधर ग्राने की तैयारी उसी दिन से करने लग गया था! वह समय-समय पर मुझे भला-बुरा कहती रहती थी। मैंने कुछ दिन भली-भाँति विचार किया ग्रौर फिर एक दिन चला ही ग्राया। मेरे परिवार के सभी जन मुझको पागल समझने लगे थे। केवल मेरी पत्नी ग्रौर मेरे पिताजी मेरी बात को समझ रहे थे।

"पिताजी को केवल मेरी पत्नी के विषय में चिन्ता थी। उन्हें मेरे कार्य की कोई चिन्ता नहीं थी। यहाँ ग्राते हुए मैंने पिताजी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी पत्नी के विषय में सान्त्वना देते हुए कहा था कि वह विधवा नहीं होगी। यह सुनकर वे प्रसन्न हो गए थे।

"सेठ सुरजनलालजी ने मेरी सहायता की तो मुझे यहाँ रहने के लिए स्थान प्राप्त हो गया।

"उसके बाद मैं आपसे मिला। आपसे अपने संन्यास लेने की बात की तो आपने मुझे दीक्षा नहीं दी। आपके निर्देश पर मैं स्वामी निर्मलानन्दजी से मिला और उन्होंने मुझे दिशा-निर्देश कर दिया।

"बस, मुझे मार्ग मिल गया और मैं रमणदेव से रमणानन्द मांगली बन गया।

"मेरे संन्यास लेने के पन्द्रह दिन उपरान्त मेरी पत्नी राधा यहाँ आई। वह अतिथिगृह में रहती हुई मुझसे मिली। उसने मुझसे तर्क-वितर्क किया और उसकी युक्ति इतनी प्रबल थी कि मैं उसका उत्तर नहीं दे पाया और कुछ दिन के लिए भगवे वस्त्र उतारकर गृहस्थ बन गया।

"अब वह पुनः बम्बई चली गई है। मैंने भी अपने भगवे वस्त्र धारण कर लिये हैं।

"महाराज! यह बुद्धिवाद है।"

अब तक वे तीनों कुटिया पर पहुँच गए थे। स्वामीजी की कुटिया में लाला सुरजनलाल बैठा हुआ वह कार्य कर रहा था जो कि स्वामीजी किया करते थे। वह प्रबन्ध व्यवस्था थी।

सुरजनलाल सुशिक्षित होने के साथ-साथ प्रतिभावान और दूरदर्शी भी था। यही कारण था कि स्वामीजी की अनुपस्थिति में भी वह आश्रम का कार्य उसी सुगमता से संचालन कर रहा था जिस भाँति स्वामीजी किया करते थे।

सुरजनलाल ने स्वामीजी को आता देखा तो उठकर उनको प्रणाम किया और बोला, "पधारिये महाराज! मैं आपकी अनुपस्थिति में किसी प्रकार इस गाड़ी को चलाने का यत्न कर रहा था।"

"किसी प्रकार की कोई कठिनाई अनुभव हुई?"

"जी नहीं। आपकी निश्चित योजना होने से कठिनाई की सम्भावना ही नहीं थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ओर स्वामीजी तथा सुरजनलाल बात कर रहे थे तो दूसरी ओर रमण ने सुधीर से पूछा, "आप लोग कहाँ गए थे ?"

"ऋषिकेश और उत्तरकाशी।"

"क्या था वहाँ ?"

"किसी रमण मांगली की समस्या पर हमारे गुरुजी अपने गुरुजी से परामर्श करना चाहते थे।"

रमण यह सुनकर सावधान हो गया। वह सुधीर को वहाँ से एक ओर को ले जाकर पूछने लगा, "क्या बताया है हमारे गुरु पितामह ने ?"

"यह कि संन्यास व्यक्तिगत कर्म है, समष्टि से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। समष्टिकार्य समाज के अधीन होते हैं।"

"वह क्या है ?"

"यह बात वहाँ पर नहीं हुई। सम्भवतया इस विषय पर पहले कभी बात हो चुकी होगी इसलिए स्वामीजी महाराज ने पूछा नहीं अथवा यह भी कि स्वामीजी महाराज उस विषय में जानते हों।

"उन्होंने जब इतना ही बताया कि संन्यास वर्तमान में प्रचलित धर्मशास्त्र का विषय नहीं है अथवा यह कि इसके विषय में किसी प्रकार का कोई विधि-विधान नहीं है, इसलिए जो चाहे वह भगवा वस्त्र धारण करे और जो चाहे वह न करे, बस इतना जानकर स्वामीजी महाराज वहाँ से चले आए हैं।"

"और ?"

"बस और कुछ नहीं।"

उधर स्वामीजी सुरजनलाल को बता रहे थे, "वर्तमान काल की गति ऐसी है कि इस हिन्दू समाज में बहुत दूर तक परिवर्तन करना पड़ेगा। उसके बाद ही यह ह्रासमान समाज जिसमें इस समय दुर्गन्ध समाई हुई है स्वच्छ, निर्मल और सुगन्धियुक्त हो पायेगा।"

सुरजनलाल इसका अभिप्राय नहीं समझ पाया। वह स्वामीजी को देखता रहा। स्वामीजी बोले, "समाज की प्रथाएँ और उसके व्यवहारों के विषय में हमें विचार करना छोड़कर इसके मूल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर ध्यान करना चाहिए।'

सुरजनलाल ने पूछा, "वह मूल क्या है जिसे बदलना नहीं चाहिए और ऐसे कौन से बाहरी व्यवहार हैं, जिनके बदलने की हमको चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

स्वामीजी बोले, "हमें उसकी ही चिन्ता करनी चाहिए जो मूल है और जो बदलना नहीं चाहिए। मूल के अतिरिक्त जो शाखायें और पत्ते आदि हैं उनकी हमको चिन्ता छोड़ देनी चाहिए।"

"महाराज जी! मैंने यही तो पूछा है कि मूल क्या है?"

"मैं जितना समझता हूँ उसके आधार पर बता रहा हूँ। मेरे विचार में परमात्मा पर विश्वास करना, कर्मफल को मानना और पुनर्जन्म को मानना। धर्म के स्वरूप का निश्चय। धर्म में व्यक्ति और समष्टि का भेद। व्यक्ति में व्यक्ति की स्वतन्त्रता। समष्टि में समाज का बन्धन। बस यही हमको करना है।"

सुरजनलाल ने पूछा, "जो छल और बल से हमारे समष्टि जीवन को ध्वस्त करना चाहे तो?"

"उसके लिए वाक्, ज्ञान और कर्म ही उपाय है।"

"यदि राज्य ने हस्तक्षेप किया तो?"

"उस राज्य को बदलने का यत्न। राज्य को समष्टि में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है।"

"किन्तु महाराज! समष्टियाँ भी तो विभिन्न हैं?"

"जबतक कोई समष्टि हमारी समष्टि में हस्तक्षेप नहीं करता उसको अपना कार्य करने देना चाहिए। हमारे समष्टिगत कर्मों में कोई अन्य हस्तक्षेप न करे, बस यही हम चाहते हैं।

"इसमें राज्य से विरोध होगा। उसका कारण यह है कि राज्य भी एक समष्टि है। वह जब स्वयं को किसी समष्टि से भिन्न और अवरुद्ध देखेगा तो वह हमारी समष्टि का विरोध करेगा।

"इस कारण दोनों में सीमा-रेखा का निर्धारण किया जाना आवश्यक है।" स्वामीजी ने कह दिया।

"महाराज! इसी में तो कठिनाई का अनुभव हो रहा है।"

"यदि यह कार्य सुगम ही होता तो फिर इतना बड़ा पसारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसारने की आवश्यकता क्या थी ?"

सुरजनलाल मौन हो गया। तबतक रमण भी सुवीर से जानकारी प्राप्त कर चुका था और वे दोनों भी भीतर आकर बैठ गए थे।

सुरजनलाल ने रमण से उसके पिता तथा अन्य सम्बन्धियों के विषय में पूछताछ की। फिर उसकी पत्नी की बात भी आ गई। सुरजनलाल ने पूछा, "सुना है, तुम्हारी पत्नी यहाँ अतिथि-गृह में आकर रही है ?"

"जी, आई थी, अब घर चली गई है।"

"किसी विशेष प्रयोजन से आई थी ?"

"जी, उसका प्रयोजन सिद्ध हुआ तो वह लौट गई है।"

"तुम कभी भगवे सस्त्र धारण करते हो कभी इनको उतार देते हो इसका क्या कारण है ?"

"लालाजी ! इस संसार में अकारण तो कुछ नहीं होता। सब कुछ किसी-न-किसी उद्देश्य से ही किया जाता है।"

"वही तो मैं पूछ रहा हूँ कि तुम यह किसी उद्देश्य से करते हो ?"

"जी हाँ।"

"क्या है वह उद्देश्य ? कदाचित् हम भी उससे लाभ प्राप्त कर सकें।"

"परन्तु आप तो भगवे वस्त्र धारण ही नहीं करते, इसलिए आपको उनके उतारने की आवश्यकता कहाँ पड़ेगी ? पहले आप उन को पहनने की आवश्यकता अनुभव कर वस्त्र धारण कीजिए। उसके बाद यदि आप चाहेंगे तो उनको उतारने के उद्देश्य के विषय में आपको बता दूंगा।"

सुरजनलाल हँस पड़ा। उसने कहा, "तुम ठीक ही कहते हो। पहले पहनने का उद्देश्य हो तो फिर उतारने के उद्देश्य पर विचार किया जा सकता है।"

"परन्तु रमण ! तुम्हारे भगवे वस्त्र पहनने का उद्देश्य क्या है ?"

"वह तो स्पष्ट ही है। मैं स्वामीजी की भाँति प्रतिष्ठित होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता हूँ। मैं यही समझ पाया हूँ उसके लिए भगवा वस्त्र परम सहायक होता है।"

स्वामी मंगलानन्द ने बीच में बोलते हुए कहा, "मैं अब इन भगवे वस्त्रों को उतारने वाला हूँ। क्योंकि मैं देखना चाहता हूँ कि मेरी प्रतिष्ठा पचास पैसे के गेरुए रंग के कारण है अथवा किसी अन्य कारण से है?"

यह सुनकर तो सुरजनलाल और रमण दोनों ही स्वामीजी का मुख देखते रह गए।

कुछ क्षण मौन रहने के उपरान्त रमण ने ही कहा, "मैं समझता हूँ कि जिस दिन आप भगवे वस्त्र उतारेंगे उस दिन ही आप इन भगवे वस्त्रों की प्रतिष्ठा से मुक्त हो जायेंगे।"

"ठीक है, तब जो मेरी वास्तविक योग्यता है मैं उससे ही अपना निर्वाह करूँगा। उसको प्राप्त करने का यत्न करूँगा।"

सुरजनलाल ने इसका यही आशय समझा कि स्वामीजी रमण के व्यवहार से रुष्ट होकर ही भगवा वस्त्र त्यागने का विचार कर रहे हैं।

सुधीर यद्यपि अभी किशोर ही था तदपि स्वामीजी की शिक्षा और उनके साथ रहते हुए अन्य भी विद्वानों की बातें सुनते-सुनते बात को समझने का ढंग जान गया था। यही कारण था कि उसने जब स्वामी मंगलानन्द और स्वामी सोमेश्वरानन्द का परस्पर वार्त्तालाप सुना तो उसकी समझ में बहुत कुछ आ गया।

इस समय सुधीर ने कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे जो शिक्षा गुरुजी दे रहे हैं वह अपने भगवे वस्त्रों के कारण नहीं दे रहे हैं। वह तो गुरुजी ने ज्ञानार्जन किया है और उसीका वे प्रसारण कर रहे हैं। स्वामीजी भगवा वस्त्र उतारें अथवा धारण किये रहें, मेरे उनके गुरुत्व में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आ सकता।"

सुरजनलाल हँस पड़ा। उसने कहा, "हाँ, तुम ठीक कह रहे हो किन्तु रमण ने जो कहा उसका यही अभिप्राय है कि यह बिना भगवे वस्त्र वाले मंगलानन्दजी की केवल पचास प्रतिशत बात ही स्वीकार करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात का यह अभिप्राय समझकर रमण को भी हँसी आ गई। उसने फिर कहा, "लालाजी ! मैंने तो दूसरों के विषय में कहा था अपने विषय में नहीं। मैं तो स्वामीजी की बात को समझकर ही उनका शिष्य बना था, उनके भगवे वस्त्र देखकर नहीं।"

"दूसरों की चिन्ता तुम छोड़ दो।"

सुरजनलाल ने बात बदलकर कहा, "इस रविवार से मैं यहाँ साप्ताहिक प्रवचन करने की योजना बना रहा था। अब आप आ गए हैं तो आपका ही प्रवचन होगा।"

"मैं तो रविवार से पूर्व ही अपने भगवे वस्त्र उतार दूँगा। मैंने भगवे वस्त्र क्यों उतारे हैं यह मैं उस प्रवचन में ही स्पष्ट करूँगा।"

फिर स्वामीजी ने पूछा, "विगत रविवार को किसका प्रवचन हुआ था ?"

"मैंने ही किया था।"

"क्या विषय था ?"

"मैंने तो आपकी महिमा का ही बखान किया था और फिर यह भी बताया कि आपने किस उद्देश्य से इस मन्दिर का निर्माण करवाया है।"

"इस बार मेरा प्रवचन होगा और मैं बताऊँगा कि भगवे वस्त्रों के बिना भी व्यक्ति संन्यासी माना जा सकता है।"

लाला सुरजनलाल कुछ अन्य बातें कर वहाँ से चले गए और स्वामीजी भी अपने दैनिक जीवन का कार्य करने लगे।

: ४ :

सुरजनलाल ने जब स्वामी मंगलानन्द के भगवा वस्त्र सम्बन्धी विचार सुने तो उससे उसको चिन्ता होने लगी। किन्तु वह नहीं चाहता था कि रमण के सम्मुख अपनी चिन्ता का विषय स्वामीजी से व्यक्त करे। उसको एक उपाय सूझा। उसने उठते हुए कहा, "महाराज ! आज रात्रि को भोजन के लिए इस तुच्छ सेवक के कक्ष को पवित्र कर सकें तो कृपा होगी।"

"मैं अकेला नहीं हूँ, सुधीर मेरे साथ होता है।"

"यह मैं जानता हूँ। आज सुधा और उसका सारा परिवार भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णाश्रम में ही है। सभी दर्शनों की इच्छा कर रहे थे।"

सुधीर को जब विदित हुआ कि रात का भोजन उसकी बुआ के घर पर है तो यह समाचार देने वह माँ के पास चला गया। सुशीला माँगली के निवास पर जब उसने अपने दादा को संन्यासी वेश में देखा तो उसने उसके चरण स्पर्श किए।

सुधीर को देख निर्मलानन्द ने पूछा, "तुम और तुम्हारे गुरुजी कहाँ भाग गए थे?"

"महाराजजी अपने गुरुजी से विशेष परामर्श के लिए ऋषिकेश चले गए थे।"

"हो गया परामर्श?"

"यह तो मुझे विदित नहीं। हाँ, जो कुछ बातें हुईं वह मैं सुनता अवश्य रहा हूँ। गुरुजी ने भी पन्द्रह-बीस मिनट से अधिक बात नहीं की। उत्तरकाशी पहुँचकर भोजन करते हुए विषय आरम्भ हुआ और भोजन समाप्त होने तक बात भी समाप्त हो गई। उसके बाद हम लोगों ने आधा घण्टा विश्राम किया और फिर ऋषिकेश की बस में वापस हो गए।"

"तो आने-जाने में आठ दिन लग गए?"

"जी हाँ।"

"बहुत समय नष्ट किया है तुम्हारे गुरुजी ने। कितना व्यय कर दिया है?"

"हम दोनों का प्रथम श्रेणी का दोनों ओर का रेल किराया-भाड़ा। हरिद्वार से ऋषिकेश और वहाँ से उत्तरकाशी का मोटर का किराया-भाड़ा। मार्ग में खाना-पीना आदि-आदि।"

"अर्थात् पाँच सौ रुपयों पर पानी फेर दिया है।"

"हो सकता है, पाँच सौ में से कुछ बच गया हो।"

चन्द्र बड़े मनोयोग से इस बात को सुनती हुई मन-ही-मन हँस रही थी।

निर्मलानन्द ने फिर पूछा, "इतना रुपया व्यय करने पर क्या पाठ पढ़कर आए हो?"

"बस यही कि बाहरी व्यवहार सरकारी नियमों से नियन्त्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। मूल बात मन, बुद्धि और कर्म की है। उसका ध्यान रखना चाहिए। बाहरी रंग-रूप की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"यह मूल बात क्या है और बाहरी रंग-रूप क्या है?"

"बाबा! बाहरी रंग-रूप ये आपके भगवे वस्त्र हैं, आपका कमण्डलु है, आपके जटा-जूट हैं। मूल बात है ज्ञान, योग, तपस्या आदि-आदि।"

"यही सीखने के लिए तो मैं भी तुम्हारे दादा गुरु के पास गया था। उन्होंने केवल एक बार मेरी ओर देखा और कह दिया, 'नहीं, मैं तुमको दीक्षा नहीं दूंगा।'

"मैं भी उनको मिलने के लिए उत्तरकाशी ही गया था। उन्होंने छूटते ही कहा ऋषिकेश की बस अभी जा रही है तुरन्त बस स्टॉप पर पहुँच जाओ। यहाँ ठंड बहुत है। रात में रहना पड़ गया तो ठिठुरकर मर जाओगे।

"बस मैं चला आया।"

"जी हाँ। उन्होंने बताया था कि आप वहाँ गए थे। किन्तु उनका कहना था कि वे पशुओं को दीक्षा नहीं देते।"

"पशु! उन्होंने मुझमें पशु समान क्या देखा, यह कुछ बताया है?"

"यह गुरुजी ने उनसे पूछा नहीं।"

"सब ढोंग है। सुधीर! तुम यह शिक्षा छोड़कर किसी स्कूल में प्रवेश ले लो। उसके बाद कालेज में पढ़ना। कहीं अच्छी नौकरी मिल जायेगी तो फिर तुम्हारा विवाह कर दिया जाएगा। तुम्हारी माँ को इस बात की बड़ी चिन्ता हो रही है।"

"आजकल वे कहाँ हैं?"

"प्रमिला के साथ दिल्ली में रह रही है। प्रमिला की अगले वर्ष स्कूल की अन्तिम परीक्षा है। अंग्रेजी बोलने में तो बड़ी माहिर हो गई है। स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त वह कॉलेज में पढ़ेगी।

"मैं समझता हूँ कि यथासमय वह किसी कॉलेज की प्राध्यापिका बन जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबा ! किसी दिन जब आपके साथ दिल्ली जाऊँगा तो उसकी परीक्षा लेकर देखूँगा कि उसने कितना पढ़ लिया है।"

"तुम पढ़े ही क्या हो जो उसकी परीक्षा लोगे ?"

"गुरुजी कह रहे थे कि जितना वे कॉलेज की एम०ए० तक पढ़े थे, उतना तो मैं पढ़ चुका हूँ।"

"ओह !"

"हाँ बाबा ! मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहा हूँ। आपको एक घटना सुनाता हूँ। जब हम हरिद्वार से दिल्ली आ रहे थे तो हमारे ही डिब्बे में एक अंग्रेज भी बैठा हुआ था। उसको भी हमारे ज्ञान पर हँसी आ रही थी। किन्तु जब मैंने उसे चुनौती देकर कहा कि वह अपने उस तथाकथित विद्वान् शेक्सपियर की कोई भी ऐसी कृति बता दे जिसमें भोगवाद को छोड़कर किसी अन्य विषय पर भी लिखा गया हो।

"यह सुनकर उसने कहा कि भोगों से बाहर और कुछ है ही क्या ?

"मैंने उससे पूछा, 'आपकी कोई कन्या है ?'

" 'हाँ है।'

" 'उससे प्रेम करते हो ?'

" 'बहुत।' उसका कहना था।

" 'किस सांसारिक सुख अथवा लाभ के लिए उससे प्रेम करते हो ?'

" 'बस, वह मेरी पुत्री है।'

" 'आपकी उसमें ऐसी क्या सांसारिक रुचि है जोकि आप उससे प्रेम करते हैं ?'

" 'कहा तो वह मेरी पुत्री है।'

" 'जो वह खाती है न तो वह आपके पेट में जाता है, तो बताइये कि उसकी प्रसन्नता किस माध्यम से आपके पेट में जाया करती है ?'

"वह बेचारा मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया। उसने मुख फेरा और लेट गया।"

"तुमने उसको उस माध्यम के विषय में बताया ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसमें यह सब जानने की योग्यता ही कहाँ थी ? तदपि यदि वह मुझसे पूछता तो मैं बता देता। बिना जिज्ञासा के हम किसी को कुछ क्यों बतायें ?"

"तुम जानते हो कि तुम्हारी दादी माँ तुमसे इतना स्नेह क्यों करती हैं ?"

"जी हाँ।"

"बताओ, क्यों करती हैं ?"

"यह तो उनके पूछने का विषय है। आप अपने विषय में पूछ सकते हैं। किन्तु आपको विश्वास आएगा नहीं।"

"मैं समझता हूँ कि तुम मेरे सम्मुख झूठ नहीं बोलोगे।"

"बात मेरी नहीं दादी माँ की है। यदि मैं उनके विषय में कुछ कहूँगा तो आप विश्वास नहीं करेंगे। इसका विश्वास वे ही आपको दिला सकती हैं मैं नहीं।"

"क्यों चन्द्र ! यह क्या कह रहा है ?"

"उसको जानने का आपको अधिकार नहीं है। एक दिन स्वामीजी ने इसकी आत्मा की बात बताई थी। तबसे मैंने यही अनुभव किया है कि वे जो कुछ भी कह रहे थे वह ठीक था।"

"क्या कह रहे थे ?"

"यही कि हम दोनों की आत्मायें मिलकर परस्पर वार्त्तालाप करती हैं। वह सब अनजान में, अनदेखे और बिना सामीप्य के होता है। हमारी आत्मायें भविष्य के विषय में भी परामर्श किया करती हैं। हम बात कर लेते हैं किन्तु किसी को इसका ज्ञान नहीं होता। मैं अनेक बार इसकी परीक्षा कर चुकी हूँ।

"एक दिन सोये-सोये मेरे मन में विचार आया कि सुधीर संन्यासी बन जाएगा। मुझे इस कारण नींद नहीं आ रही थी। तभी सहसा मुझे लगा कि यह सान्त्वना देते हुए कह रहा है, चिन्ता मत करो मैं सज्ञान होकर विवाह करूँगा और अपनी वंश-परम्परा की वृद्धि कर ही कुछ अन्य करूँगा।

"रात को इसके आश्वासन से मुझको सान्त्वना तो मिल गई। किन्तु जब तक मैं इससे पूछ न लेती तबतक मेरे मन को चैन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ रहा था। अतः प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर मैं स्वामीजी की कुटिया पर चली गई।

"उस समय यह अपनी सन्ध्या-उपासना समाप्त कर अल्पाहार कर रहा था। मैंने जाते ही कहा, 'सुधीर ! मैं तुमसे एक बात पूछने के लिए आई हूँ।'

"इसने कहा, 'दादी माँ ! उस बात का उत्तर तो मैंने आपको दे दिया था ?'

" 'कब ?'

" 'रात जब आपको मेरे विषय में चिन्ता करते हुए नींद नहीं आ रही थी। आप जानना चाहती थीं कि मैं विवाह करूँगा अथवा कि नहीं। मैंने बताया था कि मैं उचित समय पर विवाह करूँगा, इस प्रकार अपनी वंशावली का उच्छेद नहीं होने दूँगा।'

"मुझे बड़ा विस्मय हुआ।

"इसने फिर कहा, 'दादी माँ ! आत्मा आत्मा का साक्षी होता है। कल रात उसी आधार पर आपकी और मेरी बात हुई थी।'

"उसके बाद कई बार मैंने इसका परीक्षण किया है और मुझे इसका उत्तर मिलता रहा है।"

निर्मलानन्द पूछने लगा, "तो अब तुम्हारे गुरुजी क्या ढोंग करने वाले हैं ?"

"इस रविवार को साप्ताहिक सभा में उनका प्रवचन होगा। आप भी सुनने के लिए आ जाइयेगा।"

सुशीला ने कहा, "भगीरथ तुम्हें स्मरण करता रहता है।"

"मौसी ! उसीको मिलने के लिए तो आया हूँ। वैसे आज रात को हमारा भोजन बुआजी के घर पर है। सुना है बुआ के साथ सोहन-मोहन भी आए हैं।"

सुशीला बोली, "रात्रि के भोजन के लिए आज हम भी वहाँ जा रहे हैं। सुशीला बहिन अभी-अभी आकर निमन्त्रण दे गई हैं।"

सुधीर की बात पूर्ण हो गई तो वह चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

रात्रि के समय सुरजनलाल की कुटिया में एक समारोह सा-ही हो गया था। सुधा का पूर्ण परिवार था। सारा परिवार बाबा से मिलने के लिए आया था। स्वामी मंगलानन्दजी के आश्रम से सहसा विलुप्त हो जाने के कारण लाला सुरजनलाल बम्बई जा नहीं पाये थे। इस कारण परिवार स्वयं उनसे भेंट करने के लिए आश्रम में चला आया था।

यहाँ आकर जब उनको पता चला कि स्वामीजी वापस आ गए हैं तो उन्होंने अपने नाना-नानी को भी आमन्त्रित कर लिया।

इसी कारण उस कक्ष में भीड़ हो गई थी।

मंगलानन्द ने सुधा से पूछा, "तुम्हारा छोटा लड़का कितने वर्ष का है?"

"सात वर्ष का।"

"बस, अब संन्यास ले लिया है?"

"हाँ बाबा! बच्चों के पिता से तो संन्यास ले लिया है किन्तु बच्चों से अभी नहीं लिया है।

"सबसे छोटी लड़की इस समय छः वर्ष की है। वह अपने भाई-बहिनों से अधिक चंचल है। जो कुछ भी उसके हाथ लगता है, उसको तोड़-फोड़कर उसके भीतर देखने का यत्न करती है।"

"यह तो बड़ा श्रेष्ठ गुण है। ईश्वर करे वह सहज ही यहाँ के सबसे बड़े खिलौने, मेरा अभिप्राय है कि इस जगत् के रहस्य को भी जान जाए। बस फिर वह जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जायेगी।"

"बाबा! उस मुक्ति से लाभ क्या होगा?"

"सुनते तो यही हैं कि इस सांसारिक सुख की अपेक्षा वह सुख करोड़ों गुणा अधिक होता है जबकि प्राणी को आनन्द की अनुभूति होने लगती है।"

"अर्थात् मीठा ही मीठा खाने से जो अरुचि हो जाया करती है, वह उस जीवन से होने लगेगी। किन्तु बाबा! मीठे का स्वाद तभी तक है जब हम उसकी तुलना नमकीन अथवा कटु से करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु यदि मीठा ही मीठा खाने को मिलता रहे तो वह भी कटु अनुभव होने लगता है।

"इसलिए सुख-दुःख साथ चलने चाहिए। तभी जीवन सरस हो सकता है अन्यथा नहीं।"

"कदाचित् तुम ठीक ही कहती हो। यही कारण है कि अनन्त काल व्यतीत होने पर भी वैकुण्ठ अभी भरा नहीं है। विपरीत इसके जहाँ-जहाँ भी प्राणी की सृष्टि होती है, वहाँ जीव-जन्तुओं की भरमार लग जाती है।"

"हाँ बाबा ! सम्भवतया वैकुण्ठधाम पहुँचकर लोग पुनः इस लोक में आने की लालसा करते होंगे।"

"मैं भी कुछ विलक्षण अनुभव करने लगा हूँ। मैं एक घण्टे के लिए अपने गुरुजी के समीप गया था। उनसे बात करने के उपरान्त यह अनुभव करने लगा हूँ कि संन्यास लेने की आवश्यकता इस कारण नहीं है कि भगवे वस्त्र पहनने को मिलेंगे अथवा समाज में इससे प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इसका उद्देश्य तो कुछ अन्य ही है। किन्तु गुरुजी का कहना था कि ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो केवल भगवा पहनने के कारण ही संन्यासी हैं। अन्यथा उनमें संन्यास की गन्ध भी नहीं है।

"इस कारण न मैं किसी को भगवा पहनने की प्रेरणा देता हूँ और न किसी को दीक्षित ही करता हूँ।"

"आप किसी को मन से संन्यास लेने के लिए भी कहते हैं अथवा नहीं ?"

"संन्यास शब्द ही एक प्रकार का लेबल है। जहाँ मैंने भगवे वस्त्रों की वकालत छोड़ दी है वहाँ साथ ही संन्यास शब्द का भी त्याग कर दिया है। अब मैं मनुष्य हूँ। इसी का प्रतिपादन करने का विचार है। मनुष्य के अनेक प्रकार के कार्य हैं। उनमें से कुछ कार्य लोककल्याण के हैं।

"अब मैं यही कहूँगा कि लोककल्याण के कार्य करो। न संन्यास शब्द का नाम लेता हूँ और न भगवा वस्त्र धारण करने की प्रेरणा देता हूँ। उनकी महिमा भी नहीं मानता। मानव बनने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मैं मनुष्य का अपना और समाज का कल्याण मानने लगा हूँ।

"भविष्य में इसी विषय पर बल दूँगा।"

सुरजनलाल ने कहा, "परन्तु स्वामीजी! संन्यासी भी तो मानव हो सकते हैं।"

"मैं तो केवल बाहरी चिह्नों, नाम और उसके चिह्नों का ही त्याग कर रहा हूँ।"

"तब आप संन्यास के गुणों को क्या संज्ञा देंगे?"

"गुण तो अपने गुणों से ही जाने और पहचाने जाते हैं। बाहरी लक्षणों अथवा चिह्नों से नहीं।"

तबतक भोजन का समय हो गया था। सब लोग खाने के कमरे की ओर चल पड़े।

मध्याह्नोत्तरकाल से ही सुरजनलाल स्वामी मंगलानन्द को वस्तुस्थिति से अवगत कराने का यत्न कर रहा था। वह जो कुछ भी समझ रहा था उससे उसके मन में भय उत्पन्न होने लगा था। वह तो यही समझता था कि बाहरी लक्षणों से ही वस्तु का ज्ञान होता है। यदि बाहरी लक्षण मिट गए तो वस्तु-वस्तु में विभेद करना कठिन हो जायेगा। तब फिर संसार में ऐसा विभ्रम फैलेगा कि सामान्य मनुष्य को भले-बुरे का पहिचानना कठिन हो जायेगा।

भोजन करते समय सुरजनलाल ने अपने मन का संशय प्रकट करते हुए कहा, "महाराज! हम हिन्दू हैं। हिन्दू के कुछ लक्षण हैं। उन लक्षणों में हमारे नाम सर्वोपरि हैं। मैं सुरजनलाल हूँ। आप स्वामी मंगलानन्द हैं। यह लड़का मधुसूदन है। ये नाम हिन्दी भाषा के हैं।

"यदि हिन्दू समाज अपने घटकों को मनमाने नाम रखने की छूट दे देगा तो इससे क्या महान् विभ्रम नहीं उत्पन्न हो जायेगा? यदि मधुसूदन का लड़का कार्ल मार्क्स और कार्ल मार्क्स का लड़का रहमान और रहमान का लड़का डी-वलेरा होने लगेगा तो हिन्दू समाज नाम का समाज ही कहाँ रह जायेगा?"

"ठीक है, ऐसा होने पर न हिन्दू रहेगा और मुसलमान रहेगा। सब मनुष्य माने जायेंगे और मनुष्यों में भले-बुरे, ज्ञानवान-अज्ञानी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिशील और बुद्धिविहीन इत्यादि श्रेणियों में विभक्त हो जायेंगे।

"हमारा यह कृष्ण मन्दिर श्रेष्ठ, ज्ञानवान्, बुद्धिमान मनुष्यों का निर्माण करने वाला संस्थान रह जायेगा।

"समय पाकर इन ज्ञानवानों की भी एक श्रेणी बनेगी तब उसका कुछ नाम पड़ जायेगा। वह समाज का नवनिर्माण होगा। जबतक हम पुराने नामों को रखते हुए उनमें सुधार करने का यत्न करेंगे उससे विभ्रम फैलता ही रहेगा।"

"और फिर उन नये नामों में पुनः अच्छे-बुरे लोग बनने आरम्भ नहीं होंगे क्या ?

"देखिये महाराज ! मान लीजिए कि आज से एक सौ वर्ष के प्रयत्न के उपरान्त हिन्दू, मुसलमान, यहूदी और ईसाई नाम भाषा में रहेंगे ही नहीं। ये प्राचीन ऐतिहासिक नाम रह जायेंगे तो ज्ञानवान्, बुद्धिमान श्रेष्ठजनों की श्रेणी का जो नाम रखेंगे उस नाम वालों में पुनः गुणहीन लोग आ जायेंगे। बस फिर यही चक्की पीसनी पड़ेगी।

"इसलिए जो कुछ तब करना है वह अभी वर्तमान नामों में दोषों का संशोधन कर क्यों न आरम्भ कर दिया जाए।"

मंगलानन्द को स्मरण हो आया कि उसने अपने गुरुजी से कहा था कि समाज में महान् विभ्रम जो फैलेगा तो उन्होंने बताया था कि यह स्थिति केवल कुछ काल के लिए ही रहेगी। समय पाकर श्रेष्ठजन उन नये नामों से ही जाने जायेंगे।

मंगलानन्द विचार कर रहा था कि इस समय सुरजनलाल जो बात कर रहे हैं वह भी ठीक ही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तब नयी व्यवस्था होने पर उसमें भी तो दोष आयेगा ही। तब फिर उसके सुधार के लिए यत्न करना पड़ेगा।

सुरजनलाल की शंका थी कि क्या यह चक्की मनुष्य समाज अनन्त काल तक पीसता रहेगा ?

मंगलानन्द अपनी योजना पर मन-ही-मन विचार करने लगा।

सुरजनलाल समझता था कि उसने अपनी बात भली-भाँति स्पष्ट कर दी है। उसके बाद वह स्वस्थ चित्त होकर भोजन करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

रविवार से पूर्व ही रमण स्वामीजी से एक दिन पृथक् में मिला। उस दिन स्वामीजी गीता का पाठ समाप्त कर अपनी कुटिया की ओर जा रहे थे कि रमण लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ स्वामीजी के पास पहुँच गया और फिर उनके साथ-साथ चलता हुआ कहने लगा, "महाराज ! मैं आपसे एक बात पूछने के लिए आया हूँ।"

"पूछो।"

"कुटिया में चलकर पूछना चाहता हूँ।"

"ठीक है चलो।"

इस प्रकार दोनों कुटिया पर जा पहुँचे। सुधीर अपने कक्ष में किसी पुस्तक का अध्ययन कर रहा था। उसे वहीं छोड़ रमण स्वामी जी के कमरे में जा पहुँचा। स्वामीजी अपने आसन पर बैठे तो रमण उनके सम्मुख बैठ गया।

"बोलो, क्या पूछ रहे हो ?"

"बम्बई से मेरी पत्नी का फोन आया है।"

"क्या ?"

"यही कि मुझे आज घर पहुँच जाना चाहिए।"

"ठीक है, तुम्हें पहुँच जाना चाहिए।"

"तब तो फिर ये वस्त्र उतारने पड़ेंगे।"

"उसकी आवश्यकता नहीं। भगवा वस्त्र धारण करने मात्र से कोई संन्यासी नहीं बन जाता। गृहस्थ में भी भगवे वस्त्र धारण किए जा सकते हैं।"

"महाराज ! परन्तु मेरा कहना तो यह है कि यदि मैं घर गया तो मुझे पुनः अपनी पत्नी के साथ पति धर्म का पालन करना पड़ेगा।"

"गृहस्थी का यही धर्म है। तुम अभी गृहस्थी हो, इसलिए तुम्हें उसका पालन करना चाहिए।"

"मैंने तो संन्यास ले लिया है।"

"तुम स्वयं को छल रहे हो। तुम्हें इस प्रकार संन्यासी नहीं माना जा सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किन्तु मैं संन्यासी बनना चाहता हूँ।"

"किन्तु बन नहीं सकते। जब तक तुम्हारा विवाह स्थिर है, जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित है, जब तक तुम्हारी पत्नी को पति की कामना है, तुम संन्यास ग्रहण नहीं कर सकते। यही कारण था कि मैंने तुम्हें संन्यास देना स्वीकार नहीं किया था।"

"तो मैं संन्यासी नहीं हूँ।"

"नहीं। यह किसी एक व्यक्ति का नियत किया हुआ पद नहीं है। हिन्दू समाज ने ही इसके विधि-विधान नियत किए हैं। वही इसमें परिवर्तन कर सकता है।"

"परन्तु उस दिन जब आप अपने गुरुजी से मिलकर आये थे तब तो आप इससे कुछ भिन्न बात कर रहे थे। आपने कहा था कि संन्यास ग्रहण करना और उसका पालन करना मनुष्य का व्यक्तिगत कर्तव्य है।"

"हाँ, मैंने कहा था। परन्तु वह बात संन्यास धर्म और संन्यास लेने वालों के अपने मन से सम्बन्ध रखती है। संन्यास का अर्थ है स्वार्थ का त्यागना। यह अपने आत्मा की बात है। देखने वालों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी कारण मैंने इसे व्यक्तिगत धर्म कहा था।

"परन्तु भगवे वस्त्र धारण कर घूमना तो देखने वालों से भी सम्बन्ध रखता है। समाज ने इस रूप को किसी कर्म से सम्बन्धित माना हुआ है! इस कारण आज मैं यह तुम्हारे देखने में संन्यास की बात कह रहा हूँ।"

"महाराज! मुझे बताइये कि मैं वर्तमान स्थिति में क्या करूँ?"

"तुम्हारी भूल केवल यही है कि तुम संन्यासी तो हो नहीं किन्तु समझ रहे हो कि तुम संन्यासी हो। और अपना यही रूप तुम व्यक्त भी कर रहे हो।"

रमण कुछ काल तक मौन रहकर स्वामीजी की बात पर मनन करता रहा। फिर वह सहसा उठा और उसने स्वामीजी के चरण स्पर्श किये और उनकी कुटिया से बाहर निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार के दिन कृष्ण मन्दिर में विराट् सभा का आयोजन हुआ करता था। उस दिन आश्रम में रहने वाले सभी जन वहाँ पर उपस्थित होते थे। इसके अतिरिक्त बम्बई से भी कुछ लोग इस सभा में विशेष रूप से भाग लेने के लिए आया करते थे।

इस रविवार को भी पूर्वानुसार पाँच-छः सहस्र व्यक्तियों की भीड़ वहाँ पर एकत्रित थी। हाल तो सारा खचाखच भर ही गया था। बाहर के बरामदों में भी यत्र-तत्र श्रोतागण खड़े थे।

स्वामीजी यथासमय पधारे और सभा का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम कीर्तन के रूप में प्रार्थना और उपासना के भजन हुआ करते थे। तदनन्तर गीता के एक अध्याय का पारायण हुआ और फिर स्वामीजी का प्रवचन आरम्भ हुआ।

स्वामीजी ने कहा कि हिन्दू समाज की सुरक्षा के लिए इसकी, इस देश की जनसंख्या दूसरे समुदायों की अपेक्षा कम नहीं होनी चाहिए। किन्तु हम देख रहे हैं कि वह कम होती जा रही है।

भारतवर्ष की सीमा सिन्धु नदी से आरम्भ कर ब्रह्मपुत्र तक और हिमालय से आरम्भ कर समुद्र पर्यन्त मानते हैं।

सन् १६०१ से आज सन् १६७१ तक यहाँ की जनसंख्या तीस करोड़ से अस्सी करोड़ हो गई है। उस समय इस क्षेत्र में मुसलमान तथा अन्यान्य मतावलम्बियों की संख्या लगभग पाँच-छः करोड़ ही थी। किन्तु उन समुदायों की जनसंख्या इस समय तक सत्ताईस करोड़ हो गई है।

इसका अभिप्राय यह हुआ कि उनकी संख्या तो छः गुणा बढ़ी है और हिन्दू पच्चीस करोड़ से छियालीस करोड़ ही हुए हैं। जो अनुपात सन् १६०१ में छः और एक का था वह इस समय छः और तीन का हो गया है।

इसलिए ऐसा समझा जा रहा है कि एक दिन यह अनुपात एक और एक का हुआ तो दोनों समुदायों में घोर संघर्ष होगा। इससे हिन्दू समाज के निश्शेष होने का भय होने लगा है।

व्यक्तिगत रूप में यह भविष्य भयंकर नहीं भी हो सकता। परन्तु समाज तो समाप्त हो जायेगा। वैसे ही जैसे ईरान, सीरिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलीपीन में प्राचीन समाज शून्य हो गया है। अथवा जैसे पाकिस्तान में हो गया है।

हिन्दू समाज मानव मन की एक श्रेष्ठ कल्पना है। इस समाज का स्वरूप मैं पिछले छः वर्ष से स्पष्ट करता आ रहा हूँ। यदि समाज की संख्या के ह्रास की यही गति रही तो हिन्दू समाज में श्रेष्ठता होते हुए भी वह रह नहीं पायेगी।

इसलिए सचेत और सावधान होने का यह समय है। पिता के ज्ञान-विज्ञान की धरोहर का रक्षक उसका पुत्र होता है। वह पुत्र नहीं जो इस धरोहर की रक्षा नहीं कर सकता।

इसके लिए हमारी एक योजना है। हमने उसको प्रकाशित भी कर दिया है। आप लोग आश्रम में से उसको ले लीजिए और फिर उसके अनुसार हमारी सहायता कीजिये।

इस प्रकार अपने पौन घण्टे के व्याख्यान में स्वामीजी ने वर्तमान हिन्दू समाज की स्थिति को इस स्पष्टता और प्रभावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया कि श्रोतागण मन्त्रमुग्ध से सुनते रहे।

सभा भवन से निकलने पर द्वार पर योजना की पुस्तिका मिल रही थी। सब श्रोता उसको ले रहे थे। उसे पढ़ते हुए वे अपने-अपने स्थान को लौट रहे थे।

रमण उस दिन अपनी पत्नी राधा के साथ स्वामीजी का व्याख्यान सुनने के लिए आया था। वह भवन के एक कोने में बैठा स्वामीजी का व्याख्यान सुनता रहा।

भाषण समाप्त होने पर रमण ने अपनी पत्नी से पूछा, "अब ?"

"मैं तो स्वामीजी से मिलने के लिए आई हूँ।"

"वे तो तुमसे नहीं मिल सकते।"

"यह सम्भव नहीं है। जो इस प्रकार की युक्तियुक्त बात करता है वह किसी की भी जिज्ञासा पूर्ण करना अस्वीकार नहीं कर सकता।"

"तो फिर ?"

"मैं उनकी कुटिया पर चलूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहाँ महिलाओं का प्रवेश वर्जित है।"

"क्यों ?"

"यह तो मैं नहीं जानता। परन्तु मैंने किसी स्त्री को वहाँ जाते कभी देखा नहीं है।"

"यदि किसी महिला को उनसे मिलना हो तो वह किस प्रकार मिल सकती है ?"

"वह यहाँ भवन के बाहर मिल सकती है।"

"ठीक है, मैं यहाँ मिलकर उनसे भेंट की स्वीकृति ले लूँगी।"

"ले लो।"

स्वामीजी उस समय भवन के बाहर खड़े कुछ लोगों से बात कर रहे थे। उसी समय राधा स्वामीजी की कुटिया की ओर जाने वाले मार्ग के एक ओर को खड़ी होकर उनकी प्रतीक्षा करने लगी। उस समय रमण उसके साथ नहीं था।

रमण बरामदे में ही स्वामीजी के पास जाकर उनको प्रणाम करने लगा।

"रमण ! मिल आये हो अपनी पत्नी से ?"

"जी महाराज ! वह स्वयं यहाँ आई है और आपसे भेंट करने की इच्छुक है।"

"मुझसे उसका क्या काम है ?"

"यह मुझे ज्ञात नहीं है। वह स्वयं अपने मुख से आपको कहना चाहती है।"

"ठीक है कहने दो। परन्तु वह है कहाँ ?"

"महिलाओं में बैठी थी, यहीं कहीं आपकी खोज में खड़ी होगी।"

स्वामीजी उस समय सेठ भद्रसेन से बात कर रहे थे। उन्होंने रमण और उसकी पत्नी का विचार छोड़कर सेठ से कहा, "एक सौ विद्यार्थियों के पढ़ने का व्यय आपको वहन करना होगा।"

"वह कितना होगा ?"

"चार लाख रुपया पूंजी के रूप में। उसकी आय से १०० विद्यार्थियों का व्यय निकल आयेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज एक-दो दिन में भेज दूंगा।"

"ठीक है। यहाँ के कोषाध्यक्ष सुरजनलाल बजाज हैं।"

"मैं उनके पास अपना चैक भेज दूंगा।"

इस प्रकार भद्रसेन से बात पूरी हो गई तो वह प्रणाम कर चला गया। स्वामीजी वहाँ से चलने लगे तो एक अन्य सम्भ्रान्त व्यक्ति से भेंट हो गई। ये थे अहमदाबाद के सेठ उमाशंकर। वे स्वामीजी से मिलने के लिए ही आये थे। उन्होंने कहा, "महाराज! मैं अहमदाबाद से केवल आपके दर्शन के लिए ही यहाँ आया हूँ।"

"आज्ञा करिये।"

सेठ ने हाथ जोड़कर कहा, "आप कुटिया में चलिये, मैं वहीं आपकी सेवा में उपस्थित होता हूँ।"

"ठीक है, वहीं पधारिये।"

स्वामीजी अपनी कुटिया की ओर चलने लगे। सेठ उनके साथ-साथ चल रहा था। रमण भी उनके पीछे-पीछे चल रहा था। वह यह देखना चाहता था कि उसकी पत्नी स्वामीजी से किस स्थान पर और किस प्रकार भेंट करती है।

स्वामीजी कुछ आगे बढ़े ही थे कि एक अन्य सज्जन सामने आकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उसे देख स्वामीजी बोले, "आपको तो पहली बार ही देख रहा हूँ। क्या शुभ नाम है आपका?"

"आपसे एकान्त में सबकुछ वर्णन करूँगा।"

"ठीक है। एक घण्टे बाद मेरी कुटिया पर पधारिये उस समय वहाँ एकान्त होगा।"

"इन धनामानी लोगों से मिलने से पूर्व समय नहीं मिल पायेगा?"

"आप जल्दी में हैं?"

"भगवन्! समय तो किसी की प्रतीक्षा करता नहीं। वह भागा जा रहा है। मेरा विचार उस भगोड़े की गति को मात देना है।"

"ठीक है आइये, पहले आपसे ही मिल लूँगा।"

स्वामीजी कुछ ही पग आगे बढ़े थे कि रमण की पत्नी राधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग में खड़ी हो गई।

स्वामीजी ने सहसा कह दिया, "तुम रमण की धर्मपत्नी राधा हो ?"

"हाँ महाराज ! पत्नी हूँ परन्तु धर्मपत्नी नहीं। धर्म से तो हम दोनों विभिन्न मार्गगामी बन गये हैं।"

"मैं ऐसी ही सम्भावना देख रहा था।"

"इसी कारण आपसे परामर्श करने की अभिलाषा लिये आई हूँ।"

"तुम कक्ष संख्या १०० में चली जाओ। वहाँ सुशीलादेवी रहती हैं। तुम उसके साथ मुझसे मिलने आ सकती हो।"

"आपके दर्शन कहाँ और कब होंगे ?"

"इसका निर्णय वह कर देगी।"

राधा को इस प्रकार के प्रबन्ध की आशा नहीं थी। इसलिए उसने कहा, "महाराज ! आपके ये शिष्य तो मुझे इसी समय बम्बई चलने के लिए कह रहे हैं ?"

"वह तो रात के भोजन के उपरान्त ही जायेगा।"

"उन्होंने ऐसा कहा है ?"

"नहीं, मैं उसको कह दूँगा।"

यह स्वामीजी के व्यक्तित्व और उनकी सुमधुर वाणी का ही प्रभाव था कि जिस प्रकार लौहकण चुम्बक की ओर आकर्षित होते हैं श्रोता वैसे ही स्वामीजी की ओर आकर्षित होते थे।

इस प्रकार मिलते-मिलाते स्वामीजी अपनी कुटिया पर जा पहुँचे।

कुटिया से बाहर पेड़ों की छाया में कुर्सियाँ डालने के लिए कहा गया। सभी भेंट कर्ताओं को उन कुर्सियों पर बैठाकर स्वामीजी उस अपरिचित नवागन्तुक को लेकर कुटिया के भीतर चले गये।

उसे बैठाकर स्वामीजी ने कहा, "बोलिये।"

"महाराज ! मेरा नाम जगन्नाथ राव है। मैं महाराष्ट्र सरकार के गुप्तचर विभाग का अधिकारी हूँ।"

"क्या किसी प्रकार की कोई सरकारी आज्ञा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है। मैं अपने मन से आया हूँ और आपको यह बताना चाहता हूँ कि आप शीघ्र ही महाराष्ट्र से बाहर चले जाइये। अन्यथा सरकार आपको बन्दी बनाने की योजना कर रही है।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि आपकी ख्याति बढ़ रही है। राजनीति में ख्याति ही एक ऐसी योग्यता है जिससे मनुष्य ऊपर उठता है और जो पहले ऊपर पहुँचे हुए हैं वे लोग अब आपसे भयभीत होने लगे हैं।"

स्वामीजी समझ गये कि यहाँ भी दिल्ली वाली बात की पुनरावृत्ति हो रही है।

दिल्ली में उसको स्वयं को न पकड़कर जियाराम को परेशान करने का उपक्रम किया गया था। सम्भव है यहाँ भी किसी अन्य पर क्रोध निकाला जाए। यह विचार करते हुए मंगलानन्द सोचने लगा कि दिल्ली में तो जियाराम के पकड़े जाने से उसकी ख्याति में वृद्धि हुई थी। यहाँ क्या होगा यह भविष्य के गर्भ में था।

स्वामीजी ने पूछा, "मुझे कब तक भाग जाना चाहिए ?"

"सरकार ने कुछ सोचा है। उस पर दिल्ली से बातचीत हो रही है। हमारा अपना टेलीफोन सम्पर्क है। इस कारण किसी समय भी अन्तिम निर्णय लिया जा सकता है।

"इस परिस्थिति में मेरा तो यही सुझाव है कि यहाँ का कार्य किसी को सौंपकर आपको तुरन्त विलुप्त हो जाना चाहिए।

"ऐसी कुछ घटना पिछले वर्ष पूना के एक आचार्य के साथ हुई थी। वे भी सहसा विलुप्त हुए तो फिर तीन मास तक उनका कहीं पता ही नहीं चला। अब कहा जा रहा है कि वे अमेरिका के किसी पर्वतीय स्थल पर हैं।"

"मैं समझ रहा हूँ।"

"अब मैं चलता हूँ। आपके साथ जो ये अहमदाबाद के सेठ आये हैं ये मुझे बड़ी देर से घूर रहे हैं। लगता है इन्होंने मुझे कहीं देखा होगा।"

स्वामी मंगलानन्द ने भेंट वार्त्ता समाप्त करने के लिए कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया, "आपकी सूचना के लिए धन्यवाद।"

जगन्नाथ ने दोनों हाथ जोड़कर स्वामीजी को प्रणाम किया और कुटिया से बाहर निकल गया।

जगन्नाथ के जाने पर स्वामीजी ने सेठ उमाशंकर को बुलवा लिया। स्वामीजी ने उसे बैठाया तो बैठकर वह कहने लगा, "महाराज ! यह सरकारी एजेण्ट क्या कह रहा था ?"

"आप इसे जानते हैं ?"

"महाराज ! रहने वाला तो मैं गुजरात का हूँ किन्तु मेरा व्यापार महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल में भी फैला हुआ है। इस कारण मेरा परिचय इन सब स्थानों पर है। सरकारी प्रतिबन्धों के बीच से सुरक्षित निकलने के लिए व्यापारी को अपनी आँख और कान खोलकर रखने पड़ते हैं। यही कारण है कि मैं इस व्यक्ति को पहचान गया था।"

"वह कह गया है कि भविष्य में वह अब इधर नहीं आयेगा। उसकी मेरी अन्तिम बात हो गई है।"

"तो इसने ऐसा कुछ कहा है जिसको कि आप स्वीकार कर रहे हैं ?"

"मैंने सुन ली है परन्तु अभी स्वीकार नहीं की। उसने मुझसे कुछ करने के लिए कहा है। मैं उसे करूँगा अथवा नहीं, इस पर मैंने अभी विचार नहीं किया है।"

उमाशंकर बोला, "मैं जानता हूँ इसने क्या कहा होगा ?"

"क्या कहा होगा ?"

"यही कि आप जैसे व्यक्ति के लिए यह बम्बई अनुकूल स्थान नहीं है। अतः आपको चाहिए कि आप हिमालय की तलहटी में बैठकर योगध्यान कीजिये।"

मंगलानन्द को हँसी आ गई। उसने कहा, "उसने हिमालय की शान्ति जैसी बात तो नहीं की। हाँ, अमेरिका के सागर तट पर बैठकर तपस्या करने की ओर अवश्य संकेत किया है।"

"मैं भी इसी सन्दर्भ में कुछ निवेदन करने के लिए आया हूँ।"

"हाँ, बोलिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इसमें यहाँ के लोगों का कल्याण ही समझता हूँ कि आप बम्बई की इस कीच में रहें।"

"आपकी वक्तृत्व शैली अन्य राजनीतिक लोगों से भिन्न है। आप सामान्य जनता के कल्याण की बात तो करते हैं परन्तु उनके ज्ञान से नहीं अपितु अपने मन से। आपने तो यही कहा है कि सामान्य लोगों का कल्याण हम श्रेष्ठियों के माध्यम से होगा। परन्तु वह किस प्रकार होगा इस पर आपने प्रकाश नहीं डाला।"

"मैं भी इसकी इच्छा तो करता हूँ किन्तु मैं वह मार्ग नहीं जानता कि किस प्रकार किया जाए।"

"इसीलिए तो मैं आप जैसे धनीमानी सुपठितजनों को एकत्रित कर रहा हूँ जो अपनी दैनंदिन की आवश्यकताओं से निश्चिन्त हैं। वे ही इन सामान्य जन की सेवा में प्रवृत्त हो जाएँ तो कुछ किया जा सकता है।"

"यही तो वह बात है जिसे सरकारी कर्मचारी नहीं चाहता। उनका एक बहुत बड़ा वर्ग है। साधारण चपरासी से आरम्भ कर राष्ट्रपति तक। सभी सरकारी कर्मचारी की श्रेणी में समाते हैं।

"उनकी कार्यप्रणाली है कि देश के भाग्यशाली वर्ग को तो सुख-सुविधा की अफीम खिलाकर प्रगाढ़ निद्रा में सुलाये रखना। आप उसी अंश को सतर्क और सावधान करने का कार्य कर रहे हैं। इसी कारण यह सरकारी कर्मचारी वर्ग आपसे भयभीत है। वह आपको यहाँ से भगा देना चाहता है।

"वह वर्ग यह नहीं चाहता कि कोटि-कोटि सामान्य बुद्धि के लोग तथा सरकारी कर्मचारी वर्ग में बुद्धिशील भाग्य के धनी जन कूद पड़ें।"

"मैं भी कुछ ऐसा ही समझ रहा हूँ। मेरा कुछ दिल्ली का भी अनुभव ऐसा ही रहा है। यद्यपि मैं इनकी चिन्ता का कारण अभी तक भी समझ नहीं पाया हूँ। तदपि यह वर्ग चिन्तित है इसका अनुभव मैं करता आ रहा हूँ।"

"मैं तो आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आप निश्चिन्त हो कार्य करते जाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक और बात जो मैं आपसे विशेष रूप से कहना चाहता था वह यह है कि यह रमणदेव नितान्त कम्युनिस्ट है। कम्युनिस्ट तो अपने विरोधी की हत्या भी कर देते हैं। आपको इस व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए।"

"उसने मुझसे स्वयं कहा है कि वह कम्युनिस्ट है। उसने यह भी कहा है कि अब उसकी मानसिक अवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है।"

"महाराज! संसार में यदि किसी का विश्वास कभी नहीं करना चाहिए तो वह कम्युनिस्ट है। इनका तो सिद्धान्त ही यह है कि 'सफल होना ही सफलता है'।'

"मेरा आपसे पृथक् में बात कर आपके समय पर छापा डालने का यही उद्देश्य था। अब मुझे आज्ञा दीजिए। मुझे बम्बई सैन्ट्रल से सायंकाल की गाड़ी पकड़नी है।"

इतना कहकर वह उठा और स्वामीजी को प्रणाम करके चला गया।

: ६ :

बाहर मिलने वालों में रमण भी विराजमान था।

जब रमण मिलने के लिए आया तो स्वामीजी ने कहा, "रमण! अपनी पत्नी के वृद्ध होने तक तुम संन्यास नहीं ले सकते।"

"महाराज! पहले तो आपने कहा था कि भगवा वस्त्रों का संन्यास से किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं है। अब आप बात को बदल क्यों रहे हैं?"

"मैंने बात को नहीं बदला है। तुम्हारी स्थिति बदली है। मैंने कहा था कि संन्यास व्यक्तिगत कर्म है। परन्तु भगवे वस्त्रों की प्रथा आज संन्यास से सम्बन्धित मानी जाती है। मैं तो तुम्हें अपने व्यक्तिगत व्यवहार में समता लाने के लिए कह रहा हूँ। जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित और युवा है तुम संन्यासी नहीं हो सकते। इस बात को तुमने स्वयं सिद्ध भी कर दिया है।

"अत: मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि अभी तुम रमणदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हो स्वामी रमणानन्द नहीं।"

"महाराज! मैं जो कुछ हूँ वह तो मैं स्वयं जानता हूँ। मेरे समझने के साथ भगवे वस्त्रों का भी सम्बन्ध नहीं है। मैं रहूँगा तो रमण मांगली ही चाहे कोई इसको माने अथवा न माने। मैंने इस विषय पर विचार कर लिया है। रमणदेव पिता का पुत्र है और रमण मांगली आपका शिष्य है।

"न तो मेरे पिताजी मेरे पिता होने से इन्कार कर सकते हैं और न आप मुझे मांगली होने से रोक सकते हैं। मैं दोनों ही हूँ और अपने विचार से दोनों विषयों में सफल होने का यत्न कर रहा हूँ।

"आज तो मैं अपनी पत्नी की आपसे मिलने की इच्छा के कारण आया हूँ। आपने उसको कहा है कि मैं रात के दस बजे के उपरान्त यहाँ से जाऊँगा। इस कारण आज मैं यहाँ हूँ।

"यदि आप बता दें कि वह रात के दस बजे कहाँ मिलेगी तो अपनी मोटर गाड़ी लेकर उसको लेने के लिए उस स्थान पर आ जाऊँगा।"

"रमण! आज तो बड़ी युक्तिसंगत बात कर रहे हो। तुम्हारी इस बात से तुम्हारे ये भगवे वस्त्र मेल नहीं खाते।"

"कुछ दिन यों ही रहने से ये भी मेल खाने लग जाएँगे। अभी नये हैं। इस कारण देखने वालों को धोखा हो रहा है। समय के साथ-साथ उनको मैं इसी रंग में दिखाई देने लगूँगा।"

"रात दस बजे अपनी पत्नी को लेने के लिए कक्ष संख्या सौ पर पहुँच जाना।"

"ठीक है। अभी मैं अपने साथियों से मिलने के लिए जा रहा हूँ।"

यह कहकर रमण ने स्वामीजी को प्रणाम किया और वहाँ से चला गया।

रात के पौने दस बजे रमण जब कक्ष संख्या सौ पर पहुँचा तो उस समय राधा भोजन कर रही थी। चन्द्र ने उसको बरामदे में बैठाकर पूछा, "आप लोग इस समय बम्बई जाएँगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी !"

"आज आप अपने छात्रावास में ही रह जाइए और राधा हमारे यहाँ रह लेगी। प्रातःकाल चले जाइए।"

"यह राधा की इच्छा है ?"

"नहीं, यह मैं कह रही हूँ। राधा को भी मैंने ही कहा है। उसने कहा है यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो उसको कोई आपत्ति नहीं है।"

"भोजन कर लेने दीजिए। बाद में जैसा वह कहेगी वैसा कर लिया जाएगा।"

"आप भी भोजन करेंगे ?"

"जी नहीं, मैं करके आया हूँ।"

"ठीक है। आप बैठकर प्रतीक्षा कीजिए। वह भोजन करके आती है, उसके बाद आप लोग परामर्श कर लीजिए।"

भोजनोपरान्त राधा उस कमरे में आई तो रमण ने पूछा, "श्रीमती जी, बोलिए यहाँ रहना है अथवा कि घर चलना है। माता जी अभी कह रही थीं कि आपकी इच्छा यहाँ रहने की हो रही है।"

"पूर्व निश्चयानुसार तो आज सायंकाल तक बम्बई पहुँच जाने का कार्यक्रम था। अब विलम्ब हो गया है।"

"तो ठीक है। मैं छात्रावास में अपने कक्ष में जा रहा हूँ। प्रातःकाल सात बजे आ जाऊँगा।"

"सात नहीं आप नौ बजे तक आइए।"

इसके बाद अधिक कुछ बात नहीं हुई। रमण उठकर अपने छात्रावास के लिए चला गया।

रमण को विदा कर राधा भीतर गई तो चन्द्र ने कहा, "मैंने तुम्हें इसलिए रोका है कि तुम्हारा भविष्य का कार्यक्रम ज्ञात हो सके। तुम दोनों को भगवा वस्त्र धारण करने हैं अथवा कि गृहस्थ निभाना है ?"

"मेरा उद्देश्य तो स्वामीजी को अपने पतिदेव की ओर से सचेत करना था। इसी कारण मैं यहाँ आई थी। यदि स्वामीजी की अनुमति होती तो मैं उनके साथ आश्रम में रहने को भी उद्यत थी। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी को कहा है कि यदि वे चाहें तो मैं यहाँ रहती हुई अथवा बम्बई में भी रहती हुई उनसे पृथक् रह सकती हूँ। परन्तु मुझे भय है कि वे भटक जाएँगे। उनके मत वाले विवाह और विवाहित पत्नी में कुछ भी विशेषता नहीं पाते।

"वे कम्युनिस्ट हैं। स्वयं को वह मिट्टी का ढेला समझते हैं। अतः दो मिट्टी के ढेले एक साथ रह भी सकते हैं अथवा किसी दूसरे ढेले के साथ भी जा सकते हैं।

"मैं यह नहीं चाहती कि मेरे पति इस प्रकार कुछ करें। स्वामीजी को जब मैंने यह सारी बात बताई तो उन्होंने एक योजना मुझे बताई है। मैंने उसे स्वीकार कर लिया है।

"एक बात और है। मैं अपने में गर्भ-स्थिति का अनुभव करने लगी हूँ।

"स्वामीजी का कहना है कि जो संसार सागर में गोता खा रहा है, यदि वह अभी सागर से बाहर ही है तो उसको सागर में धकेल देना बुद्धिमत्ता नहीं है। मैं उनको आश्रम में रहने की प्रेरणा दूँगी। मैं यत्न करूँगी कि वे पुनः भगवे वस्त्र धारण कर लें।"

इस सब वार्त्तालाप को सुनकर चन्द्र और सुशीला दोनों मन-ही-मन मुस्करा रही थीं। चन्द्र ने पूछा, "क्या आयु है तुम्हारी इस समय?"

"बीसवाँ वर्ष है।"

"यदि तुम्हारे पति ने वास्तव में संन्यास ले लिया तो फिर तुम क्या करोगी?"

"यद्यपि निश्चितरूपेण कुछ कह पाना सम्भव नहीं है। तदपि मेरी उत्कट इच्छा तो यही है कि सुशीला बहिन की भाँति मैं भी एक भगीरथ पर सन्तुष्ट होकर बम्बई में किसी व्यवसाय में लग जाऊँगी।"

"कितनी पढ़ी हो?"

"मैं बी० ए० उत्तीर्ण हूँ। बी० ए० प्रथम श्रेणी में किया था। एम० ए० करके मैं डॉक्टरेट भी कर सकती हूँ। उस अवस्था में मैं फिर अध्यापन की ओर प्रवृत्त हो जाऊँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किन्तु इससे तो जीवन की पूर्णता नहीं होगी।"

"तो किससे होगी ?"

"यह तो तब ही बताया जा सकता है जब तुम्हारा प्रसव हो जाय। उसके बाद तुम यहाँ आओगी और बात करोगी तो सोचकर बतायेंगे। सुशीला की भाँति तुम भी एक भगीरथ से सन्तुष्ट हो जाओगी अथवा नहीं यह तब ही पता चलेगा।"

"सुशीला बहिन विधवा है ?"

"हाँ !"

आश्रम में यही विख्यात था कि सुशीला विधवा है। उसके पुत्र भगीरथ को भी यही विदित था कि उसका पिता नहीं है।

"मेरे विषय में तो अभी कुछ कह पाना सम्भव नहीं है। बहुत कुछ इस प्रसव पर ही निर्भर करता है। और इसके पिता पर भी निर्भर करता है। मैं नहीं चाहती कि वे आवारा बन जाएँ।"

"आगामी नौ अथवा दस मास तक उसको किस प्रकार रोक लोगी ?"

"इसके लिए स्वामीजी ने उनकी देख-रेख का वचन दिया है।"

"तब तो ठीक है।"

चन्द्र को तो सन्तोष हो गया किन्तु सुशीला को विस्मय हो रहा था।

अपने संशय के निवारण करने के लिए सुशीला ने पूछा, "रमण जी के साथ तुम्हारा ऐसा क्या साझा है जो तुम उनकी इतनी चिन्ता कर रही हो ?"

"वे मेरे पति हैं। ऐसे पति जिनका चयन मैंने स्वयं किया था। हम दोनों एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। उनको देखकर मेरे मन में उनके प्रति पति भावना जागृत हुई। उसके आधार पर मैंने प्रयत्न किया और हमारा विवाह हो गया। वही भावना मेरे मन में अब भी है। मैं नहीं चाहती कि मेरा प्रिय आवारा हो जाय।"

"किन्तु क्या यह व्यर्थ की भावना नहीं। कभी मेरे मन में भी इसी प्रकार की भावना थी। किन्तु इस जीवन को व्यर्थ में लम्बा करने की आवश्यकता ही क्या है ?" सुशीला ने प्रश्न किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भावना युक्ति का विषय नहीं है। मैं इसका कारण बताने में असमर्थ हूँ।"

यह सुन चन्द्र और सुशीला को हँसी आ गई है। चन्द्र तुरन्त ही गम्भीर हो गई और बोली, "राधा! तुम ठीक कहती हो। इस समय तुम इसका कारण नहीं बता सकतीं किन्तु जब तुम मेरी आयु पर पहुँचोगी तो उस समय कारण तुम्हें विदित हो जाएगा। मैं भी इसी प्रक्रिया में से निकली हूँ। आज जब हम दोनों में पति-पत्नी का सम्बन्ध नहीं रहा है तो आज मैं पति के उस समय के व्यवहार के कारण को समझने लगी हूँ।

"जब इन्द्रियों का कलरव प्रबल होता है तो उसके निनाद में बाहर की बात सुनाई नहीं देती। किन्तु जब वह कलरव शान्त हो जाएगा तब उन भावनाओं का अर्थ स्पष्ट होने लगेगा।"

समय अधिक हो गया था और बात भी करने को कुछ शेष नहीं रह गई थी अतः तीनों सोने की तैयारी करने लगीं।

राधा को बम्बई ले जाने से पूर्व रमण स्वामीजी से मिलने के लिए गया था। नौ बजने में पाँच मिनट पर जिस समय वह राधा को लेने के लिए कक्ष संख्या सौ पर आया तो राधा जाने के लिए तैयार खड़ी उसकी प्रतीक्षा ही कर रही थी।

मोटर रमण ही चला रहा था। राधा उसके साथ वाली सीट पर जाकर बैठ गई। आश्रम से बाहर निकल जाने पर रमण ने ही बात आरम्भ करते हुए राधा से कहा, "स्वामीजी ने मुझे बताया है कि अब तुम एक वर्ष तक मेरा पीछा नहीं करने वाली हो।"

"बस स्वामीजी ने इतना ही बताया, इससे आगे कुछ और नहीं?"

"क्या?"

"यही कि इतनी सुदीर्घ अवधि तक आप बिना स्त्री सहवास के रह पाएँगे, मुझे इसका विश्वास नहीं होता।"

"किन्तु क्या मेरे कहने पर विश्वास कर लोगी?"

"आप तो ऐसी बात कई बार कह चुके हैं। परन्तु जिस मत के आप अनुयायी हैं उसमें तो स्त्री को चाय के प्याले के समान ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा जाता है।"

रमण ने हँसते हुए कहा, "चाय के प्याले के समान नहीं, वोदका के गिलास के समान कहो। किन्तु मैं अब उस मत का अनुयायी नहीं रहा।"

"कब से ?"

"इस परिवर्तन में कई मास लगे हैं। पूर्ण तो यह तब हुआ था जब एक दिन स्वामीजी ने परमात्मा तथा मनुष्य शरीर में आत्मा के अस्तित्व के प्रमाण समझाए थे। मैं समझता हूँ कि यह मेरे कम्युनिज्म पर अन्तिम प्रहार था। उस दिन से ही मैं अपनी मानसिक अवस्था में कुछ विशेषता का अनुभव करने लगा हूँ।"

"परन्तु जब कोई कम्युनिस्ट कुछ कहता है तो वह सत्य हृदय से ही कह रहा है, इसका विश्वास भी तो नहीं होता ?"

"मैं इस अवधि में यहाँ कृष्ण आश्रम में रहूँगा। तुम्हारे मन में जब भी किसी प्रकार का सन्देह हो तुम स्वामीजी से फोन पर बात करके उस विषय में पूछ सकती हो।"

"कहा तो मुझे भी स्वामीजी ने यही है। उन्होंने तो यहाँ तक कहा है कि यदि मेरी आपसे मिलने की इच्छा हो तो मैं आ भी सकती हूँ।"

इस बात का यह परिणाम निकला कि पिछले दिन जब वह आश्रम के लिए आई थी तो उसके मन में बड़ा संशय-सा था, किन्तु अब वह संशय मिट गया था।

रमण और राधा अपने घर पहुँचकर सामान्य जीवन में लिप्त हो गए। रमण आश्रम लौट गया और राधा घर पर रही।

राधा की गर्भावस्था सुख-चैन से व्यतीत हुई और समय पर उसने पुत्र रत्न को जन्म दिया। अपने घर पर पुत्र जन्म की सूचना देने के लिए रमण स्वामीजी के पास उनकी कुटिया पर गया। स्वामीजी ने समाचार सुनकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पूछा, "राधा कैसी है ?"

"मैं कल ही बम्बई के उस नर्सिंग होम में उससे मिलने के लिए गया था जहाँ उसने प्रसव किया है। यद्यपि देखने में तो वह दुर्बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लग रही किन्तु उसने स्वयं यह बताया कि वह मन से बहुत प्रसन्न है।"

"यह भी प्रसन्नता की बात है। जब बच्चा चालीस दिन का हो जाय तो उसको उसकी माता के साथ लाना। उस समय उसके विषय में अपना अनुमान तुमको बताऊँगा।"

: ८ :

एक दिन दिल्ली से फकीरचन्द का पुत्र जवाहरलाल स्वामीजी से मिलने की आकांक्षा से कृष्णाश्रम आया। उसने अतिथि गृह में अपना सामान रखा और फिर स्वामीजी से मिलने के लिए उनकी कुटिया पर चला गया।

मध्याह्न के भोजन में अभी कुछ विलम्ब था। उस समय सेवक ने आकर स्वामीजी को सूचना दी, "महाराज! दिल्ली से आये हुए श्री जवाहरलाल आपसे भेंट करना चाहते हैं।"

स्वामीजी नाम सुनकर तुरन्त पहचान गए थे। यद्यपि जबसे वे दिल्ली से आए थे आज प्रथम बार ही जवाहरलाल उनके पास आया था। उसका पिता फकीरचन्द तो जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित वार्षिक उत्सव में प्रतिवर्ष आया करता था। स्वामीजी ने उसको बुलवा लिया।

सुधीर उन दिनों आश्रम के विद्यालय में विज्ञान की शिक्षा लेने के लिए जाया करता था। वह वहाँ गया हुआ था।

जवाहरलाल स्वामीजी के पास पहुँचा तो उनके चरण-स्पर्श करने लगा। स्वामीजी बोले, "लगता है हमारे दिल्ली से आने के इतने वर्ष बाद भी तुममें परिवर्तन नहीं आया। अभी भी दिखावे में तुम्हारा वैसा ही विश्वास है।"

"महाराज! परिवर्तन तो हुआ है। और वह परिवर्तन उस दिशा में ही हुआ है, जिस दिशा में आपने मुझको डाला था। मुझ में अब कम्युनिज्म की गन्ध भी शेष नहीं रह गई है।"

"तब तो ठीक है। आज तुम ग्यारह वर्ष बाद हमें मिले हो। इस अवधि में तुम्हारा शरीर तो कुछ पूर्वापेक्षा अच्छा ही हुआ है।"

"जी सब आपकी कृपा है। शरीर पूर्ण स्वस्थ है और सबल भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कदाचित् इसके दो कारण हैं। एक तो मैंने मांस का प्रयोग सर्वथा त्याग दिया है तथा दूध, फल और साग-भाजी आदि अधिक सेवन करने लगा हूँ। दूसरी ओर जबसे मैंने कम्युनिज्म से किनारा किया है तबसे चित्त की शान्ति में अपार वृद्धि हुई है। इसका प्रभाव भी शरीर पर अच्छा ही पड़ा है।"

"तो अब टिकट होल्डर नहीं रहे ?"

"टिकट तो मैंने तभी वापस कर दिया था जब आप दिल्ली में ही थे। उस समय तो मैंने अपनी पार्टी के सेक्रेटरी को यही कहा था कि मेरा पठन-पाठन का कार्य इतना बढ़ गया है कि मेरे लिए पार्टी के अनुशासन में रहना कठिन हो रहा है।

"मुक्त होने में कठिनाई तो बहुत हुई।

"टिकट वापस करने के बाद भी समय-समय पर पार्टी की सेवा करनी पड़ी थी। यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार अवकाश प्राप्त चपरासी अपने अफसर की चापलूसी करते रहते हैं।"

यह सुनकर मंगलानन्द को हँसी आ गई। स्वामीजी ने कहा, "यह तुम्हारी अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव है। अंग्रेजी में इसको 'डिप्लोमैसी' कहते हैं।"

मध्याह्न के भोजन का समय हुआ तो स्वामीजी ने जवाहरलाल से पूछा, "भोजन तो किया नहीं होगा ?"

"महाराज ! मैं तो कम्युनिस्टों की भाँति बिना आपके निमन्त्रण के ही आपके साथ भोजन के लिए चलने की बात सोच रहा था। मैं स्टेशन से सीधा ही चला आ रहा हूँ। मार्ग में बम्बई रुकता तो कदाचित् भोजन कर भी आता।"

"कम्युनिज्म की गन्ध तो अभी भी तुममें है। मैंने तो प्रश्न किया था। किन्तु तुमने उसको निमन्त्रण समझ लिया है। चलो, अब उसको निमन्त्रण ही समझकर भोजन करने चलो।"

दोनों ही अपनी-अपनी बात पर हँस पड़े।

उसी समय सेवक स्वामीजी के द्वार पर भोजन की सूचना देने के लिए खड़ा दिखाई दिया। स्वामीजी ने उठते हुए जवाहरलाल से कहा, "चलो, भोजन करने चलते हैं। शेष बात वहीं पर करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों वहाँ से भोजन-कक्ष में जाकर बैठ गए।

: ६ :

भोजन के लिए बैठने पर स्वामीजी ने पूछा, "तुम्हारे पिताजी कैसे हैं ? इस वर्ष वे वार्षिक उत्सव पर नहीं आ पाए थे।"

"इस समय तो स्वस्थ हैं। उस समय शेयर मार्केट में हलचल के कारण उनका दिल्ली से निकलना सम्भव नहीं हो पाया था।"

स्वामीजी ने बताया, "वास्तव में इस कृष्ण मन्दिर और विद्यापीठ की योजना का सुझाव उनका ही था। जब मैं पहली बार बम्बई आया और यहाँ प्रवचन किया तो उसके भोग के अवसर पर तुम्हारे पिताजी भी आए थे। उस समय जब उन्होंने एक करोड़ रुपया एकत्रित हुआ देखा तो उन्होंने सुझाव दिया कि भारत के शीर्षस्थ धनीमानी समाज को सन्मार्ग दिखाने के लिए इस धन का सदुपयोग किया जाना चाहिए।

"यह योजना लाला सुरजनलाल की भी थी। वे तो यही चाहते थे कि समाज की धार्मिक भावनाओं को संगठित किया जाय। उस समय आपके पिताजी का कहना था कि संगठित हो अथवा कि विघटित, इसका विचार छोड़कर हिन्दुत्व के विचार की योजना होनी चाहिए।

"लाला फकीरचन्दजी चाहते थे कि जहाँ तक भलाई का प्रश्न है उसके लिए पूर्ण समाज को ही ध्यान में रखना चाहिए। परन्तु भला करने में जो साधन बनें वे योग्य हों, ज्ञानवान हों, सम्पन्न हों और भाग्यशाली हों।

"जो व्यक्ति अपने कर्मफल के अधीन किसी सम्पन्न अथवा समृद्ध श्रेष्ठ घर में जन्म नहीं ले पाया उससे दूसरे के कल्याण की सम्भावना कम ही है। उनका तो पहले स्वयं का ही कल्याण किया जाना चाहिए।

"यह मेरे लिए प्रारम्भिक बिन्दु बन गया। उसके आधार पर कार्य आरम्भ किया गया और विगत दस वर्ष में हमने पाँच सौ से अधिक प्रचारक देश को प्रदान किए हैं। वे किसी से अपने लिए कोई पैसा नहीं लेते और हिन्दू समाज को जागृत करने में अपनी शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लगाए हुए हैं।"

"हाँ महाराज! इसका प्रभाव अब नयी दिल्ली में भी दिखाई देने लगा है। सेठ बनवारीलाल के सुपुत्र कमलापति जी नयी दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं। वे वहाँ हिन्दू संगठन की बात कर रहे हैं।

"एक दिन मैं उनके पास पहुँच गया और पूछने लगा—'आप किस संस्था की ओर से कार्य कर रहे हैं?' उनका कहना था—

" 'कृष्ण मंदिर बम्बई की ओर से।'

" 'क्या वेतन मिलता है?'

"यह सुनकर वह हँस पड़ा। फिर कहने लगा, 'मेरे पिता मुझे गुजारे के लिए दो हजार रुपया मासिक दिया करते हैं। मुझे कृष्ण मन्दिर से अपने गुजारे के लिए कुछ लेने की आवश्यकता नहीं है।'

"मुझे इतने मात्र से सन्तोष नहीं हुआ। मैंने पूछा, 'कृष्ण मन्दिर से आपका क्या सम्बन्ध है?'

" 'गुरु-शिष्य का।' "

स्वामी मंगलानन्द यह विवरण सुनते हुए मुस्करा रहे थे।

जवाहरलाल बोला, "मैं भी कुछ इसी विषय में बात करने के लिए सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

"मैंने पिताजी को इस सम्बन्ध में बताया था। उन्होंने मुझे यही सुझाव दिया कि इसके लिए यह आवश्यक है कि मैं कुछ काल तक आपके चरणों में रहकर कुछ पाठ पढ़ूँ। योजना का भली-भाँति अध्ययन करूँ और फिर आपको अपना सुझाव दूँ।

"पिताजी का कहना था कि आपको अपनी योजना बताऊँगा तो आप कम से कम ध्यान से सुनेंगे तो। फिर उसके गुण-दोष पर अपना परामर्श देंगे। इस प्रकार सुनिर्धारित योजना फलदायिनी होगी।"

दोनों भोजन कर रहे थे। स्वामीजी के लिए तो चपाती और केवल एक साग था। जवाहरलाल के लिए भी वही आ गया। उस समय जवाहरलाल को जोर की भूख लगी थी। अतः भोजन नीरस होने पर भी वह भूख के कारण उसको खा ही गया।

उस समय स्वामीजी ने जवाहरलाल की योजना पूछी। जवाहर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल ने बताया "ओजना की व्याख्या पर तो विचार किया जा सकता है। सिद्धान्त की बात तो यह है कि राजनीतिक मंच का प्रयोग राजनीतिक मंच के नीचे खड़े होकर किया नहीं जा सकता।"

"हाँ, सिद्धान्त के रूप में तो यह बात ठीक ही है। मैं भी इसको मानता हूँ। किन्तु राजनीतिक मंच पर अधिकार प्राप्त करने के उपाय पर मतभेद हो सकता है। इसके अतिरिक्त यह प्रश्न भी है कि उस राजनीतिक मंच का प्रयोग किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाए, यह तो समय-समय पर विचार करने की बात है।"

"उस विषय में तो मैं अभी कुछ नहीं कह रहा हूँ। मेरा तो यही कहना है कि इस मंच का प्रयोग हिन्दू-हितों के लिए किया जाना चाहिए, इस ओर ही यत्न करना चाहिए।"

"सामान्य रूप में तुम्हारा यह कथन भी स्वीकार है। परन्तु इसपर अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। तुम कुछ समय तक कृष्ण मन्दिर में रहो। यहाँ की गतिविधि से अवगत हो जाओ। उसपर अपना विचार व्यक्त करो।"

भोजन समाप्त हुआ। भोजन के उपरान्त जवाहरलाल अतिथि गृह की ओर जाने लगा तो स्वामी मंगलानन्द कार्यालय जाने को तैयार हो गए। इस प्रकार दोनों ही मुख्य भवन की ओर चल पड़े।

मार्ग में चलते हुए स्वामीजी ने पूछा, "कितने दिन तक रहने का विचार है?"

"मैं विश्वविद्यालय से छः मास का अवकाश लेकर आया हुआ हूँ।"

"छः मास तक यहीं रहने का विचार है?"

"यह तो मैं यहाँ रहकर कुछ दिन अध्ययन करूँगा। उसके उपरान्त ही कुछ निश्चित कर पाऊँगा कि कितने दिन कहाँ रहूँ।

"वास्तव में मेरे मन में शिक्षा-कार्य को छोड़कर सक्रिय राजनीति में भाग लेने का विचार बन रहा है। मैंने अपनी बात पिताजी के सम्मुख रखी तो उन्होंने कहा कि मैं पहले कृष्ण मन्दिर जाकर उसकी योजना को देख-समझ लूं। सम्भव है, वह मुझे पसन्द आ जाए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार कुछ दूर तक तो स्वामीजी मौन रहकर उसकी बात पर विचार करते रहे। फिर बोले, "वर्तमान युग की राजनीति तो बहुत ही गन्दी हो गई है। मैं तो कभी तुमको यह परामर्श नहीं दूँगा कि तुम इसमें लिप्त हो जाओ। हाँ, यदि इस गन्दगी को दूर करने की कोई बात तुम्हारे मन में हो तो यहाँ रहना तुम्हारे लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है।"

जवाहरलाल ने विषय परिवर्तन कर कहा, "आपसे मिलने का उपयुक्त समय कौन-सा होता है?"

"वैसे तो मैंने सायंकाल पाँच से सात बजे तक का समय आश्रम-वासियों से मिलने के लिए नियत किया हुआ है। परन्तु उस समय प्रायः मन्दिर सम्बन्धी प्रबन्ध की बातें ही होती हैं।

"ठीक विचार विनिमय के लिए तो प्रातःकाल छः से सात बजे का समय होता है। उस समय केवल सुधीर ही मेरे पास होता है। हाँ, कभी-कभी यहाँ के मुख्य प्रबन्धक लाला सुरजनलाल भी आ जाते हैं।"

"सुधीर क्या कर रहा है? अब तो काफी बड़ा हो गया होगा?"

"हाँ, काफी बड़ा हो गया है। इस समय अठारह-उन्नीस का होगा। मेरी शिक्षा वह समाप्त कर चुका है। अब वह कृष्ण मन्दिर के विद्यालय में विज्ञान का क्रियात्मक प्रशिक्षण ले रहा है।"

"लाला जियाराम और उनकी पत्नी?"

"दादी तो सुशीला पीटर के पास रहती है। लाला जियाराम इस कृष्ण मन्दिर के प्रबन्ध में सहायता देते हैं। यहाँ की अचल सम्पत्ति की देख-रेख का भार उनपर है।"

तबतक दोनों मन्दिर के कार्यालय में पहुँच गए थे। वहाँ सुरजनलाल के साथ रमण भी था। दोनों ने जब स्वामीजी को आते देखा तो अपने आसन से उठकर खड़े हो गए। स्वामीजी के पहुंचने पर उन दोनों ने उनको प्रणाम किया।

स्वामीजी ने जवाहरलाल का परिचय कराते हुए कहा, "आप शायद इनको नहीं पहचानते। किन्तु इनके पिताजी को पहचानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। ये लाला फकीरचन्द जी के सुपुत्र प्राध्यापक जवाहरलाल हैं।"

"ओह ! तो आप हैं जो आज अतिथि-गृह में आकर टिके हैं।"

"अच्छा, आपके पास सूचना आ गई है ?"

"हाँ, यह सूचना तो आ गई है। किन्तु यह पता नहीं था कि आप लाला फकीरचन्दजी के सुपुत्र हैं।"

"मैं आपके मन्दिर में कुछ लम्बे समय तक रहने के विचार से आया हूँ।"

"हमारे अहोभाग्य हैं। बोलिए, किसी विशेष सुविधा की आवश्यकता तो अनुभव नहीं करते ?"

"ऐसी कोई बात नहीं है। भोजन और निवास चाहिए। वह यहाँ प्राप्त होगा ही। अल्पाहार का प्रबन्ध मैं कर लूँगा।"

"उसका प्रबन्ध भी यहाँ हो सकता है।"

"यह तो आपकी कृपा है। किन्तु इस विषय पर मैं स्वतन्त्र रहना चाहता हूँ।"

स्वामीजी कार्यालय में बैठकर देश भर में फैले अपने मन्दिर के कार्यकर्ताओं के पत्र-आदि देखने लगे। जवाहरलाल उनसे आज्ञा लेकर अतिथि गृह की ओर जाने लगा तो रमणलाल उसके साथ चल दिया।

चलते हुए उसने जवाहरलाल से कहा, "मेरा नाम रमणदेव है। बम्बई के सेठ लक्ष्मीचन्दजी मेरे पिता हैं।"

इस प्रकार बिना परिचय के रमण को बात करते देख जवाहरलाल मुस्कराकर कहने लगा, "लगता है आप कम्युनिस्ट रह चुके हैं।"

रमण हँस पड़ा। फिर बोला, "इसका अभिप्राय तो यह है कि आप इस गुट के विषय में बहुत-कुछ जानते हैं।"

"अपने जीवन के दस स्वर्णिम वर्ष मैंने इस कारागार में व्यतीत किए हैं। अब मैं उससे अपने को मुक्त मानता हूँ।"

"उस कारागर से मुक्त हो बाहर आकर अबतक क्या-क्या देख पाए हैं ?"

"यही कि वह तो भेड़ों का एक बाड़ा है। जिसमें भेड़ों से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि है वह उस बाड़े में रह नहीं सकता।"

"ऐसा तो सभी मजहबों के साथ है। यह कम्युनिज्म की कोई विशेषता नहीं है। इस्लाम तो इससे भी भयंकर है। तदपि दोनों में महान् अन्तर है। इस्लाम में उसके छोड़ने वाले की हत्या कम ही की जाती है, वहाँ जो व्यक्ति कम्युनिज्म को छोड़ता है उसे सदा अपने जीवन का भय बना रहता है।"

तबतक दोनों अतिथि-गृह के द्वार पर पहुँच गए थे। रमण ने पूछा, "आप कौन से कक्ष में टिके हैं?"

"एक सौ बीस नम्बर में! आइये, मेरे कॉफी पीने का समय है; कॉफी बनाता हूँ, आप भी पीजिए।"

"चलिए! मुझे आपमें रुचि बढ़ती जा रही है। कॉफी का आनन्द भी मिल जायेगा।"

यों रमण और जवाहरलाल एक साथ उस कमरे में गए।

: ८ :

कमरे में पहुँचकर रमणलाल को ठीक से बैठाकर जवाहरलाल कॉफी बनाने में लग गया। इसकी व्यवस्था वह अपने साथ दिल्ली से ही करके लाया था। उसने जल गरम करने के जग का प्लग लगाया और फिर मिल्क पाउडर, चीनी, प्याले आदि स्टूल पर रख दिए।

फिर वह रमण के पास आकर बैठ गया।

रमण बोला, "मैं आपके पिता लाला फकीरचन्दजी से मिला हूँ। बहुत ही स्वस्थ और सुलझे हुए मस्तिष्क के व्यक्ति हैं।"

"आप उनसे कब मिले थे?"

"एक वर्ष से अधिक समय हो गया होगा। इससे पहले के वार्षिक उत्सव में वे पधारे थे। उस अवसर पर दो दिन तक उनसे बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

"मुझे आश्चर्य तो इसी बात का है कि इतने सुलझे मस्तिष्क वाले व्यक्ति का पुत्र किस प्रकार कम्युनिस्ट बन गया? मेरे पिताजी तो केवल दसवीं कक्षा तक ही पढ़े थे।"

जवाहरलाल ने मुस्कराते हुए बताया, "युवक जब कॉलेज का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी बन जाता है तो उसको फिर कुछ अधिक स्वच्छन्दता का अवसर प्राप्त होता है। स्कूल की शिक्षा तक कदाचित् अभिभावकों का नियन्त्रण रहता है। कम-से-कम मेरे साथ तो ऐसा ही हुआ है।

"मैं बी० ए० के प्रथम वर्ष का विद्यार्थी था जब मैं इस भंवर में फँस गया था। पिताजी तो यही समझ रहे थे कि कॉलेज में पढ़ने वाला विद्यार्थी प्रखर बुद्धि का ही होगा। यह तो मैं बाद में ही समझ पाया हूँ कि हमारे कॉलेजों की शिक्षा मन से तो काम ले लेती है किन्तु बुद्धि के विकास का उसमें लेश भी नहीं है।

"पिताजी यही समझते थे कि विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाला बुद्धिमान ही होगा। परन्तु यह तो हम दोनों को बाद में ही समझ में आया कि योरोपियनों द्वारा लिखित पुस्तकों को तोते की भाँति रटकर परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने से कोई बुद्धिमान नहीं बन सकता।

"हुआ यह कि योरोपियन लेखकों की पुस्तकों को पढ़कर मैं उनकी निराधार कृतियों पर विचार किए बिना ही उनको ग्रहण कर उनके ज्ञान का एक कोष मात्र बन गया था। परन्तु ज्ञान और अज्ञान की परख प्राप्त नहीं कर सका।"

"अब आपमें इस परख की शक्ति है?"

"शक्ति हो या न हो। कम-से-कम परखने का यत्न तो करता हूँ। मेरे पिताजी अर्थशास्त्री हैं। एक दिन उन्होंने मुझ एम० ए०, डी० लिट्० से प्रश्न किया कि धन का उत्पादन कौन करता है?

"अपने संस्कारों के वशीभूत मैंने कह दिया, 'श्रमिक।'

"तो चाँदनी चौक में झल्ली उठाने वाला दो सहस्र रुपया मासिक वेतन क्यों नहीं लेता? तुम तो श्रम नहीं करते? तुम कैसे लेते हो?'

" 'मैं इतिहास का विद्वान् हूँ।'

" 'क्या इतिहास रुपये उत्पन्न करता है?'

"उस समय पुनः मैंने अपने संस्कारों के वश में कहा, 'धन का उपार्जन तो श्रमिक ही करता है मैं तो...'

"इसके आगे मैं कुछ बता नहीं पाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी ने कहा, 'आजकल एक योग्य सुपठित विद्वान् संन्यासी का बावर लेन पर प्रवचन हो रहा है। तुम नित्य वहाँ जाकर उसे सुनो।'

"सौभाग्य से जिस दिन मैं स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिए गया उस दिन स्वामीजी धनोपार्जन के विषय पर ही प्रवचन कर रहे थे। उन्होंने बताया था कि प्रकृति ने शरीर में सर्वोपरि शुद्ध रक्त मस्तिष्क में जाने का प्रबन्ध किया है। क्योंकि शरीर के कार्यों को सफल करने वाला यन्त्र वहीं पर है। उसे बुद्धि कहते हैं।

"इसी प्रकार जहाँ बुद्धि है, वहाँ धन है। बुद्धि धन की स्वामी है। धनोपार्जन के लिए परिश्रम करने वाले हाथ-पैरों को सामान्य रक्त ही मिलता है।

"बस, इस एक बात की प्रक्रिया पर विचार करने पर मेरे चिन्तन का काँटा ही बदल गया। इस प्रकार मेरे कुछ ही दिन के विचार से पूर्ण कम्युनिज्म और प्रजातन्त्र की मीमांसा आधार रहित लगने लगी।

"तभी मैं यह भी समझ गया कि करते तो कम्युनिस्ट भी यही हैं। क्रैमलिन के उच्च महल में रहने वाले तो देश की मलाई खाते हैं। सामान्य जनता को तो केवल दूध की खुरचन ही मिलती है, दूध भी नहीं मिलता। यह मैं स्वयं देख आया हूँ। अन्तर केवल इतना ही है कि खाने को सबको मिल जाता है।

"स्वामीजी का कहना था कि मस्तिष्क में बुद्धि है। उसका पोषण ही पूर्ण शरीर का पोषण है। उसका कारण यह है कि शरीर बुद्धि का अनुकरण करता है।

"उस चिन्तन का परिणाम यह हुआ कि मैं अब कृष्ण मन्दिर में कुछ समय निवास के लिए आ गया हूँ। रूस की सैर भी मैंने की थी। अब वहाँ के कम्युनिज्म से मेरा परावर्तन हो गया है। दोनों स्थानों में अन्तर केवल सत्य और झूठ का ही है। जो वे यह कहते हैं कि सब बराबर हैं वह सरासर झूठ है।

"यहाँ जो यह कहा जाता है कि सब बराबर नहीं हैं, यह सत्य है। अन्तर बुद्धि का है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबतक कॉफी का पानी गरम हो गया था। जवाहरलाल उठा और उसने दो प्याले कॉफी के तैयार किये।

दोनों बैठकर कॉफी पीने लगे। इस प्रकार यह मित्रता दिनानुदिन बढ़ने लगी।

: ६ :

जवाहरलाल जब कृष्ण मन्दिर में रहने के लिए आया तो वह फिर लौटकर दिल्ली नहीं गया। पत्नी को तो वह दिल्ली से आने से दो वर्ष पूर्व ही छोड़ चुका था।

कृष्ण मन्दिर की बीसवीं वर्षगाँठ के अवसर पर देश-भर के लगभग एक लाख व्यक्तियों का समारोह था। अबतक स्वामी मंगलानन्द का शिष्य परिवार बहुत बड़ा हो गया था। इस वर्ष देशभर में फैले अपने प्रचारकों को स्वामीजी ने एक प्रश्नावली भेजी थी। उसमें जहाँ सामान्य अनेक प्रश्न थे उनमें यह भी पूछा गया था कि क्या—

१. कृष्ण मन्दिर को हिन्दू समाज की रक्षा के लिए राजनीति की सहायता लेनी चाहिये ?

२. यदि हाँ, तो बताया जाय कि आपके क्षेत्र में कृष्ण मन्दिर की महिमा किस स्तर तक पहुँची है ?

३. आप लोक सभा अथवा अपनी विधान सभाओं में कृष्ण मन्दिर के प्रत्याशी के सफल होने की कितनी सम्भावना समझते हैं ?

४. हिन्दुओं के अतिरिक्त इसके समर्थन अथवा विरोध में कौन-कौन समुदाय हैं और उनका आपके क्षेत्र में कितना बल है ?

५. कृष्ण मन्दिर के प्रत्याशी के लोक सभा अथवा विधान सभा में सफलता की आपके क्षेत्र में कितनी आशा है ?

६. अपने क्षेत्र में आप अपने पास से एक पैसा भी व्यय न कर कृष्ण मन्दिर से अपनी सहायता के लिए कितने धन की आवश्यकता अनुभव करते हैं ?

७. विरोध में कितने दलों के कितने प्रत्याशी आपके क्षेत्र में खड़े होने की सम्भावना है ?

८. स्थानीय मन्दिर की शाखा इस प्रयास में धन, जन और बल से कितनी मात्रा में तैयार है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. कृष्ण मन्दिर द्वारा घोषित दल का नाम क्या होना चाहिए ? केन्द्र और राज्य में एक ही नाम रहेगा अथवा कि पृथक् ?

१०. आपका अपने क्षेत्र में हिन्दू समुदाय से अतिरिक्त समुदायों में क्या प्रभाव है ? क्या कोई आपसे भयभीत भी है ?

यह प्रश्नावली लगभग तीन हजार कार्यकर्ताओं को भेजी गई थी। किन्तु थी यह सर्वथा गुप्त।

जब यह प्रश्नावली आ गई तो उसपर विचार करने के लिए देशभर के प्रतिनिधियों की उपसमिति गठित की गई। उसने इसपर बहुत विचार किया और उसके आधार पर एक घोषणा-पत्र तैयार कर बीसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रकाशित किया गया।

उस समय घोषित किया गया कि कृष्ण मन्दिर की ओर से आगामी निर्वाचनों में उसके प्रत्याशी भाग लेंगे। इसके द्वारा देश की दशा को सुधारने का यत्न किया जायेगा। संक्षेप में उसके लक्ष्य थे—

खाद्य पदार्थ और वस्त्रादिक तथा भवन-निर्माण सामग्री का मूल्य १९२०-२५ के स्तर पर करा दिये जायेंगे। अर्थात् वर्तमान में जो रुपये का अवमूल्यन हुआ है उसे पुनर्स्थापित कर उसका मूल्य पूरे १०० पैसे कर दिया जायेगा।

यह यत्न किया जायेगा कि विदेशी बाजार में भी रुपये का मूल्य पर्याप्त ऊँचा हो। देश के भीतर और बाहर के मूल्यों में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। दैनंदिन की आवश्यकताओं की सभी वस्तुएँ देश में ही निर्मित की जायेंगी और उनको दिन-प्रतिदिन उन्नत किया जायेगा।

देश में कोई अल्पसंख्यक समुदाय नहीं होगा। संविधान की धारायें सब पर समानरूपेण लागू होंगी।

सुपठित और अपठित में अन्तर होगा। चरित्रवान् और चरित्र-हीन में अन्तर होगा। देशभक्त और देशद्रोही में अन्तर होगा।

राजस्व के रूप में केवल आय-कर ही लिया जायेगा। उत्पादन तथा बिक्री-कर समाप्त कर दिये जाएँगे।

आयात-निर्यात व्यापार राज्य के हाथ में रहेगा। इसके द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश के भीतर और विदेश में रुपये के मूल्य में अन्तर रखा जायेगा।

जीवनोपयोगी वस्तुओं का मूल्य इतना होगा कि जिसमें पाँच व्यक्तियों का परिवार सौ रुपये मासिक पर निर्वाह कर सकेगा। जीवनोपयोगी वस्तुओं में मनोरंजन की सामग्री सम्मिलित नहीं है। सामूहिक मनोरंजन के सार्वजनिक रूप से समय-समय पर राज्य की ओर से व्यवस्था की जायेगी।

देश की सुरक्षा से सम्बन्धित सामग्री को राज्य सरकारी निर्माणशालाओं में बनवायेगा। जनता के प्रयोग की वस्तुओं का निर्माण निजी उद्योग के क्षेत्र के निर्माण के लिए छोड़ दिया जायेगा।

मजहब और धर्म में कृष्ण मन्दिर विभेद समझता है। मजहब तो केवल बाहरी व्यवहार है अर्थात् समुदायों के बाहरी लक्षण। पूजा-पद्धति भी इसी के अन्तर्गत है। व्यक्ति और समष्टि इससे स्वतन्त्र होंगे।

धर्म उस आचरण को कहते हैं जो मानव के भीतर होता है। यह सरकारी विधि-विधानों द्वारा नियन्त्रित किया जायेगा।

देश में विद्वानों का मान होगा। धर्म की व्यवस्था बिना मजहबों का विचार किये राज्य के विद्वानों द्वारा नियत की जायेगी। इसके लिए सबके लिए समान विधान होगा।

दान-दक्षिणा देना राज्य का कार्य नहीं होगा। यह व्यक्तिगत कार्य है। बिना परिश्रम के प्रतिकार अथवा परिश्रम के अतिरिक्त देने का नाम दान-दक्षिणा माना जायेगा।

इस घोषणा-पत्र का समस्त देश में प्रसार किया गया। निर्वाचन के लिए अभी एक वर्ष का समय शेष था।

घोषणा-पत्र के प्रसारित होते ही समस्त देश में पन्द्रह दिन के भीतर ही तीन हजार से अधिक स्थानों से प्रत्येक विधान सभा क्षेत्र में चुनाव समितियाँ बन गई और कार्य आरम्भ हो गया।

रमण और राधा दोनों ही बम्बई की दो लोक सभा क्षेत्रों से प्रत्याशी माने गये। जवाहरलाल को पुरानी दिल्ली के एक क्षेत्र का प्रत्याशी घोषित किया गया। दिल्ली में जवाहरलाल की चुनाव समिति का प्रधान सुधीर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधीर ने दिल्ली के निकट बल्लभगढ़ में औषधि निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया था। उसमें देशी दवाओं का निर्माण किया जाता था। देशी का अभिप्राय यह लिया गया कि जिसके निर्माण में विदेश की किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता अनुभव न हो।

सुधीर का कार्य चालू हुए पाँच वर्ष से अधिक का समय हो गया था। इस समय तक उसने एक सौ से अधिक औषधों का निर्माण कर लिया था। दो सौ से अधिक कर्मचारी उसके कारखाने में कार्यरत थे। पाँच वर्ष में ही कारखाने का लाभ एक लाख से अधिक हो गया था। यह शुद्ध लाभ था, इसमें सब प्रकार के खर्च काट दिये गये थे।

सुधीर बाबर लेन वाली कोठी में ही रहता था। उसकी दादी उसके साथ रहती थी। सुधीर का विवाह भी हो गया था। उसकी दो सन्तान थीं।

सुधीर के पिता कृष्णचन्द्र का देहान्त हो चुका था। निर्मलादास से उसकी दो अन्य सन्तान भी थीं। किन्तु सुधीर से उनका किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं था।

सुधीर की बहिन प्रमिला का विवाह हो गया था। उसका पति सेना में उच्च अधिकारी था। वह अपने पति के साथ ही अम्बाला में रह रही थी।

सुधीर नित्य प्रातःकाल अपनी मोटर द्वारा बल्लभगढ़ कारखाने में जाता था। वहाँ से वह सायंकाल छः बजे नयी दिल्ली लौट आता था। कृष्ण मन्दिर की ओर से चुनाव में खड़े दिल्ली की लोक सभा के सातों स्थानों का निर्वाचन-कार्य वह स्वयं देख रहा था। उसके कार्यालय से ही उन सबका प्रबन्ध होता था।

सुधीर की पत्नी और सुधीर की माता भी इन निर्वाचनों में रुचि ले रही थीं। निर्वाचन से पूर्व स्वामी निर्मलानन्द ने एक हवाई जहाज चार्टर किया और उसके माध्यम से देशभर के क्षेत्रों का दौरा किया था। इससे देश में हलचल मच गई थी।

इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार सक्रिय हो गई। उसने आज्ञा प्रसारित कर दी—'कृष्ण मन्दिर द्वारा प्रस्थापित राजनीतिक दल के सिद्धान्त देश के संविधान के आधारभूत विचारों का विरोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं अतः इस दल को वर्जित दल घोषित किया जाता है। इस दल का प्रचार तथा देश की राजनीति में इसका हस्तक्षेप अवैध कार्यवाही माना जाता है।'

इस आज्ञा के प्रसारित होते ही न्यायविदों से परामर्श किया गया और उनके परामर्श पर सर्वोच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की गई। सरकार की ओर से इस याचिका की सुनवाई में विलम्ब का यत्न किया जाने लगा। जितना सम्भव हो सकता था वह सब इसके लिए सरकार की ओर से किया गया।

निर्वाचन में अभी तीन मास का समय शेष था। शासक दल की यह नीति थी कि यदि सर्वोच्च न्यायालय में याचिका स्वीकार हो गई और प्रतिबन्ध हटाने का आदेश हो भी गया तो भी इस कार्य में जितना विलम्ब हो सकता है उसका प्रयास किया जाना चाहिए। इसका परिणाम यह होगा कि ठीक निर्वाचन के समय प्रतिबन्ध उठने पर भी दल अपनी तैयारी नहीं कर पायेगा।

न केवल राजनीतिक दल पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया अपितु देशभर में स्थापित उसके सब कार्यालयों पर सरकारी ताला लगा दिया गया।

इसके विरोध में भी सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका प्रस्तुत की गई। उसमें यह स्पष्ट संकेत कर दिया गया कि यदि इस याचिका पर एक सप्ताह के भीतर निर्णय नहीं किया गया तो फिर दल अपनी याचिका न्यायालय से वापस ले लेगा और उस अवस्था में राज्य की इस अनियमित कार्यवाही को रोकने के लिए अन्य उपाय का आश्रय ग्रहण करेगा।

मुख्य न्यायाधीश ने पूछा, "क्या उपाय किया जायेगा?"

दल का वकील गम्भीर होकर कहने लगा, "श्रीमन्! उस अवस्था में इससे भी बढ़कर जो न्यायालय है वहाँ अपनी याचिका प्रस्तुत की जायेगी।"

"कहाँ है वह न्यायालय?"

"यहीं है। सब स्थान पर विद्यमान है। आपके भीतर है। केवल अन्तर इतना ही है कि आप उसकी ध्वनि सुन नहीं पा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य न्यायाधीश ने मुस्कराते हुए पूछा, "किन्तु जो दिखाई ही नहीं देता उसके सम्मुख किस प्रकार याचिका प्रस्तुत करोगे ?"

"श्रीमन् ! वहाँ पहुँचने का द्वार विदित है। वह द्वार है जनता। वेद में कहा गया है कि जब प्रजा के पाँचों वर्ग बलपूर्वक किसी विषय पर पुकार करते हैं तो वह उनमें आकर बैठ जाता है उस समय उसका कोई विरोध नहीं कर सकता।"

उसका परिणाम यह हुआ कि इस याचिका को सुनने के लिए नियुक्त न्यायालय की खण्डपीठ ने सरकार को तीन दिन का नोटिस दे दिया कि उस दिन दोनों ओर के तर्क सुनकर न्यायालय निर्णय करेगा कि याचिका को स्वीकार किया जाय अथवा कि नहीं। इस विषय पर अन्य तिथि का निर्धारण नहीं होगा।

विचारणीय यह था कि संविधान के आधारभूत सिद्धान्तों को बदला जा सकता है अथवा कि नहीं। जिस आधारभूत सिद्धान्त की दुहाई सरकार दे रही थी कि भारत में प्रजातान्त्रिक और समाजवादी राज्य होगा उसके विपरीत कृष्ण मन्दिर ने अपने घोषणा-पत्र में कहा था कि राज्य किसी प्रकार की दान, दक्षिणा नहीं दे सकता। उसके साथ ही यह भी कहा गया था कि परिश्रम व्यक्तिगत होता है तथा उसका प्रतिकार भी व्यक्तिगत होगा।

समाजवाद में समस्त समाज, समस्त देश की आय का अधिकारी होता है।

कृष्ण मन्दिर के वकील का कहना था कि मनुष्यकृत कोई भी नियम अपरिवर्तनीय नहीं हो सकता। इस आधार पर मनुष्यकृत संविधान भी बदला जा सकता है। संविधान को बदलने का अधिकार जनता को है। अतः जब जनता की राय से ही संविधान को बदलने का यत्न किया जायेगा तब उसपर न्यायालय किस प्रकार प्रतिबन्ध लगा सकता है ? संविधान का निर्माण देश की जनता द्वारा हुआ है और जनता यदि चाहे तो इसे बदल भी सकती है।

छः घण्टे के वाद-विवाद के उपरान्त न्यायालय ने निर्णय दे दिया कि कृष्ण मन्दिर की ओर से अभी तक कोई भी अवैधानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य नहीं किया गया है। अतः उसपर लगाया गया प्रतिबन्ध पूर्णतया अवैध है।

इस निर्णय पर तो देशभर में धूम मच गयी। कृष्ण मन्दिर का नाम देश के कोने-कोने में बच्चे-बच्चे के मुख पर था। इसके साथ ही कृष्ण मन्दिर के तीन हजार विद्वान्-प्रचारक देशभर में फैले हुए अपनी बात जनता को समझा रहे थे। ये तीन हजार कार्यकर्ता पिछले पाँच वर्ष से प्रचार में लगे हुए थे और चुनाव के एक मास पूर्व लगभग तीस हजार छः सौ संसदीय क्षेत्रों में फैल गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ।।

अधिष्ठान, कर्ता, पृथक्-पृथक्करण, चेष्टा तथा दैव, कर्म में ये पाँच कारण हैं।

राजधानी की एक विशाल जनसभा में स्वामी मंगलानन्द का व्याख्यान हो रहा था। चुनावों के परिणाम घोषित हो चुके थे। कृष्ण मन्दिर के चार सौ साठ सदस्य भारी बहुमत से निर्वाचित हुए थे। परिणाम घोषित होते ही कृष्ण मन्दिर की ओर से एक जनसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में स्वामी मंगलानन्द का व्याख्यान ही विशेष आकर्षण का केन्द्र था। स्वामीजी कह रहे थे—

"आज से लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व, ऋषिकेश में, भगवद्गीता के इस श्लोक की मैं व्याख्या कर रहा था। भाग्यवश मेरे गुरु स्वामी सोमेश्वरानन्दजी वहाँ उपस्थित थे और मेरी व्याख्या सुन रहे थे।

"उनके मन में एक विचार प्रस्फुटित हुआ और उन्होंने मुझे कर्म-क्षेत्र में उतरने का आदेश दिया। उनके आदेश पर मैं राजधानी में आ पहुँचा।

"दैव अनुकूल थे। साधन जुटे और देश में एक महान् क्रान्ति सम्पन्न हुई। देश की संसद् के छः सौ स्थानों में से चार सौ साठ स्थान हमारे कृष्ण मन्दिर को प्राप्त हुए हैं। हमारे ये चार सौ साठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए कृत संकल्प हैं।

"यह क्रान्ति हमारे लक्ष्य प्राप्ति में पहला पग है। हमारा लक्ष्य हम अपने घोषणा-पत्र में स्पष्ट कर चुके हैं और हम पुनः जनता के सम्मुख इसे दोहराना चाहते हैं।

"हमारे घोषणा-पत्र की मुख्य-मुख्य बातें हैं—

"भ्रष्टाचार को समाप्त करना, देश के भले तथा न्यायप्रिय नागरिकों की सुरक्षा का प्रबन्ध करना, वस्तुओं के मूल्य का स्तर सन् १९४७ में वस्तुओं के मूल्य के समकक्ष लाना; शिक्षा का आधार आस्तिकवाद बनाना, शिक्षा को शासन से सर्वथा पृथक् कर बुद्धि-शील विद्वानों के अधीन करना; जाति, सम्प्रदाय, वर्ग इत्यादि में भेदभाव न रहने देना अर्थात् देश के सब नागरिक समान हैं, सबके अधिकार समान हैं तथा सबके लिए समान कानून हैं।

"व्यक्ति के लिए चार पुरुषार्थ बताये गये हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनकी प्राप्ति में नागरिक को सहयोग देना।

"इन सबकी प्राप्ति के लिए हमारी एक योजना है। संसद-सदस्य तथा मन्त्रिगण सम्मतिदाता हैं अतः इनका कार्य एक ब्राह्मण के कार्य के समान होगा। ये अपने किसी भी कार्य के लिए वेतन नहीं लेंगे। इनके जीवन-यापन के स्वतन्त्र साधन होंगे। देश के निर्माण-कार्यों के संचालन में इनका अधिकार नहीं होगा, जिससे ये उन योजनाओं से व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा नहीं रख सकेंगे।

"इसके साथ ही सब प्रकार का व्यवसाय, ऐसा सभी प्रकार का निर्माण-कार्य, जिसका सम्बन्ध देश की सुरक्षा से नहीं है, शासन से स्वतन्त्र होगा। किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था का इस विषय में एकाधिकार नहीं हो सकेगा।

"बिक्री-कर समाप्त किया जायेगा तथा आय-कर की अधिकतम सीमा होगी आय का छठा भाग।

"रुपये के मूल्य के दो रूप होंगे। एक देश के भीतर तथा दूसरा विदेशों से व्यवहार करने पर। दोनों का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं होगा। निश्चित ही इससे देश के भीतर वस्तुओं का मूल्य आधा रह जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शिक्षा शासन से सर्वथा स्वतन्त्र होगी। कोई भी व्यक्ति अथवा समाज अपने शिक्षण संस्थान आरम्भ कर सकेगा और अपनी इच्छानुसार शिक्षा दे सकेगा। इनपर केवल मात्र एक प्रतिबन्ध होगा। वह यह कि वे ऐसी शिक्षा जो परस्पर द्वेष, घृणा उत्पन्न करे, नहीं दे सकेंगे।

"व्यक्ति-व्यक्ति में, व्यक्ति तथा समाज में परस्पर व्यवहार धर्म के अन्तर्गत होगा। धर्म का सार हमारे शास्त्रों में बताया है—**आत्मन: प्रतिकूलानि परेषाम न समाचरेत्।** किसी के प्रति अपने प्रतिकूल व्यवहार न किया जाये। अर्थात् कोई भी व्यक्ति किसी के भी साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकेगा जैसा वह अपने साथ नहीं चाहता।

" 'हिन्दू कोड बिल' निरस्त कर दिया जायेगा। विवाह के विषय में तथा पति-पत्नी और उनकी सन्तान के अधिकारों के विषय में देशभर में समान कानून होगा।

"विवाह-संस्कार लोग अपने रीति-रिवाजों के अनुसार कर सकेंगे परन्तु विवाह सम्पन्न होने पर सबके अधिकारों पर प्रतिबन्ध मानवता के अनुरूप समान होगा।

"न्यायालय शासन से सर्वथा स्वतन्त्र होंगे। अपने क्षेत्र में न्यायालय सर्वोपरि होंगे। न्याय से ऊपर कोई नहीं। देश का प्रधान-मन्त्री भी न्याय के अधीन रहेगा।

"उपर्युक्त बातों को कार्यान्वित करने के लिए नया संविधान बनाया जायेगा।

"इसके लिए एक संविधान समिति गठित की जायेगी जिसमें देश के चोटी के विद्वान् जो धर्मशास्त्र तथा कानून के पण्डित होंगे, सम्मिलित होंगे। यह नयी संविधान समिति प्रतिदिन बैठकर तीन मास के भीतर संविधान का प्रारूप तैयार करेगी।

"मुझे विश्वास है", स्वामीजी का कहना था, "छ: मास की अवधि में हम अपने लक्ष्य की ओर द्रुत गति से बढ़ना आरम्भ कर देंगे और पाँच वर्ष की अवधि में हम अपने लक्ष्य पर पहुँच जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हमारा देश महान् शक्तिशाली होगा और देश के नागरिक पुरुषार्थों में लीन होंगे।

"भगवान् हम सबका कल्याण करेगा।"

: २ :

कृष्ण मन्दिर की ओर से कृष्ण मन्दिर की स्थापना तथा इसके उद्देश्यों पर और जनता के पथ-प्रदर्शन के लिए करोड़ों की संख्या में एक पुस्तिका देशभर में वितरित की गयी थी। इस जनसभा में भी प्रायः लोगों के हाथ में यह पुस्तिका थी। पुस्तिका का नाम था—भूत और भविष्य।

□□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त का विवेचनात्मक साहित्य

दर्शन एवं विज्ञान

अद्वैत मीमांसा

न्याय दर्शन (भाष्य)

ब्रह्मसूत्र सरल भाषा-भाष्य-१

ब्रह्मसूत्र सरल भाषा-भाष्य-२

ईश केन कठ उपनिषद् (भाष्य)

माण्डूक्य—मुण्डक-उपनिषद् (भाष्य)

प्रश्न-ऐतरेय उपनिषद्

तैत्तिरीय उपनिषद् (भाष्य)

वेदों में सोम

यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म

विश्वे देवा

विज्ञान और विज्ञान

वेद और वैदिक काल

वेद प्रवेशिका

श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)

श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)

सायंस और वेद

सांख्य दर्शन

इतिहास

इतिहास में भारतीय परम्पराएँ

राजनीति

धर्म तथा समाजवाद

प्रजातन्त्र अथवा वर्णाश्रम-व्यवस्था

प्रजातान्त्रिक समाजवाद

बुद्धि बनाम बहुमत

भारत : गांधी नेहरू की छाया में

भारत में राष्ट्र

राष्ट्र राज्य और संविधान

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान—हिन्दू राष्ट्र

हिन्दुत्व की यात्रा

संस्मरण

भाग्य-चक्र

भाव और भावना (संस्मरण)

मैं हिन्दू हूं ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

- अन्धे की लाठी
- अग्नि परीक्षा
- अनदेखे बन्धन
- अन्धेर नगरी
- अपने पराये
- अमानत
- अमृत मंथन
- अवतरण
- असमंजस
- अस्ताचल की ओर (३ खण्ड)
- आकाश पाताल
- आवरण
- आशा-निराशा
- आह्वान
- इबलीस
- उलझती राहें
- उलझन
- उल्टी बही गंगा
- उन्मुक्त प्रेम
- उमड़ती घटाएँ
- ऊंचे मकान
- एक और अनेक
- एक मुंह दो हाथ (दो हाथ)
- कला
- कामना
- काल चक्र
- काहे होत उदास
- कुंकुम
- कुमार संभव
- कौमुदी
- खण्डहर बोल रहे हैं (३ भाग)
- खेल और खिलौने
- गगन के पार
- गंगा की धारा
- गिरते महल
- गुण्ठन
- गोरखधंधा
- गृह संसद
- घर की बात
- चंचरीक
- चितेरे
- चौराहा
- छलना
- छोटी-सी बात (लाड़-प्यार)
- जनम-जनम तुम
- जमाना बदल गया (९ भाग)
- जग इक सपना
- जनप्रवाह (दो भाग)
- जयदमन
- जागृति
- जात न पूछ कोय (परिग्रह)
- जिन्दगी
- जीवन ज्वार
- झरोखे
- डाल डाल के पंछी

Central Library
167956
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

भारती साहित्य सदन सेल्स
३०/९०, कनॉट सरकस (मद्रास होटल के नीचे), नई दिल्ली-१

081
167956
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-B आगत संख्या 167956

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Rec... by.		
Data e... by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar